

विषयः	पृष्ठाङ्काः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
कर्णवेध	३७	मन्त्रा की उत्पत्तिकथा	५१
अन्नमायन	३७	संक्रान्ति का नाम और फल	५१
क्षौर के नक्षत्र	३७	कालफल	५२
दन्तधावन	३८	मुग्ध, स्थिति, गहनादि-संज्ञा	५२
ज्वार में विशेष	३८	मुहूर्त्त और फल	५३
मौखीवन्धन	३९	जन्मनक्षत्रानुसार फल	५७
विवाह-नक्षत्र	३९	संक्रान्तिस्वरूप	५८
अग्निहोत्रारम्भ	३९	संक्रान्ति का वर्ण और फल	५८
विद्यारम्भ	३९	पुण्यकाल	५९
श्रीपधिसहस्र	४०	ग्रहणसम्भव और फल	६०
रोगोत्पत्तिविचार तथा रोगान्त स्नान	४०	प्रथम रजोदर्शन का विचार और फल	६०
वृक्षारोपण के नक्षत्र	४१	रजस्वलाधर्म	६०
कृपारम्भ के नक्षत्र	४१	गर्भाधान का मुहूर्त्त	६२
द्रव्य देना स्थापित करना	४२	गर्भाधान में त्याज्य	६२
हाथी घोड़ा पशुओं का लेना	४२	ऋतु की १६ रात्रियों का विचार	६३
गायों के क्रय विक्रय में वज्र्य	४३	निषेध के तिथि, वार, नक्षत्र	७०
तृणकाष्ठादिसंग्रह में वज्र्य	४३	गर्भाधान में लग्नशुद्धि	७१
दल चलाने का नक्षत्र	४३	पुंसवनादि-संस्कार	७१
वाज घोना	४३	पक्ष-छिद्रातिथि	७२
चन्द्रोदय-फल	४४	मासेष्टरवान	७३
पुण्य नक्षत्र का गुण	४४	गर्भिणीधर्म और प्रश्न	७३
बीज घोने का नक्षत्र	४४	मृनिस्थान-प्रवेश	७४
सर्पदंश-विचार	४४	गर्भलक्षण	७४
गीतारम्भ	४४	मृत्तिसमय का प्रश्न	७५
राज्याभिषेक और राजदर्शन	४५	गर्हान्त	७५
पुण्य का फल	४५	जन्मसमय में गर्हान्तादिओं का फल	७६
योगदान और फल	४६	मृत और आश्लेषा का विशेष विचार	७८
करग्रहण और फल	४७	गोमुखप्रसव के नक्षत्र	८०
हरणों के स्वामा और कृत्य	४८	जन्मसमय में सूर्यादिग्रहों का फल	८०
जन्माणी-तिथिमान	४९	जन्म समय ग्रहों का योगज फल	८३
मन्त्रा में विशेष विचार और फल	४९	ग्रहों की दृष्टि	८६

विषयः	पृष्ठाङ्काः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
लग्न के शुभाशुभ ग्रहों का विचार	१६०	कालचन्द्र	१६६
पङ्चग-शुद्धि ज्ञान	१६०	यात्रा के नक्षत्र	१६७
गोधूललग्नज्ञान	१६६	यात्रा के वार	१६७
वधूप्रवेश	१६७	होरा और उसका फल	१६८
नूतनपत्न्य धारण मुहूर्त	१६७	दिक्शूल	२००
गन्धर्वविवाहमुहूर्त	१६८	विदिक्-शूल और परिहार	२०१
दत्तकपुत्रग्रहण	१६९	सम्मुखचन्द्रविचार	२०२
गुणों का चक्र	१६९	योगिनो और राहु	२०३
वास्तुप्रकरण	१७५	जुधित—राहु	२०४
द्वारशुद्धि	१७६	काल—राहु	२०४
काकिणी	१७७	पन्थाराहु	२०५
आयादिसाधन	१७८	धर्मादि-मार्गों के फल	२०५
पितृदान्यन	१७८	शुभाशुभ वाहन	२०८
आयों का फल	१७९	शिवछिद्यटी-मुहूर्त	२०९
ग्रहों की राशि और नाम	१८०	ग्रहमुहूर्त	२०४
ग्रहों का भाग और द्वार	१८२	भ्रमणाडल मुहूर्त	२१४
ग्रहारम्भ के मास	१८३	हैवरादि मुहूर्त	२१४
ग्रहारम्भ के नक्षत्र	१८४	यशोड मुहूर्त	२१५
वृषचक्र	१८४	टेलक मुहूर्त	२१५
शिलान्यास और शेष का मुख	१८६	गौरवमुहूर्त	२१५
कर्मचक्र, स्तम्भचक्र	१८७	वार के अनुसार स्वर शकुन	२१५
देहलीमुहूर्तद्वार	१८८	काकशब्दादि विचार	२१६
आहुति का विचार	१८९	पिङ्गल शब्द शकुन	२१७
ग्रहप्रवेश का मुहूर्त	१८९	छिक्का विचार	२१७
फलशचक्र	१९०	खज्जनदर्शन	२१८
वामार्कलक्षण	१९०	पत्नीपतन	२१९
शुभाशुभग्रह और लग्न	१९०	अर्द्धस्फुरण	२२१
लग्नशुद्धि और वायु	१९०	नेत्र-स्फुरण	२२३
शल्योद्धार	१९२	त्रिशूलयन्त्र	२२४
यात्रा में शुक्रविचार	१९४	यात्रा के लग्न	२२४
यानचन्द्र	१९५	यात्रा के लग्न से १२ भावस्थग्रहफल	२२५

विषयः	पृष्ठाङ्काः	विषयः
सृष्टिप्रश्न	२७०	त्रिपताकी चक्र
मनचिन्तित प्रश्न	२७८	वेधविचार
अङ्क प्रश्न	२७८	मुद्गादशा
रोग प्रश्न	२७९	मास बनाने का क्रम
मेघ प्रश्न	२८०	ग्रहों का चक्र
जल प्रश्न	२८०	जन्म नक्षत्र का फल
धान्य प्रश्न	२८१	लग्नशुद्धिपञ्चक
पशुविषयक प्रश्न	२८२	वारपञ्चक
राज्यादिभङ्ग योग	२८२	दिनमान
परिवेपमण्डल-फल	२८३	दिन में समयज्ञान प्रकार
छायाफल यात्रा	२८३	रात्रि में समयज्ञान प्रकार
वायुपरीक्षा कथन	२८४	अन्तरङ्ग बहिरङ्ग नक्षत्र
वर्ष निकालने का प्रकार	२८५	सूतिका स्नान
तिथि बनाने का क्रम	२८६	दृष्टिज्ञान
नक्षत्र लाने का क्रम	२८६	शुभयोग
ग्रहचालन कथन	२८६	मातृपितृभयप्रद योग
ग्रहस्पष्टीकरण	२८६	पितृनाश योग
भयात शीर भभोग लाने की रीति	२८७	मृत्युयोग
चन्द्रस्पष्टक्रम	२८७	दास्त्रिय योग
लग्नसाधन	२८७	मृत्युयोग
मुन्या	२८७	दीर्घ पूर्ण चन्द्र निर्णय
पञ्चाधिकारी	२८८	जातिभ्रंशकारक योग
दृष्टिक्रम चक्र	२८८	विषदोष से मृत्यु योग



[illegible]

अथ विनियोगात्मात्रम् ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अथ भृगुसंज्ञायाः ।

[illegible]

अथ पिण्डसारणीयम् ।

107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120
121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134
135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148
149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162
163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176
177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190
191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204
205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218
219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232
233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246
247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260
261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274
275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288
289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302
303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316
317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330
331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344
345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358
359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372
373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386
387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400

अथ पिण्डसारणीयम् ।

[illegible]

अथ बृहज्ज्योतिषसारः ।

✽ भाषाटीकासमेत ✽

मन्त्रानामरणम् ।

गणार्धाञ्च नमस्कृत्य शारदां चित्रवर्ष्णिणीम् ।

यज्ञानगजगण्डर्वा गर्गलज्वादिबान्मुनान् ॥ १ ॥

नानाग्रन्थान्ममात्मोस्य देवज्ञानां च नृष्टयं ।

कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम् ॥ २ ॥

टीका—यस्य यो निर्दिष्ट परिस्मार्ति च क लिय प्रथम श्री गणेशजी को नमस्कार करके और चतुर्ग्यरूपिणी तथा यज्ञान का नाश करनेवाली जा सरस्वतीजी के उनको नमस्कार करके और गर्गाचार्य तल्ल, पक्षिष्ठ नारद इत्यादि जो ज्योतिः-शास्त्र के प्रवर्त्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करके और सिद्धान्तादिक अनेक ग्रन्थों का अत्रलोकन करके ज्योतिर्विन् लोगों के सन्ताप के लिये और बालका को थोड़े में मुहूर्तादिक का ज्ञान होने के लिये ज्योतिःसार नामक अत्युत्तम ग्रन्थ का करते हैं ॥ १-२ ॥

शकप्रकरणम् ।

संवत्सरनामपरिज्ञानम्—

शकेन्द्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसेर्हते ।

जेषाः संवत्सराः ज्ञेयाः प्रभवाद्याः बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

टीका—शालिवाहन शक में जिस संवत्सर का नाम जानना हो उसकी यह रीति है कि शक की संख्या लिख कर उसमें ६२ मिलावे और ६० का भाग दे, जो शेष बचे वह संवत्सर का नाम जानें ॥ ३ ॥

संवत्परिज्ञानम्—

स एव पञ्चाग्निकुम्भिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ।

रेवायाः उत्तरे तरे सवन्नाम्नाऽतिविश्रुतः ॥ ४ ॥

टीका-शालिवाहन के शक में १३५ मिलाने से वही विक्रम संवत् हा जाता है । यह रेवा नदी के उत्तर तट में संवत् नाम से प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

अन्य प्रकारान्तर—

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्दृतः ।

शेषाः संवत्सराः शेषाः प्रभवाद्याः बुधै क्रमात् ॥ ५ ॥

टीका-संवत्सर के अंकों में ६ युक्त करे और ६० से भाग दे जो शेष रहे सो प्रभवादि संवत्सर जानना । उदाहरण—जैसे १६३५ में ६ मिलाने से १६४४ हुआ अब इसमें ६० का भाग दिया तो शेष २४ रहा, इस कारण इस संवत्सर का नाम “विक्रति” जानना चाहिये ॥ ५ ॥

संवत्सर लाने का सूक्ष्म प्रकारान्तर—

शककालः पृथक्संस्थो द्वाविंशत्याहतस्तथा ।

भूनन्दाश्वयुग्मभक्तो बाणशैलगजेन्दुभिः ॥ ६ ॥

लब्धियुग्विहतां पृष्ट्या शेषे स्युर्गतवत्सराः ।

वार्हस्पत्येन मानेन प्रभवाद्याः क्रमादमी ॥ ७ ॥

टीका-इष्ट शक को दो जगह लिखना । एक जगह २२ से गुण देना और ४४१ जोड़कर १८७५ का भाग देना । लब्धि को दूसरे जगह जोड़कर ६० से तद्वित करना शेष प्रभवादि संवत् होगा । (१८७५ का भाग देने में लब्धि सावयव लेने से युक्तमासादि और उसको १२ में घटाने से भोग्य मासादि होगा) ॥ ६-७ ॥

उदाहरण—शक १८१३×२२=३९८८६ ।

४४१+३९८८६=४०३२७ लब्धिः ।

१८१३×२३=४१८९९ ।

४०३२७-४१८९९=३८४२८ शेष ।

इस लिये ३८ वाँ शोभन संवत् का प्रवेश हुआ ।

संवत्सरों के नाम—

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।

अङ्गिरा श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ८ ॥

इक्ष्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथो विक्रमो वृषः ।

चित्रमानुः सुमानुश्च नारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ९ ॥

सर्वजित्सर्वधारा च विद्यायां विकृतिः यः ।
 नन्दना विजयश्च यत्र यन्मथः सुखो ॥ १० ॥
 समलम्बा विलम्बा च विद्यायां शायं पदम् ।
 शमकृच्छोभनः प्रार्थो विद्यायन्तुपगमया ॥ ११ ॥
 'नयः' कालकः सायः साधारणो विरोधकः ।
 परिधावां प्रमादां च यानन्दो राज्ञसा नलः ॥ १२ ॥
 पिङ्गलः कालयुक्तश्च मित्रार्थो रोद्धर्मता ।
 दुन्दुभी रधिरोदगारो रक्ताक्षः क्रोधनः जयः ॥ १३ ॥

१	नाम	२	नाम	३	नाम	४	नाम
१	प्रमत्तः	१६	विद्यायां	१	विद्यायां	४६	पारधावा
	विजयः	१	विद्यायां	२	विद्यायां	४७	प्रमादा
	शुभः	१८	विद्यायां		विद्यायां	४८	आनन्दः
२	प्रमोदः	१९	विद्यायां	३	विद्यायां	४९	राक्षसः
३	प्रजापतिः	२०	विद्यायां	४	विद्यायां	५०	नलः
४	अधिरा	२१	विद्यायां	५	विद्यायां	५१	पिङ्गलः
	धीमुखः	२२	विद्यायां	६	विद्यायां	५२	कालयुक्तः
५	भावः	२३	विद्यायां	७	विद्यायां	५३	सिद्धार्थः
६	शुभा	२४	विद्यायां	८	विद्यायां	५४	रौद्रः
७	धाता	२५	विद्यायां	९	विद्यायां	५५	दुर्मतिः
८	ईश्वरः	२६	विद्यायां	१०	विद्यायां	५६	दुन्दुभिः
९	बह्मधन्यः	२७	विद्यायां	११	विद्यायां	५७	रधिरोदगा
१०	प्रमादा	२८	विद्यायां	१२	विद्यायां	५८	रक्ताक्षः
११	विजयः	२९	विद्यायां	१३	विद्यायां	५९	क्रोधनः
१२	विजयः	३०	विद्यायां	१४	विद्यायां	६०	जयः

संवत्सरो का फल-

प्रमवाद् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ।
 सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेष इय शुभाशुभम् ॥ १४ ॥
 एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वयां सुभिक्षकम् ।
 त्रिषष्टे तु सप्त इय शून्ये पीडा न संशयः ॥ १५ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरों में से चलते हुए संवत्सर को द्विगुण करे, उसमें से तीन घटा के सात का भाग देनेसे जो शेष रहे उससे शुभाशुभ फल जानो अर्थात् १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष और ५ वा २ बचे तो सुभिक्ष, ३ अथवा ६ शेष रहे तो साधारण और जो शून्य आवे तो पीड़ा जानो ॥ ८-१५ ॥

संवत्सरों के स्वामी—

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादशवर्षषष्ठ्या ।

भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ १६ ॥

विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टाऽहिर्बुध्न्यः पितरः ।

विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामकौ च भगः ॥ १७ ॥

टीका—पाँच वर्ष का एक युग होगा है, इसी प्रमाण से ६० वर्ष के १२ युग, इसी क्रम से उनके १२ स्वामी अर्थात् विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, पितर, विश्वेदेव, चन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार और सूर्य होते हैं ॥ १६-१७ ॥

भेद—

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोऽन्य-

स्तस्मादिडान्विदिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥

एवं युगेषु सकलेषु तदीयनाथा

बन्धयर्कशीतयुविरञ्चिशिवाः क्रमेण ॥ १८ ॥

टीका—इष्ट शक में पाँच का भाग दे जो शेष बचे उससे संवत्सरों का नाम क्रम से जानो । पहिले संवत् का स्वामी अग्नि, दूसरे परिवत्सर का स्वामी सूर्य, तीसरे इडावत्सर का स्वामी चन्द्रमा, चौथे अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा और पाँचवें इहवत्सर के स्वामी शिव हैं ॥ १८ ॥

गतान्तर-

आनन्दादभवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरव च ।

जयादेः शङ्करः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १९ ॥

टीका—आनन्दादि २० संवत्सरों के स्वामी ब्रह्मा हैं जो सृष्टि करते हैं और भावादि २० संवत्सरों के स्वामी विष्णु हैं जो मयका पालन करते हैं और जयादि २० संवत्सरों के स्वामी रुद्र हैं जो मंदार करने हैं ॥ १९ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरों में से चलते हुए संवत्सर को द्विगुण करे, उसमें से तीन घटा के सात का भाग देनेसे जो शेष रहे उससे शुभाशुभ फल जानो अर्थात् १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्मित्त और ५ वा २ वचे तो सुमित्त, ३ अथवा ६ शेष रहे तो साधारण और जो शून्य आवे तो पीड़ा जानो ॥ ८-१५ ॥

संवत्सरों के स्वामी—

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादशवर्षषष्ट्या ।

भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ १६ ॥

विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टाऽहिर्बुध्न्यः पितरः ।

विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामकौ च भगः ॥ १७ ॥

टीका—पाँच वर्ष का एक युग होगा है, इसी प्रमाण से ६० वर्ष के १२ युग, इसी क्रम से उनके १२ स्वामी अर्थात् विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, पितर, विश्वेदेव, चन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार और सूर्य होते हैं ॥ १६-१७ ॥

भेद—

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोऽन्य-

स्तस्मादिडान्विदिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥

एवं युगेषु सकलेषु तदीयनाथा

वन्ह्यर्कशीतगुविरश्विनिवाः क्रमेण ॥ १८ ॥

टीका—इष्ट शक में पाँच का भाग दे जो शेष वचे उससे संवत्सरों का नाम क्रम से जानो । पहिले संवत्सर का स्वामी अग्नि, दूसरे परिवत्सर का स्वामी सूर्य, तीसरे इन्द्रवत्सर का स्वामी चन्द्रमा, चौथे अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा और पाँचवें इष्टवत्सर के स्वामी शिव है ॥ १८ ॥

पतान्तर-

आनन्दादभवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरव च ।

जयादेः शक्रः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १९ ॥

टीका—आनन्दादि २० संवत्सरों के स्वामी ब्रह्मा हैं जो सृष्टि करते हैं और भावादिक २० संवत्सरों के स्वामी विष्णु हैं जो सबका पालन करते हैं और जयादिक २० संवत्सरों के स्वामी शक्र हैं जो संहार करते हैं ॥ १९ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरों में से चलते हुए संवत्सर को द्विगुण करे, उसमें से तीन घटा के सात का भाग देनेसे जो शेष रहे उससे शुभाशुभ फल जानो अर्थात् १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष और ५ वा २ वचे तो सुभिक्ष, ३ अथवा ६ शेष रहे तो साधारण और जो शून्य आवे तो पीड़ा जानो ॥ ८-१५ ॥

संवत्सरों के स्वामी—

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादशवर्षषष्ठ्या ।

भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ १६ ॥

विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टाऽहिर्बुध्न्यः पितरः ।

विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामकौ च भगः ॥ १७ ॥

टीका—पाँच वर्ष का एक युग होगा है, इसी प्रमाण से ६० वर्ष के १२ युग, इसी क्रम से उनके १२ स्वामी अर्थात् विष्णु, बृहस्पति, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, पितर, विश्वेदेव, चन्द्र, अग्नि, अश्विनीकुमार और सूर्य होते हैं ॥ १६-१७ ॥

भेद—

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोऽन्य-

स्तस्मादिडान्विदिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥

एवं युगेषु सकलेषु तदीयनाथा

वन्ह्यर्कशीतयुविरश्चिशिवाः क्रमेण ॥ १८ ॥

टीका—प्रथमक में पाँच का भाग दे जो शेष वचे उससे संवत्सरों का नाम का मे जानो । पहिले संवत् का स्वामी अग्नि, दूसरे परिवत्सर का स्वामी सूर्य, तीसरे इडावत्सर का स्वामी चन्द्रमा, चौथे अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा और पाँचवें इद्वत्सर के स्वामी शिव हैं ॥ १८ ॥

पतान्तर-

आनन्दादभवद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ।

जयादेः शङ्करः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १९ ॥

टीका—आनन्दादि २० संवत्सरों के स्वामी ब्रह्मा हैं जो सृष्टि करते हैं और भावादि २० संवत्सरों के स्वामी विष्णु हैं जो सबका पालन करते हैं और जयादि २० संवत्सरों के स्वामी शिव हैं जो संहार करते हैं ॥ १९ ॥

॥५॥ सप्तमः च राजादिनाम्

चत्रादि मर्षादि श्रुत्यां नानां सृष्ट्यादिश्रुत्यादिपत्तिक्रमेण ।

राजा च मन्त्रां त्वय्य अग्यनाया म्यानिषो नाग्यनायकञ्च॥१०॥

५३) भयंकर शक्तिप्राप्त हो जाये और तब प्रयोग या सेवा करना है । मर स्वयंस्मि
य प्रतिज्ञा या हो यह मन्त्रोपाय । (यम स्वयंस्मि य प्रतिज्ञा या हो यम स्वयं-
नाथ (शक्ति या प्रसाद) प्राप्त ।) तब स्वयंस्मि य प्रतिज्ञा या हो यम स्वयंस्मि-
पति प्राप्त । (मर स्वयंस्मि य प्रतिज्ञा या हो यम स्वयंस्मिपतिप्राप्त ।) (प्रयोग
दान आनन्द य निध राजायना या प्रपन्नता प्रसाद) ॥ २७ ॥

‘‘यश्च सवन्तरमा’ य लाभन्त्ययजानम्

राशांशवर्षेण्युत त्रिगुण्य जंरणा युक्त तिथिजं पत्नाभवम् ।

ताम त्रिगुणाय च शरणा युक्त तिथ्यावशेष व्ययमागमन्ति ॥ २१ ॥

रमा ६ स्थियां १४ गजाः = जेतवन्त्र १७ नन्देन्दवस्थथा ।

स्वर्गा २१ दिशः १० क्रमात् ज्ञेया ख्यादीनां भ्रूवा डमे ॥ २२ ॥

टीका—जिस राशि का लाभ या व्यय बनाना हो उस राशि के स्वामी के ध्रुवाङ्क में उस वर्ष के वर्षण (राजा) का ध्रुवाङ्क जोड़ देना उसको ३ से गुणा कर ५ जोड़ देना और ६५ का भाग देना शेष जो बचे वह लाभ होता है। लाभ को उसे गुणा कर ५ जोड़ देना और ६५ का भाग देना शेष जो बचे वह व्यय (सर्च) होता है।
 सूर्यादिग्रहों का ध्रुवाङ्क सू०=६। च०=६५। म०=८। बु०=१७। वृ०=१८। शु०=२१।
 ज०=१०। ये सूर्यादि ग्रहों के ध्रुवाङ्क हैं ॥ २१-२२ ॥

अथ युगानां प्रमाणम्-

द्वात्रिंशद्भिः सहस्रैश्च युक्तं तत्सचतुष्टयम् ।

प्रमाणं कलिवर्षाणां प्रोक्त पूर्वेर्भहर्षिभिः ॥ २३ ॥

युगानां कृतमुख्यानां क्रमान्मात्रं प्रजायते ।

कलेर्मानि क्रमान्निधनं चतु ४ स्त्रि ३ द्वि २ मितैस्तथा ॥२४॥

टीका--पूर्व आचार्यों ने ४३२००० वर्ष कलियुग का प्रमाण कहा है इसको ४-३ और २ में गुण देने से हमसे सत्ययुग, त्रेता और द्वापर का प्रमाण हो जायगा ॥ २३-२४ ॥

ऋतुप्रकरणम् ।

अयन-

शिशिरपूर्वऋतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदाऽमरम् ।

भवति दक्षिणमन्य ऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सः ॥ २४ ॥

टीका-शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म इन तीनों ऋतुओं में सूर्य की गति उत्तर दिशा को होती है, इसको उत्तरायण कहते हैं, यही देवताओं का दिवस है और वर्षा, शरद, हेमन्त इन तीन ऋतुओं में सूर्य की गति दक्षिण को होती है, इसको दक्षिणायन कहते हैं, यही देवताओं की रात्रि है ॥ २४ ॥

अयनों में कर्म-

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबन्धदीक्षाः ।

सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥ २५ ॥

टीका-गृहप्रवेश, देवप्रतिष्ठा, विवाह, मुण्डन, उपनयन, दीक्षा सब शुभ कर्म उत्तरायण में करने चाहिये और सब निन्द्यकर्म दक्षिणायन में करने योग्य है ॥ २५ ॥

संक्रान्ति अनुसार ऋतु-

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्पट्टवः स्युः शिशिरो वसन्तः ।

ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्द्रुमेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः ॥ २७ ॥

टीका-मकर आदि से लेकर दो राशि जब सूर्य भोगता है तब एक ऋतु होती है उसी प्रकार से जब सूर्य १२ राशि भोगता है तब ६ ऋतु होती है ॥ २७ ॥

तथा मतान्तर से ऋतु-

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्यृतवश्च षट् ।

दक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति देवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ २८ ॥

टीका-चैत्रादिक दो दो मास में एक एक ऋतु होती है इस प्रकार से १२ मास ६ ऋतु होती है । ये दक्षिण देश में देव, पितृ कर्म में प्रसिद्ध है ॥ २८ ॥

१ चैत्र	}	शिशिर ऋतु १	७ कर्क	}	वर्षा ऋतु ४
२ मृगशिरा			८ मिथु		
३ ऐश्विन	}	वसन्त ऋतु २	९ कन्या	}	शरद ऋतु ५
४ मघा			१० तुला		
५ ज्येष्ठ	}	ग्रीष्म ऋतु ३	११ अश्वि	}	हेमन्त ऋतु ६
६ अश्लेषा			१२ धन		

मास-पर-पञ्चमास-राशि ।				मास-पञ्चमास ।			
मास-पर-पञ्चमास-राशि ।				मास-पञ्चमास ।			
१. २०	१०	१. २०	१. २०	१. २०	१०	१. २०	१. २०
२. २०		२. २०	२. २०	२. २०		२. २०	२. २०
३. २०		३. २०	३. २०	३. २०		३. २०	३. २०
४. २०		४. २०	४. २०	४. २०		४. २०	४. २०
५. २०	१०	५. २०	५. २०	५. २०	१०	५. २०	५. २०
६. २०		६. २०	६. २०	६. २०		६. २०	६. २०
७. २०		७. २०	७. २०	७. २०		७. २०	७. २०
८. २०		८. २०	८. २०	८. २०		८. २०	८. २०

मासपद-रम्य

पर्यागणे परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ।

मा राशि स्रक्माख्या स्यान्मामर्त्ययनद्वयने ॥ २६ ॥

टीका--पर्यागणिका नाम एक जिस उत्तर की राशि में सूर्य जाता है उसे सत्कान्ति कहते हैं । इसका १२ सत्कान्ति, मास, पाव, पञ्चन, इन, समो का गणना होता है ॥ २६ ॥

दर्शविधि माममुगन्नि चान्द्रः सौर तथा भास्करराशिभोगात् ।

त्रिशदिन सावनमञ्जमायाः नाक्षत्रमिन्दोर्मगणाश्रयाच्च ॥ ३० ॥

विवाहादौ स्मृतः सौरौ यज्ञादौ सावनः स्मृतः ।

पितृकार्येषु चान्द्रः स्यादार्क्ष दानव्रतेषु च ॥ ३१ ॥

टीका--मास ४ चार प्रकार के होते हैं । एक चान्द्रमास जो शुक्ल प्रतिपदा से अमा-वास्या पर्यन्त होता है, दूसरा सोममास जो सूर्य के एक राशि भागने से होता है, तीसरा सावनमास जो तीस दिन का होता है और चौथा नाक्षत्रमास जो चन्द्रमा के सत्ताहसों नाक्षत्रों में फिरने से होता है, जैसे चित्रा से स्वाती तक चैत्र, विशाखा से अनुराधा तक वैशाख, ज्येष्ठा से मूलतक ज्येष्ठ, पूर्वाषाढ़ से अभिजित तक आषाढ़, श्रवण से शतभिषा तक श्रावण, पूर्वाभाद्रपद से रेवती तक भाद्रपद, अश्विनी से भरणी तक आश्विन, कृत्तिका से रोहिणी तक कार्तिक, मृगशिरा से पुनर्वसु तक मार्गशीर्ष, पुष्य से आश्लेषा तक पौष, मघा से पूर्वाफल्गुनी तक माघ और उत्तराफल्गुनी से हस्त तक फाल्गुन मास होता है । ये भी प्रायः ३० दिन के होते हैं इनमें साभिजित गणना है ॥ ३० ॥ विवाहादि कार्यों में सौरमास लेना, यज्ञादि में सावन, पितृकार्यों में चन्द्र और दान तथा व्रत में नाक्षत्र मास लेना ॥ ३१ ॥

मासों के नाम तथा सूर्य देवता और देवी -

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः ।

तथेप ऊर्जश्च सहाः सहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण ॥ ३२ ॥

अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ।

चैत्रमासे तु वेदाङ्गो भानुर्वैशाख एव च ॥ ३३ ॥

ज्येष्ठमासे तपेदिन्द्र आपादे तपते रविः ।

गभस्तिः श्रावणो मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥ ३४ ॥

सुवर्णरेताः श्वयुजि कार्तिके च दिवाकरः ।

मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः ॥ ३५ ॥

इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ।

केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥ ३६ ॥

माधवं माघमासे तु गोविन्दमथ फाल्गुने ।

चैत्रे विष्णुं तथा विद्यादेशाखे मधुसूदनम् ॥ ३७ ॥

त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आपादे वामनं विदुः ।

श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रे ॥ ३८ ॥

आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जं दामोदरं विदुः ।

मार्गशीर्षे विशालानीं पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥ ३९ ॥

माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ।

चैत्रे मासे रमा देवी वैशाखे माहिनी तथा ॥ ४० ॥

पद्मावती ज्येष्ठमासे तु आपादे कमलेति च ।

कान्तिमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ ४१ ॥

पद्मावती आश्विने तु गङ्गा देवी तु कार्तिके ।

१	सूर्या	सूर्या
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२

वारानुसार मासफल—

पञ्चार्कवासरे रोगाः पञ्च भौमे महद्भयम् ।

— पञ्चार्कवारा दुर्मिच्छां शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥ ४२ ॥

टीका—एक महाने में पाँच रविवार पढ़ें तो रोग, ५ सोमवार पढ़ने से अश्वि भय, ५ शनिवार से दुर्भित और शेष चार पढ़ें तो वे शुभदायक होते हैं ॥ ४२ ॥

पूर्वापर मासदत्तं हि पञ्चौ पूर्वापरौ तौ सितनालसंज्ञौ ।

पूर्वस्तु देवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृणो सितपञ्चमोतः॥४३॥

आदौ शक्तः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णोऽपि मासके ॥

टीका—शुक्लप्रतिपदा से पौर्णमासी तक शुक्लपक्ष और कृष्णप्रतिपदा से अमावास्या तक कृष्णपक्ष होता है । शुक्लपक्ष देवताओं का और कृष्णपक्ष पितरों का होता है ॥४३॥ दूसरा भेद—सुदी पञ्चमी से लेकर वदी पञ्चमी तक शुक्लपक्ष जानिये उसमें पहिले शुक्लपक्ष तदनन्तर कृष्णपक्ष होता है । जो अमावास्या को मास पूरा होता हो तो प्रथम कृष्णपक्ष उसके पाँछे शुक्ल और कदाचित् पूर्णिमा को मासान्ता होता ये दोनों पक्ष देशानुसार प्रचलित है ।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।

घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ ४४ ॥

टीका—३२ महीने १६ दिवस और ४ घड़ी बीत जाने पर अधिक मास का सम्भव होता है ॥ ४४ ॥

प्रकारान्तर से अधिमासानयन—

शाके वाणकराङ्गकैर्विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते

वेत्रे माधवकंजले शिवमिते ज्येष्ठेऽम्बरेऽन्वाष्टके ।

आषाढे नृपतौ शरे च नमसि भाद्रे च विश्वाङ्गके

नेत्रे चाश्विनकंऽधिमास उदितश्शेषेऽन्यके स्यान्न हि ॥४५॥

टीका—वर्तमान शक के अङ्क में ६२५ घटाओ और शेष अङ्क में १६ का भाग दो जो शेष ३ रहे तो अधिक चैत्रमास, ३१ शेष रहे तो वैशाख ०० वा ०८ बचे तो ज्येष्ठमास १६ शेष बचे तो आषाढमास, ५ बचे तो आश्विनमास १३ शेष रहे तो आश्विनमास और ० शेष रहे तो आश्विनमास की वृद्धि जानना और अङ्क शेष १६ का भाग अधिक नहीं होता ॥ ४५ ॥

अधिमास और क्षयमास का लक्षण—

असंक्रान्तिमासेऽधिमासः स्फुटं स्याद्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्

क्षयः कान्तिकादित्रयं नान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥४६॥

टीका—जो रा अमास्यमास के बीच में संक्रान्ति न हो तो वह अधिक मास है । ४६॥ जो रा अमास्यमास के बीच में कदाचित् दो संक्रान्ति हो तो क्षयमास जानना । ४७॥ जो रा अमास्यमास के बीच में दो संक्रान्ति हो तो क्षयमास जानना । ४८॥ जो रा अमास्यमास के बीच में दो संक्रान्ति हो तो क्षयमास जानना । इन सब प्रयोगों का आशय ग्रहण के समय अमास्यमास के बीच में दो संक्रान्ति होने के कारणों से देकर लेना आदित्रय ॥ ४६ ॥

सं. प्र. सं.		सं. प्र. सं.		सं. प्र. सं.	
१	सं. १८४१	सं. १८४२	सं. १८४३	सं. १८४४	सं. १८४५
२	सं. १८४६	सं. १८४७	सं. १८४८	सं. १८४९	सं. १८५०
३	सं. १८५१	सं. १८५२	सं. १८५३	सं. १८५४	सं. १८५५
४	सं. १८५६	सं. १८५७	सं. १८५८	सं. १८५९	सं. १८६०
५	सं. १८६१	सं. १८६२	सं. १८६३	सं. १८६४	सं. १८६५
६	सं. १८६६	सं. १८६७	सं. १८६८	सं. १८६९	सं. १८७०
७	सं. १८७१	सं. १८७२	सं. १८७३	सं. १८७४	सं. १८७५
८	सं. १८७६	सं. १८७७	सं. १८७८	सं. १८७९	सं. १८८०
९	सं. १८८१	सं. १८८२	सं. १८८३	सं. १८८४	सं. १८८५
१०	सं. १८८६	सं. १८८७	सं. १८८८	सं. १८८९	सं. १८९०
११	सं. १८९१	सं. १८९२	सं. १८९३	सं. १८९४	सं. १८९५
१२	सं. १८९६	सं. १८९७	सं. १८९८	सं. १८९९	सं. १९००
१३	सं. १९०१	सं. १९०२	सं. १९०३	सं. १९०४	सं. १९०५
१४	सं. १९०६	सं. १९०७	सं. १९०८	सं. १९०९	सं. १९१०
१५	सं. १९११	सं. १९१२	सं. १९१३	सं. १९१४	सं. १९१५
१६	सं. १९१६	सं. १९१७	सं. १९१८	सं. १९१९	सं. १९२०
१७	सं. १९२१	सं. १९२२	सं. १९२३	सं. १९२४	सं. १९२५
१८	सं. १९२६	सं. १९२७	सं. १९२८	सं. १९२९	सं. १९३०
१९	सं. १९३१	सं. १९३२	सं. १९३३	सं. १९३४	सं. १९३५
२०	सं. १९३६	सं. १९३७	सं. १९३८	सं. १९३९	सं. १९४०
२१	सं. १९४१	सं. १९४२	सं. १९४३	सं. १९४४	सं. १९४५
२२	सं. १९४६	सं. १९४७	सं. १९४८	सं. १९४९	सं. १९५०
२३	सं. १९५१	सं. १९५२	सं. १९५३	सं. १९५४	सं. १९५५
२४	सं. १९५६	सं. १९५७	सं. १९५८	सं. १९५९	सं. १९६०
२५	सं. १९६१	सं. १९६२	सं. १९६३	सं. १९६४	सं. १९६५
२६	सं. १९६६	सं. १९६७	सं. १९६८	सं. १९६९	सं. १९७०
२७	सं. १९७१	सं. १९७२	सं. १९७३	सं. १९७४	सं. १९७५
२८	सं. १९७६	सं. १९७७	सं. १९७८	सं. १९७९	सं. १९८०
२९	सं. १९८१	सं. १९८२	सं. १९८३	सं. १९८४	सं. १९८५
३०	सं. १९८६	सं. १९८७	सं. १९८८	सं. १९८९	सं. १९९०
३१	सं. १९९१	सं. १९९२	सं. १९९३	सं. १९९४	सं. १९९५
३२	सं. १९९६	सं. १९९७	सं. १९९८	सं. १९९९	सं. २०००

संवत्सर फल	नाम सं० अष्टौ के जो जेयफल	अधिपति	अधिक मास	सूर्यचन्द्रग्रहण	प्रभवादि संवत्सरों के फल ।
१५ शेष ३ सम	सं० १६४६ शा० १=१४ क्रोध	विष्णु १= विश्वेदेवा	जेय १५ नास्ति	वै शु १५ च स् १५ ४= का शु १५ च स् ३२ मो. ४०।४४	त्रैध्वदेवखिलालोका क्रोधतामपरायणः ऽति दीर्घेण सततं मध्यसत्यार्धशृण्वः ॥
१६ जेय ५ दुर्भिक्ष	सं० १६५० शा० १=१५ विश्वावसु	वि० १६ विश्वेदेवा	अ प. ६ शेष १६	फा शु १५ च स् ३१ ३१ नो ३५ च क ३० सू स् १।२७ मो ७।१३	अग्ने विश्वावसो शश्वदघोरारोगाधरायुक्त वस्यार्धवृष्टयो मध्याभूपाला नातिभूतयः ।
१७ जेय ० पीडा	सं० १६५१ शा० १=१६ पराभव	वि० २० विश्वेदेवा	जेय नास्ति	नास्ति	भराभवाब्दे राजास्यात् स पर सह शत्रुभिः ग्रामयज्ञादसस्यानि प्रभूतान्यन्यपृथग्यः ।
१८ जेय ० सम	सं० १६५२ शा० १=१७ प्लवङ्ग	विष्णु शिव १ चन्द्रमा	शेष १८ नास्ति	फा शु. १५ च. प्र स् ५५।४ मो ४५।५४	प्लवङ्गाब्दे मध्यवृष्टो रोगचोराकुला धरा। अन्योन्यसमरेभूपाः शत्रुभिर्हृतभूमयः ।
१९ जेय ४ दुर्भिक्ष	सं० १६५३ शा० १=१८ शीलक	शिव ० अधिपति चन्द्रमा	ज्येष्ठ ०	०	शीलकाब्दे त्वीतिभीति प्रजाक्षोभयपाहम् न्यापिवद्धं तैलोकः समधान्योर्ध्वशुभिः ।
२० जेय ४ सम	सं० १६५४ शा० १=१९ गोमय	शिव ३ चन्द्रमा	शेष १ नास्ति	पौ. शु १५ च स् ३० मो ३६ क ३० श सू स् १३।११ मो २०।१०	गोमयाब्दे खिलालोका बहुसत्यार्धशुभिः नैरिणी धराधोशा विप्राश्चो यपरंपरा ।
२१ जेय १ सम	सं० १६५५ शा० १=२० माधायण	शिव ४ अधिपति चन्द्रमा	आश्विन २ ०	अ. १५ च स् ५० मो ३६ म र्ग. भोचं स् ४८।२८ मो १५।२५	पावारणाब्दे वृष्टियुद्धे भय च माणै मनः ज्येसंपद्धराधोशा प्रजाः स्यु स्वस्थचेतसः ॥
२२ जेय १ सम	सं० १६५६ शा० १=२१ विं ३५	शिव ५ चन्द्रमा	चैत्र ३ राम्भर अन्त मे	ज्य. १५ च प्र स् ३९ मो ३५।३१ मा. १५ श स् ५३ मो ५७।२६	विरोधकृद्धतरे तु परस्परविरोधिनः । सर्वे जनपदाश्चैव मध्यसत्यार्धशृण्वः ॥
२३ जेय १ सम	सं० १६५७ शा० १=२२ प ३५	शिव ६ अग्नि	जेय ० ० ४	०	भूपाहवो महारोगो मध्यसत्यार्धशृण्वः । दुःखिनो जन्तवः सर्वे वत्सरे परिधापितः ।
२४ जेय १ सम	सं० १६५८ शा० १=२३ प ३५	शिव ७ अग्नि	० ० ५	१५ म. ३० च स् ७। ३२ मो १०।२७	प्रमाथीवत्सरे तत्र मध्यसत्यार्धशृण्वः । प्रजानां जीवने दुःखं समत्सर्गं क्षितौ सराः ।
२५ जेय १ सम	सं० १६५९ शा० १=२४ प ३५	शिव ८ अग्नि	० ० ६	१५ च यै १५ मोन स् ४०।२० मोन ४०।२८	ग्रान्धाब्दे खिलालोका सवदानन्दनयः । राजानः सुराभिः सर्वे बहुसत्यार्धशृण्वः ॥
२६ जेय १ सम	सं० १६६० शा० १=२५ प ३५	शिव ९ अग्नि	० ० ७	१५ च यै १५ मोन स् ४०।२० मोन ४०।२८	सन्वकायैरता सर्वे मध्यसत्यार्धशृण्वः । गत्ताब्दे खिलालोका राजागर्भान्तिष्ठतः ।
२७ जेय १ सम	सं० १६६१ शा० १=२६ प ३५	शिव १० अग्नि	० ० ८	१५ मो गु १।५ स् ५ ००।३० मो ६।१६	नगाब्दे मध्यसत्यार्धशृण्वः प्रजावराः । उपसंजो नमज्जाता भूतिस्तरनीयः ॥
२८ जेय १ सम	सं० १६६२ शा० १=२७ प ३५	शिव ११ अग्नि	० ० ९	१५ मो गु १।५ स् ५ ००।३० मो ६।१६	पिहलाब्दे त्वीतिभीतिर्मयसत्यार्धशृण्वः । राजानो विद्वान्नाभुज्जदंशुनादीन् ।

[illegible]

वत्सर फल	नाम सं. अंशों के शे. फ. व. से	अधि- पति	अधिक मास	सूर्य चन्द्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरों के फल ।
४३ तेज ५ मम	म० १६७७ शकः १८४२ अहिंरा.	ब्रह्मा बृहस्पति ६	५ श्रावण	च म शु. १५ वै. स्प. ५८३ मो. ६१७ आ. शु १५ बु. स्प. ३२।६	अन्न वं भुज्यते शश्वज्जनरतिविमि सह। अहिंराब्देऽखिलालोकाभूपाश्चकलहोत्सुकाः ।
४४ मम ५ मि ७	म० १६७८ शकः १८४३ मंमुग	ब्रह्मा बृहस्पति ७	६ नास्ति	आश्वि. १५ र स्प. ४६ ३१ मो १७।४६ चन्द्र ग्रहण	श्रीमुखाब्देऽखिलाधात्रीवहुसस्यार्धसंयुता । अश्वरे निरता विप्रा वीतरोगाः दिवैरिण ॥
४५ म ७ मि ७	म० १६७९ शक १८४४ भाब	ब्रह्मा बृहस्पति ८	७ नास्ति	आश्वि कृ ३० गु. सु स्प ५६ मो १०।११ ३० आषाढ	भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्यस्यस्यार्धवृष्टया । राजानोयुद्धनिरतास्तथापि सुखिनो जनाः ॥
४६ म ७ मि ६	म० १६८० शक १८४५ सुग	ब्रह्मा शुक्र ९	८ ज्येष्ठ	माघ १५ बु राधास ५।४७ स्प ३२।३८ मो. ४१।४८ चं. म	प्रभूतपयसो गावः सुखिनस्सर्वजन्तवः । सर्वकामकियायुक्तो युवाब्दे युवतीजनः ॥
४७ म ४ १०	म० १६८१ शकः १८४६ भावा	ब्रह्मा बृहस्पति १०	९ नास्ति	आ. १५ शु. ५० स्प मो. ५५ रा. मा. १५ र स्प. ४६।१ मो. ३३।५ च. म	धातृवर्षेखिलाः क्षेमशाः सदायुद्धपरायणाः । सम्पूर्णधरणीभाति बहुसस्यार्धवृष्टिभिः ॥
४८ म ५ मि ११	म० १६८२ शक १८४७ हस्तर	ब्रह्मा शुक्र ११	१० नास्ति	आ १। सो हृष्टि ना माघ ३० गु स्प. १० मो १५।२३ सु. ग्रहण	श्वराब्देखिलाजन्तुधात्री धात्रीव सर्वदा । पोषत्यतुल्यवानफलमापेक्षु मोहिभिः ॥
४९ म ५ मि १२	म० १६८३ शक १८४८ हस्तर	ब्रह्मा शुक्र १२	११ वैशाख	० ० ०	अतीतिरतुलावृष्टिर्बहुधान्याख्यवत्सरे । त्रिविधो धान्यनिचयः सुरापूर्णखिला धरा ॥
५० म ५ मि १३	म० १६८४ शक १८४९ प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १३	१२ नास्ति	० ० ०	नमुनातिपयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम् । मयमावृष्टिर्धर्षच नूनमब्दे प्रमायिनि ॥
५१ म ५ मि १४	म० १६८५ शक १८५० प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १४	१३ नास्ति	ज्ये शु १। र ममन अ शुक्रि ३० स्प १६ ३७ मो २१।२१ च. सु	अकमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रान्तभूमय । सर्वत्र सर्वदामेधा सुयान्ति प्रचुरं जलम् ॥
५२ म ५ मि १५	म० १६८६ शक १८५१ प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १५	१४ नास्ति	आ ३० शु र ममग्रहण नास्ति	श्याब्दे निखिलाः क्षेमशा युद्धयन्ते शृपभा इति । विद्याप्रवृत्तिविप्रेन्द्राः पूज्यन्ते गतशुभिः ॥
५३ म ५ मि १६	म० १६८७ शक १८५२ प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १६	१५ नास्ति	० ० ०	वनोद्योगप्रमत्ताः वनविघ्नानि गलाधरा । निराकृतानि खिलाः शश्वज्जनान्ताख्यवत्सरे
५४ म ५ मि १७	म० १६८८ शक १८५३ प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १७	१६ नास्ति	१। स्प ४८।३ मा ५३ मा १ स्प ६०।५। ६५ ३१ १५ ११।५ मो. ३२२	युवानुक्षेपे नून भूमिपाना च विप्रद । नानि भूमिपुगम्याः भयदुरभुजगमाः ॥
५५ म ५ मि १८	म० १६८९ शक १८५४ प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १८	१७ नास्ति	म. १। स्प. ० ६६०।१। ३। २। ५। चन्द्रग्रहण	स्यचिन्तितानि शान्तिमान् प्रतिपन्नमा । भूमिर्दामेधनाय स्याद्देवययनारणाब्दे ॥
५६ म ५ मि १९	म० १६९० शक १८५५ प्रभात	ब्रह्मा शुक्र १९	१८ नास्ति	मा २० स्प ७५।५। ३। ३। ६५ २० स्प ५। ५। ३। ३। ६५ २० स्प ५। ५।	प्रा ३। ६५ २० स्प ५। ५। ३। ३। ६५ २० स्प ५। ५। ३। ३। ६५ २० स्प ५। ५।

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००

मिह्रान्तशिरामणि में

क्षयमास-विचार—

गताव्यधिनन्दैमिते शाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथाङ्गाक्षसूर्यः ।
गजाद्रयग्निभूमिरनथा प्रायशोऽयं कुवेदेन्दुवर्षैः क्वचिद्गोकुमिश्च ४७ ॥

टीका—पहिले जिस सवत् में क्षयमास पड़े तो उसके १४१ वर्ष पीछे फिर होता है । इसमें आगे १६ वर्ष में या इसके बाद या इसके मध्य में जो ६४७ के संवत् में क्षयमास हों तो फिर आगे १११४, १२१६, १३७८ में पड़ेगा और इसके पीछे १४१ और १६ वर्ष के अन्तर से क्षयमास सम्भव जानना योग्य है ॥ ४७ ॥

तिथिप्रकरण—

मासमाचान्द्रम यावद्गणयेत्तावदेव तु ।

यावन्ति गणनाद्गानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ ४८ ॥

टीका—चन्द्रादि बारह मासों के नाम और उन नामों के नक्षत्र से मासनक्षत्र जानिये । चित्र का चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफल्गुनी । परन्तु पौर्णमासी महीने से गिनती बराबर होती है ॥ ४८ ॥

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ।

तृतीयाऽऽरोग्यदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥ ४९ ॥

शुभा तु पञ्चमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा ता ।

सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनो ॥ ५० ॥

नवमी द्रव्यदा दशमी तथा ।

एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥ ५१ ॥

त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोष्ण चतुर्दशी ।

पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावास्याऽशुभा तिथिः ॥ ५२ ॥

वृद्धश्चाथ सुमङ्गलाथ सबला प्रोक्ता खला श्रीमती

कीर्तिमित्रप्रदा तथा बलवती तूष्ण्या क्रमाद्धर्मिणी ।

नन्दाख्या हि यशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्या तिथि-

नाम्ना तुल्यफला क्रमात्पतिपदा देशस्त्वमासंज्ञकः ॥ ५३ ॥

नन्दामिते सोमसुते च भद्रा कुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ।

पूर्णा गुरौ नाश्च मृताः कुजार्कसिताम्बुजे ज्ञे च गुरौ शनिः स्युः ॥ ५४ ॥

स्वामी—

तद्विविग्निना गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः ।

वृगन्निना विष्णुदरी ममश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ॥ ५५ ॥

अमायाः पितरः प्रोक्तामिथीनामधिपाः क्रमात् ।

संज्ञा—

नन्दा च भद्रा च जया रिक्ता पूर्णानि सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ।

अतिदुःखेष्टर नाश्च गुरोर्ने कृणो भवन्त्युत्तममध्यहीनाः ॥ ५६ ॥

वर्जित—

इत्यादि वृद्धान्नानि त्वणां वर्ज्यं तिलाम्लं तथा

नेत्रं चामलकं द्विप्रवमना योगं कप त्वान्त्रकम् ।

निधनमप्य मन्त्रिका फलमयो वृन्ताकर्मज्ञं मधु

द्वयं स्वामन स्वाम्यतिपदादिष्वेवमाशङ्क्य ॥ ५७ ॥

नन्दासु चित्रासववारतुतन्त्रनत्राद् कुवात तथैव नृत्यम् ।
 विवाहभूपाशकटाच्ययाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ ५८ ॥
 जयासु सङ्ग्रामवल्लोपयोगिकार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि ।
 रिक्तासु विद्विड्वधवातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च याति सिद्धिम् ॥ ५९ ॥
 पूर्णासु माङ्गल्यविवाहयात्रासुपौष्टिकं शान्तिकर्म कार्यम् ।
 सदैव दर्शे पितृर्का युक्तं नान्यद्विद्व्याच्छुभमङ्गलानि ॥ ६० ॥

टीका--प्रतिपदा, पष्ठी और एकादशी को नन्दा तिथि कहते हैं, इसमें आनन्दादिक
 कर्म और देवताओं के उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य गृहस्थल बनाना, वस्तु मोल
 लेना, नृत्यसम्बन्धी गीत, वाद्य इत्यादि कर्म करने चाहिये । द्वितीया, सप्तमी और
 द्वादशी को भद्रा कहते हैं, इन तिथियों में विवाह, भूषण, गाड़ी और मार्गसम्बन्धी
 काम तथा पुष्टिक्रिया करना चाहिये । तृतीया अष्टमी और त्रयोदशी को जया कहते
 हैं, इनमें संग्राम और जेता के उपयोगों आदि शस्त्र धारण करना आदि निर्माण करना

चाहिये । चतुर्थी नवमी और चतुर्दशी ये रिक्ता हैं, इनमें शत्रुओं का वध, घातकर्म की निहि, विप्रयोग, शस्त्र इत्यादि उग्र कर्म करने चाहिये । पञ्चमी और पौर्णमासी इन तिथियों को पूर्णा कहते हैं, इनमें विवाह इत्यादि कर्म, यात्रा, शान्तिक तथा पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावस्या को पितृकर्म करने चाहिये ॥ ५८-६० ॥

वारों के नाम उनके स्वामी तथा फल—

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ।

शुक्रः शनैश्चरश्चैव वासराः परिकीर्तिताः ॥ ६१ ॥

शिवो दुर्गा गुहो विष्णुः कालब्रह्मेन्द्रसंज्ञकाः ।

सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ ६२ ॥

गुरुश्चन्द्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः ।

क्रान्तु क्रूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ६३ ॥

सूर्यश्चरः स्थिरश्चन्द्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः ।

लघुर्जावो मृदुः शुक्रः शनिस्तीक्ष्णः समीरितः ॥ ६४ ॥

टीका—इन श्लोकों की टीका चक्र में देखो ।

ब्राह्मणों जीवगुणों च जत्रियों सोमभास्करों ।

सोमसौम्यों विशों प्रोक्तों राहुमन्दों तथान्त्यजों ॥ ६६ ॥

टीका—शुक्र शुक्र ये ब्राह्मण, मङ्गल रवि ये क्षत्रिय, बुध, चन्द्र ये वैश्य और राहु, केतु और शनि ये तीर्थन शूद्र ॥ ६६ ॥

ग्रहों का वर्ण—

रक्तावङ्गारकादित्यों श्वेतों शुक्रनिशाकरो ।

गुरुसौम्यों पीतवर्णों शनिराहसितों शुभौ ॥ ६७ ॥

टीका—मङ्गल और सूर्य इनका रङ्ग लाल, चन्द्रमा और शुक्र इनका रङ्ग श्वेत, गुरु और बुध इनका रङ्ग पीत, शनि राहु और केतु इनका रङ्ग कृष्ण है ॥ ६७ ॥

वारों के अनुसार कर्म

रविवार के कर्म—

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा गोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ।

सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपरायादि रवौ विद्ध्यात् ॥ ६८ ॥

टीका—राज्याभिषेक, गीत, वाद्य, यानकर्म, राजसेवा, गाय, बैल का लेना देना, दहन, यज्ञादि, मन्त्र उपदेश लेना देना औषधि का लेना, शस्त्र प्रारम्भ, सोना, ताँबा,

उन वस्त्र, चर्म, काष्ठ लेना, युद्ध प्रसङ्ग, और खरीदना बेचना ये कर्म रविवार को करने चाहिए ॥ ६८ ॥

सोमवार के कर्म—

शङ्खाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्याम्बुविभूषणाद्याः ।

गीतकृतुजीरविकारशृङ्गीपुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥ ६१ ॥

टीका—शुद्ध, कमल, मोती, रूपा, ऊख, भोजन, स्त्रीभोग, वृद्ध, जलादि कर्म, यत्नद्वारा, गाना, यज्ञादि, गोरख, गाय, भैंस, सीङ्ग कार्य, पुष्प, वस्त्र इत्यादि सोमवार को ध्यानद्वारा करने चाहिए ॥ ६६ ॥

भौमवार के कर्म—

भेदानृतगतेयविपाग्निशस्त्रव्याभिघाताहवशाव्यदम्भान् ।

मेनानिवेशकरधातुहमप्रवातरक्तानि कुजे विदध्यात् ॥ ७० ॥

टीका—मेद करना, अनृत, विष, अग्नि, शस्त्र, वध, नाश, संग्राम, कपट, दम्भ, गंगा का पड़ाव, गानि, धातु, सुवर्ण, मृंगा, रत्न स्नाय ये कर्म मङ्गल का करने चाहिये ॥ ७२ ॥

बुधवार के कर्म—

नैपुण्यपुनराध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवा लिपिलेखनानि ।

कायनयुक्तिमन्ध्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः॥७१॥

अभ्यास-प्राप्त्यर्थ, सुख, अध्ययन, कला, शिल्प शास्त्र, सेवा, लिखना, चित्र
कला, वाद्य-विद्या, मुद्रण, युक्ति-मेल करना, व्यायाम और वाद करना, ये कर्म
प्राप्त्यर्थक्य-साधन ॥ ७६ ॥

गुणगार के कर्म—

दर्शयित्वा तं शिष्यं तत्र विद्यामाप्नुयते माध्ववेण्मयात्राः ।

मध्यममेव यविभृगादि कार्यं विदुःयास्ममन्दिवार । ७२॥

॥ ५२ ॥

लोहाऽभर्षास्यत्रपुण्यश्रद्धासपापानुत्तरेयविषाक्यविद्याम् ।

गृहप्रवशद्विषयन्धर्माज्ञा स्थिर च कर्मार्कसुतेऽहि कुर्यात् ॥७४॥

टीका--लोहा, पत्थर, लोहा जलना : रर पाप, पाप, अनुत्त भाषण, चारी, विष,
विषा पातना, गृहप्रवश, धर्माज्ञा जलना सन लेना ।। र स्थिर कर्म इत्यादि शक्तिवार
का करन चादिष ॥ ७४ ॥

वारो के देवता अधिदेवता और कृत्य--

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेन्द्र-

कालाः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणाम् ।

बह्वयगुभूमिहरिशक्रशचीविरञ्चि-

स्तेषां पुनर्मुनिवरेरधिदेवताश्च ॥ ७५ ॥

टीका--शिव, पार्वती, पटानन, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, काल ये ७ क्रम से सूर्यादिक
वारो के देवता जनना और अग्नि, जल, गूमि, हरि, इन्द्र, इन्द्राणी, ब्रह्मा ये ७ सूर्या-
दिक वारो के अधिदेवता जानना ॥ ७५ ॥

विचार करने का काल परिमाण--

पतङ्गसूनोर्दिवसाधिपत्य निशाप्यहश्चैव तु तिग्मभानोः ।

रात्रिद्वयं चैवदिनं च सोमे शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ ७६ ॥

टीका--शूनैश्चर से काल का प्रमाण दिन रात्रि अर्थात् अष्टग्रहर का करना
चाहिये-और सूर्य से दिन चार इहर वा कहना और चन्द्र मा से दो रात्रि एक दिन

का कहना । और शेष ग्रहों से उदय प्रवृत्ति अर्थात् उदय से आठ प्रहर का काल प्रमाण करना चाहिये ॥ ७६ ॥

दोषादोषमाह—

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येऽयदिवाकराणाम् ।

दिवा शराङ्कार्कजभूसुनानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ ७७ ॥

टीका—गुरु, शुक्र, रवि, इन तीन वारों को रात्रि में दोष नहीं है और सोम, शनि, मङ्गल, इन तीन वारों को दिन में दोष नहीं मानना । और बुधवार को सर्वत्र निन्दित जानना ॥ ७७ ॥

कृत्य—

गोमगोम्यगुरुगुक्रयासरास्सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ।

भानुगोमशनिवामरे च वै प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति ॥ ७८ ॥

टीका—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में सब काम सिद्धि जानना और रवि, मङ्गल, शनि इनमें उक्त कार्यमात्र की सिद्धि जानना ॥ ७८ ॥

तेन लगाने में वारविचार—

भानुर्मास क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डमृनु-
 मोर्मश्चाष्टौ वितरति शुभ बाधनः पञ्चमासान् ।
 सप्तैवेन्दुर्दशसुरगुरुः शुक्र एकादशेति
 प्रादुर्गर्गप्रवृत्तिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ॥ ८१ ॥

टीका—रविवार को क्षौर कराने से १ महीना आयुष्य नाश होती है। सोमवार
 का क्षौर कराने से ७ महीना आयुष्य नाश होती है। मङ्गल को ८ महीना आयुष्यनाश,
 बुधवार को ५ महीना आयु की वृद्धि, गुरुवार को १० महीना आयु की वृद्धि, शुकवार
 को ११ महीना आयु की वृद्धि और शनिवार को ७ मास आयु का नाश होता है।
 यह गर्ग जल नारद प्रवृत्ति मुनियों ने क्षौरकार्य से लिखा है ॥ ८१ ॥

विद्यारम्भ—

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्जेष्वभिशयार्थदाया
 कर्तुंश्चायुश्चिरमपि करोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ।
 नीहारांशौ भवति जडता पञ्चता भूमिपुत्रे
 द्वायासूनावपि च मुनयः कीर्त्तयन्त्येवमाद्याः ॥ ८२ ॥

टीका—गुरु, शुक्र, बुध, इन तीन वारों में विद्यारम्भ करने से उत्तम विद्या शीघ्रही
 प्राप्त होती है और चिरजीवी होती है। और रविवार मध्यम है। सोमवार को बुद्धि
 जड़ होती है। मङ्गल और शनिवार का विद्यारम्भ करने से मृत्यु होती है। यह
 नारद गर्गादि मुनियों ने कहा है ॥ ८२ ॥

नक्षत्र परिज्ञान—

द्विनिःश्रमासस्तिथियुग्विधूनो भरोषितः स्यादुडुशेषसंख्या ।

मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः कृष्णो द्विहीने मुनयो वदन्ति ॥ ८३ ॥

टीका—चैत्र से लेकर गत मास चलते मास सहित दूने कर और उनमें गत तिथि चलेने दिवस समेत मिलावे, मास दिन जोड़े और एक घटावे, शेष में सत्ताईस का भाग देने से जो शेष बचे वही नक्षत्र की संख्या जानिये, शुक्लपक्ष में एक और कृष्णपक्ष में दो घटावे फिर किया करे ॥ ८३ ॥

अश्विनो भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।

आर्द्र पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥ ८४ ॥

पूर्वाफल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः ।

हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ ८५ ॥

अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ।

पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ ८६ ॥

अभिद्राघननारायणं पूर्वाभाद्रपदा ततः ।

उत्तराभाद्रपदश्चैव गवत्येतानि भानि च ॥ ८७ ॥

गमन काल में शुभाशुभ नक्षत्र—

अश्विनो वृ शुभा प्रेक्षा भरणी नाशकारिणी ।

आर्द्रा नो कृत्तिका चोक्ता रोहिणी मिच्छदा बुधैः ॥ ८८ ॥

मृगः शुभलाज्यार्द्रा मध्यमस्तु पुनर्वसुः ।

इन्द्रः पुनः सार्वभवापूर्वाः गृहनाशमृत्युदाः ॥ ८९ ॥

उत्तराश्विद्रास्तु विद्यान्तर्मागुमप्रदाः ।

नक्षत्रविगाते तन्मुखे मैत्रं सर्वार्थमिच्छिदम् ॥ ९० ॥

ज्येष्ठा शुभं ज्येष्ठानेव ज्येष्ठानाशमृच्छिदम् ।

विद्वन्मन्त्रिणां च बुद्धिर्बुद्धिमुत्पदाः ॥ ९१ ॥

वायव्य वायव्या । ॥ ११ ॥ वायव्यं वायव्यम् ।

उत्तराभाद्रपदं । ॥ १२ ॥ उत्तराभाद्रपदा ॥ १२ ॥

नक्षत्रं नक्षत्रम्—

मेषा दमयसाग्निर्देवगिरिणा प्रोक्ता यद्वित्यङ्गिरः
मर्षाः कश्यपमुत्रो जगोऽयं मर्षो त्वष्टा मर्षाः क्रमात् ।
इन्द्रार्त्ता त्वष्टा मित्र इन्द्रनिर्गता तार च विश्वे विधि—
वैकुण्ठो वसुपाण्यजैरुच्यमानाहिवर्गान्यप्राभिधाः ॥ १३ ॥

नक्षत्रं नक्षत्रम्—

मृताग्नेयमवाहिर्देवमरणी सापाणिपूर्वात्रयम् ।
ज्योतिर्विदिरधोमुख इति नवदशानामिदं कीर्तितम् ।

तिर्यङ्मुख नक्षत्रम्—

ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरःपूषानुराधानितल—
त्वाष्ट्राख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येव च ॥ १४ ॥

ऊर्ध्वमुख नक्षत्रम्—

पुष्याद्री श्रवणोत्तरा शतमिषक्वाह्यविष्ठाह्वया-
न्यूर्ध्वाग्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यैवैतेषु च ॥ १५ ॥

ध्रुवरिधर नक्षत्रम्—

रोहिणीसहितमुत्तरात्रयं कीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ।

मृदु नक्षत्रम्—

त्वाष्टमित्रशशिपूषदैवतान्यामनन्ति मुनयो मृदून्यथ ॥ १६ ॥

लघु नक्षत्रम्—

अश्विनीगुरुभमर्कदैवतं सामिजिलघु चतुष्टयं मतम् ।

तीक्ष्ण नक्षत्रम्—

मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युलूपन्त्यथ च तीक्ष्णसंज्ञया ॥ १७ ॥

चर नक्षत्रम्—

वैष्णावत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुत च चरपञ्चकं त्विदम् ।

उग्र नक्षत्र—

पूर्विकात्रितयभान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ॥ १८ ॥

मिश्र नक्षत्र—

हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मिश्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ।

चरादि नक्षत्र—

चरं चलं क्रूरमुशान्ति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ।
जिघ्रं लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति ब्रुवन्ति ॥ १९ ॥

अन्धादिक नक्षत्रों की संज्ञा—

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ।
रोहिणीप्रप्रतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनः पुनः ॥ १०० ॥

नक्षत्रों के स्वरूप—

तुग्गमुत्तसद्वजं योनिरूपं क्षुराभं,
शकटयममथैणस्योत्तमाङ्गेन तुल्यम् ।गणिग्रहशरचक्रं भाति शालोपमं भं,
शयनमदृशमन्यत्र पर्यङ्करूपम् ॥ १०१ ॥दम्भाकागमनं च गौक्तिकसमं चान्यत्प्रवालोपमं
विद्वन् नो ग्गावत्स्थितं बलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ।मध्यमं गगनिकमेण मदृशं शय्यासमानं परं
संज्ञा निविज्जामवस्थितमनः शृङ्गानिभं व्यक्तिमत् ॥ १०२ ॥

विस्मिताभं च मृदुल्लभं वृत्तं ततोऽन्यद्यमलद्रयाभम् ।

परिचयः सुगन्तायुकाय अन्येवमश्वादिभचक्ररूपम् ॥ १०३ ॥

नक्षत्रों के नामों की संख्या—

सप्तविंशतिर्युक्तेन्दुस्तानिभूत-

सप्तविंशतिर्युक्तेन्दुस्तानिभूत-

सप्तविंशतिर्युक्तेन्दुस्तानिभूत-

सप्तविंशतिर्युक्तेन्दुस्तानिभूतः ॥ १०४ ॥

२०	ध्रुवण	सुखदा	विष्णु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	अधलो	वामनसम	४
२१	शतभिष	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	मन्दलो	मृदन्तसम	१००
२६	पूर्वाभाद्र	गृध्रदा	अर्जकपा	अधोमुखा	उग्र	क्रूर	मध्यलो	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा.	राक्षसा	अहिर्बु	ऊर्ध्वमुखा	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकर	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मुख	मृदु	मैत्र	अन्धलो	मृदन्तसम	३२

कार्यकार्य विचार ।

अधोमुख में—

वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातंनिधेरुद्धति

ज्यौद्युतविलप्रवेशगणितारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ।

टीका—यन्मोमुग नवत्र ये हैं । मूल, कुत्तिका, मघा, विशाखा, भरणी, आश्लेषा, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, इनमें वापी, कूप, ताल, गर्त और सारि मीरना, उग्र फाड़ना और रचना, जुआ खेलना, विलान्तःप्रवेश, गणितारम्भ ये क्रम करने कार्याणि ॥

तिर्यङ्मुख में—

यस्वेभोद्गुलायरासमृषोरभ्रादिदंष्ट्रीयुनी ।

गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ॥ १०५ ॥

टीका—तिर्यङ्मुख नवत्र ये हैं । ज्येष्ठा, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी, मृग, रेवती, अश्लेषा, पूर्वाषाढा, निषा इन नवत्रों में, मोटा, टाथी, ऊंट, भैंस, गधा, बैल, मेंढ़ा, सूअर, बकरी, गाय पाली में डालना, गन्त्री, यन्त्र, हल चलाना, तथा धमनादिक करने कार्याणि ॥ १०५ ॥

ऊर्ध्वमुख में—

प्रयातः पञ्चवर्षागमागृष्टप्राक्काग्न्यक्षोरगो

पञ्चागमतिर्द्विद्विक्तो नगपतेः पश्चाभिपेकादि च ॥

टीका—यन्मोमुग नवत्र ये हैं । ज्येष्ठा, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी, मृग, रेवती, अश्लेषा, पूर्वाषाढा, निषा इन नवत्रों में, मोटा, टाथी, ऊंट, भैंस, गधा, बैल, मेंढ़ा, सूअर, बकरी, गाय पाली में डालना, गन्त्री, यन्त्र, हल चलाना, तथा धमनादिक करने कार्याणि ॥ १०५ ॥

अधोमुख में—

यस्वेभोद्गुलायरासमृषोरभ्रादिदंष्ट्रीयुनी ।

गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ॥ १०६ ॥

नवग्रहोत्तर ग्रीष्म ऋतु नक्षत्र म—

परायभूषणवत्तारतौदधत्तानशिव्यगमनेषु सिद्धिदम् ।

भूतयज्ञनिधिमन्त्रसाधन भेदवन्धवयवकर्म चात्र तु ॥ १०७ ॥

टीका—परायभूषण, पुण्य, हस्त, 'गमिजिन्' इनको तत्तु नक्षत्र कहते हैं । इनमें दुकान स्थापना, भूषण धारण करना, शिव्य करना, दीपध्यापना, कार्यानां स्थलना, स्नानविष्ठा, शिल्पविष्ठा स्वीयना और भद्र भोग करना शुभ है । आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, मूल ये तीनों नक्षत्र । इनमें भूत साधनादिको की पीड़ा का निवारण करना, द्रव्य निष्कालना, मन्त्रसाधन, भेद, वन्धन, वध ये कर्म करने शुभ हैं ॥ १०७ ॥

चरनक्षत्र और उग्रनक्षत्र म—

दन्तिवाजिकरमादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ।

शाठ्यनाशविषघातवन्धनोत्साहशस्त्रदहनदिषु स्मृतम् ॥ १०८ ॥

टीका—पुनर्वसु, स्वाती, प्रवण, धनिष्ठा, शततारका ये चर नक्षत्र हैं । इनमें हाथी, घोड़ा अनेक प्रकार के वाहन रखना, वाग नै जाना, पालकी, रथ, गाड़ी आदि की सवारी करना शुभ है । सरणी, मघा, पूर्वाफल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा ये उग्र नक्षत्र हैं । इनमें शठता करना, नाश, विषघात, वन्धन, उत्साह, शस्त्र चलाना, जलाना आदि कर्म करना विहित है ॥ १०८ ॥

मिश्रनक्षत्र म—

स्वामिधानसमकर्मसाधने कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ।

टीका—शुक्लिका, विशाखा, भरणी ये मिश्र नक्षत्र हैं । इनमें नक्षत्रों के समान कार्य करने योग्य है ॥

नष्टवस्तु के विचारने की रीति

नक्षत्रों की लोचन संज्ञा—

अन्धके लभते शीघ्रं मन्दके च दिनत्रयम् ।

मध्यके च चतुःपष्ठिर्न प्राप्नोति सुलोचने ॥ १०९ ॥

टीका—अन्ध नक्षत्र में गई वस्तु शीघ्र मिलती है और मन्दलोचन में जाने से दिन पीछे प्राप्त होती है, मध्यलोचन नक्षत्र में वस्तु नष्ट हो तो ६४ दिवस पर्यंत मिल जाती है और सुलोचन में गई वस्तु कभी प्राप्त नहीं होती ॥ १०९ ॥

नष्ट वस्तु का दिग्ज्ञान—

अन्धके पूर्वतो वस्तु मन्दके दक्षिणे तथा ।

पश्चिमं मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥ ११० ॥

टीका—अन्ध नक्षत्र में नष्टवस्तु पूर्व दिशा में होती है और मन्द लोचन में नष्ट वस्तु पश्चिम में और मध्यलोचन में पश्चिम दिशा में और सुलोचन में गत वस्तु उत्तर दिशा में होता है ॥ ११० ॥

तृतीयविचार --

तिथिवार च नक्षत्र प्रदेखा समन्वितम् ।

दिवसव्यया ह्य चैव सप्तमिर्विमजेत्पुनः ॥ ११४ ॥

एकेन भूतले द्रव्य द्वितीये भागद्वयस्थितम् ।

तृतीये जलगन्धस्थमन्नरिक्ते चतुर्थके ॥ ११५ ॥

तुल्य पञ्चमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् ।

सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥ ११६ ॥

टीका--प्रश्न समय क तिथि वार वार गत नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करे इनमें प्रहर मिलावे। आठ से गुना करे और सात का भाग देने से जो शेष रहे उससे फल विचारें। एक शेष रहे तो जमीन पर, दो बचे तो वरतन में, ३ शेष रहे तो जल में, ४ बचे तो अन्नरिक्ता में, ५ बचे तो तुल्य (भस्म) में, ६ बचे तो गोबर में और ७ बचे तो भस्ममें वरतु छाती है ॥ ११४-११६ ॥

दिवारात्रिमुहूर्त—

शिवोऽहिर्मित्रपितरो वस्वम्भोविश्ववेधसः ।

विधिरिन्द्रोऽथ शक्राग्नी रत्नोब्धीशोऽर्ज्यमा भगः ॥ ११७ ॥

मुहूर्तेशा इमे प्रोक्ता दिवा पञ्चदश क्रमात् ।

मुहूर्ता रजनी शम्भूरजैकचरणाश्रयः ॥ ११८ ॥

दक्षात्पञ्चादितेर्जीवो विश्वकौ तक्षमारुतैः ।

दिनमानस्य तिथ्यशो रात्रेरपि मुहूर्तकाः ॥ ११९ ॥

नक्षत्रनाथतुल्येऽस्मिन् स्थितकार्यात् स्वभोदितम् ।

दिनमध्येऽभिजिन्मध्ये दोषसङ्घेषु सत्स्वपि ॥ १२० ॥

सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ।

दिवारात्रिसुहूर्त चक्र—

सं०	रात्रि	नक्षत्र	रात्रि	नक्षत्र	सं०	सुहूर्त	नक्षत्र	रात्रि	नक्षत्र
१	शिव	पश्चिमी	रश्मि	प्राश्वनी	६	विधि	रोहिणी	चन्द्र	मृगशिरा
२	शिव	मेष	अश्वि	पूर्वाभा०	१०	इन्द्र	ज्येष्ठा	आश्लेष	पूर्वाभा०
३	शिव	मेष	अश्वि	उ०भा०	११	इन्द्राग्नी	विशाखा	शुक्र	पूर्वाभा०
४	शिव	मेष	पू०भा०	रेवती	१२	राक्षस	मूल	वि०	श्रवण
५	शिव	मेष	रश्मि	अग्निनी	१३	वरुण	शत०	सूर्य	इक्ष्वा
६	शिव	मेष	रश्मि	भरणी	१४	अर्यमा	उत्तरा०	त्वा०	मिना
७	शिव	मेष	रश्मि	कृत्तिका	१५	भग	पूर्वा०	वायु	स्वाती
८	शिव	मेष	रश्मि	रोहिणी					

शिव श्यादि वार मे त्याज्य सुहूर्त—

क्रूरसच्च शुभे शुभं च कथितं चक्रे च चूडाह्वये ॥ १२६ ॥

टीका—जिस नक्षत्र पर सूर्य हो वहां से दिन के नक्षत्र तक गिनना। प्रथमः नक्षत्र मयुम है। फिर ५ मङ्गल के अशुभ है। फिर ३ नक्षत्र शुक्र के शुभ है। फिर १ नक्षत्र बुध के शुभ है। फिर ७ नक्षत्र राहु के शुभ हैं। फिर २ नक्षत्र शनि के अशुभ है। फिर १ नक्षत्र बृहस्पति का शुभ है। फिर २ नक्षत्र चन्द्रमा के शुभ है। फिर १ नक्षत्र केतु का अशुभ है ॥ १२६ ॥

जना मुहूर्त के वस्त्र धारण—

राजा प्रीत्यापतं वस्त्रं विवाहे चोत्सवादिषु ।

नया विनाजया धार्यं निन्द्ये विषायेऽपि वासरे ॥ १२७ ॥

टीका—प्रीत्यापतक राजा का अपण किया हुआ अथवा विवाह या उत्सव में या अन्य किसी उत्सव में अशुभ दिन में भी वस्त्रादि धारण करना शुभ है ॥ १२७ ॥

नालकृष्णाम्बरधारणमुहूर्त—

पार्श्वनिश्रागेर्जम्बुमे हस्ताच्चतुष्टये ।

पार्श्वे जना सूर्ये नीलकृष्णाम्बरं शुभम् ॥ १२८ ॥

टीका—पार्श्व निश्राग पार्श्वी, हस्त में ४ नक्षत्र, ३ पूर्वा तथा ३ उत्तरा में श्रीराम की पूजा या अम्बर का नीला या कृष्ण वस्त्र धारण करना शुभ होता है ॥ १२८ ॥

पामनाम्बरपट्टकलधारण—

पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि ।

पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १२९ ॥

पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ।

पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३० ॥

टीका—पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १२९ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३० ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३१ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३२ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३३ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३४ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३५ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३६ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३७ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३८ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १३९ ॥ पामनाम्बरपट्टकलधारणायैऽपि शुभम् ॥ १४० ॥

स्त्रीवस्त्राभरणादिधारण मुहूर्त—

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपञ्चके ।

सुवर्णरत्नवस्त्रादिदन्तानां धारणं स्त्रियः ॥ १३८ ॥

टीका—अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती और हस्त से ५ नक्षत्रों में स्त्रियों को सुवर्ण, रत्न, वस्त्र तथा चूड़ी (चूड़ा) धारण करना शुभ होता है ॥ १३८ ॥

नवीनवस्त्रालनमुहूर्त—

पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपञ्चके ।

नित्यार्काकिंवृथान् रिक्तां पष्ठीश्राद्धदिने तथा ॥ १३९ ॥

अथ पूर्ण न नग्नाणि ज्ञातयेद्रजकादिना ।

टीका—पुनर्वसु, अश्विनी, धनिष्ठा और हस्त से ५ नक्षत्रों में धोबी से वस्त्र नवीन वस्त्रों का पहनना शुभ है, अग्नि आर नृपचार तथा रिक्ता अर्थात् १४ तिथि तथा ६ और १० नक्षत्रों में रजकादिना तथा पत्तों में भी वस्त्रों का धुलाना निषेध है ॥ १३९ ॥

शिवानादिनिर्माणमुहूर्त—

पौर्णमासि विष्णवे वृत्तिकामुपधानकम् ॥ १४० ॥

शिवानां च न नान्याहर्त्यमूर्ध्वमुपधातुम् ।

टीका—पौर्णमासी में विष्णु के चक्र का निर्माण, शिव की शय्यादि बनवाना शुभ है। तथा शिवानां च न नान्याहर्त्यमूर्ध्वमुपधातुम् अर्थात् शिव के मूर्तियों का शय्या करना शुभ है ॥ १४० ॥

शिवानादिनिर्माणमुहूर्त—

पौर्णमासि विष्णवे वृत्तिकामुपधानकम् ॥ १४१ ॥

शिवानां च न नान्याहर्त्यमूर्ध्वमुपधातुम् ।

शिवानां च न नान्याहर्त्यमूर्ध्वमुपधातुम् ॥ १४२ ॥

टीका—इ पाठ्य ग्रन्थ में, अनेक प्रकार की शिक्षा, अथवा विवेकपूर्ण व्यवहार, प्रत्यक्ष, पक्षपात रहित तथा अत्यंत सरल भाषा में दी गई है। इस पाठ्य ग्रन्थ में, अनेक प्रकार की शिक्षा, अथवा विवेकपूर्ण व्यवहार, प्रत्यक्ष, पक्षपात रहित तथा अत्यंत सरल भाषा में दी गई है।

पंचमः विर गान्धर्वः क. गण्ड -

श्रवणाः सवत्स. पुनर्वसुर्नित्यं च सप्तम्यको मृगः ।

रविमृगुनर्जायवामरा वृथिता. पु मयनादिकर्मसु ॥ १४३ ॥

टापन—अथवा, एतत्, पञ्चम, मन्त्र, पुनः सर्वासा नान्यथा रवि, सोम, शुक्र
 ये ३ पाद पुरुषानां व दमनं भवतः । पुरुषानां नासन् मनीनां नैवाता ह्यत्र
 एतौ नक्षत्रां मे दत्ता ६ मनीनां मन्त्रमन्त्रं कर्म भवतः ताता ह ॥ ६४३ ॥

दुर्गा प्रथम के नक्षत्र—

पौष्पावेषाववराजन्विताचित्रापुण्यवासवपुनर्वसुभेत्रैः ।

ऐन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयो हि शिशूनाम् ॥१४४॥

टीका—रघुनी, गवण, हस्त, अश्विनी, चित्रा, पुष्य, धनिष्ठा, पुनर्वसु, अश्लेषा, मृगशिरा इनमें बालक का कर्णपेध कराना शुभ है ॥ १०४ ॥

अन्नप्राशन के नक्षत्र—

स्वती श्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मणः पृथगपि द्वितीये च ।

अनुत्तरेषु गदित हि नवान्नप्राशन तु ऋषिभिः पृथुकानाम्॥१४५॥

टीका--रेवती, ध्रुवण, तारत, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, तीनों उत्तरा इसमें ऋषियों ने बालकों को प्रथम अन्न भक्षण कराना शुभ कहा है ॥ १४५ ॥

क्षौरकर्म में नक्षत्र—

पुण्ये पौष्णे चाश्विनीध्वेन्दवे च शक्रे हस्ताद्यत्रिके भेष्वदित्यः ।

ज्ञौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रये च मुक्त्वा भौमादित्यमातङ्गिवारान् ॥ १४६ ॥

टीका—पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, धनिष्ठा, शतभिषा इन नवग्रहों में दोर कर्म करना शुभ है, परन्तु भाग्य, रावि, शनिवारों में वर्जित है ॥ १४६ ॥

कृतवाचन—

येषु येषु प्रशंसन्ति तैश्चकर्म महर्षयः ।

तेषु तेष्वेव शंसन्ति नखदन्तादिलेखनम् ॥ १४७ ॥

टीका—धनबन्धन और घेघना, दांत और नख काटना, जो ननत्र ऊपर वाले
 भूलोक के घोर कर्म में कटे हैं उन्हीं में करना शुभ है ॥ ६४७ ॥

आवश्यक क्षैर—

आज्ञया नरपतेर्द्रिजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च ।

बन्धमोक्षमखदीक्षगोष्ठ्य च क्षौरमिष्टमखिलेषु पुष्टिदम् ॥१४॥

टीका—राजा अथवा ब्राह्मण की आज्ञा पाकर दाहक्रिया करने में, सूतक के प्रान्त दिन में, यज्ञ की दीक्षा में, बन्धन से छुटने में, अवश्य चौर कर्म कराना पुष्टिकर होता है ॥ १४८ ॥

विशेषविचार—

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धौ व्रतं च दीक्षा च ।

शुक्लविशुद्धौ यात्रा सर्वं शुद्धं शशाङ्केन ॥ १४६ ॥

डीक्षा--सोस्वार्थ में भजन की श्रुति, और व्रत के प्रारम्भ में, दीक्षा के लेने में शिव शुरु की श्रुति, और यात्रा में शुक्लश्रुति, और सब कामों में चन्द्रमा की श्रुति चाहिये ॥ १५६ ॥

पौरकर्म मे वर्जनीय—

भद्रपक्षान्तरित्कावतदिनवसुभूषाख्यपञ्चोष रात्रौ

सन्ध्यापातरभारतवृत्तिषु घटधनुर्कर्ककन्यागतेर्जे ।

जन्मार्थं जन्मभासे सुरयजनदिने भूषितो ग्रामयायी

॥ १५० ॥

[illegible]

रविवार, शनिवार में, कुम्भ, धनु, कर्क, कन्या इन चार राशियों के सूर्य में, जन्ममास, जन्मनक्षत्र, देवता के पूजन वा हवनादि दिवस में, अलङ्कारादि धारण में, ग्रामयायी, भोजन के पीछे, तेल लगाने के बाद, और स्नान के पीछे, मङ्गल अभिषेक तथा स्त्री के रजस्वला होने और सम दिवस आदिक से क्षौरकर्म वर्जनीय है ॥ १५० ॥

मौञ्जीबन्धन—

सौम्ये पौष्णे वैष्णवे वासवाख्ये हरते स्वातिवाप्प्रपुण्याश्विभेषु ।
ऋक्षेऽदित्यां मेखलाबन्धमोक्षौ संस्मर्येते नूनमाचार्यवर्यैः ॥ १५१ ॥

टीका—मृगशिर, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाती, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में मौञ्जी का बन्धन और त्यागना आचार्यों ने श्रेष्ठ कहा है ॥ १५१ ॥

विवाहनक्षत्र—

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमास्तमघोत्तरान्वितैः ।
निर्विधाभिरुडुभिर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥ १५२ ॥

टीका—मूल, अनुराधा, मृगशिर, रोहिणी, हस्त, रेवती, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, इन सब नक्षत्रों में विवाह शुभ कहा गया है ॥ १५२ ॥

अग्निहोत्रारम्भ—

प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठारवेन्द्रवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेऽपि श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १५३ ॥

टीका—रोहिणी, रेवती, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिर, कृत्तिका और तीनों उत्तरा इन में प्रथम अग्निहोत्र प्रारम्भ करना शुभ है ॥ १५३ ॥

विद्यारम्भमुद्धर्त—

मृगादिपञ्चस्वपि भेषु मृले हस्तादिके च त्रितयेऽश्विनीषु ।
पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्वद् विद्यासमारम्भमुगन्ति साङ्ख्यैः ॥ १५४ ॥

अहिर्बुध्न्ये तिष्यसंज्ञे सभागे प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ।
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसन्दिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥ १५१ ॥

टीका—उत्तराभाद्रपदा, पुष्य, पूर्वाफलगुनी, अभिजित्, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ रोग सात दिवस तक निश्चय भोगना पड़ता है, यह गर्गमुनि का वाक्य है ॥ १५१ ॥

रोगमुक्ति स्नान नक्षत्र—

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु सर्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्योः ॥ १६० ॥

टीका—सोम, शुक्र वार और ध्रुव, रोहिणी, तीनों उक्तरात्रों में उत्पन्न रोग पुनर्वसु, स्वाती ये शुभ हैं और मघा, रेवती इनके राशियों में स्नान करने से रोग दुःखदायक है ॥ १६० ॥

रोगमुक्त स्नान लग्न—

लग्ने वारे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ।
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिक्रानाम् ॥ १६१ ॥

टीका—मेष, वार्क, तुला, मकर ये चार लग्न, रवि, नेम, और ये चार राशियाँ रिक्ता तिथि ४, ६, १४, और चन्द्र हीनबल हो, केन्द्र तथा त्रिकोणों में पाएँ हों तो ऐसे लग्न में स्नान करने से रोग का नाश होता है ॥ १६१ ॥

लता औषधी दृक्षारोपण नक्षत्र—

सावित्रपुण्याश्विनिवारणानि मूल विभागा च मृदुश्रुवाणि ।
लता औषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥ १६२ ॥

टीका—दस्त, पुष्य, अभिजित्, शतवारणा मूल, विभागा मृदु श्रुवा इन नक्षत्रों में लता, औषधी और पौधों का लगाना शुभ है ॥ १६२ ॥

हस्तलग्न दे नक्षत्र—

हस्ताग्नि वासवं वारुणं च गौरी दिव्यं त्रैलोक्यं वैभवं ।
प्राजापत्य चापि नक्षत्राहुः ह्यगस्ते श्रेष्ठतया मुनिभिः ॥ १६३ ॥

टीका—हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, श्रवणास्का, आर्द्रा, मघा, तीनों उत्तरा में रोहिणी इन नक्षत्रों में अगले मुनीन्द्रों ने कृपास्म्य श्रेष्ठ कहा है ॥ १६३ ॥

द्रव्य देना वा स्थापित करना—

साधारणोग्रश्रुवदास्नागम्यैर्धिष्यार्यैर्यदत्र द्रविणप्रयुक्तम् ।

हस्तेन विन्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्नियतं कदाचित् ॥१६४॥

टीका—साधारण, उग्र, भूय और दारुणसंज्ञक नक्षत्रों में जो हस्ते को द्रव्य दे या स्थापित करे तो यह घरतु फिर प्राप्त नहीं होनी ॥ १६४ ॥

दायी लेना वा देना—

हस्तेषु चित्रासु तथाऽश्विनीषु स्वाती च पुष्ये च पुनर्वसौ च ।

प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥१६५॥

टीका—हस्त, चित्रा, अश्विनी, स्वाती, पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रों में दाय लेना और देना और उसके अलङ्कार शृङ्गारादि सकल कर्म करना गर्गादि मुनियों शुभ कहा है ॥ १६५ ॥

घोड़े का लेना देना—

पुष्यश्रविष्ठाश्विनसौम्यभेषु पोषणानिलादित्यकराह्येषु ।

सवारुणार्क्षेषु बुधैः स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरङ्गमाणाम् ॥१६६॥

टीका—पुष्य, धनिष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त भिषा इन नक्षत्रों में घोड़ा लेना और देना तथा उसके अलङ्कार और शृङ्ग आदि करना शुभ है ॥ १६६ ॥

पशुओं के नगरों में लाने और पहुँचाने में वर्ज्य—

चित्रोत्तरावेष्णावरोहिणीषु चतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ।

ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्यान्नीमान् पशूनां न कदाचिदेव ॥१६७॥

टीका—चित्रा, तीनों उत्तरा, श्रवण, रोहिणी, चतुर्दशी, अमावास्या, अष्टमी इनमें गवादि पशुओं को ग्राम में लाना, परन्तु बाहर पहुँचाना उचित नहीं है ॥ १६७ ॥

गौओं के क्रय विक्रय में वर्जित—

शुक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ।

अश्विपूर्वमयुतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥ १६८ ॥

टीका—ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हरत, विशाखा, पुष्य, शतभिषा पुनर्वसु, अश्विनी, मेषादी इन् नक्षत्रों में गाय का बेचना और मोल लेना वर्जित है ॥ १६८ ॥

तृण काष्ठादि संग्रह में वर्ज्य—

वासवोत्तरादित्यक्षके याम्यदिग्गमनगोहगोपनम् ।

प्रेतदाहनृणकाष्ठसंग्रहः शय्यिकाविरचन च वर्जयेत् ॥ १६९ ॥

टीका—धनिष्ठा के उत्तरार्द्ध से लेकर पौष नक्षत्रों को पश्चिम करने से इन में दक्षिण दिशा का गमन और घर बनाना प्रेतदाह, तृण काष्ठ का संग्रह तथा शय्यिका निर्माण करना वर्जित है ॥ १६९ ॥

हल चलाने का नक्षत्र—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषु भेषु ।

हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नरोगमुष्यगन्धितनोरभेषैः ॥ १७० ॥

टीका—मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चरस्तथैव नक्षत्रों में तथा मूल मघा विशाखा इन् नक्षत्रों में रोग रहित आरुह्य पशु से प्रथम हल चलाने ॥ १७० ॥

दीर्घ वाना—

रौद्राहियाम्यानिलवारुणोन्नागयाहुर्जघन्यानि तथा वृद्धानि ।

ध्रुवद्विदेवादिनिभानि नृन समानि नंगानि उन्हेर्नान्द्रेः ॥ १७१ ॥

वृहत्सु धान्यं हस्तं नमर्धं जघन्यधिष्ठायेऽमृदिनां नन्दः ।

समेषु धिष्ठायेषु नम हिनांगुर्वदन्ति नन्दिरधमिदं नन्दः ॥ १७२ ॥

टीका—आर्द्रा, आश्लेषा, भरणी, स्वाती, शतभिषा, ज्येष्ठा, इन नक्षत्रों को जन्म कहते हैं । इनमें मास के आदि में जो चन्द्रमा उदय हो ता धान्य महुँगा होता है। ध्रुव कहिये तीनों उत्तरा, रोहिणी, विशाखा, पुनर्वसु इनको बृहत् कहते हैं, एवं चन्द्रमा उदय हो तो अन्न सस्ता होता है और शेष नक्षत्र सम जानिये उनमें चन्द्रोदय होने से अन्न का भाव साधारण रहता है ॥ १७१-१७२ ॥

राशिपरत्व में चन्द्रोदय का फल—

मीनमेपोदितश्चन्द्रः सततं दक्षिणोन्नतः ।
 शेपोन्नतश्चोत्तरायां समता वृषकुम्भयोः ॥ १७३ ॥
 विरोधस्तु समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।
 सुभिक्षं क्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचन्द्रमाः ॥ १७४ ॥

टीका—मीन अथवा मेष राशि में जो शुक्ल द्वितीया को चन्द्रमा का उदय हो तो उससे दक्षिण को उन्नत जानिये और उससे दुर्भिक्ष का सम्भव होता है। और मिथुन से लेकर मकर पर्यन्त जो चन्द्रोदय हो तो उत्तर को उन्नत जानिये यह चन्द्रमा सुभिक्ष, क्षेम और आरोग्य का कर्ता होता है। वृष और कुम्भ में चन्द्रमा का उदय हो तो सम रहता है इसमें राजाओं में कलह और विरुद्धता होती है ॥ १७३-१७४ ॥

बीज बोलने का नक्षत्र—

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु ।

स्वाती धनिष्ठासु मघासु मूले बीजोप्तिस्तृकृष्टफला प्रदिष्टा ॥ १७५ ॥

टीका—हस्त, अश्विनी, पुष्य तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मघा, मूल इन नक्षत्रों में बीज बोलने से खेत अधिक फलने हैं ॥ १७५ ॥

सर्पदंश विचार—

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पान्तकार्द्रासु भुजङ्गदष्टः ।

म वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि प्राप्नोति सूर्योर्वहनं मनुष्यः ॥ १७६ ॥

टीका—रुक्मिका, मूल, मघा, विशाखा, आश्लेषा, रेवती, आर्द्रा इन नक्षत्रों में जो सर्प काटे तो गरुड़ के भी रक्तक होने पर मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ १७६ ॥

गानारम्भविचार—

हस्तस्तिष्यो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ।

पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चन्द्रवर्ती नृत्यारम्भे शोभनो ऋतुवर्गः ॥ १७७ ॥

टीका—हस्त, पुष्य, धनिष्ठा, अनुराधा ज्येष्ठा, रेवती, शततारका, तीनों उत्तरा और शुभ चन्द्रमा पाकर गाना और नृत्य का प्रारम्भ करना पूर्वाचार्यों ने शुभ कहा है ॥ १७७ ॥

राज्याभिषेक नक्षत्र—

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीश्रवेषु तिसृषूत्तरासु च ।

रेवतीमृगशिराश्विनीषु च द्वाभृतां समभिषेक इष्यते ॥ १७८ ॥

टीका—अनुराधा ज्येष्ठा, हस्त, पुष्य, रोहिणी, श्रवण, तीनों उत्तरा, रेवती, मृगशिर, अश्विनी इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक करना उचित है ॥ १७८ ॥

राजदर्शन—

सौम्याश्विनिष्यश्रवणश्रविष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रमपूपमानि ।

मित्रेण युक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भानि शुभप्रदानि ॥ १७९ ॥

टीका—मृगशिर, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा हस्त, ध्रुव, चित्रा, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रों में राजा का प्रथम दर्शन शुभदायक होता है ॥ १७९ ॥

पुष्य का फल—

परकृतमखिलं निहन्ति पुष्यो न खलु निहन्ति परन्तु पुष्यदोषम् ।

ध्रुवममृतकरोऽष्टमेऽपि पुष्ये विहितमुपैति मदैव कर्ममिच्छिम् ॥ १८० ॥

टीका—पुष्य दूसरे के दोष और प्रथम स्थान स्थित चन्द्र के दोष को दूर करता है, परन्तु उसी नक्षत्र (पुष्य) के दोष का दूसरा दूर नहीं कर सकता है इस नक्षत्र में किया हुआ कार्य सिर होता है ॥ १८० ॥

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुण्यो बलवानुद्धनाम् ।

चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि सिध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुण्ये ॥ १८१ ॥

टीका—जैसे सब चतुष्पद जीवों में सिंह बलवान् है वैसे ही नक्षत्रों में पुण्य। पुण्य में किया कार्य गोचर दोष और अनिष्ट अर्थात् चौथा, आठवां, बारहवां चन्द्र होने पर भी सिद्ध होता है ॥ १८१ ॥

पुण्य का विशेष—

ग्रहेण विद्धोऽप्यशुभान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि त्रिलोमगोऽपि ।

करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणे तु पुण्यः ॥ १८२ ॥

टीका—ग्रहों से विद्ध अशुभ ग्रह से युक्त हो अथवा तारा इसके प्रतिबल हो तो भी पुण्य में किया हुआ कार्य सिद्ध होता है, परन्तु विवाह में पुण्य नक्षत्र वर्जित है ॥ १८२ ॥



अथ योगप्रकरणम् ।

प्रतिदिन के योग जानने की रीति—

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च ।

गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादक्षशेषतः ॥ १८३ ॥

टीका—पुण्य से सूर्यनक्षत्र तक चलते नक्षत्रों को गिने और श्रवण से विनक्षत्र तक गिने, दोनों संख्याओं को इकट्ठा करे और सत्ताइस का भाग दे जो रहे वही योग जानिये ॥ १८३ ॥

योगों के नाम—

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।

अतिगराडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ १८४ ॥

गराडो वृद्धिर्ध्वश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।

वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिधः शिवः ॥ १८५ ॥

सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ।

सप्तविंशति योगास्तु कुर्युर्नामसप्तं फलम् ॥ १८६ ॥

टीका—विष्कुम्भ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगरुड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शून ९ गरुड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वरीयान् १८ परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ पेन्द्र २६ वैधृति २७ सत्ताइस योग निज नाम के तुल्य फल करते हैं अर्थात् जो इनके नाम का अर्थ है वह फल जानो ॥ १८४-१८६ ॥

योगो मे वर्जनीय घटिका—

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ।

सर्वैधृतिस्तु व्यतीपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ १८७ ॥

तिसस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपञ्च शूले ।

गरुडेऽतिगरुडे च षडेव नाज्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥ १८८ ॥

टीका—इनमे अशुभ योगो का आदि का चतुर्थांश वर्जनीय है । व्यतीपात, वैधृति सम्पूर्ण और विष्कुम्भ की ३, वज्र ४, व्याघात की ५, गरुड की ६, अतिगरुड की ६, तिस की १५ घड़ी सब शुभ कार्य में वर्जित है ॥ १८७-१८८ ॥

करण जानने की रीति—

गततिथ्यो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ।

एकोनाः सप्तहृच्छेषः करण स्याद् ववादिष्वम् ॥ १८९ ॥

टीका—शुक्ल प्रतिपदा से जिस तिथि का करण जानना हो उसकी पूर्वगत तिथि को द्विगुण करे तिसमें एक मिलाकर सात का भाग दे, शेष बचे वही उस तिथि का करण जानिये, और प्रत्येक तिथि को दो करण भोगते हैं ॥ १८९ ॥

करणों के नाम—

ववाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तौतिलनामधेयम् ।

गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्यादुरार्याः करणानि सप्त ॥ १९० ॥

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुद्धनाम् ।

चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि निर्व्यन्त्रि कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥ १८० ॥

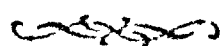
टीका—जैसे सब चतुष्पद जीवों में सिंह प्रधान है, वैसे ही नक्षत्रों में पुष्य पुष्य में किया कार्य गोचर और चन्द्र नामक नक्षत्रों में होगा, साठवां, बाण्डव का होने पर भी मिले होता है ॥ १८१ ॥

पुष्य का विशेष—

ग्रहेण विरुद्धोऽप्यशुभान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि ।

करोत्यवश्यं सकलार्थमाप्नु विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥ १८२ ॥

टीका—प्रहों में जिस शशुन ग्रह में पुष्य हो अथवा नारा इसमें प्रहों हो तो भी पुष्य में किया हुआ कार्य मिले होता है, परन्तु पिशाच में पुष्य नहीं वर्जित है ॥ १८२ ॥



अथ योगप्रकरणम् ।

प्रतिदिन के योग जानने की रीति—

वाक्पतेर्स्कनजत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च ।

गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादनुशेषतः ॥ १८३ ॥

टीका—पुष्य में सूर्यनक्षत्र तक चलने नक्षत्रों को गिने और ध्रुव में दिग्ग नक्षत्र तक गिने, दोनों संगणकों को एकट्ठा करे और सत्ताह्न का भाग दे जो रहे वही योग जानिये ॥ १८३ ॥

योगों के नाम—

विष्कुम्भः प्रीतिराशुप्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।

अतिगराडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ १८४ ॥

गराडो वृद्धिर्धैरश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।

वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिधः शिवः ॥ १८५ ॥

सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ।

सप्तविंशति योगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥ १८६ ॥

टीका—विष्कुम्भ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगरुड ६
 उरुर्मा ७ धृति ८ शून ९ गरुड १० वृद्धि ११ भ्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५
 सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वरीयान् १८ परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३
 शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ ऐन्द्र २६ वैधृति २७ सत्ताइस योग निज नाम के तुल्य फल करते
 हैं अर्थात् जो इनके नाम का अर्थ है वह फल जानो ॥ १८४-१८६ ॥

योगो मे वर्जनीय घटिका—

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ।

सवैधृतिस्तु व्यतीपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥ १८७ ॥

तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपञ्च शूले ।

गराडेऽतिगराडे च पडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥ १८८ ॥

टीका—इनमें अशुभ योगो का आदि का चतुर्थांश वर्जनीय है। व्यतीपात, वैधृति
 ये सम्पूर्ण और विष्कुम्भ की ३, वज्र ४, व्याघात की ५, गरुड की ६, अतिगरुड की
 ६, शूल की १५ घड़ी सब शुभ कार्य में वर्जित है ॥ १८७-१८८ ॥

करण जानने की रीति—

गततिथ्यो द्विनिध्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ।

एकोनाः सप्तहृच्छेषः करणं स्याद् ववादिवम् ॥ १८९ ॥

टीका—शुक्ल प्रतिपदा से जिस तिथि का करण जानना हो उसकी पूर्वगत तिथि
 को द्विगुण करे तिसमें एक मिलाकर सात का भाग दे, शेष दचे बही उस तिथि का
 करण जानिये, और प्रत्येक तिथि को दो करण भोगने हैं ॥ १८९ ॥

करणों के नाम—

ववाहयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैलिलनामधेयम् ।

गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥ १९० ॥

यन्ते कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिदर्शभागयोः ।

जेयं चतुष्पदं नागं किम्बुच्चं प्रतिपद्यते ॥ १६१ ॥

करणों के नामों--

इन्द्रो ब्रह्मा मित्रनामार्यमा भूः श्रीः कीर्त्तनाश्वेति निर्व्यर्धनाथः ।
जल्युन्नाथ्यो मर्षवायु तथैव ये चत्वारस्ते म्यिराणां चतुर्णाम् ॥ १६२ ॥

करणों के उच्य--

पौष्टिकस्थिरशुभानि ववाप्ये चालवे द्विजहिनान्यपि कुर्यात् ।
कौलवे प्रमदमित्रविधान नैतिने शुभयुताश्रयं कर्म ॥ १६३ ॥
गरे च वोजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यकर्म्यैर्वणिक्क्रियाश्च ।
न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विपारिवातादिषु तन्त्रसिद्धिः ॥ १६४ ॥
मन्त्रौषधानि शकुने तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदे तु ।
सौभाग्यदास्त्वाधृतिर्धुवकर्म नागे किम्बुच्चनाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यः ।

टीका--इन श्लोकों का अर्थ चक्र में देखिये ।

शुभल	तिथि ६०	दश	तिथि ६०	नाम	उच्य
पूर्वद	उत्तरद	पूर्वद	उत्तरद		
१	स्थिर	०	० ० ०	हिन्दु	समस्त शुभ कार्य करें।
५	१ १ १२	५	११ ७ ०	शर	प्रत उत्साह देवालय आदि शुभ-
२	१२ ५ १०	१	१ ४ ११	बाला	मंकर प्राप्तियों से दित करें।
६	१३ २ ६	८	१० १ ८	कोत्प	उन्माद और मित्रता करें।
३	१० ६ १३	२	६ ८ १२	तीति	पिशादादिक मङ्गल कार्य करें।
७	१४ १ १०	६	१३ ० १	गर	योज योजना हल चलाना।
४	११ ७ १४	३	१० ६ १३	वाणिज	देवप्रतिष्ठा घर दूकान और
८	१५ ४ ११	७	१४ ३ १०	गति	व्यापार करायें।
स्थिर	० ०	०	० ० १४	शकुनि	सकलकर्म वर्जित परन्तु विप और
स्थिर	० ३	३०	० ० ०	चतुष्प	पात कर्म वर्जित नहीं।
स्थिर	० ०	०	० ० ०	नाग	मित्रोपदेश औषधि ग्रहपूजा करावे
					गो ब्राह्मण राजा पितृ इन
					सम्बन्धी कृत्य करावे।
					सौभाग्य कर्म युद्ध में जाना धीर

कन्याशी-तिथिमान—

कृष्णोऽग्निदिशयोरूर्ध्वं सप्तमीभूतयोरधः ।

शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं भद्रा प्राग्वसुपूर्वायोः ॥ ११६ ॥

मध्वसुमुनितिथियुगदशशिवयुगसंख्यासु तिथिषु पूर्वान्त्यः ।

आयाति विष्टिरेषा पृष्ठे मत्पुण्यशुभा ॥ ११७ ॥

भद्रा का विशेष—

दिवा सर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ।

सर्पस्य च सुखं त्याज्य रात्रौ पुच्छ परित्यजेत ॥ ११८ ॥

रात्रिभद्रा यदाह्नि स्याद्विवाभद्रा यदा निशि ।

न तत्र भद्रादोषः स्यात्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ ११९ ॥

गरीर भाग—

नाड्यस्तु पञ्चवदनेऽथ गले तथैका वज्रोदशैकमहिम्नं नियतं वन्द्य ।

नाभ्यां वटौषडथ पुच्छलता च तिष्ठो विष्टिर्वर्धेगमितिनाड्यदिनाम् ॥

रथान् पश्य—

मुखे कार्यवांस्तर्जयानि मरणा वाप्य गलम्

पते हानिर्वज्रस्यथ यद्विन्दे वृद्धिर्जित्यथ ।

शलिर्नाभौदोषो विजयस्यथ पुनरेव च जगत्

गरीरे भद्रायाः कृयमिति फलं सर्वसुखम् ॥ १२० ॥

नन्दन—

माने मेषालिङ्गं गमिति निम्नं नर्गलम् ।

कन्यायां तालिङ्गं धनुर्निधुनगते नानन्देन निम्नम्

टीका—रवि और गुरुवार की भद्रा देवजाति होती है । सोम और शुक्र की अनुष्य जाति, शनि और भौम की पक्षी जाति तथा बुधवार की भद्रा गदर्भजाति होती है ॥ २०५ ॥

भद्रा की उत्पत्ति कथा—

दैत्येन्द्रैः समरेऽमरेषु विजितेष्वीशः क्रुधा दृष्टवान्
स्वकायात्किल निर्गता खरमुखी लाङ्गुलिनी चक्रपात् ।
विष्टिः सप्तभुजा मृगेन्द्रगलका क्षामोदरी प्रेतगा
दैत्यन्ती मुदितैः सुरैस्तु करणप्रान्ते नियुक्ता तु सा ॥२०६॥

टीका—जब दैत्य और देवताओं में बड़ा भारी घोर युद्ध हुआ तब देवताओं का पराजय हुआ उस समय शिव जी के क्रोध करने से उनकी देह से एक स्त्री गदर्भ-मुखी, पुच्छवती, पहिये के समान जिसके चरण विष्टि (भद्रा) नाम, सप्तभुजा, सिंह की सी ग्रीवा, कृश उदर, प्रेत पर चढ़ी, दैत्यों के वध करने वाली निकली और देवताओं ने प्रसन्न होके करणों के प्रान्त भाग में उसे स्थापित किया ॥ २०६ ॥

संक्रान्तिः ।

वाराणुसार नाम—

घोरा स्वौ ध्वाङ्क्ष्यमृतद्युतौ च संक्रान्तिवारं च महोदरी स्यात् ।
मन्दाकिनी ज्ञे च गुरौ च नन्दा मिथ्या भृगौ राज्ञमिकाऽर्कपुत्रे ॥२०७॥

नक्षत्रों के अनुसार नाम—

उग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुवमिश्राख्यदारुणैः ।
ऋजैः संक्रान्तिर्कस्य घोराद्याः क्रमशो भवेन् ॥ २०८ ॥

फल—

ध्वाङ्गी वैश्यान् सुखयति महोदर्यलं चौरसार्थान्
घोरा शूरानथ नरपतीनेव मन्दाकिनी च ।

फल—

किंस्तुन्ननाम्नि शकुनौ वणिक्कौलवाख्ये
चोर्ध्व स्थितस्य खलु सक्रमणां रवेः स्यात् ।
धान्यार्थवृष्टिषु भवेत् क्रमशस्त्वनिष्टो
मध्येष्टेति मुनयः प्रवदन्ति पूर्वे ॥ २१४ ॥

वाहन —

सिंहो व्याघ्रो वराहश्च गर्दभः कुञ्जरस्तथा ।
महिषो घोटकः श्वा च छागो वृषभकुक्कुटौ ॥ २१५ ॥
गजो बाजी वृषो मेषः खरोष्ट्रौ केसरी क्रमात् ।
शादूलमहिषीव्याघ्रवानराश्च ववादितः ॥ २१६ ॥

फल—

गजे लक्ष्मीवृषे स्थैर्यं घोटके वाहने तथा ।
सिंहे व्याघ्रे भयं प्रोक्तं सुभिक्षं गर्दभे शुनि ॥ २१७ ॥
वराहे महती पीडा जायते मेषवाहने ।
महिष्यां च भवेत् क्लेशः कुक्कुटे मृत्युरेव च ॥ २१८ ॥

वस्त्र—

श्वेतपीतहरितं च पाराङ्गुरं रक्तश्याममसितं बहुवर्णम् ।
कम्बलो विवसनं धनवर्णान्यंशुकानि च ववादितः क्रमात् २१९

उपवस्त्र—

श्वेत रक्तं तथा चित्रं पीतं नीलं च कम्बलम् ।
पट्टाजिनं कुसुम्भञ्च वत्कलं वैणवं क्रमात् ॥ २२० ॥

प्रायुध—

भुशुराडी च गदा खड्ग दराडकोदराद्वनोमराः ।
कुन्तपाशाङ्कुशान्त्रं च बाणशर्वेवायुधं ववात् ॥ २२१ ॥

भोजन पात्र---

सौवर्णं राजतं ताम्रं कांस्यं लोहं च स्वर्परम् ।

पत्रं वस्त्रं करो भूमिः काष्ठपात्रं ववादितः ॥ २२२ ॥

भक्ष्यपदार्थ---

अन्नं च पायसं भक्ष्यं पक्वान्नं च पयो दधि ।

चित्रान्नं गुडमध्वाज्यं शर्करा तु ववादितः ॥ २२३ ॥

गन्ध---

कस्तूरी कुङ्कुमं चैव चन्दनं सृत्तिका तथा ।

गोरोचनमलक्तं च हरिद्रा च तथाऽऽञ्जनम् ॥ २२४ ॥

सिन्दूरमगरुश्चैव कर्पूरश्च ववादितः ।

जाति---

देवभूताहिविहगपशवो मृग एव च ।

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रमिश्रा जातिर्ववादितः ॥ २२५ ॥

पुष्प---

पुन्नागजातीवकुलाश्च केतकी बिल्वस्तथार्कः कमलं च दूर्वा ।

मल्ली तथा पाटलिका जपा च ववादिपुष्पाणि च योजयेत्तु ॥ २२६ ॥

भूषण---

नूपुरं कङ्कणां मुक्ता विट्कुटं मणिम् ।

गुञ्जा वराटकं नीलं गरुडं रुक्मकं ववात् ॥ २२७ ॥

कञ्चुकी---

विचित्रपर्णाशुकभूर्जपत्रिका सिता तथा पाटलनीलवर्णा ।

कृष्णाजिनं चर्म च वल्कपाण्डुरं ववादितश्चैव तु कञ्चुको स्यात् ॥ २२८ ॥

अवस्था---

शिशुः कुमारी च गतालका युवा प्रौढा प्रगल्भाऽथ ततश्च वृद्धा ।

बन्ध्याऽतिबन्ध्या च सुतार्थिनी च प्रजाजिका चैव फलं शुभं ववात् ॥ २२९ ॥

वाहनादि बुधैर्ज्ञेयमथोत्क्रान्तिविशेषतः ।

वाहनादिकवस्तूनां संक्रमात्तु विनाशता ॥ २३२ ॥

टीका—संक्रान्ति जिस वाहन पर स्थित हो और जो वस्तु धारण करे उस का नाश होता है ॥ २३२ ॥

सुहर्त ।

संक्रान्ति कितने सुहर्त होती है उसके नक्षत्र और फल—

क्रान्तौ मौहूर्त्तभेदा हरपवनयमे वास्त्रो सार्परोद्रे
एषा पञ्चेन्दुसंज्ञा गुरुविपितृभे चाग्निदस्ते च सौम्ये ।
त्वाष्ट्रे मैत्रे च मूले ध्रुविचसुवपुषा त्रीणि पूर्वा खरामे
ब्राह्मादित्ये द्विदैवै भवति शरकृतादुत्तरात्रीणि ऋक्षम् ॥ २३३ ॥
वाणवेदैः समर्घा स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः ।
मूर्तो पञ्चदशे याते दुर्गिज्ञं च प्रजायते ॥ २३४ ॥

टीका—आर्द्रा, स्वाती, भरणी, शनभिषा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, इन में जो संक्रान्ति प्रारम्भ हो वह १५ सुहर्त की होती है और दुर्गिज्ञ करने वाली होती है । पुष्य, हर मघा, कृत्तिका, आश्विनी, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, मूल, धनुरा, धनिष्ठा, रेवा तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों की संक्रान्ति ३० सुहर्त की होती है यह साधारण फलदायक है । रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा, तीनों उत्तरा इन में संक्रान्ति प्रारम्भ हो तो ४५ सुहर्त की होती है यह समर्घता का कारण है ॥ २३३-२३४ ॥

दूसरा प्रकार—

पूर्वसंक्रान्तिनक्षत्रात्परसंक्रान्तिऋक्षकम् ।

द्वित्रिसंख्या समर्घा स्याच्चतुः पञ्च महर्घता ॥ २३५ ॥

टीका—गत मास दिन, संक्रान्ति तथा नक्षत्र में और प्राप्त संक्रान्ति दिन तथा नक्षत्र में यदि दो अथवा तीन का अन्तर हो तो सप्ताह और ४ वा ५ का अन्तर गचे तो महर्घा होता है ॥ २३५ ॥

धान्य विचार—

संक्रान्तिनाड्या तिथिवारश्च नक्षत्राणां वल्लिहरेषु भागम् ।
संक्रान्तिनाडी नवमिश्रिता च सप्ताहता पावकभाजिता च ॥ २३६ ॥
एके समर्घं द्वितीये च सौम्यं शून्ये समर्घं मुनयो वदन्ति ।

टीका—एक मत के अनुसार संक्रान्ति की घड़ी और गत तिथि, वार, नक्षत्र और धान्य के नामाक्षर एकत्र करके तीन का भाग दे । दूसरे मत के अनुसार संक्रान्ति की घड़ियों में ६ मिलाकर ७ से गुणा करे तथा तीन का भाग दे । शेष का फल वेचारे । एक शेष रहे तो धान्य को समर्घता और दो बचे तो साधारण और निःशेष हो तो महर्घता होती है ॥ २३६ ॥

नक्षत्रों के अनुसार संक्रान्तिपीड़ा—

संक्रान्त्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावाधि ।
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः ॥ २३७ ॥
पन्था भोगो व्यथा वस्त्र हानिश्च विपुलं धनम् ।

टीका—संक्रान्ति के अधर नक्षत्र से अपने नक्षत्र तक गिने और इस रीति से उसका विचार करे । प्रथम ३ पन्था चलावे, फिर ६ भोग, फिर ३ दुःख, ६ वस्त्रलाभ, फिर ३ हानि और ६ धनप्राप्ति हो पेसा कहा है ॥ २३७ ॥

जन्मनक्षत्रों का फल—

यस्य जन्मर्जमासाद्य तिथौ संक्रमणं भवेत् ।
तन्मासाभ्यन्तरे तस्यै वरं क्लेशो धनक्षयः ॥ २३८ ॥

टीका—जिसके जन्मनक्षत्र में संक्रान्ति प्रारम्भ हो उसको किसी से घर दोगा और जिसकी जन्मतिथि में संक्रान्ति पड़े उसको क्लेश और जिसके जन्ममास में संक्रान्ति हो उसका धनक्षय होता है ॥ २३८ ॥

पष्टियोजनविस्तीर्णा संक्रान्तिः पुरुषाकृतिः ।

एकवक्त्रा नवभुजा लम्बोष्ठी दीर्घनासिका ॥ २३१ ॥

पृष्ठे लोका भ्रमन्त्येव गृहीत्वा खर्परं करे ।

एवं संक्रमणो यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ २४० ॥

टीका—संक्रान्ति का शरीर साठ योजन लम्बा और चौड़ा, पुरुषाकृति एक मुख
६ भुजा, ओठ और नासिका लम्बी और खर्पर हाथों में लिये और पीढ़े में
भ्रमण करते हैं ॥ २३९-२४० ॥

चन्द्र से संक्रान्ति का वर्ण और फल--

मेषालिकर्के च तथैव रक्तं चापे च मीने च तुले च पीतम् ।

श्वेतं वृषे स्त्रीमिथुने च चन्द्रे कृष्णं च नक्रेश्य घटे च सिंह ॥ २४१ ॥

रक्ते फलं भवेद्दुःखं श्वेतं चैव सुखं शुभम् ।

पीते श्रीस्तु तथा प्रोक्ता श्यामे मृत्युर्न संशयः ॥ २४२ ॥

टीका--मेष, वृश्चिक, कर्क शन राशियों के चन्द्रमा में जो संक्रान्ति का प्रवेश
हो तो उसका रक्त वर्ण जानिये । यह दुःखदायक है और घनु, मीन, तुला के चन्द्रमा
की संक्रान्ति का पीतवर्ण ये लक्ष्मी को प्राप्ति कराती है और वृष, कन्या, मिथुन की
संक्रान्ति का श्वेतवर्ण यह सुख और शुभ प्राप्ति करानेवाली है । तथा मकर, कुम्भ
और सिंह के चन्द्रमा को संक्रान्ति कृष्णवर्ण है यह मृत्युदायी है ॥ २४१-२४२ ॥

राशि के अनुसार चन्द्रमा--

यादृशेन हिमरश्मिमालिना संक्रमो भवति तिग्मरोचिषा ।

तादृशं फलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपि वशेन शीतगाः ॥ २४३ ॥

टीका--जैसे चन्द्रमा नष्टस्थानी और उत्तमस्थानी होकर शुभाशुभ फल को देता
है । उसी भाँति नष्ट अथवा उत्तम चन्द्रमा से सूर्य की संक्रान्ति भी चन्द्रमा के
अनुसार फलदायक होती है ॥ २४३ ॥

पुण्यकाल—

पूर्वतोऽपि हि स्वेश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तु षोडश ।

अर्धरात्रिसमयादनन्तरं संक्रमे परदिनं हि पुण्यदम् ॥ २४४ ॥

टीका—सोलह घटिका पुण्यकाल होता है, जो संक्रान्ति दिन में पड़े तो पूर्व रात्रि में लिये पुण्यकाल उसी दिवस जानना चाहिये और अर्धरात्रि के पीछे पड़े तो पर दिवस पुण्यकाल होगा ॥ २४४ ॥

ग्रहणप्रकार ।

चन्द्रग्रहण की प्रवृत्ति—

भानोः पञ्चदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ।

पौर्णमास्यां निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥ २४५ ॥

टीका—सूर्य से पन्द्रहवें नक्षत्र में जो चन्द्रमा स्थित हो तो पौर्णमासी के निशाशेष अर्थात् प्रतिपदा की सन्धि में चन्द्रग्रहण होता है ॥ २४५ ॥

सूर्यग्रहण—

विधुना * ग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदि सूर्यभम् ।

अमावास्या दिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥ २४६ ॥

टीका—सम्पूर्ण महीनों की अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्रमा एक राशि के होते हैं परन्तु अमावस्या के दिन सूर्य नक्षत्र और दिवस नक्षत्र एक हो तो अमावास्या और प्रतिपदा की सन्धि में सूर्यग्रहण होता है, उस दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र देखिये उनमें से ११ दिन काट के शेष १६ वा सूर्य नक्षत्र हो तो वही सूर्यग्रहण है ॥ २४६ ॥

राशि के अनुसार शुभाशुभ ग्रहफल—

त्रिषड्दशायोगतं नराणां शुभप्रदं स्याद् ग्रहणं रवीन्द्रोः ।

द्विस्प्तनन्देषु च मध्यमं स्याच्छेषेऽप्यनिष्टं मुनयो वदन्ति ॥ २४७ ॥

टीका—सूर्य चन्द्र का ग्रहण अपनी राशि से जिस राशि पर हो उसका फल विचारिये । तीसरी, छठी, दसवीं और ग्यारहवीं राशि पर हो तो शुभ और दूसरी सातवीं नवमी राशि पर हो तो मध्यम और पहिली, चौथी, पाँचवीं और बारहवीं पर हो तो अशुभ है ॥ २४७ ॥

दूसरा पक्ष—

ग्रासात्तृतीयोऽष्टमश्चार्थस्तथाऽयसंस्थः शुभगः स्वराशे ।

ग्रासाद्रविः पञ्चनवतुर्मध्यस्ततोऽधमोक्ताश्च बुधैश्च शेषाः ॥ २४८ ॥

टीका—जिस राशि पर सूर्यग्रहण हो उससे अपनी राशि तक गिने तो यदि ३, ४, वा ११ हो तो उत्तम और ५, ६ वा ७ हो तो मध्यम और यदि १, २, ७, १० वा १२ हो तो अधम है । जैसी राशि हो वैसे ही फल होता है । ग्रहण का विशेष फल जानने के लिये चाराही संहिता या मेघमहोदय देखिये ॥ २४८ ॥

ऋतुप्रकरण ।

शुभाशुभ फल—

तिथिरैकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।

वारः षष्ठगुणो ज्ञेयो मासश्चाष्टगुणः स्मृतः ॥ २४९ ॥

वस्त्रं शतगुणं विद्याद्दर्शनं च ततोऽधिकम् ।

टीका—तिथि एकगुणी, नक्षत्र ४ गुणा, वार ६ गुणा, मास ८ गुणा, वस्त्र १०० गुणा, जो अधिक ज्ञान होय उसका गुण सबसे अधिक है परन्तु अच्छा दिवस हो तो अच्छा गुण दुष्ट हो तो बुरा जानिये ॥ २४९ ॥

मासफल—

आर्तवे प्रथमे मैत्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ॥ २५० ॥

वैशाखे धनवृद्धिः स्याज्ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत् ।

आषाढे मृतधत्ता च श्रावणे धनसंयुता ॥ २५१ ॥

भाद्रे च दुर्भगा नारी आश्विने धनधान्यभाक् ।

कार्तिके निर्द्धना नारी मार्गशीर्षे बहुप्रजा ॥ २५२ ॥

पौषे तु पुंश्चली नारी माघे पुत्रवती भवेत् ।

फाल्गुने पुत्रसम्पन्ना ज्ञेय मासफलं बुधैः ॥ २५३ ॥

टीका--यदि चोत्रमास में प्रथम ऋतुदर्शन हो तो विधवा हो, वैशाख में धनवृद्धि, ज्येष्ठ में रोगशुक्ता, आषाढ़ में मृत्यु, श्रावण में लक्ष्मी, भाद्रपद में दरिद्रता, आश्विन में धनधान्य, कार्तिक में निर्धन, मार्गशीर्ष में बहुप्रजा, पौष में व्यभिचारिणी, माघ में पुत्रवती और फाल्गुन में भी ऋतुदर्शन होने से पुत्रसम्पन्ना होती है ॥ २५०-२५३ ॥

तिथिफल--

शुचिनारी प्रतिपदि द्वितीयायां तु दुःखिनी ।

तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् ॥ २५४ ॥

पञ्चम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी ।

सप्तम्यां सुप्रजा नारी चाष्टम्यां राक्षसी तथा ॥ २५५ ॥

नवम्यां विधवा नारी दशम्यां सौख्यभोगिनी ।

एकादश्यां शुचिनारी द्वादश्यां मरणं ध्रुवम् ॥ २५६ ॥

त्रयोदश्यां शुभा प्रोक्ता चतुर्दश्यां परान्विता ।

पौर्णिमास्याममायां च शुभं चाशुभमेव च ॥ २५७ ॥

टीका--यदि प्रतिपदा में ऋतुदर्शन हो तो शुचि, द्वितीया में दुःखिनी, तृतीया में पुत्रवती, चतुर्थी में विधवा, पञ्चमी में सौभाग्यवती, षष्ठी में कार्यनाशिनी, सप्तमी में उत्तमसन्तति, अष्टमी में राक्षसी, नवमी में विधवा, दशमी में सौख्यभोगिनी, एकादशी में शुचि, द्वादशी में मरण, त्रयोदशी में शुभ, चतुर्दशी में व्यभिचारिणी, पूर्णिमा में शुभ और अमावास्या में अशुभ ये ऋतुदर्शन के फल हैं ॥ २५४-२५७ ॥

ग्रहण और संक्रान्ति में फल--

संक्रान्त्यां ग्रहणे चैव वैरिणी च गतालका ।

टीका—संक्रान्ति में प्रथम प्रनुदर्शन हा तो रविवार और प्रहण में हो गोले विधवा होती है ॥

वारफल—

आदित्ये विधवा नारी सोमं चैव मृतप्रजा ।

मङ्गले आत्मघातः स्याद् बुधे कन्याप्रसूः स्मृता ॥ २४८ ॥

गुरुवारे सुतप्राप्तिः कन्यापुत्रयुता भृगौ ।

मन्दे च पुंश्चली नारी ज्ञेयं वारफलं शुभम् ॥ २४९ ॥

टीका—रविवार को प्रनुदर्शन हा तो स्त्री विधवा होती है। सोमवार को मृतप्रजा, भौमवार को आत्मघातिनी, बुधवार को कन्यासन्तति, गुरुवार को पुं प्रसूति, भृगुवार को कन्यापुत्र युता, और शनिवार को होय तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ २४८-२४९ ॥

नक्षत्रफल—

अश्विन्यां सुभगा नारी भस्मायां विधवा भवेत् ।

कृत्तिकायां च वन्ध्या स्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी ॥ २६० ॥

मृगे दारिद्र्ययुक्तोक्ता चान्द्रायां क्रोधकारिणी ।

पुनर्वसौ पुत्रवतो पुण्ये पुत्रधनेश्वरी ॥ २६१ ॥

आश्लेषायां भवेद्रन्ध्या मघायां चार्थसंयुता ।

पूर्वायां चार्थयुक्ता हि चोत्तरायां सती तथा ॥ २६२ ॥

हस्ते पुत्रधनैर्युक्ता चित्रायामनुचारिणी ।

स्वात्यन्यगर्भावयवा विशाखायां तु निष्ठुरा ॥ २६३ ॥

मैत्रे च दुर्भगा नारी ज्येष्ठायां विधवा भवेत् ।

मूले पतिव्रता साध्वी पूर्वा सौभाग्यभोगिनी ॥ २६४ ॥

उत्तरार्थवती प्रोक्ता श्रवे सौभाग्यसम्पदः ।

धनिष्ठायां शुभा नारी शते भद्रान्विता सदा ॥ २६५ ॥

पूर्वे चोक्ता कामिनी तु उभे लक्ष्मीयुता शुभा ।

रेवत्यां पतिरिक्ता तु ज्ञेयं भानां फलं बुधैः ॥ २६६ ॥

टीका—अश्विनी नक्षत्र में जो रत्नी को प्रथम ऋतुदर्शन हो तो शुभ, भरणी में विधवा, कृत्तिका में वन्ध्या, रोहिणी में प्रियभाषिणी, मृगशिर में दरिद्रिणी, आर्द्रा में क्रोधिनी, पुनर्वसु में पुत्रवती, पुष्य में पुत्र और धनवती, आश्लेषा में वांछ, मघा में धनवती, पूर्वा में अर्थवती, उत्तरा में पतिव्रता, हस्त में पुत्रवती तथा धनवती, चित्रा में दासी, स्वाती में अन्यगर्भवती, विशाखा में निष्ठुर, अनुराधा में दुर्भागिनी, ज्येष्ठा में विधवा, मूल में पतिव्रता, पूर्वाषाढा में सौभाग्यवती, उत्तरा में अर्थवती, श्रवण में सौभाग्य व सम्पत्ति, धनिष्ठा में शुभ, शतभिषा में शुभ, पूर्वाभाद्रपदा में उत्तमभोगवती, उत्तराभाद्रपदा में लक्ष्मीवती और रेवती में पतिरहित होती है ॥ २६०-२६६ ॥

योगफल—

आद्यतौ विधवा नारी विष्कुम्भे च रजस्वला ।

स्नेहः प्रीत्यां तु दम्पत्योरायुष्मांस्तु धनप्रदः ॥ २६७ ॥

सौभाग्ये पुत्रयुक्ता तु शोभने मङ्गलान्विता ।

अतिगराडे तु विधवा सुकर्मणि तु शोभना ॥ २६८ ॥

धृतौ सम्पत्तियुक्ता च शूले रोगयुता भवेत् ।

गराडे दुःखान्विता नारी वृद्धौ पुत्रान्विता भवेत् ॥ २६९ ॥

ध्रुवे तु शोभना नारी व्याघाते भर्तृघातिनी ।

हर्षणे हर्षयुक्ता तु वज्रे चैवानपत्यता ॥ २७० ॥

सिद्धौ पुत्रान्विता नारी व्यतीपाते विभर्तृका ।

मृतवत्सा वरीयांश्चेत् परिवे चाल्पजीविनी ॥ २७१ ॥

शिवे पुत्रवती नारी मिद्धे शीघ्रफलान्विता ।

साध्ये धर्मपरा नारी शुभे शुभगुणान्विता ॥ २७२ ॥

शुक्ले शुभकरा नारी ब्रह्मणि स्वपत्नी स्ता ।

ऐन्द्रं देवररक्ता च वैधव्यं वैश्वतो स्मृतम् ॥ २७३ ॥

टीका—विष्णुसम योग में जो प्रथम ऋतुदर्शन हो नारी विधवा होती है। प्रीतियोग में पति ने स्नेह, आयुधान् में धनप्राप्ति, सौभाग्य में पुत्रवती, शंख में मङ्गलदायक, अग्निगण्ड में विधवा, सुकर्मा में शुभ, वृत्ति में सम्पत्तियुक्त, धन में रोकने गण्ड में दुःखान्विता, वृद्धि में पुत्रयुक्ता, ध्रुव में शुभ, व्याघ्रात में पतिघातिनी, हर्ष में हर्षयुक्ता, वज्र में वन्ध्या, सिद्धि योग में पुत्रयुक्ता, व्यतीपात में पतिहिनः परीयान् में मृतपुत्रा, परिघ में अल्पजातिनी, शिव में पुत्रवती, सिद्धि में शीघ्र फलयुक्ता, साध्ययोग में धर्मपरा, शुभयोग में शुभगुणयुक्ता, शुक्लयोग में शुभकर्मपरा, ब्रह्मयोग में निजपतिरक्ता, ऐन्द्र में देवररक्ता और वैधृतियोग में विधवा होती है ॥ २६७-२७३ ॥

करणफल—

वै प्रोक्ता तु वन्ध्या स्त्री बालवे पुत्रसम्पदः ।

कौलवे पुंश्चली नारी तैतिले चारुभाषिणी ॥ २७४ ॥

गरे च गुणसम्पन्ना वणिजे पुत्रिणी स्मृता ।

विष्टायां मृतवत्सा च शकुनौ कार्पपीडिता ॥ २७५ ॥

चतुष्पदे शुभा नारी नागे पुत्रवती भवेत् ।

किंस्तुघ्ने व्यभिचारिणी करणानां शुभं फलम् ॥ २७६ ॥

टीका—वै करण में जो स्त्री प्रथम ऋतुमती हो तो यह वन्ध्या होती है। बालवे में पुत्र की प्राप्ति, कौलवे में वेश्या, तैतिल में प्रियभाषिणी, गर में गुणसम्पन्ना, वणिज में पुत्रिणी, विष्टि में मृतवत्सा, अर्थात् उसके बालक मर जायेंगे। शकुनि में कामातुरा, चतुष्पदे में शुभ, नाग में पुत्रवती और किंस्तुघ्ने में हो तो व्यभिचारिणी होगी ॥ २७४-२७६ ॥

राशि फल—

व्यभिचारी तु मेढ्रे स्याद् वृषभे सुखभोगिनी ।

मिथुने धनयुक्तोक्ता कर्कटे दुःखिता बुधैः ॥ २७७ ॥

सिंहे पुत्रवती नारी कन्यायां मानिनी शुभा ।

तुले विचक्षणा नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी २७८ ॥

धने पतिव्रता ज्ञेया मांसहीना च नक्रके ।

कुम्भे धनवती ज्ञेया मीने च चपला बुधैः ॥ २७९ ॥

टीका—मेघराशि में जो ऋतुमती हो तो व्यभिचारिणी, वृष में सुखभोगिनी, मिथुन में धनयुक्ता, कर्क में दुःखी, सिंह में पुत्रवती, कन्या में अभिमानिनी, तुला में कुचाली, वृश्चिक में जाचिणी, धन में पतिव्रता, मकर में वृक्षा, कुम्भ में धनवती और मीन में चपला होती है ॥ २७७--२७९ ॥

होरा फल—

सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चन्द्रे होरे पतिव्रता ।

कुजे होरे तु दौर्भाग्यं बुधे होरे तु पुत्रिणी ॥ २८० ॥

जीवे सर्वसमृद्धिः स्याद् भृगौ सौभाग्यमेव च ।

शनौ सर्वविनाशाय होरकस्य फलं बुधैः ॥ २८१ ॥

टीका—इन श्लोकों का अर्थ चन्द्र में देखिये ॥ २८०--२८१ ॥

होरा	फल	होरा	फल
रवि का होरा	शोचिणी	शुक्र का होरा	सौभाग्य
सोम का होरा	पतिव्रता	शुक्र का होरा	सौभाग्य
मान का होरा	दुर्भाग्य	शनि का होरा	सर्वविनाश
बुध का होरा	पुत्रिणी		

फल—

मेघलग्ने दक्षिण च वृषभे धनयुक्ता ।

कामिनी मिथुने लग्ने कर्कटे पतिनामिका ॥ २८२ ॥

सिंह पुत्रप्रसूता च पतियुक्ता स्त्रिलग्नके ।

तुले धैवान्यतादायी वृश्चिके दुद्रुदुःसिता ॥ २८३ ॥

घनुर्लग्ने धनैश्वर्यं मकरे कर्कशा भवेत् ।

कुम्भे वंशद्वयज्जी च मीने सर्वगुणान्विता ॥ २८४ ॥

टीका—मेघ लग्न में यदि स्त्री ऋतुमति हो तो दक्षिणा होती है, वृश्चिक में धनयुक्ता, मिथुन में कामिनी, कर्क में पतिनाशिनी, सिंह में पुत्रप्रसूता, पतिमता, तुला में श्रम्यतादायका, वृश्चिक में दुद्रुदुःसिता, धन में मकर में कर्कशा, कुम्भ में उभयवंशनाशिनी और मीन में सर्वगुणान्विता होती है ॥ २८३—२८४ ॥

ग्रहों का फल—

लग्ने राहुश्च सौरिश्च रविचन्द्रौ तयैव तु ।

तदा सा विधवा नारी सर्वसौभाग्यवर्जिता ॥ २८५ ॥

टीका—जित्त लग्न में प्रथम स्त्री रजस्वला हो उसमें यदि राहु, शनि, रवि, वृश्चिक ये चार ग्रह स्थित हों तो वह स्त्री विधवा होती है ॥ २८५ ॥

रक्त फल—

शोणितो विन्दुमात्रेण स्वैरिणी चाल्पशोणिता ।

रक्ते रक्ते भवेत्पुत्रः कृष्णे चैव मृतप्रजा ॥ २८६ ॥

पिच्छिले च भवेद्वन्ध्या काकवन्ध्या च पाराडुरे ।

पीते दुश्चारिणी ज्ञेया सुभगा गुञ्जसदृशे ॥ २८७ ॥

सिन्दूरवर्णे रक्ते तु कन्यासन्ततिरेव च ॥

टीका—प्रथम ऋतु दर्शन के समय रक्त विन्दुमात्र और अल्पवर्ण हो तो उसका फल यह है कि स्त्री व्यभिचारिणी हो, और रक्त वर्ण रक्षित हो तो पुत्रवती, काला हो तो मृतप्रजा, पिच्छिल अर्थात् गाढ़ा हो तो वांस्त, पाराडुर वर्ण हो तो काकवन्ध्या, पीतवर्ण हो तो दुश्चारिणी, गुञ्जा फल के सदृश हो तो सुभागिनी और सिन्दूर वर्ण हो तो कन्या प्रसूता होती है ॥ २८६—२८७ ॥

कालफल—

पूर्वाह्णे सुभगा प्रोक्ता मध्याह्ने चैव निर्धना ।

अपराह्णे शुभा चैव सायाह्ने सर्वभोगिनी ॥ २८८ ॥

सन्ध्ययोरुभयोर्वेश्या निशीथे विधवा भवेत् ।

पूर्वरात्रे तथा वन्ध्या दुर्भगा सर्वसन्धिषु ॥ २८९ ॥

टीका—जिस स्त्री का प्रथम ऋतुदर्शन प्रातःकाल हो तो वह सुभगा होगी, मध्याह्न में हो तो निर्धना, तीसरे पहर हो तो शुभा, सन्ध्या को हो तो सर्वभोगिनी, और दोनो सन्धि में हो तो वेश्या, आधी रात में हो तो विधवा, पूर्वरात्रि में हो तो पांश और सब सन्धि में हो तो दुर्भगा होगी ॥ २८८-२८९ ॥

पहिरे हुए वस्त्रों का फल—

सुभगा श्वेतवस्त्रा च रोगिणी रक्तवस्त्रका ।

नीलाम्बरधरा नारी विधवा पुष्पवन्तिका ॥ २९० ॥

भोगिनी पीतवस्त्रा च मिश्रवस्त्रा वरप्रिया ।

सूक्ष्मा स्यात्सूक्ष्मवस्त्रा च दृढवस्त्रा पतिव्रता ॥ २९१ ॥

दुर्भगा जीर्णवस्त्रा च सुभगा मध्यवाससा ।

धौतवस्त्रा शुभा नारी मलिनी मलिना भवेत् ॥ २९२ ॥

टीका—प्रथम ऋतु के समय में यदि स्त्री श्वेत वस्त्र पहिरे हो तो सुभगा, रक्त वस्त्र हो तो रोगिणी, नीला वस्त्र हो तो विधवा, पीतवस्त्र हो तो भोगिनी, मिश्रवस्त्र हो तो पतिप्रिया सूक्ष्म वस्त्र हो तो वरप्रिया दृढ वस्त्र हो तो पतिव्रता सूक्ष्म वस्त्र हो तो दुर्भगा, मध्यम वस्त्र हो तो सुभगा धौता वस्त्र हो तो शुभा और मलिनवस्त्र पहिरे हो तो मलिनी होगी ॥ २९०-२९२ ॥

रजस्वलाधर्म—

आर्तवाभिष्टुतां नारीमेकवेश्मनि संश्रयेत् ।

न चान्यजातिसंस्पर्शं कुर्यात्स्पर्शं न च क्वचित् ॥ २१३ ॥

त्रिरात्रं स्वमुखं नैव दर्शयेद्यस्य कस्यचित् ।

स्ववाक्यं श्रावयेन्नैव न कुर्याद्दन्तधावनम् ॥ २१४ ॥

न कुर्यादार्तिं नारी ग्रहाणामीक्षणं तथा ।

अञ्जनाभ्यञ्जनं स्नानं प्रवासं वर्जयेत्तथा ॥ २१५ ॥

नखादिकृन्तनं रज्जुतालपत्रादिवन्धनम् ।

नैव गरावे मुञ्चति तोयं चाञ्जलिना पिबेत् ॥ २१६ ॥

टीका—प्रथम अट्टमती को एक घर में रहना, अन्य जाति से स्पर्श न करना अपर्णा जाति में भी स्पर्श न करना, तीन रात्रि अपना मुख किसी को न दिखाना अपर्णा गरी जिसो को न स्नाना, दातुन नहीं करना, नचुर्वो का अवलोकन न करना काजल, तेन, स्नान, रास्ता चटना, डोरो का स्पर्श, ताल पत्र का बन्धन इत्यादि कर्म न करना, नवीन मृत्तिका के पात्र में भोजन करना, और अबुली से जल पीना कदा है । २१३—२१६ ।

गर्भाधान के मुहूर्त—

ऋतौ तु प्रथमे कार्यं पुनश्च शुभे दिने ।

मयामूलान्त्यपजान्तमुक्त्वा चन्द्रवले सति ॥ २१७ ॥

टीका—प्रथम अट्टमद्वय के समय पुनश्च और शुभ दिन में मया, मूल रेवती, अमावस्या, पूर्णिमा इनको छोड़कर बसवान् चन्द्रमा में गर्भाधान करना ॥ २१७ ॥

गर्भाधान में त्थाज्य—

गराडान्तं त्रिविधं त्यजेन्नियतजन्मर्त्तं च मृलान्तकम्

दन्तं पौष्पागमथोपरागदिवसं पानं तथा वैद्यनिम् ।

गर्भाधान से लग्नशुद्धि—

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्यायारिभैः पुंमहदृष्टलग्ने ।

प्रोजांशकेऽब्जेऽपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याशिवषु मध्यमं स्यात् ३०७

टीका—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम ये केन्द्र हैं—इसमें शुभग्रह हों, त्रिकोण वम, पञ्चम, इनमें शुभग्रह होय, ३, ११, ६, इनमें पापग्रह हों, लग्न को पुरुषग्रह खते हो, और विषम नवांश में गर्भाधान शुभ है और समरात्रि, पुनर्वसु, पुष्य, शिवनी नक्षत्र मध्यम होते हैं ॥ ३०७ ॥

प्रथम गर्भिणी के पुंसवनादिक संस्कार—

मूलादित्रितये करे श्रवणके भाद्रद्वयाद्रात्रये

रेवत्यां मृगश्रवणके दिनकरे भौमे न रिक्तातिथौ ।

नेत्रे मास्यथवाग्निमासि धनुषि स्त्रीमीनयोश्च स्थिरे

लग्ने पुंसवनं तथैव शुभदं सीमन्तकर्माष्टमे ॥ ३०८ ॥

टीका—मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, दस्त, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, मृगश्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर और रावि गोमपार लेने, और रिक्ता तिथि वर्जनीय है और गर्भाधान से दूसरा और तीसरा मास और घन, कन्या, मीन और स्थिर लग्न में पुंसवन कर्म को करें और इन्हीं नक्षत्र लग्नों में और अष्टम मास में सीमन्तकर्म करना शुभ कहा है ॥ ३०८ ॥

बार फल—

पुंस्तुश्च सौरेस्तनुहानिरिन्दोः प्रजामृतिः पुंसवने बुधस्य ।

शकी च वन्ध्या भवतीह शुक्रे स्त्रीपुत्रलाभा रविर्भौमजीवः ॥ ३०९ ॥

टीका—शनिपार को पुंसवनकर्म करें तो शुभ हो, चन्द्रपार को शरीर का मज्जा पार को सन्तान का नाम शुक्रपार को बाह्यपार (पञ्चम मास) का रवि

मासेश्वर ज्ञान—

मासेश्वरः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरि—

चन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रादिवाकाराः स्युः ॥

मासेश्वरज्ञानार्थ मासेशचक्र—

१	२	३	४	५
स्वामी-शुक्र	स्वामी भौम	स्वामी गुरु	स्वामी-रवि	स्वामी-शनि
६	७	८	९	१०
स्वामी-शनि	स्वामी-बुध	स्व. गर्वाधानलवन	स्वामी-चन्द्र	स्वामी-शनि

गर्भिणीधर्म—

भूम्यां चैवोच्चनीचायामारोहणारोहणे ।

नदीप्रतरणं चैव शकटारोहणं तथा ॥ ३१२ ॥

उग्रौषधं तथा क्षार मैथुन भारवाहनम् ।

कृते पुंसवने चैव गर्भिणीं परिवर्जयेत् ॥ ३१४ ॥

टीका—पुंसवनकर्म होने के उपरान्त गर्भिणी को जेवें नीचे स्थान पर चलना उतरना, भागकर चलना, नदी तैरना, गाड़ी पर बैठकर चलना, तैरना, पर्वत गमन औषध, नीरस, क्षार आदि खाना, मैथुन, भार उठाना ये सब कर्म वर्जित है ॥ ३१२-३१४ ॥

गर्भिणीप्रश्न—

नामाक्षराणि त्रिगुणोक्तानि तुरङ्गदेगे तिथिनिश्चितानि ।

अष्टौ च भाग लभते च शेषं समे च कन्या विषमे च पुत्रः ॥ ३१६ ॥

टीका—गर्भिणी के नाम अक्षर को त्रिगुण दोरे विभक्त ३ को तीन भाग के नामों का मिनाके वर्तमान तिथि मिलाने और पाठ का नाम से विषम पुत्र, सम रहे तो पुत्र और विषम दूधे तो पुत्र होत ॥ ३१६ ॥

प्रकारान्तर—

नखद्वयं गर्भिणिनामधेयं तिथिप्रयुक्तं शरसंयुतं च ।

एकेन हीनं नवभागदेयं समे कुमारो विषमे च पुत्रः ॥३१५॥

टीका—४० या २२ में गर्भिणी का नामाक्षर जोड़ देना और शुक्लपत्र के प्रतिदिन से वर्तमान तिथि जोड़ना और ५ और सम मिलाकर १ कम करना अनन्तर । का भाग देने से विषम/शेष बचे तो पुत्र और सम शेष बचे तो कन्या की उम्मीद जानना ॥३१७॥

प्रसूतिम्यान प्रवेश नक्षत्र—

रोहिण्येन्दवयौष्णेषु स्वातीवास्तुयोरपि ।

पुनर्वसौ पुष्यहस्ते धनिष्ठात्र्युत्तरासु च ॥ ३१८ ॥

मैत्रे त्वाष्ट्रे तथाश्विन्यां सूतिकागारवेशनम् ।

प्रसूतिसम्भवे काले सद्य एव प्रवेशयेत् ॥ ३१९ ॥

टीका—रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, अनुराधा, चित्रा, अश्विनी इन नक्षत्रों में तत्काल प्रवेश करावे ॥ ३१८-३१९ ॥

गर्भ के लक्षण—

कललं च घनं शाखास्थित्वग्रोमोद्गमः स्मृतिः ।

भुक्तिरुद्वेगसंस्मृतिमसिष्वाधानतः क्रमात् ॥ ३२० ॥

टीका—गर्भाधान से १० मास तक गर्भ का रूप कहते हैं । प्रथम एक मास में कलल याने शुक्र रुधिर इसके संयोग से पिण्डित होता है । २ मास में घन याने बड़ पिण्ड बड़ होता है । ३ मास में उस पिण्ड में शाखा याने हस्त और पाद उत्पन्न होते हैं । ४ मास में अस्थि (हड्डी) होते हैं । ५ मास में उस पर त्वचा याने चमड़ा । ६ मास में रोम याने केस होते हैं । ७ मास में स्मृति अर्थात् ध्यान होता है । ८ मास में जुघा । ९ मास में उद्वेग अर्थात् गर्भस्थल उदर से निकलने की इच्छा करता है । १० मास में प्रसव जानना चाहिये ॥ ३२० ॥

प्रसूति समय का प्रश्न—

मीने मेपे स्त्रियौ द्वे च चतस्रो वृषकुम्भयोः ।

तुलाकन्यकयोः सप्त वाणाख्या धनकर्कयोः ॥ ३२१ ॥

अन्यलग्ने भवेत्तिस्र एवं ज्ञेयं विचक्षणैः ।

यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वाङ्गभङ्गता ॥ ३२२ ॥

रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम् ।

टीका—मीन अथवा मेप इन लग्नों में जो स्त्री के प्रसव होय तो उस समय उसके निकट दो स्त्रियां, और वृष कुम्भ में होय तो ४, तुला, कन्या में होय तो ७, धन और कर्क में ५, अन्य लग्नों में तीन स्त्रियां जाननी चाहिये । जन्मकुण्डली के मध्य जिस दिशा में राहु स्थिर हो उसी दिशा में शय्या जाननी, जिस लग्न में मङ्गल बैठा हो उससे खाट का अङ्ग भङ्ग जानिये, जिस स्थान में रवि हो उससे दीपक और जिस राशि में शनि हो उसमें नाल समझना ॥ ३२१-३२२ ॥

तिथिगण्डान्त—

पूर्णातिथिस्तथ्योः सन्धिर्नाडीद्वयं तथा ।

गण्डान्तं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ ३२३ ॥

टीका—पूर्णा तिथि कहिये १४, ५, १०, और पड़िवा, छठ, एकादशी कहिये नन्दा की दो घटी अर्थात् पूर्णिमा, पञ्चमी, दशमी के अन्त की एक २ और पड़िवा, छठ, एकादशी के आदि की एक घड़ी तिथि गण्डान्त है, यात्रा, विवाह, यशोपवीत में वर्जित है, करे तो मृत्यु होय ॥ ३२३ ॥

लग्नगण्डान्त—

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मानिमेपयोः ।

गण्डान्तमन्तराले स्याद् घाटकार्द्ध मृतिप्रदम् ॥ ३२४ ॥

टीका—कर्क. सिंह इन दोनों लग्नों की घटिका आधी और क्रम से घटिका और घन, मीन, मेष, इनके आदि की आधी घटी लग्नगण्डान्त हैं इनमें कर्म करे तो वे मृत्यु देते हैं ॥ ३२४ ॥

नक्षत्रगण्डान्त—

पाष्णाश्विन्योः सार्पपित्र्यर्ज्योश्च यच्च ज्येष्ठामूलयोरन्तरालम् ।
तद्गण्डान्तं स्याच्चतुर्नाडिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिश्चयम् ॥३॥

टीका—रेवती, अश्विनी इनकी लग्नि की २ घटिका, इसी क्रम से आश्लेषा, ज्येष्ठा, मूल इनकी लग्नि की ४ घटिका वर्जनीय है और ऐसे ही तिथि, लग्न और नक्षत्र ये विविध गण्डान्त जानिये । यह यात्रा जन्मकाल और विवाह वर्जित है ॥ ३२५ ॥

जातक ।

जन्मकाल में गण्डान्त का शुभाशुभ फल—

अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्द्धे वाध्यते पिता ।
प्रपादि साक्रपश्चार्द्धे जननीं वाधते शिशुः ॥ ३२६ ॥
सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते ।
वर्जयेद्दुर्गः शोवे तच्च पारमासिकं भवेत् ॥ ३२७ ॥

टीका—अश्विनी, मघा, मूल इन नक्षत्रों के पूर्वार्द्ध में जन्म हो तो पिता अशुभ, और रेवती, ज्येष्ठा इन दोनों नक्षत्रों के उत्तरार्द्ध में जन्म हो तो माता अशुभ और गण्डान्त में जन्म हो तो शिशु का त्याग करना योग्य है अथवा बुध नक्षत्र को न देखें ॥ ३२६-३२७ ॥

कृष्णचतुर्दशी का जन्म फल—

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूते पट्विधं फलम् ।
चतुर्दश्याश्च पट्टभागान् कुर्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ ३२८ ॥

द्वितीये पितरं हन्ति तृतीये मातरं तथा ।

चतुर्थे मातुलं हन्ति पञ्चमे वंशनाशनम् ॥ ३२१ ॥

षष्ठे च धनहानिः स्यादात्मनो वंशनाशनम् ।

टीका—जो कृष्णचतुर्दशी को जन्म हो तो तिथि के छु खण्ड दश दश घटिका के जो प्रथम खण्ड में जन्म हो तो शुभ, द्वितीय में पिता को अशुभ, तृतीय में माता अशुभ, चतुर्थ में मामा को अशुभ, पञ्चम में वंशनाश, छठे में धनहानिकारक अपने वंश का नाशक जानिये ॥ ३२८-३२९ ॥

अमावास्या के जन्म का फल—

सिनीवाल्यां प्रसूताश्च दासी भार्या पशुस्तथा ॥ ३३० ॥

गजोऽश्वो महिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ।

कुहुप्रसूतिर्यथ सर्वदोषकरी स्मृता ॥ ३३१ ॥

यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनम् ।

सर्वगराडसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत् ॥ ३३२ ॥

टीका—चतुर्दशीयुक्त अमावास्या को दासी अथवा भार्या, गाय, हस्तिनी, घोड़ी, जो प्रसूता हो तो वे इन्द्र की भी सम्पत्ति हर लेती है और ठीक अमावास्या को प्रसूता हो तो बहुत से दोष लगे और जिसकी इनमें प्रसूति हो उसके आयु तथा धन नाश हो और गण्डान्त में प्रसूति हो तो बहुत से दोष जानिये ॥ ३३०-३३२ ॥

दिनक्षयादिक का फल—

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ ।

शूले गराडंतिगराडे च परिघे यमघराटके ॥ ३३३ ॥

कालदराडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सदाशुणे ।

तस्मिन् गराडदिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते ॥ ३३४ ॥

अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुता सता ।

ज्येष्ठानन्तः का फल—

ज्येष्ठादौ जनने माना द्वितीये जनने पिता ॥ ३३५ ॥
 तृतीये जननी भ्राता स्वयं माता चतुर्थके ।
 आत्मानं पञ्चमे हन्ति षष्ठे गोत्रजयो भवेत् ॥ ३३६ ॥
 सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ।
 नवमे श्वशुरं चैव सर्वं हन्ति दशांशके ॥ ३३७ ॥

टीका—ज्येष्ठा नक्षत्र में जो जन्म होय तो उस नक्षत्र के साठ घड़ियों के भाग समान करे तिसका फल द्वा प्रकार से जाने । प्रथम छ घड़ी में जन्म हो माता को अशुभ, दूसरा भाग पिता को, तीसरा मामा को, चौथा माता को, शिशु को, छठा भाग गोत्रजों को, सातवाँ पिता तथा नाना के परिवार को, आठवाँ बड़े भ्राता को, नवम श्वशुर को, दशवाँ सर्वजनों को दुरा है ॥ ३३५-३३७ ॥

मूल नक्षत्र का फल—

मूलं मूल्मभस्त्वक् च शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ।
 वेदाश्च सुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा ॥ ३३८ ॥
 नन्दावाणरसारुद्रामूलभेदाः प्रकीर्तिताः ।
 मूले मूलविनाशाय स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ॥ ३३९ ॥
 त्वचि भ्रातृविनाशाय शाखा मातृविनाशकृत् ।
 पत्रे सपरिवारः स्यात्पुष्पेषु नृपवल्लभः ॥ ३४० ॥
 फलेषु लभते राज्यं शिखायामत्यजीवितम् ।

टीका—मूल नक्षत्र को मूलवृक्ष कल्पना करते हैं तिसकी ६० घट्टी के स्थान इस
ति है, प्रथम ४ घट्टिका वृक्ष का मूल तिनमें जन्म होय तो नाश, दूसरा भाग ७
टेका स्तम्भ तिन में हानि और धन का नाश, तीसरा भाग १० घट्टिका वृक्ष की
चा तिनमें भ्राता को अशुभ होता है, चौथा भाग ८ घट्टिका शाखा तिनमें मामा
अशुभ, पाँचवां भाग ६ घट्टी वृक्ष के पत्र तिनमें परिवार का नाश, छठां भाग ५
टी पुष्प तिनमें राजमन्त्री हो, सातवां भाग ६ घट्टी फल तिनमें राज्यप्राप्ति हो,
आठवां भाग ११ घट्टी का वृक्ष की शिखा तिनमें जन्म हो तो शिशु अल्पायु हो, ऐसे
आठ स्थान का फल जानिये ॥ ३३८-३४० ॥

जन्मकाल में मूल नक्षत्र किस लोक में है इसके जानने का प्रकार—

वृषालिसिंहेषु घटे च मूलं दिवि स्थितं युग्मतुलाङ्गनान्त्ये ।
पातालं गं मेघधनुःकुलो रनक्रेषु मर्त्येष्विति संस्मरन्ति ॥ ३४१ ॥

टीका—वृष, कुम्भ, वृश्चिक इन लग्नों में जन्म हो तो उस दिन मूल नक्षत्र स्वर्ग
होता है तिसका फल राज्यप्राप्ति और मिथुन, तुला, मीन में मूल पाताल में
जानिये तिसका फल धनप्राप्ति, और मेष, धन, कर्क, मकर इन लग्नों में मूल मृत्यु
लोक में होता है इसका फल कुटुम्बनाश है । यह १२ लग्नों के फल हैं ॥ ३४१ ॥

आश्लेषा नक्षत्र का नराकार चक्र—

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहु-

हृज्जानुगुह्यपदमित्यहिदेहभागः ।

वाणाद्रिनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरु-

परानन्दपञ्चशिरसः क्रमशस्तु नाड्यः ॥ ३४२ ॥

राज्यं पितृक्षयो मानृनाशः कामक्रियारतिः ।

पितृभक्तो बली स्वप्नस्त्यागो भोगी धनी क्रमात् ॥ ३४३ ॥

टीका—आश्लेषा नक्षत्र की घट्टिकाओं को नराकार चक्र में स्थापन करने में
प्रथम ६ घट्टिका मस्तक तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वितीय ७ घट्टी नेत्र मुख तिनका
फल पिता का नाश, तीसरा चिमा दो घट्टी तिनका फल माना का नाश, चौथा ३

घटिका ग्रीवा तिनका फल परस्त्रीरत, पांचवां भाग ४ घटी दोनों कांशे
फल आत्मघाती, आठवां भाग ६ घटी दोनों जानु तिनका फल त्यागी, नव
६ घटिका गुल तिनका फल भोगी, दशवां भाग ५ घटी दोनों पांच तिनका
धनवान् । इसी क्रम से जिस विभाग में जन्म हो उसका फल स्थानानुसार
योग्य है ॥ ३४२-३४३ ॥

गोमुखप्रसव का नक्षत्र--

पूषाश्विनौ शुरौ सार्यमघाचित्रेन्द्रमूलभे ।

एषु नक्षत्रजातानां कुर्याद् गोजननं शुभम् ॥ ३४४ ॥

टीका—रेवती, अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा और मूल
नक्षत्रों में बालक का जन्म हो तो गोमुखप्रसव शान्ति करने से शुभ है ॥ ३४४ ॥

जन्मसमय में सूर्यादिग्रहों का फल ।

तनुस्थान—

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां

पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम् ॥

द्यायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं

जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः ॥ ३४५ ॥

धनस्थान—

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा

वित्ते स्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।

चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा

नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः ॥ ३४६ ॥

सहजस्थान—

भानुः करोति विरुजं रजनीकरोऽपि

कीर्त्यायुतं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ॥

ऋद्धि बुधः सुधिषणां सुविनीतवेषं
स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये ॥ ३१७ ॥

सुहृत्स्थान—

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतुर्थे ।
सोमो बुधः सुरगुरुभृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं च नृपकर्मरतः प्रधानम् ॥ ३१८ ॥

सुतस्थान—

पुत्रे रविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्च
स्वल्पात्मजं शनिधरातनुजीव-पुत्रम् ।
शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुखिनः सुखम् ॥ ३१९ ॥

रिपुस्थान—

मार्तराजभूमितनुजो हतशत्रुपञ्च
पङ्कनरं रिपुगृहेष्वतिपूजनीयम् ।
काव्येन्दुजो मतिविहीनमनलरोग
जीवः करोति दिक्कल मरणं शनाहः ॥ ३२० ॥

जायस्थान—

तिग्मांशुभौमरविजाः पिबन् नृपमन्त्रा
जायां हुवर्गनिस्तां तद् नृपनिजम् ।
जीवेन्दुभार्गवपुषा दहृष्टदुःखी
स्वान्वितां जनसन्तोषरूपमतीतम् ॥ ३२१ ॥

सुसुस्थान—

सर्वे ग्रहा दिनवस्त्रद्वया नितान्त
स्त्यग्निना विन्दते विज्ज हृष्टमिन्द्र

गच्छामि यत्पुत्रपुत्रियेति गच्छामि
सौम्यैर्विद्वाननगिगणनयेत्त ॥ ३४२ ॥

वसन्त्यन—

वसन्त्यन गविगनैश्चामुनिपुत्राः
कुर्वन्ति वसन्ति विनतिं कुर्वन्ति ।
वन्तो वुवो मुमुक्षुः सुगजमन्त्रा
यस्य कियत्तिरिक्तं कुर्वन्ति मनुष्यम् ॥ ३४३ ॥

वसन्त्यन—

आदित्यनौतगन्तयः कित् कर्मसंख्याः
कुर्वन्ति वदुर्कर्मणं कुर्वन्ति ।
वन्तः सुकौतिल्यता वदुर्विपद्युक्तं
भूयान्ति वदुर्गुणकर्मभाजम् ॥ ३४४ ॥

वसन्त्यन—

जानाम्यनो जितकरो नृपतानयुक्तं
जगत्त्रिवेदुक्तं जितजः जितगम् ।
सौम्यो विवेकसुतां व दत्तायुषीजः
युक्तः करोति मनुष्यं गविजः सुकौतिल्यम् ॥ ३४५ ॥

वसन्त्यन—

सूर्यः करोति युक्तं व्ययगो विगातं
क्राणं गयी जितिहो वदुषामाजम् ।
वदुषामाजो गतदत्तं दिसणः इगाङ्गं
युक्तो वदुष्ययकरं गविजः सुताव्रम् ॥ ३४६ ॥
राहुकैटुकं सर्वं मन्दवलायितं वुर्वैः ॥

टीका—इति तान् के वदु अदि कादृश स्थानों में जो ग्रह पड़े हों उनके वदुर्कर्म
जातने के लिये कोटुक वैशिष्ट्य और राहु के वदु के मत श्रुति के समान जानिये । ३४५-३४६

जन्मकाल में बालक के मृत्युकारक ग्रह—

चन्द्रेऽष्टमे जन्मलग्नात्सप्तमे धरणीसुते ।

तथा च नवमे राहौ शनौ जन्मनि संस्थिते ॥ ३५७ ॥

गुरौ तृतीये चाऽऽर्के तु पञ्चमे षष्ठगे भृगौ ।

बुधे चतुर्थे जातश्चेन्न जीवति कदाचन ॥ ३५८ ॥

टीका—जन्मलग्न से चन्द्रमा अष्टमस्थान में, भौम ७ स्थान में, राहु ६ स्थान में, शनि जन्मलग्न में, शुक्र तृतीय में, सूर्य ५ स्थान में, शुक ६ स्थान में, शुभ ४ स्थान में, ऐसे ग्रह पड़े हों तो शिशु मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ३५७-३५८ ॥

जन्मलग्न में री के मृत्युकारक ग्रह—

पष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तमसम्भवः ।

अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ ३५९ ॥

टीका—जन्मलग्न से भौम छठे स्थान में, राहु ७ स्थान में, शनि ८ स्थान में, ऐसे ऐसे ग्रह जिसकी कुराडली में पड़े हों उस पुरुष की स्त्री न जीवे ॥ ३५९ ॥

अच्छे पराक्रमी ग्रह—

मृत्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।

दशमेऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ ३६० ॥

टीका—जिसके जन्मलग्न में शुक्र, बुध और केन्द्र अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम इन स्थानों में बृहस्पति तथा दशमस्थान में मङ्गल हों तो उस बालक को कुलदीपक जानिये ॥ ३६० ॥

अपराक्रमी ग्रह—

नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।

दशमोऽङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥ ३६१ ॥

टीका—जिस बालक के लग्न में बुध, शुक अथवा केन्द्र में बृहस्पति अथवा मस्थान में मङ्गल ऐसे ग्रह न पड़े हों तो उसका जन्म होना बृथा जानिये ॥३६१॥

जातिभ्रंशकारक योग—

धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः ।

शुक्रो गुरुः सप्तमे च त्वष्टमौ रविचन्द्रकौ ॥ ३६२ ॥

ब्रह्मपुत्रे पदे वापि वेश्यासु च सदा रतिः ।

प्राप्ते विंशतिमे वर्षे स्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ ३६३ ॥

टीका—जिसके धनस्थान में शनि, राहु, मङ्गल और सप्तम स्थान में शुक्र, तथा अष्टम स्थान में रवि, चन्द्र ऐसे ग्रह हो वह बालक कदाचित् ब्राह्मण जाति भी जन्म पावे तथापि वेश्याप्रसङ्गी हो और बीसवीं वर्ष की अवस्था में शय स्लेच्छ होय ॥ ३६२-३६३ ॥

माता पिता के नाशक—

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।

तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ३६४ ॥

टीका—जो छठे अथवा बारहवें स्थान में पापग्रह हों तो माता को अशुभ अथवा भयं, दशम स्थान में पापग्रह हों तो पिता को अशुभ होता है ॥ ३६४ ॥

मृत्युकारक ग्रह—

अर्को राहुः कुजः सौरिर्लग्नात् तिष्ठन्ति पञ्चमे ।

पितरं मातरं हन्ति भ्रातरं स्वशिशून्क्रमात् ॥ ३६५ ॥

टीका—जो सूर्य, राहु, मङ्गल, शनि ये ग्रह जन्मलग्न में पञ्चम स्थान में हों तो वे रवि पिता को, राहु माता को भौम-भ्राता को और शनि अपने बालकों को मरे अशुभ हैं ॥ ३६५ ॥

लग्नस्थाने यदा सौरिः पटं भवति चन्द्रमाः ।

कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ ३६६ ॥

टीका—जिसके जन्मलग्न में शनि और पटं स्थान में चन्द्रमा, सप्तम में कुज
पेसे ग्रह हों उसका पिता न जीवे ॥ ३६६ ॥

पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुः पष्ठाष्टमेऽपि च ।

पापदृष्टो विशेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ ३६७ ॥

टीका—जन्मलग्न में सप्तम स्थान में राहु, पटं पाया याउसे स्थान में कुज
और शेष ग्रहों की पापदृष्टि, जो जन्मे ग्रह हों तो जन्म होने ही यातक को मृत्यु हो ॥ ३६७ ॥

जन्मलग्ने यदा राहुः पष्ठो भवति चन्द्रमाः ।

जातो मृत्युमवाप्नोति कुट्ट्यां त्वममृत्युना ॥ ३६८ ॥

टीका—यदि जन्मलग्न में राहु और पष्ठ स्थान में चन्द्रमा हो तो जन्मते ही बालक
मृत्यु हो और जन्मलग्न पर किसी ग्रह की कुट्टि हो तो अपमृत्यु होती है ॥ ३६८ ॥

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।

वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ ३६९ ॥

टीका—यदि जन्मलग्न में मङ्गल और अष्टम स्थान में बृहस्पति हों तो वा
वर्ष में शङ्कर के रक्षक होने पर भी वह मृत्यु से नहीं बच सकता ॥ ३६९ ॥

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।

वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ ३७० ॥

टीका—जो शनि के क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के ग्रह में शनि हो तो
वर्ष देवरक्षित होने पर भी वह शिशु मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ३७० ॥

पष्ठाष्टमस्तथा मूर्तो जन्मकाले यदा बुधः ।

चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ ३७१ ॥

टीका—पष्ठ, अष्टम अथवा जन्मलग्न में बुध हो तो चौथे वर्ष शङ्कर भी रक्षा करेंगे भी बालक न बचे ॥ ३७१ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवः पृष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ।

वषष्ठमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ ३७२ ॥

टीका—मङ्गल के घर में बृहस्पति और पष्ठ अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो ईश्वर से रक्षित होने पर भी बालक आठवें वर्ष मृत्यु को प्राप्त होगा ॥ ३७२ ॥

दशमोऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।

वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ ३७३ ॥

टीका—जन्मलग्न से दशम स्थान में अथवा जन्मलग्न में राहु हो तो सोलहवें वर्ष मनुष्य की मृत्यु हो ॥ ३७३ ॥

ग्रहो की दृष्टि—

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपञ्चमे च ।

त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तके च ॥ ३७४ ॥

शनेस्वेकादशे पूर्णदृष्टिर्जीविस्य कोणके ।

बुधैर्ज्ञेया पूर्णदृष्टिर्भौमस्य चतुरष्टके ॥ ३७५ ॥

टीका—ग्रह अपने स्थान से दसवें और तीसरे स्थान में जो ग्रह या राशि होंगे उसको एक पाद-दृष्टि से देखता है, इसी क्रम से नवम पञ्चम स्थान में ग्रह हो द्विपाद दृष्टि से देखता है, चौथे और आठवें स्थान में जो ग्रह पड़ें उसको वं त्रिपाद दृष्टि में और जो सप्तम स्थानी हो उसको पूर्ण समदृष्टि जानिये । शनैश्चर एकादश अथवा तीसरे स्थान को पूर्णदृष्टि से देखता है पंचवें नवें वं गुरु और चतुर्थ अष्टम स्थान वं भौम पूर्णदृष्टि से देखते हैं ॥ ३७४--३७५ ॥

ग्रहो का उच्चत्व व नीचत्व—

रविर्मेपे तुले नीचो वृषे चन्द्रस्तु वृश्चिके ।

भौमश्च नक्रो कर्के च न्दियां सौम्यो भूपे तथा ॥ ३७६ ॥

गुरुः कर्कं च नक्रं च मीनकन्ये सिनस्य च ।
 मन्दस्तुलायां मेषे च कन्या राहुर्ग्रहस्य च ॥ ३७७ ॥
 राहुर्गुरुमे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम् ।
 प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चतं नीचतं च क्रमाद् वृधेः ॥ ३७८ ॥

टीका—इन श्लोकों का अर्थ नक्षत्रों में देखिये ॥ ३७७—३७८ ॥

ग्रह	रवि	मन्द	मीन	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	शुक्र	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	धन
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन

जन्म का फल—

मेषे दैन्यमुपैति गर्वितवृषे नानामतिर्मन्मथे
 शूरः कर्कटके धृतश्च वनपे कन्या च मानान्विता ।
 सत्यं चैव तुले त्वलौ मलिनता पापान्वितं वै धनु-
 मूर्खोऽपि मकरे घटे चतुरता मीने त्वधीरा मतिः ॥ ३७९ ॥

टीका—मेष लग्न में जन्म हो तो दीनता, वृष में गर्वित, मिथुन में नाना प्रकार की बुद्धि युत, कर्क में बड़ा शूर, सिंह में स्थिर बुद्धि, कन्या में अत्यन्त मानी, तुला में सत्यवादी, वृश्चिक में मलीन, धन में पापबुद्धि, मकर में मूर्ख, कुम्भ में चतुर और मीन में बड़ा अधीर (कायर) होता है ॥ ३७९ ॥

पतिनाशक ग्रह—

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वसरे पतिः ।
 प्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रः षष्ठाष्टमे यदि ॥ ३८० ॥

टीका-स्त्री के जन्मकाल में लग्न में पापग्रह हो तो ७ वर्ष में पति का नाश जानना और चन्द्र पष्ठ वा अष्टम स्थान में हो तो अष्टम वर्ष में पति का नाश जानना ॥३८०॥

प्रकारान्तर—

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते ।

लग्ने च सिंहिकापुत्रे रराडा भवति कन्यका ॥ ३८१ ॥

टीका-जन्म समय में १२, ८ स्थान में जो मङ्गल हो और क्रूर ग्रह भी १२, ८ स्थान में हो और लग्न में राहु हो तो स्त्री विधवा हो पेला जानना ॥ ३८१ ॥

दूसरा प्रकार—

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा ।

सद्यो निहन्ति दण्डत्यारेकं नास्त्यत्र संशयः ॥ ३८२ ॥

टीका-जो लग्न से सप्तम स्थान में पापग्रह हो और चन्द्रमा से सप्तम स्थान पापग्रह हो तो विवाह से श्रृङ्खल काल में स्त्री अथवा पति की मृत्यु हो ॥ ३८२ ॥

विसृतो यदि कर्कसुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ।

केल जलोदससञ्जनिता तदा निधनता वनिनासु तु कीर्तिता ॥ ३८३ ॥

टीका-जो शनिश्चर कर्कराशि में हो और चन्द्रमा मकरराशि में हो तो जलोदग से स्त्री का नाश हो ॥ ३८३ ॥

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजमे करोति ।

पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति ॥ ३८४ ॥

टीका-जो चन्द्रमा पापग्रह के मध्य में बैठा हो तो शस्त्र ५ मृत्यु बढ़ना और जो चन्द्रमा मङ्गल की राशि में बैठा हो तो अग्नि से जलकर नाश बढ़ना और जो पापग्रह सप्तम स्थान में अथवा नवम स्थान में अन्य शुभग्रह हो तो स्त्री दास्य-स्वधारी बेशान्तिनी होती है ॥ ३८४ ॥

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता जणिजे च विधवा खलु दाल्ये ।

पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवती जरता न्यात् ॥ ३८५ ॥

टीका-जो स्त्री के जन्मलग्न से सप्तमस्थान में सूर्य हो तो पतिशान्ति बढ़ना और जो मङ्गल सप्तम हो तो बाल प्रसूया से वैधव्य हो और जो सप्तम पापग्रह हो तो वीर्यन अस्थिरा में विधवा हो और जो सप्तम स्थान में पापग्रह हो तो मृत्यु अस्थिरा में वैधव्य प्राप्त हो पेला जायिगे ॥ ३८५ ॥

लग्ने सितेन्दु कुजमन्दमस्यौ क्रूर जितौ नाज्यस्ता च दाना ।

स्मरे कुजांशोर्जुनेव दृष्टे विनय्यानिश्च गुना गुणानि ॥ ३८६ ॥

सूर्यारौ सजलाधिनौ हिमातः शैलागातान सति—

भौमेन्द्रर्कसुताः मरानजलगाः स्यात्कुतापादितः ।

सूर्याचन्द्रमसौ सलेजितगतौ कन्यापुत्रौ वन्तुना

तौ चेद्वयङ्गविलग्नसंस्थितकरो तोये निगमनततः ॥ ३८५ ॥

टीका—जो सूर्य, मङ्गल, ये दसवें वा नौवें स्थान में हों तो पापान से कल
कहना । और जो मङ्गल, चन्द्र, शनि ये तम से सप्तम वा चतुर्थ वा द्वितीय स्थान
में बैठे हों तो कुंवा, बाबली, तातान आदि ने मृत्यु कहना । और जो सूर्य, चन्द्र
को पापग्रह देखते हों वा युक्त हों तो उन स्त्री को मृत्यु युक्त कहना । और जो सूर्य
चन्द्र के द्विस्वभाव में हों तो जल से मृत्यु कहना आदिये ॥ ३८५ ॥

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्थुर्वलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ।

स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चा परागमज्ञानविराजमाना ॥ ३८८ ॥

टीका—जो समराशि का लग्न हो और उसमें शुक्र, बुध, चन्द्र, गुरु ये बलपुत्र
हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करे और उत्तम प्रकार की धार्मी हो ॥ ३८८ ॥

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरा भवेत् ।

कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरा भ्रमति वेश्मसु ॥ ३८९ ॥

टीका—जिस स्त्री के लग्न से सप्तम स्थान में जो शुक्र हो तो कुल को दुष्टित करे
और जो कर्कराशि में मङ्गल हो तो वन्ध्या और दूसरे के घर में घास करे ॥ ३८९ ॥

पापयोस्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका ।

जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥ ३९० ॥

टीका—जो लग्न को पापग्रह की कर्तरी हो अथवा चन्द्रमा को पापग्रह की
कर्तरी हो तो वह स्त्री दोनों वंश को घात करने वाली होती है ॥ ३९० ॥

तनुस्थान—

मूर्त्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च

राहुर्विनष्टनयां रविजो दरिद्राम् ।

शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-

मायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरोशः ॥ ३९१ ॥

धनस्थान—

कुर्वन्ति भास्करशानैश्चरराहुभौमाः

दास्त्रियदुःखमलुलं नियतं द्वितीये ।

वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्यां

नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ ३१२ ॥

सहजस्थान—

सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये

कुर्युः स्त्रियं बहुसुतां धनभागिनीं च ।

सत्यं दिवाकरसुतः कुरुते धनाढ्यां

लक्ष्मीं ददाति नियतं किल सैहिकेयः ॥ ३१३ ॥

सुहृत्स्थान—

स्वल्पं पयो भवति सूर्यसुते चतुर्थे

दौर्भाग्यमुष्णाकिरणाः कुरुते शशी च ।

राहुर्विनष्टतनयां जितिजोऽल्पबीजां

सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्च कुर्युः ॥ ३१४ ॥

सुतस्थान—

नशात्मजां रविछुजौ खलु पञ्चमस्थौ

चन्द्रात्मजां बहुसुतां गुरुभार्गवौ च ।

राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं

कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशाङ्कः ॥ ३१५ ॥

रिपुस्थान—

पष्ठस्थिताः शनिदिवाकरराहुभौमाः

जीवस्तथा बहुसुतां धनभागिनीं च ।

चन्द्रः करोति विधवामुनानो दग्धिं

वेश्यां शशाङ्कननयः कल्हद्वियां च ॥ ३१६ ॥

जायास्थान—

सौरारजीवबुधराहुर्वीन्दुशुक्राः दद्युः प्रसह्य मरणां खलु सप्तमस्थाः ।
वैधव्यबन्धनभयं क्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासमरणां नियतं क्रमेण ३१७

मृत्युस्थान—

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं
मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः ।
सूर्यः करोति विधवां धनिनीं कुजश्च
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च ॥ ३१८ ॥

धर्मस्थान—

धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्र-
जीवाः सुधर्मानिरतां शशिजः सुभोगाम् ।
राहुश्च सूर्यतनयश्च करोति बन्ध्यां
नारीं प्रसूतितनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ ३१९ ॥

कर्मस्थान—

राहुर्नभःस्थलगतो विधवां करोति
पापे परां दिनकरश्च शनैश्चरश्च ।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुटिलां च चन्द्रः
शेषा ग्रहा धनवर्ती बहुवल्लभां च ॥ ३२० ॥

आयस्थान—

आये रविर्वहुसुतां धनिनीं शशाङ्कः
पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्याम् ।
आयुष्मतीं सुरगुरुभृगुजः सुपुत्रां
राहुः करोति सुभगां सुखिनीं बुधश्च ॥ ३२१ ॥

व्ययस्थान—

अन्ये धनव्ययवर्तीं दिनकृद्दिदां
बन्ध्यां कुजः पररतां कुटिलां च राहुः ।

सार्धं सितेज्यशशिजा बहुपुत्रपौत्र-

युक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनान्धाम् ॥ ४०२ ॥

टीका—इन श्लोकों का अर्थ चन् से देखिये ॥ ३६९—४०२ ॥

स्था	नाम	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	तनु	विधवा	आयुका नाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाश
२	धन	दरिद्र दुःख	बहुपुत्र वती	दारिद्र्य दुःख	सौभाग्य सम्पत्ति	सौभाग्य सम्पत्ति	सौभाग्य सम्पत्ति	दारिद्र्य दुःख	दारिद्र्य दुःख
३	सहज	पुत्रवती वनाढ्य	पुत्रवती वनाढ्य	पुत्रवती वनाढ्य	पुत्रवती वनाढ्य	पुत्रवती वनाढ्य	पुत्रवती वनाढ्य	लक्ष्मी वती	लक्ष्मी वती
४	सुहृद	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्प रतान	अति सुखिनी	अति सुखिनी	अति सुखिनी	दुर्भगा अल्प	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्या अधिक	शिशुनाश वती	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	बहुफलप्राप्ति	रोगिणी	मरण प्राप्ति
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	बलहरूप	धनवती	दारील्ला दैव्या	धनवती	धनवती
७	जाया	रोगिणी	प्रवा शिनी	विधवा	क्षय	भयवन्ध	मृत्यु	वैधव्य मरण	मरण
८	मृत्यु	विधवा	मरणान्त विधवा	धनवती	स्वजन वियोग	स्वजन वियोग	मरणान्त वियोग	अतिपुनः उत्पन्न	मरणान्त विधवा
९	धर्म	धर्मपुष्क लवरी	पुत्रवती	धर्मवाय वती	उत्तमो गवती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	धर्मवती	धर्मवती
१०	कर्म	पाप कारिणी	दारिद्र्यव्याधि कारिणी	मृत्यु	धनवती	धनवतीपर वाप्राप्ति	धनीवर प्राप्ति	पाप वारिणी	विधवा
११	आय	आतपुत्र प्राप्ति	लक्ष्मी वती	बहुपुत्र वती	सुखिनी	आयवती	पुत्रवती	धनवती	मरणान्त विधवा
१२	व्यय	सर्ध वती	दिनाध	पापव्याधि कारिणी	दुष्टता	दुष्टता	पतिवती	मरणान्त विधवा	मरणान्त विधवा

अष्टोत्तरी दशाक्रमः—

आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य आश्लेषा तु रेवती ।

मघा पूर्वोत्तरा चैव चन्द्रस्य च दशा तथा ॥ ४०३ ॥

हस्तो विशाखा चित्रा च स्वाती भौमदशा मृता ॥

ज्येष्ठानुराधामृते च सौम्यस्य च दशा दुर्धः ॥ ४०४ ॥

अभिजिच्छ्रवणः पूषा उषा चैव गन्तव्या ।

धनिष्ठा शततारा च पूर्वभाद्रपदा एतौः ॥ ४०५ ॥

उभयप्राशस्त्रितीहानि पालेन्नीर दशाः सम्यगाः ।

कृत्तिका रोहिणी चोक्ता जयाः शुभदशा वरीः ॥ ४०३ ॥

एतां भानां कर्मेणैव ज्ञेयाः सर्वास्त्रिंश दशाः ।

कूजया अशुभा प्रोक्ता सभा स्यात्सौम्यवेदया ॥ ४०४ ॥

मंगलशा की सम्यगता का क्रम

सूर्यस्य सप्तवर्षाणि इन्द्रोः पञ्चदशौ च ।

भौमस्य दशवर्षाणि वायिनन्दो ज्ञेयस्य च ॥ ४०५ ॥

मन्दस्य दशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः ।

राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रभ्यैकोनविंशतिः ॥ ४०६ ॥

टीका—आर्द्रा से सुगन्धि पर्यन्त २५ नक्षत्रों पर सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, शनि, गुरु, राहु, शुक, इस क्रम से आठ ग्रहों के पृथक् २ दो २ कोष्ठक मिले हैं, जिनमें से महादश की वर्षसंख्या इस प्रकार है। पापग्रह के नक्षत्र ४ और पुनग्रह के २ नक्षत्र जानिये। आर्द्रा से रविदशा गिनिये। और दशा की संख्या नक्षत्र के विभाग से जाने, जो विभाग के अन्त हो तो इस क्रम से भोग्यदशा जाननी और जन्मकाल में जो दशा हो वह प्रथम जाननी। सूर्य की दशा ६ वर्ष, चन्द्र की १५, मङ्गल की ८, बुध की १०, शनि की १०, गुरु की १६, राहु की १२, शुक की १६ वर्ष भोग्य दशा जानिये। मयात् के जन्म नक्षत्र के देशेश के वर्ष से गुणा कर भोग का भाग देने से वर्षादि भुक्तदश प्रमाण होगा इसको अपने वर्ष में घटा देने से भोग्य वर्षादि हो जायगा ॥४०३-४०६॥

अन्तर्दशा लाने का क्रम—

महादशा स्वस्वदशाव्दनिध्ना भक्ता वसुव्योमकुभिः समाद्यः ।

अन्तर्दशाः स्युर्गगनेचराणां तदेकभावो हि महादशा स्यात् ॥४१०॥

टीका—जो ग्रहों की अन्तर्दशा जाननी हो तो जन्मदशा की वर्षसंख्या को दश दशा की संख्या से गुणा करे और १०८ का भाग दे जो लब्धि आवे वह वर्ष संख्या जानिये, फिर बारह से गुणा करके १०८ का भाग देने से जो लब्धि आवे वह मास जानिये, फिर तीस से गुणा करके दिन और ६० से गुणा करके घटी, और ६ से गुणा करके पल इत्यादि निकाल लीजिये और इसी क्रम २० का भाग दिये सदी दशा में दिया जाता है ॥ ४१० ॥

सूर्य की महादशा के वर्ष ६ आदि पुनर्वसु पुण्य आरम्भ						चन्द्र की महादशा के वर्ष १५ मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फल्गु					
अन्तर्दशाक्रम						अन्तर्दशाक्रम					
वर्ष	मास	दिन	घटी	फल		वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	
१	४	०	०	अशुभ		१	१	०	०	शुभ	
२	१०	०	०	शुभ		२	१	१०	०	अशुभ	
३	४	१०	०	शुभ		३	१	१०	०	शुभ	
४	११	१०	०	शुभ		४	१	०	०	अशुभ	
५	६	२०	०	अशुभ		५	४	२०	०	शुभ	
६	०	२०	०	शुभ		६	५	०	०	अशुभ	
७	०	०	०	अशुभ		७	११	०	०	शुभ	
८	२	०	०	शुभ		८	०	१०	०	अशुभ	
९	०	०	०			९	०	०	०		
१०	६	०	०			१०	०	०	०		

भीम की महादशा २ वर्ष ८
दशा चित्रा स्वाती विशाखा

अन्तर्दशा						अन्तर्दशा					
वर्ष	मास	दिन	घटी	फल		वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	
१	४	०	०	अशुभ		१	१	०	०	शुभ	
२	१०	०	०	शुभ		२	१	१०	०	अशुभ	
३	४	१०	०	शुभ		३	१	१०	०	शुभ	
४	११	१०	०	शुभ		४	१	०	०	अशुभ	
५	६	२०	०	अशुभ		५	४	२०	०	शुभ	
६	०	२०	०	शुभ		६	५	०	०	अशुभ	
७	०	०	०	अशुभ		७	११	०	०	शुभ	
८	२	०	०	शुभ		८	०	१०	०	अशुभ	
९	०	०	०			९	०	०	०		
१०	६	०	०			१०	०	०	०		

शनि की महादशा ५ वर्ष ८
पूर्वाषाढा उत्तराषाढा मघा

वर्ष	मास	दिन	घटी	फल		वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	
१	४	०	०	अशुभ		१	१	०	०	शुभ	
२	१०	०	०	शुभ		२	१	१०	०	अशुभ	
३	४	१०	०	शुभ		३	१	१०	०	शुभ	
४	११	१०	०	शुभ		४	१	०	०	अशुभ	
५	६	२०	०	अशुभ		५	४	२०	०	शुभ	
६	०	२०	०	शुभ		६	५	०	०	अशुभ	
७	०	०	०	अशुभ		७	११	०	०	शुभ	
८	२	०	०	शुभ		८	०	१०	०	अशुभ	
९	०	०	०			९	०	०	०		
१०	६	०	०			१०	०	०	०		

विंशोत्तरी महादशा और अन्तर्दशा—

द्विविहीनजनुर्भमङ्गहृत्कमसोऽर्केन्दुकुजायुसूरयः ।
शनिचन्द्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तु दशाधिपास्तथा ॥४११॥

टीका—जन्म नक्षत्र में २ घटा कर ६ का भाग दे शेष १ रहे तो सूर्य की दशा, २ शेष रहे तो चन्द्र की दशा, ३ शेष बचे तो भौम की, ४ शेष बचे तो राहु की, ५ शेष रहे तो गुरु की, ६ शेष बचे तो शनि की, ७ शेष बचे तो बुध की, ८ शेष बचे तो केतु की, ६ का पूरा भाग लग जाय तो शुक्र की दशा जानिये ॥ ४११ ॥

दशाओं के वर्ष भोग्याभोग्य निकालने की रीति—

ऋतुदिगिरयो धृतिनृपातिधृतिर्मेघहयो नखाः समाः ।
क्रमतो हि मता अथादिमा जनिभस्था घटिकाः समाहताः ॥४१२॥
भभोगेन भक्ताः फलं भूक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद् भोग्यसंख्या ।

टीका—ऋतु ६, दिशा १०, गिरि ७, धृति १८, नृप १६, आतधृति १६, मेघ १७, ७ नख २० यह वर्षसंख्या सूर्य से शुरु पर्यन्त लिखी है । जन्म समय जिन ग्रह जेतने वर्ष हो तिन वर्षों से जन्म के गत नक्षत्र को गुणा करे फिर भोग से भाग तो लब्धि मिले सो वर्ष फिर १२ के भाग से दिवस और शेष घड़ी पल फिर इनमे ५ वर्ष मासादि घटावे तो शेष भोग्य वर्षादिक निकल आने हैं ॥ ४१२ ॥

विंशोत्तरीदशा क्रम—

कृत्तिकादिक्रमेणैव ज्ञेया विंशोत्तरी दशा ।

अन्तर्दशाद्युता वर्षमासवासखर्तिताः ॥ ४१३ ॥

टीका—कृत्तिका से लेकर भरणी पर्यन्त २७ नक्षत्र और दशा का क्रम वर्तमान है । पतियों के नाम और उनके वर्षादि संख्या को क्रम से जानना चाहिये ।

अन्यमत—

स्वदशा रामयुणिता तद्वशा युणिता पुनः ।

स्वयुणेन हरेल्लब्धं वर्षमासदिन संवत् ॥ ४१४ ॥

टीका—अपनी प्राप्त दशा को तीन से गुणा करना, जिसका भागफल स्वयुण से वर्ष से गुणा करना, सतत्तर ३० से भाग देने से भागफल को दशा भाग में प्राप्त होता है ॥ ४१४ ॥

प्रमाणान्तर—

दशा दशाहता कार्या दिगुभन्ता मानस्यजदः ।

लब्धिश्चान्तर्दशा ज्ञेया गेष तिन दिन संवत् ॥ ४१५ ॥

टीका—दशा से वर्ष को जानने का यह प्रमाण है । दशा दशाहता कार्या दिगुभन्ता मानस्यजदः । लब्धिश्चान्तर्दशा ज्ञेया गेष तिन दिन संवत् ॥ ४१५ ॥

बुध के मन्द वर्ष १७ आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती अन्तर्दशा					केतु के मन्द वर्ष ७ मघा मूल अश्विनी अन्तर्दशा					शुक्र के मन्द वर्ष २० पूर्वाफल्गुनीपूर्वाषाढाभरणी अन्तर्दशा				
नाम	वर्ष	मास	दिन	घ	नाम	वर्ष	मास	दिन	घ	नाम	वर्ष	मास	दिन	घ
बुध	२	४	२७		केतु	०	४	२७		शुक्र	२	४	०	
केतु	०	११	२७		शुक्र	१	२	०		सूर्य	१	०	०	
शुक्र	२	१०	०		सूर्य	०	४	६		चन्द्र	१	८	०	
सूर्य	०	१०	६		चन्द्र	०	७	०		भौम	१	२	०	
चन्द्र	१	५	०		भौम	०	४	२		राहु	३	०	०	
भौम	०	११	२७		राहु	१	०	१८		गुरु	२	८	०	
राहु	२	६	१८		गुरु	०	११	६		शनि	३	२	०	
गुरु	०	३	१६		शनि	१	१	६		बुध	२	१०	०	
शनि	२	८	६		बुध	०	११	२७		केतु	१	२	०	

महादशा और अन्तर्दशाओं के फल ।

रवि की अन्तर्दशा—

देशान्तरं च निजबन्धुवियोगदुःख—

मुद्गेरोगभयचौरभवा च पीडा ।

पूर्व स्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो

भानोर्दशा जननकालदशा भवन्ति ॥ ४१६ ॥

टीका— देशान्तर वास, भ्राता का वियोग, दुःख, मन को उद्वेग, रोग, भय, चौर, पीडा और सञ्चित धन का नाश करना यह रविदशा का फल है ॥ ४१६ ॥

चन्द्र की अन्तर्दशा—

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रौ प्रतापवलवृद्धिपरम्परा च ।

इष्टान्नदानशयनासनभोजनानि नूनं सदा शशिदशागमने भवन्ति ४१७

टीका— चन्द्रमा की दशा में सुवर्णादि वैभवं और अश्व, गज, पालकी, इत्यादि वाहन लाभ, शत्रु-पराजय, वरु-वृद्धि और नाना प्रकार के 'सुरस-अन्नदान, शयन, स्थान, उत्तम आसन भोजन की प्राप्ति होती है ॥ ४१७ ॥

भौम की अन्तर्दशा—

भृपालचोरभयवाङ्मृता च पीडा सर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुःखिता च ।

चिन्ता ज्वरश्च बहुकष्टदरिद्रियुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशा जन्मने भवति ॥

टीका—राजा और चोर में भय, और अग्नि से पीडा सर्व अङ्गरोग, सदा दुःख, नाना प्रकार की चिन्ता, ज्वर, कष्ट, दरिद्र, ये सब भौम की दशा में होने हैं ॥ ४१८ ॥

राहु की अन्तर्दशा—

दोनो नरो भवति बुद्धिविहीनचिन्ता

सर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुःखिता च ।

पापानि बन्धवहुकष्टदरिद्रियुक्तो

राहोर्दशा जन्मकालदशा भवन्ति ॥ ४१९ ॥

टीका—राहु की अन्तर्दशा में मनुष्य बुद्धिहीन दोन और चिन्तायुक्त, सर्वाङ्गरोग भययुक्त, दुर्लभ, बन्धन, कष्ट और दरिद्रता के कारण क्लेश में रहता है ॥ ४१९ ॥

गुरु की अन्तर्दशा—

राज्याधिकारपरिच्छिन्नचित्तवृत्तिर्वर्माधिकारपरिपालनसिद्धिबुद्धिः ।

सङ्ग्रहोऽपि धनधान्यसमृद्धिर्ना च स्यादेवतागुरुदशागमने भवन्ति ॥ ४२० ॥

टीका—राज्याधिकार और चित्तवृत्ति की धर्म में निष्ठा, आरोग्यता, निश्चय बल धन धान्य वृद्धि, यह गुरु की दशा का फल है ॥ ४२० ॥

शनि की अन्तर्दशा—

मिथ्यापवादवद्वयनमर्थहानि-

मित्रे च बन्धुवचनेषु च भुङ्क्ष्वबुद्धिः ।

सिद्धिं च कार्यमपि यत्र सदा विनष्टं

स्यात्सर्वदा शनिदशागमने भवन्ति ॥ ४२१ ॥

टीका—मिथ्यापवाद, दुर्चर का वय, दान्यत, द्रव्य का नाश, मित्र तथा बन्धुजोते कलह की बुद्धि और कार्य का नष्ट होना शनि की अन्तर्दशा का फल है ॥ ४२१ ॥

बुध की अन्तर्दशा—

दिव्याङ्गनामदनसङ्गमकेलिसौख्यं

नानाविलासमभिरागमनोभिरामम् ।

हेमादिरत्नविभवागम ईशध्यानं

स्यात्सर्वदा बुधदशागमने भवन्ति ॥ ४२२ ॥

टीका—सुन्दर स्त्री और सर्व प्रकार के भोगविलास, सुख और रत्न आदि की प्राप्ति, धन संग्रह, ईश्वर स्मरण इत्यादि बुध की अन्तर्दशा के फल हैं ॥ ४२२ ॥

केतु की अन्तर्दशा—

भार्यावियोगजनितं च शरीरदुःखं द्रव्यस्य हानिरतिक्लृप्तरम्परा च ।

रोगश्च वन्धुकलहश्च विदेशिताघकेतोर्दशाजननकालदशामवन्ति ४२३

टीका—स्त्री वियोग, शरीर को दुःख, धननाश, कष्ट, रोग और वन्धुकलह आदि देशान्तर-गमन ये केतु की दशा के अशुभ फल हैं ॥ ४२३ ॥

शुक्र की अन्तर्दशा का फल—

आरामवृद्धिरपि सर्वशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्रधनधान्यसमावृत्त च ।

आयुःशरीरसुतपौत्रसुखं नराणां द्रव्य च भार्गवदशागमने भवन्ति ४२४

टीका—आराम आदि स्थान की प्राप्ति और शरीर पुष्ट, श्वेत वस्त्र की प्राप्ति, धन धान्य की वृद्धि आयु और पुत्र पौत्र की वृद्धि द्रव्य की प्राप्ति यह शुक्र की दशा का फल है । इसी प्रकार सब ग्रहों की महादशाओं के फल होते हैं ॥ ४२४ ॥

योगिनी दशा के स्वामी—

योगिनी दशा क्रम—

स्वर्ज्ञं पिनाकिनयनैः संयोज्य वसुभिर्भजेत् ।

योगिन्योऽष्टौ समाख्याताः शून्यपातेन सङ्गृह्य ॥ ४२६ ॥

टीका—जन्म नक्षत्र में तीन राशियाँ मिलाने और आठ का भाग दे जो शेष शून्य में मङ्गलादि दशा क्रम से जानिये । इनका क्रम कोष्ठक में लिखा है । पुराभाद्रपद से योगिनी दशा प्रारम्भ होती है ॥ ४२६ ॥

योगिनी दशा के नाम—

मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिकापि च ।

उल्का सिद्धा सङ्गृह्य च योगिन्यष्ट दशा स्मृताः ॥ ४२७ ॥

टीका—मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, सङ्गृह्य ये आठ योगिनी-दशाओं के नाम क्रम से जानिये ॥ ४२७ ॥

वर्ष संख्या—

एकं द्वे त्रीणि वेदाश्च पञ्चषट्सप्तमानि च ।

अष्टवर्षाणि हि भवेन्मङ्गलादावनुक्रमात् ॥ ४२८ ॥

दशावर्षादिनानि स्युर्यानि षट्त्रिंशता भजेत् ।

लब्धान्येकादिनिष्णानि दिनाद्यन्तर्दशा भवेत् ॥ ४२९ ॥

टीका—मङ्गलादि दशाओं के वर्ष १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ वर्ष संख्या के विस्तार में उन में अन्तर्दशा लाने की रीति । प्रथम दशा वह एक तिसके ३६० दिन में ३६ का भाग देने से लब्धि निकल आती है इसी रीति से दशा और अन्तर्दशा निकाल लीजिये ॥ ४२९ ॥

अन्तर्दशा में विशेष—

अथान्तर्दशायाः प्रकारं प्रवक्षि वार्षिकं तथा स्वस्ववर्षेण गुरायम् ।

ततः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा सदां खेटविद्वर्विधेया फलार्थम् ४३

विद्वत्ता का फल—

दुःखशोककृन्तरोर्गर्वाधता व्यग्रता च कन्ददः मज्जनैश्च ।

यन्त्यभागकथिता कन्ददाज्यो विद्वत्ता च विदुषां सुखदाज्यो ॥ ४३० ॥

टीका—विद्वत्ता की दशा में प्रथम सुख प्राप्त होता है और मज्जन का सुख और कल में रोग की मुक्ति, निरा में व्याध्याना और कल्याण में मज्जाप्राप्ति होता है ॥ ४३० ॥

धान्या का फल—

धनं धान्यवृद्धिं यगनायमान्यं मदा शुद्धभूमौ जयं वैश्ववत्तम् ।

कलत्राङ्गजानां सुखचित्रवस्त्रैर्वृतं धान्यका धान्यवृद्धिं करोति ॥ ४३१ ॥

टीका—धान्या की दशा में धन की प्राप्ति, राजा से सम्मान, सुख में जय, कलत्रों पुत्रों का सुख, अनेक तरह से वस्त्रों का लाभ इत्यादि होता है ॥ ४३१ ॥

भ्रामरी का फल—

विदेशे भ्रमं हानिमुद्वेगतां च कलत्राङ्गवीडां सुखैर्वर्जिततम् ।

ऋणं व्याधिवृद्धिः जनानां प्रकोपं दशा भ्रामरी भ्रामयेत्सर्वदशम् ॥ ४३२ ॥

टीका—परदेश में घूमने फिरना, सुख में हानि होना, स्त्री को पीड़ा होना, हानि रहित होना, ऋणिया होना, रोग वृद्धि होना, जन का प्रकोप होना, देश २ स्थान यह भ्रामरी दशा के फल हैं ॥ ४३२ ॥

भद्रिका का फल—

धनानन्दवृद्धिर्गुणानां प्रकाशं समीचीनवस्त्रागमं राजमान्यम् ।

अलङ्कारदिव्याङ्गनाभोगसौख्यं मदा भद्रिका भद्रकार्यं करोति ॥ ४३३ ॥

टीका—धन की वृद्धि, आनन्द की वृद्धि, गुण का प्रकाश, उत्तम वस्त्रप्राप्ति, राजमान्य, भूषण की प्राप्ति, स्त्री भोगादि का सुख और कल्याण होना भद्रिका दशा के फल हैं ॥ ४३३ ॥

उल्का का फल—

भ्रमं व्याधिकष्टं ज्वराणां प्रकोपं धने देशद्वारादिकानां वियोगम् ।

गोत्रैर्विवादं सुहृद्वन्धुवैरं दशां चोलिकाऽनर्थकारो सदैव ॥ ४३६ ॥
टीका—भ्रमण, रोग, दुःख, ज्वर का कोप, घनवियोग, देशवियोग, स्त्रोवियोग,
त्र में कलह, मित्र और बन्धु से वैर और नानाप्रकार के अनर्थ ये उल्का दशा के
त हैं ॥ ४३६ ॥

सिद्धा का फल—

राज्याभिमानं स्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभं गुणकीर्तिसिद्धिम् ।
राज्यादिलाभं सुतवृद्धिसौख्यं सिद्धिं च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥ ४३७ ॥

टीका—राज्याभिमान बन्धुजन से सुख होना, धान्यादिलाभ, गुणसिद्धि, कीर्ति-
सिद्धि, राज्यादिप्राप्ति, पुत्रवृद्धि, सुख और सब काम की सिद्धि सिद्धा दशा में
प्राप्ती है ॥ ४३७ ॥

प्रकारान्तर—

नानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां हि नाशम् ।
हे स्वल्पवासं प्रशासामिलाभं दशा सङ्कटा सङ्कटं राजपज्ञात् ॥ ४३८ ॥

टीका—जनो में कलह, ज्वर को पीडा, स्त्री आदि का कष्ट, पशुओं का नाश, घर में
झगड़ना, प्रवास में अभिलाष राजपक्ष से सङ्कट होना ये सङ्कटा दशा के फल हैं ॥ ४३८ ॥

मङ्गला मङ्गलानन्दयशोद्विषादायिनो ।

पिङ्गला तनुते व्याधि मनसो दुःखसम्भ्रमौ ॥ ४३९ ॥

धान्या धनसुहृद्वन्धुरूपसीमन्तिकारिणी ।

भ्रामरो जन्मभूमिन्ना भ्रामयेत्सर्वतो दिगम् ॥ ४४० ॥

भद्रिका सुखसम्पत्तिविलासवशदायिनो ।

उल्का राज्यधनारोग्यहारिणी दुःखकारिणी ॥ ४४१ ॥

सिद्धा साधयते कार्यं नृणां वै सुखदा भवेत् ।

सङ्कटा सङ्कटव्याधिमरणाक्लेनाकारिणी ॥ ४४२ ॥

टीका—पड़ते मङ्गला दशा का फल—सुखसाध, प्रशास, धन और सुखसम्पत्ति के साधन
पिङ्गला का फल शरीर में पीडा और मन को दुःख तथा भ्रम का होना भ्रामरो

गोत्रैर्विवादं सुहृद्वन्धुवैर दशा चोल्किकाऽनर्थकारो सदैव ॥ ४३६ ॥

टीका—भ्रमण, रोग, दुःख ज्वर का कोप, घनप्रयोग, देशविशेष, लोविशेष, व में कलह, मित्र और वन्धु मे वैर और नानाप्रकार के अनर्थ ये उल्का दशा के फल हैं ॥ ४३६ ॥

सिद्धा का फल—

ज्याभिमानं स्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभं गुणकीर्तिसिद्धिम् ।

ज्यादिलाभं सुवृद्धिसौख्यं सिद्धिं च सिद्धा प्रकरोति पुं साम् ॥ ४३७ ॥

टीका—राज्याभिमान वन्धुजन में सुख होना, धान्यादिलाभ, गुणसिद्धि, कीर्ति-
सिद्धि, राज्यादिप्राप्ति, पुत्रवृद्धि, सुग और सब काम को सिद्धि सिद्धा दशा में
ती है ॥ ४३७ ॥

प्रकारान्तर—

नानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां हि नाशम् ।
हे स्वल्पवासं प्रवासाभिलाषं दशा सङ्कटा सङ्कटा राजपक्षात् ॥ ४३८ ॥

टीका—जनो में कलह, ज्वर को पीड़ा, स्त्री आदि का कष्ट, पशुओं का नाश, घर में
झगड़ रहना, प्रवास में अभिलाष राजपक्ष से सङ्कट होना ये सङ्कटा दशा के फल हैं ॥ ४३८ ॥

मङ्गला मङ्गलानन्दयशोद्विण्णदायिनो ।

पिङ्गला तनुते व्याधिं मनसो दुःखसम्भ्रमौ ॥ ४३९ ॥

धान्या धनसुहृद्वन्धुरूपसीमन्तिकारिणी ।

भ्रामरो जन्मभूमिन्नी भ्रामयेत्सर्वतो दिशम् ॥ ४४० ॥

भद्रिका सुखसम्पत्तिविलासवशदायिनो ।

उल्का राज्यधनारोह्यहारिणी दुःखकारिणी ॥ ४४१ ॥

सिद्धा साधयते कार्यं नृणां वै सुखदा भवेत् ।

सङ्कटा सङ्कटव्याधिमरणक्लेशकारिणी ॥ ४४२ ॥

टीका—पहले मङ्गला दशा का फल—शुभकार्य, आनन्द, यश और द्रव्यप्राप्ति है और
सरे पिङ्गला का फल शरीर में पीड़ा और मन को दुःख तथा भ्रम का होना, तीसरे

धान्या का फल-धनप्राप्ति, मित्र और वन्धुओं से मिलाप, आरोग्यता
चोथे भ्रामरी का फल स्थान का नाश दिशाओं में भ्रमण होता है, पाँचवें
फल-सुख, सम्पत्ति, विलास, यश इत्यादि, छठे उल्का का राजमय, धननाश,
ग्रस्त और पीड़ा, सातवें सिद्धा का कार्य सिद्धि और सुखप्राप्ति, नवें संकटाक्ष
फल-व्याधि, मरण और क्लेश का होना यह आठों दशाओं के फल हैं ।

विशेष दशा का विचार तथा फल-

रविदिननखसंख्या चन्द्रमाव्योमवाणौः

क्षितितनयगजाश्वा चन्द्रजः षट् शराश्च ।

शानिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागवाणौ-

नयनयुगकराहुः सप्ततिः शुक्रसंख्या ॥ ४४३ ॥

जन्मना विंशतिः सूर्ये तृतीये दश चन्द्रमाः ।

चतुर्थे भौम चाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थकम् ॥ ४४४ ॥

सप्तमं दश सौरिः स्यान्नवमे चाष्टमे गुरोः ।

दशमे राहु विंशत्या तदूर्ध्वं तु भृगोर्दशा ॥ ४४५ ॥

पन्था भोगोऽनुतापश्च सौख्यं पीडा धनं क्रमात् ।

नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्यदशाफलम् ॥ ४४६ ॥

टीका-वर्षदशा का आरम्भ उसका क्रम जिस मास में जिसको जन्मराशि के दशों से दश स्थान भोगते हैं और सब दशा का क्रम इसी रीति पर है । २० दिवस सूर्य की दशा, जन्मस्थान से होती है उसका फल मार्ग चलना है । ५० दिवस चन्द्रमा का दशा तीसरे स्थान के १० दिवस रवि भोगते हैं उसका फल नाना प्रकार के भाग हैं ॥

२८ दिवस मङ्गल को दशा चोथे स्थान आठ दिवस रवि भोगते हैं उसका फल रोग और मन्तोष है ॥

५६ दिवस बुध की दशा छठे स्थान ४ दिवस रवि भोगता है उसका

३६ दिवस शनि की दशा नवम स्थान १० दिवस रवि भोगते हैं उसका

राजाकार है ।

५८ दिवस गुरु की दशा नवम स्थान ८ दिन रवि भोगते है उसका फल धनप्राप्ति है ।
५९ दिवस राहु की दशा दशम स्थान २७ दिन रवि भोगते है जिसका फल सब प्रकार
॥ सोच है ॥

७० दिवस शुक्र की दशा द्वादश स्थान में रवि सम्पूर्ण भोगते है उसका फल सर्व-
सुखकारक है ॥ ४४३-४४६ ॥

ग्रहो की नित्यानित्य दशाओ का प्रकार—

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।

नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ४४७ ॥

रविचन्द्रौ भौमराहुगुरुमन्दक्षकेसिताः ।

क्रमेणैता दशा ज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेव हि ॥ ४४८ ॥

टीका—गततिथि, वार, नक्षत्र और अपने नाम के अक्षर इन सबको एकट्ठा करके
६ का भाग दे । शेष १ रहे तो रवि की दशा, २ बचे तो चन्द्रमा की, ३ बचे तो भौम
की, ४ शेष रहे तो राहु की, ५ बचे तो गुरु की, ६ शेष रहे तो शनि की, ७ बचे तो
बुध की, ८ शेष रहे तो केतु की, और कुछ न बचे तो शुक्र की दशा जानिये । इसी प्रकार
नित्य दशा क्रम से जानिये और फल वर्ष दशा के तुल्य जानिये ॥ ४४७--४४८ ॥

दूसरा मत—

जन्मताराचतुर्गुणं तिथिवारसमन्वितम् ।

नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ४४९ ॥

रविणा शोकसन्तापौ शशाङ्के क्षेमलाभकौ ।

भूमिपुत्रे तु मृत्युः स्याद् बुधे प्रजाविवर्द्धनम् ॥ ४५० ॥

गुरौ वित्तं भृगौ सौख्यं शनौ पीडा न शयः ।

राहौ घातो भवेन्नृणां केतौ मृत्युर्दशा फलम् ॥ ४५१ ॥

टीका—जन्म नक्षत्र को चतुर्गुण कर उसमें गततिथि और वार मिला कर ६ का
भाग दे । १ शेष रहे तो एक दिन की रवि की दशा जानिये । फल—शोकसन्तापसम्पन्न,
२ शेष रहे तो चन्द्रमा की दशा, फल—कल्याण व लाभकारण, और ३ शेष रहे तो
मङ्गल की दशा फल—मृत्यु-कारक, ४ शेष रहे तो बुध की दशा फल—वृद्धि वृद्धि,

५ शेष रहे तो शुक्र की दशा, फल-विजयप्राप्ति, ६ एवं तो शुक्र की दशा,
७ शेष रहे तो शनि की दशा, फल-पीडाकारक, ८ शेष रहे तो राहु की दशा,
और जो कुछ न एवं तो केतु की दशा, फल-मृत्यु, इस प्रकार से फल ज्ञान

गोचरप्रकरण ।

कौन २ ग्रह तिनने माम एक राशि को भोगते हैं—

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासं तु मङ्गलः ।
त्रयोदश गुरुश्चैव सप्ताद्विदिनं शशी ॥ २४२ ॥
राहुश्रादशान्मासान् त्रिंशन्मासाभ्यान्नैश्चरः ।
राहुवत्केतुस्तु राशिभोगाः प्रकीर्तिताः ॥ २४३ ॥

तथा फल—

सूर्यः पञ्चदिनं शशी त्रिवटिका भौमोऽष्ट वै वासरान्
सप्ताहं बुधना बुधन्निदिवसं मासद्वयं वै गुरुः ।
षड्मासं रविजस्तथैव सततं स्वर्भानुमासद्वये
केतुश्चैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणां फलम् ॥ २४४ ॥
राशिप्रवेशे सूर्यारो मध्ये शुक्रबृहस्पती ।
राहुश्चन्द्रः शनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः ॥ २४५ ॥

टीका—उनके दिनों की संख्या का क्रम अनुक्रम से लिखते हैं ॥
सूर्य—एक मास एक राशि भोगते हैं उसमें प्रथम पाँच दिन फल देते हैं ॥
चन्द्रमा—सप्ता दो दिन एक राशि भोगते हैं और अन्त की ३ घटिका फल देते हैं ॥
मङ्गल—देढ़ मास एक राशि भोगते हैं और प्रथम ८ दिवस फल देते हैं ॥
बुध—एक मास एक राशि भोगते हैं और सत्र दिन फल देते हैं ॥
गुरु—त्रयोदश (१३) मास एक राशि भोगते हैं उसका फल मध्यम भाग के मास में देते हैं ॥

शुक्र—एक मास एक राशि भोगते हैं और मध्यम भाग में सात दिवस फल देते हैं ॥
शनि—३० मास एक राशि भोगते हैं और अन्त के छ महीने फल देते हैं ॥
राहु और केतु—अष्टादश मास एक राशि भोगते हैं और अन्त में दो मास देते हैं ॥ २४२-२४५ ॥

द्वादशभवन के स्थानों के नाम तथा शुभाशुभ फल--

त्रादौ तनुधनसहजसुहृत्सुतरिपवश्च ।

गाया मृत्युर्धर्मकर्माऽऽयव्ययाख्यानि द्वादशभवनानि ॥ ४५६ ॥

सूर्यः स्थानविनाशं भयं श्रिय मानहानिमथ दैन्यम् ।

वेजयं मार्गं पीडां सुकृतं हन्ति सिद्धिमायुरथ हानिम् ॥ ४५७ ॥

अद्रोऽन्नं च धनं सौख्यं रोगं कार्यक्षतिं श्रियम् ।

वैश्यं मृत्युं नृपभयं सुखमायव्ययं क्रमात् ॥ ४५८ ॥

गौमोऽग्निभीतिं धननाशमर्थं भयं तथार्थं क्षतिमर्थलाभम् ।

अनात्ययं शत्रुभयं च पीडां शोकं धनं हानिमनुक्रमेण ॥ ४५९ ॥

विस्तु बन्धं धनमन्यभीतिं धनं रुजस्थानमथो च पीडाम् ।

प्रथं रुजं सौख्यमथ तप्तसौख्यमर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ ४६० ॥

रुभयं धन क्लेशं धननाशं सुखं शुचम् ।

गानं रोगं सुखं दैन्यं लाभं पीडां च जन्मभात् ॥ ४६१ ॥

रविः शत्रुनाशं धनं सौख्यमर्थं सुतापि रिपोः साध्वसं शाकमर्थम् ।

बृहदन्नलाभं विपत्तिं धनापि धनापि तनोत्यात्मनो जन्मराशेः ४६२

रानिः सर्वनाशं तथा वित्तनाशं धन शत्रुवृद्धिं सुनादः प्रवृद्धिम् ।

श्रेयं दोषसन्धिं रिपुं द्रव्यनाशं तथा दौर्मनस्य दिशेद्व्ययनर्थम् ४६३

एहर्हानि तथा नैःस्वं धनं वैरं शुचं श्रियम् ।

कलिं वसुं च दुरितं वैरं सौख्यं शुचं क्रमात् ॥ ४६४ ॥

केतुः क्रमाद्रजं वैरं सुखं भीतिं शुचं धनम् ।

गतिं गदं दुष्कृतं च शोकं कीर्तिं च शत्रुताम् ॥ ४६५ ॥

टीका—आधान, सम्प्रधान, गृह, पुंस्यनादि, विवाह और यात्रा में चन्द्रमा शुभ होता है ॥ ४७२ ॥

नेष्टन्यान के अनुसार चन्द्रमा का फल—

द्विपञ्चनवमे शुक्ले श्रेष्ठचन्द्रो हि उच्यते ।

अष्टमे द्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ।

शुक्लपक्षे वली चन्द्रः कृष्णे तारा वलीयसो ॥ ४७३ ॥

टीका—दूसरे, पाँचवें अथवा नवम स्थान में चन्द्रमा हो तो शुक्लपक्ष में जानिये, तैमे ही कृष्णपक्ष में आठवें, बारहवें, और चौथे स्थान का श्रेष्ठ परन्तु शुक्लपक्ष में चन्द्रमा वल और कृष्णपक्ष में तारावल श्रेष्ठ है, यह जानिये

ग्रहों के नेष्टन्यान—

ये खेचग गोचरतोऽष्टवर्गाद्दिशा क्रमाद्वाऽप्यशुभाः भवन्ति ।

दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥ ४७४ ॥

टीका—गोचर का अथवा अष्टवर्ग का क्रिया दशाक्रम का जो ग्रह नेष्ट स्थान में हो, उसके प्रसन्न करने, के लिये दान करावे इस कारण अब दान की विधि कहने हैं ॥ ४७४ ॥

बारों के अनुसार दान—

भानुस्ताम्बूलदानादपहरति नृणां वैकृतं वासरोत्थं

सोमः श्रीखण्डदानादवनिस्तुतुधौ भोजनात्पुष्पदानात् ॥

सौम्यः शुक्रस्य मन्त्री गुरुहरमजनाद्गार्गवः शुभ्रवस्त्रात्

तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्मनत्या परे च ॥ ४७५ ॥

टीका—सूर्य ताम्बूलदान से, चन्द्रमा चन्दन के दान से, मङ्गल भोजन और पुष्प दान से, बुध शास्त्रोक्त मन्त्र के जप से, गुरु शिव के आराधन और भोजन से, श्रवण श्वेत वस्त्र से, शनि प्रातःकाल तैल स्नान करने से और बाकी राहु केतु विप्रसन्ना से अपने अपने अशुभ फलों को दूर कर शुभ फलदायक होते हैं ॥ ४७५ ॥

ग्रहों के दान और जप ।

रवि—

माणिक्यगोश्रमसवत्सधेनुः कौसुमवासोऽण्डहेमताम्रम् ।

आरक्तं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि विरोचनाय ॥ ४७६ ॥

चन्द्रमा—

इदंशपात्रस्थिततराडुलांश्च कर्पूरसुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ।
गुणोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्यात् घृतपूर्णाकुम्भम् ॥ ४७७ ॥

भौमः—

बालगोधूममसूरिकाश्च वृषारुणश्चापि गुडः सुवर्णम् ।
शरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं च भौमाय वदन्ति दानम् ॥ ४७८ ॥

बुधः—

वर्षञ्च नीलं कलधौतकांस्यं सुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुष्पम् ।
दासीं च दन्तं द्विरदस्य नूनं वदन्ति दानं विधुनन्दनाय ॥ ४७९ ॥

गुरुः—

शर्करा च रजनी तुरङ्गमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् ।
पुष्परगलवर्णं सकाञ्चनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयते ॥ ४८० ॥

शुक्रः—

चित्राम्बरं शुभ्रतुरङ्गमं च धनुश्च वज्र रजतं सुवर्णम् ।
सतराडुलानुत्तमगन्धयुक्तं वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ॥ ४८१ ॥

शनिः—

भाषाश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलाः कुलत्था महिषी च लोहम् ।
कृष्णा च धेनुः प्रवदन्ति नूनं तुष्ट्यै च दानं रत्ननन्दनाय ॥ ४८२ ॥

राहः—

गोमेदरत्नं च तुरङ्गमश्च सुनीलचैलामलकम्बलं च ।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्मानवे दानमिदं वदन्ति ॥ ४८३ ॥

केतुः—

वैदूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोश्छागस्य दानं कथितं मुनोद्भिः ॥४॥

ग्रहों का जप—

रवेः सप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैव तु ।

भौमे दशसहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकम् ॥ ४८५ ॥

एकोनविंशतिर्जीवे शुक्रे एकादशैव तु ।

त्रयोविंशति मन्दे च राहोरष्टादशैव तु ॥ ४८६ ॥

केतौ सप्तसहस्राणि जपसंख्या प्रकीर्तिता ।

टीका—इन श्लोकों का अर्थ चक्र में देखिये ॥ ४८६-४८६ ॥

ग्रह	वि	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	राहु	केतु
माणिक	वैष्णवात्र युक्त तरादुल	मूँगा	काला बैल	शर्करा	चित्रवज्र	उडद	गोमेद	वैष्ण
गेहूँ	कर्पूर	गेहूँ	सोना	हलदी	श्वेत अन्न	तेल	घोडा	रत्न
गोक्ष	मोती	मसूर	कांक्षपा.	घोडा	गाय	नीलम	नीलवज्र	तिव
रक्तवज्र	श्वेतवज्र	ताम्रवैल	मूँगा	पीतवज्र	वज्र	तिल	कम्बल	तेल
गुग्गु	श्वेतवैल	गुग्गु	घृत	पीतवज्र	रूपा	कुलयी	तिल	कम्ब
छोना	रौप्य	सोना	गारुत्मक	पुष्पराग	सोना	अँस	तेल	कम्ब
ताम्र	रूपा	लालवज्र	सर्वपुष्प	नोन	ताम्बूल	लोहा	लोहा	रत्न
रक्तचन्दन	घृतकुम्भ	कृतेरपुष्प	दासी	सोना	चन्दन	कृष्णगौ	क० पु०	कम्ब
कम्बल	०	ताम्र	हस्तिदन्त	०	०	०	०	०
३०००	११०००	१००००	८०००	१६०००	११०००	२३०००	१२०००	३००

ग्रहपीडा निवारणार्थ—

देवब्राह्मणवन्दनाद् गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं

साधूनामपि भाषणाच्छ्रुतिस्वश्रेयःकथाकारणात् ।

होमादध्वरदर्शनाच्छ्रुचिमनो भावाज्जपादानतः

कुर्वन्तीह कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ॥ ४८७ ॥

टीका—देव और ब्राह्मण को सादर नमस्कार करे और प्रतिदिन गुरु और साधुओं का वचन तथा उत्तम २ कथा का श्रवण करे । होम तथा यज्ञ का दर्शन करे और शुद्ध मन और उत्तम भाव से जप दान करे । जो ग्रहों के निमित्त ऐसे उपाय करे तो पीडा निवृत्त हो जाय और शुभ फल मिले ॥ ४८७ ॥

जातकर्म—

जाते पुत्रे पिता कुर्यान्नान्दीश्राद्धं विधानतः ।

जातकर्म ततः कुर्यादन्यैरालम्भनात्पुरा ॥ ४८८ ॥

टीका—पुत्र उत्पन्न होने पर पिता तत्काल नान्दीश्राद्ध विधिपूर्वक करे । तदनन्तर अन्य जाति से बालक के स्पर्श किये जाने के पूर्व जातकर्म करना शुभ होता है ॥ ४८८ ॥

जातकर्मसुहृत्—

तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयं पर्वार्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि ।

एकादशे द्वादशकेऽपि घसे मृदुध्रुवक्षिपचरोडुपे स्यात् ॥ ४८९ ॥

टीका—पर्व और रिक्ता तिथि को छोड़कर शुभग्रह के दिन में ११ वें या १२ वें दिन मृदु, ध्रुव और चरसंघका नक्षत्रों में जातकर्म करना शुभ होता है ॥ ४८९ ॥

सूतीस्नानसुहृत्—

प्राणध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूतीस्नानं समित्रभरविज्यकुनेषु गन्तव्यम् ।

माद्रीत्रयं श्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रसौख्येऽपि विरिक्तनिध्याम् ॥ ४९० ॥

टीका—रेवती, ध्रुवसंघक, मृगशिरा, एका, स्वाती, समित्रा और माद्री नामके नक्षत्रों में तथा रवि कुज और गुरुवार को सूती स्नान करने होता है । माद्री,



गोसासोसू शतभिषसेसोदादी तु पूर्वमाक् ।

दुथाभाजोत्तरा ज्ञेया देदोचाची तु रेवती ॥ ४६८ ॥

टीका—इह श्लोको का अर्थ चक्र में देखिये ॥ ४६२—४६८ ॥

न ने ची- लो	अश्विनी	र हे हो रा	पुष्य	रु रे रो ता	स्ताती	जु जे जो सा	अभजित
लो लू ले लो	भरणी	री उ उ उ	आश्लेषा	तो तू ते तो	विशाखा	खी खू खे खो	श्रवण
आ र उ ए	कृत्तिना	मा मी मू मे	मघा	ना नी नू ने	अनुराधा	गा गी गू गे	धनिष्ठा
श्री वा वी वू	रोहिणी	मो दा टी ह	पूर्वा फल्गुनी	नो या वी यू	ज्येष्ठा	गो सा मी सू	शततारका
वे वो का वी	मृगशिरा	टो टो पा पी	उत्तरा फल्गुनी	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्र
कू घ ग	आर्द्रा	पू पा गा ठा	हस्त	भू धा फा टा	पूर्वाषाढा	दू प भ न	उत्तराभाद्र
	पे पो ग		चित्रा	मे भो जा जी	उत्तराषाढा	दे दो ना ची	रेवती

मञ्चकारोहण--

तीपुष्यचित्रा-

आन्युत्तरा स्वातिहस्ताः ।

यत्तन्नेर्भकस्य

पूर्वैर्मञ्चकारोहणं तु ॥ ४६६ ॥

१, धनिष्ठा, रेवती, पुष्य, चित्रा, शतभिषा, अनुराधा,
न नक्षत्रो मे और बुध, शुक, गुरु ये चार और हुला,

पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, मिथुनसंज्ञक मूल और चित्रा तथा बुध और शनिवार तथा अष्टमी, पष्ठी, द्वादशी और रिक्ता तिथि ये अशुभ हैं ॥ ४६० ॥

नामकरण—

पुष्यार्कत्रयमैत्रमे तु मृगमे ज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा-

दित्याख्येषु च नामकर्म शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ ।

अहि द्वादशके तथाऽन्यदिवसे शस्ते तथैकादशे

गोसिंहालिघटेषु चार्कबुधयोर्जीवे शशाङ्केऽपि च ॥ ४६१ ॥

टीका—पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, उत्तराश्रवण, ये नक्षत्र शुभ तथा अच्छे योगों में और जन्म से ११ अथवा १२ दिवस में और सिंह कुम्भ और वृश्चिक ये और चार बुध गुरु शुक्र शशाङ्क अर्थात् चन्द्रवार में शुभ हैं । रिक्ता तिथि और दुष्ट योगादिक नामकरण में वर्जित हैं ॥ ४६१ ॥

नाम का अवकट्टा चक्र—

चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ ।

आईउए कृत्तिका स्यादोवावीवू तु रोहिणी ॥ ४६२ ॥

वेवोकाकी मृगशिरः कुघडङ्गा तथार्द्रका ।

केकाहाही पुनर्वसुर्हुहेहोडा तु पुष्यभम् ॥ ४६३ ॥

डीडूडेडो तु आश्लेशा मामीमूमे मघा स्मृता ।

मोटाटीहू पूर्वाफल्गु टेटोपाप्युत्तरं तथा ॥ ४६४ ॥

पूषाणाठा हस्ततारा पेपोरारी तु चित्रका ।

रुरेशोता स्मृता स्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ ४६५ ॥

नानीनूनेऽनुराधर्क्ष ज्येष्ठा नोयायिधू स्मृता ।

येयोभाभी मूलतारा पूर्वाषाढा शुधाफटा ॥ ४६६ ॥

मेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाऽभिजिद्वेत् ।

खीखूखेखो श्रवणं गागीगूगे धनिष्ठिका ॥ ४६७ ॥

गोसासोसू शतभिषवसेसोदादी तु पूर्वभाक् ।
 दुथाभाजोत्तरा ज्ञेया देदोचाचो तु रेवती ॥ ४१८ ॥

वृश्चिक, कुम्भ इन लग्नों में शिशु को पूर्वदिशा को शिर करके प्रथम मञ्चकारोक्षण करावे तो शुभ है ॥ ४६६ ॥

पालना का मुहूर्त—

आन्दोलशयनं पुंसो द्वादशे दिवसे शुभम् ।

त्रयोदशे तु कन्याया न नक्षत्रविचारणा ॥ ५०० ॥

टीका—जन्म होने के उपरान्त पुत्र को बारहवें और कन्या को तेरहवें दिवस पालना में शयन करावे और नक्षत्र आदि के विचार की कुछ आवश्यकता नहीं है ॥ ५०० ॥

बृहस्पति के मतानुसार दुग्धपान मुहूर्त—

एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शङ्खेन पाययेत् ।

अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ॥ ५०१ ॥

टीका—जन्म होने के पश्चात् ३१ वें दिन अन्नप्राशन के नक्षत्र में जो आगे वर्णित है । शङ्ख में दूध भर के बालक को पिलाना चाहिये ॥ ५०१ ॥

ताम्बूलभक्षण—

सार्द्धमासद्वये दद्यात्ताम्बूलं प्रथमं शिशोः ।

कर्पूरादिकसंमिश्रं विलासाय हिताय च ॥ ५०२ ॥

मूले च त्वाष्ट्रकरतिष्यहरीन्द्रभेषु पौष्णो तथामृगशिरेऽदितिवासवेषु ।
अर्केन्दुजीवभृगुवोवनवासरेषु ताम्बूलभक्षणविधिर्मुनिभिः प्रदिष्टः ५०३

टीका—जन्म होने के उपरान्त द्विदि मास में कर्पूर आदि पदार्थ से मिश्रित कर ताम्बूल गन्धर्व और मूल, चित्रा, हरत, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, मृगशिर, पुनर्वसु, धनिष्ठा और सोम, शुरु, शुक्र, इन चारों में सुनीश्वरों ने ताम्बूल भक्षण करना शुभ कहा है ॥ ५०२-५०३ ॥

निष्क्रमण—

हस्तः पुष्यपुनर्वसु हरियुगं मैत्रत्रयं रोहिणी

स्वात्युत्तरफल्गुनीमृगश्रुतपादोत्तरास्वातिभे ।

मासौ तुर्यतृतीयकौ शनिर्कुजौ त्यक्त्वा च रिक्तातिथि

मिहादित्रयकुम्भराशिसहितं निष्कासनं शस्यते ॥ ५०४ ॥

टीका—हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, रोहिणी, रेवती, उत्तराफल्गुनी, मृगशिर, उत्तराषाढा, स्वाती और चौथा वा तासरा मास वे शुभ हैं और शनि, भौमवार, रिक्तातिथि वर्जनीय है और सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ वे लग्न उत्तम हैं ऐसे शुभ दिन विचार के प्रथम घर के बाहर निकाल कर मूर्खावलोकन कराना चाहिये ॥ १०४ ॥

कर्णवेध—

रोहिरायुत्तरमूलमैत्रमृगमे विष्णुत्रयेऽर्कत्रये

रेवत्यां च पुनर्वसुद्रव्ययुगे कर्णस्य वेधः शुभः ।

मीने स्त्रीधनुमन्मथेषु च घटे वर्षे च युरमे त्रियो

सौम्ये चेन्दुयुरौ रवौ च शयन त्यस्त्या च विष्णोर्विधेः ॥ १०५ ॥

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, मृगशिर, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराषाढा, हस्त, चित्रा और युग्मतिथि तथा युग्मवर्ष और चन्द्र गुरु मीन के पास विष्णुशयन को छोड़ कर परिडतों ने कर्णवेध के लिये शुभ कहा है ॥ १०५ ॥

बालक को पृथ्वी में बैठाना—

पञ्चमे च तथा मासि भूमौ तमुपवेशयेत् ।

तत्र सर्वे ग्रहाः शस्ता भौमोऽप्यत्र विंशतः ॥ १०६ ॥

उत्तरात्रितयं सौम्य पुष्यर्क्षं शत्रुदैवतम् ।

प्राजापत्यं च हस्तश्च शतमाश्विनमित्रम् ॥ १०७ ॥

टीका—पौर्णमासी मास में रविवार प्रादि तमस्तन बार शुभ है उनके दोपहर दिनों तक बरके और तीनों उत्तरा, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, रोहिणी, हस्त, धनिष्ठा, अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं। ऐसे दिवस में मित्र की मूर्ति पर बैठाना शुभ कहा है ॥ १०७ ॥

नक्षत्राणाम् —

पूर्वाश्रमरणा भुजङ्गवरुण त्यस्त्या कुजार्क्षी तथा

नन्दां पर्व च मण्मममपि तथा रिक्तानपि द्वादशीम् ।

षष्ठे मास्यथवात्रमन्त्रविधिः श्रीगुरुमुखात्

नाकन्याभयमन्त्रे बुधवने राजे च योगे मुने ॥ १०८ ॥

यज्ञोपवीत का मुहूर्त—

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विस्तृगमे हस्तत्रये रेवती—

ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते ।

गोमीनप्रमदा धनुर्वनचरे शुक्रैर्कजीवे तिथौ

पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ॥ ५१२ ॥

टीका—पूर्वाषाढ, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफल्गुनी और उदगयन अर्थात् उत्तरायण, शुक्लपक्ष, गोमीन, कन्या, धन, सिंह ये लग्न और शुक्र, रवि, सोम ये वार, पञ्चमी तथा दशमी वि तीन अर्थात् १० । ११ । १२ तिथियों में यज्ञोपवीत करना शुभ है ॥ ५१२ ॥

मासादि मुहूर्त—

प्रं वसन्ते क्षितिपं निदाघे वैश्यं घनान्ते व्रतिनं विदध्यात् ।

घादिशुक्रान्तिरूपञ्चमासाः साधारणा वा सकला द्विजानाम् ॥ ५१३ ॥

टीका—ब्राह्मणों का वसन्त मे, क्षत्रियों का ग्रीष्म मे, वैश्यों का शरद् ऋतु में उपवीत करावे, पेले वर्षों के मतानुसार व्रतयन्ध का ऋतु कहा है, माघ से ज्येष्ठ र्यन्त ५ मास समस्त द्विजों को साधारण कहे हैं ॥ ५१३ ॥

वर्णसंख्या—

गर्भाष्टमेऽष्टमे वाव्दे पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।

द्विजत्वं प्राप्नुयाद्विप्रो वर्षे त्वेकादशे नृपः ॥ ५१४ ॥

टीका—गर्भ से अथवा जन्म से आठवे पाँचवे अथवा सातवें वर्ष में ब्राह्मण या ग्यारहवें में क्षत्रियों का यज्ञोपवीत करना उचित है ॥ ५१४ ॥

गुह्यल—

वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतिक्रिया हिता ।

सर्वेषां च गुरो सूर्यो चन्द्रे च बलशालिनि ॥ ५१५ ॥

टीका—वर्ण के अधिपति के अनुसार बल देखिये और सूर्य को गुरु, चन्द्र, ज्येष्ठा बल चाहिये ॥ ५१५ ॥

टीका—तीनों पूर्वा, आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा और मीन, शनि और मङ्ग, रिक्ता और सप्तमी और द्वादशी इन सबको छोड़ कर छूटे अथवा सातों वर्षे वालक का और कन्या को पाँचवें मास में या नियम मान में अन्नप्राशन कराना शुभ है । वृष, मिथुन, मकर, कन्या इन लग्नों का मत पाकर शुभ तपत्र तथा शुभोत्पत्ति वालक को अन्नप्राशन कराना चाहिये ॥ ५०८ ॥

चौलकर्म—

रेवत्याद्यकरत्रयादितिसृगज्येष्ठासु विष्णुत्रये

पुष्ये चोत्तरगे तथा गुरुकयीन्दुजेषु पक्षे सिते ।

गोक्षीमन्मथत्रापकुम्भमकरे हित्वा च रिक्तातिथिं

षष्ठीं पर्व तथाष्टमीमपि सिनीवालीं च बुडा शुभा ॥ ५०९ ॥

जन्मतस्तु तृतीयेऽब्दे श्रेष्ठमिच्छन्ति परिडताः ।

पञ्चमे सप्तमे वापि जन्मतो मध्यमं भवेत् ॥ ५१० ॥

टीका—रेवती, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, मृगशिर, ज्येष्ठा, अश्लेषा, शतभिषा, पुष्य नक्षत्र में और उत्तरायण, गुरु, गुरु, सोम, बुधवार और गुरु पक्ष सुखद न में शुभ है और वृष, कन्या, मिथुन, धन, मकर, कुम्भ इन लग्नों को छोड़ कर शेष शुभ जानिये और रिक्ता, पष्ठी, अष्टमी, अमावास्यादिक दुष्टतिथि वर्जित हैं और जन्म दिवस से तीसरे वर्ष में परिडतों ने श्रेष्ठ और पाँचवें या सातवें वर्ष में मरण कहा है ॥ ५०९-५१० ॥

विद्यारम्भ का सुहृत्—

रेवत्यां मृगपञ्चके हरियुगे पूर्वासु हस्तत्रये

मूलेऽश्वे ह्यभिजित्सुभानुभृगुजे सौम्ये धनुर्जीवयोः ।

अब्दे पञ्चमके विहाय निखिलानध्यायषष्ठीयुतां

रिक्तां सौम्यदिने तथैव विबुधैः प्रोक्तो सुहृत् शुभः ॥ ५११ ॥

टीका—रेवती, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, धवण, धनिष्ठा, पूर्वा, चित्रा, स्वाती, मूल, अश्विनी, अभिजित और रवि, गुरु, शुक, बुध, सोम ये जन्म से पाँचवों वर्ष शुभ कहा है । अध्याय, पष्ठी, रिक्ता, पर्व, आदि दुष्ट योदिक और तिथि वर्जनीय हैं । उत्तरायण शुभ लग्नों में प्रथम विद्याभ्यास करावे ॥ ५११ ॥

यज्ञोपवीत का मुहूर्त—

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विभृगभे हस्तत्रये रेवती—

ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते ।

गोमीनप्रमदा धनुर्वनचरे शुक्रैर्कजीवे तिथौ

पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ॥ ५१२ ॥

टीका—पूर्वाषाढ, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, भृगशिरा, हस्त, चित्रा, राती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफल्गुनी और उदगयन अर्थात् उत्तरायण, शुक्लपक्ष, प, मीन, कन्या, धन, सिंह ये लग्न और शुक्र, रवि, सोम ये वार, पञ्चमी तथा दशमी आदि तीन अर्थात् १० । ११ । १२ तिथियों में यज्ञोपवीत करना शुभ है ॥ ५१२ ॥

मासादि मुहूर्त—

अप्रं वसन्ते क्षितिपं निदाघे वैश्यं घनान्ते व्रतिनं विदध्यात् ।

आषादिशुक्रान्तिकपञ्चमासाः साधारणा वा सकला द्विजानाम् ॥ ५१३ ॥

टीका—ब्राह्मणों का वसन्त मे, क्षत्रियों का ग्रीष्म मे, वैश्यो का शरद् ऋतु में यज्ञोपवीत करावे, ऐसे वर्णों के मतानुसार व्रतबन्ध का ऋतु कहा है, माघ से ज्येष्ठ वर्षान्त ५ मास समस्त द्विजो को साधारण कहे हैं ॥ ५१३ ॥

वर्णसंख्या—

गर्भाष्टमेऽष्टमे वाब्दे पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।

द्विजत्वं प्राप्नुयाद्विप्रो वर्षे त्वेकादशे नृपः ॥ ५१४ ॥

टीका—गर्भ से अथवा जन्म से आठवे पाँचवे अथवा सातवें वर्ष में ब्राह्मण का और ग्यारहवें में क्षत्रियों का यज्ञोपवीत करना उचित है ॥ ५१४ ॥

गुरुत्व—

वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतिक्रिया हिता ।

सर्वेषां च गुरौ सूर्यो चन्द्रे च बलशालिनि ॥ ५१५ ॥

टीका—वर्ण के अधिपति के अनुसार बल देखिये और सबों को गुरु, सूर्य, चन्द्रमा का बल चाहिये ॥ ५१५ ॥

गलग्रह—

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम् ।

चतुर्य्यैकाकिनी प्रोक्ता अष्टावेव गलग्रहाः ॥ ५१६ ॥

टीका—त्रयोदशी से प्रतिपदा तक चार तिथि और सप्तमी, अष्टमी, नवमी उक्त चतुर्य्यो ये आठ तिथि गलग्रह हैं सो वर्जनीय हैं ॥ ५१६ ॥

शुद्धादिकों के संस्कार का मूहूर्त—

मृलाद्वाश्रवणद्विदैवसुभे पुष्ये तथा चाश्विमे

रेवत्यां मृगरोहिणी दितिकरे मैत्रे तथा वारुणे ।

चित्रास्वातिमथोत्तराश्रुसुते भौमे तथा चन्द्रजे

शुद्धाणां तु बुधैः शुभं हि कथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥ ५१७ ॥

टीका—मूल, आर्द्रा, श्रवण, चित्राक्षा, घनिष्ठा, पुष्य, अश्विनी, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, अनुराधा, शतभिषा, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और शुक्र, भौम, बुध ये चार शुद्धादिक सङ्कर अन्त्यजादिकों के संस्कार में शुभ हैं ॥ ५१७ ॥

विवाहप्रकरणम् ।

पहले दैवज्ञ की पूजा—

दैवज्ञं पूजयेदादौ फलताम्बूलपूर्वकैः ।

निवेदयेत्सुमनसा स्वकन्योद्ग्रहनादिकम् ॥ ५१८ ॥

टीका—प्रथम ज्योतिषी की यथाशक्ति फल ताम्बूलपूर्वक पूजा करना उसके पौत्र कन्या का पिता कन्या के विवाह का शुभाशुभ प्रश्न करे ॥ ५१८ ॥

विवाहसमय में प्रश्न —

भांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः ।

वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ ५१९ ॥

प्रश्नकाल में चन्द्र, शुक्र यह विषम राशि में हों वा अशुभ में हों और दोनों लग्न को देवते हों तो कन्या को पति-प्राप्ति जानना और सप्त राशि में चन्द्र, शुक्र हों तो वर को लो-प्राप्ति कहना शुभ है ॥ ५१९ ॥

प्रण्डर्विलग्नात्प्रबलः शशाङ्कः शत्रुस्थितो मृत्युगृहस्थितो वा ।

यद्यष्टमाब्दात्परतो विवाहात्करोति मृत्युं वरकन्ययोश्च ॥ ५२० ॥

टीका-जो प्रश्न-लग्न से बलवान् चन्द्रमा पष्ठ अथवा अष्टम स्थान में बैठा हो तो विवाह से अष्टम वर्ष में स्त्री, पुरुष दोनों को अरिष्ट जानना ॥ ५२० ॥

यद्युदयस्थश्चन्द्रस्तस्माद्यदि सप्तमो भवेद्भौमः ।

समाष्टकं स जीवति विवाहकालात्पर पुरुषः ॥ ५२१ ॥

टीका-जो प्रश्न-लग्न में चन्द्रमा हो और चन्द्रमा से सप्तम स्थान में मङ्गल हो विवाह से अष्टम वर्ष में पति को अरिष्ट जानना ॥ ५२१ ॥

स्वनीचगः शत्रुदृष्टः पापः पञ्चमगो यदा ।

मृतपुत्रां करोत्येव कुलटां च न संशयः ॥ ५२२ ॥

टीका-जो प्रश्नकाल में पापग्रह अपने नीच स्थान में हो अथवा शुभग्रह पंचम में हो अथवा पापग्रह पञ्चम स्थान में बैठा हो तो सन्ताननाश और स्त्री घेरा हो ऐसा जानना ॥ ५२२ ॥

भिद्यति यद्युदकुम्भः शयनासनपादुकासु भङ्गो वा ।

प्रश्नसमयेऽपि यस्यास्तस्या वैधव्यमादेश्यम् ॥ ५२३ ॥

टीका-जो विवाह के प्रश्नकाल में अकरमात् जलकुम्भ या भङ्ग हो अथवा मित्रा नाश, आसन-भङ्ग, पादुका-भङ्ग, ऐसा जिस कन्या के विवाहप्रश्न-समय में हो तो उसका विधवायोग जानना ॥ ५२३ ॥

ज्येष्ठ का विचार--

अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि ।

व्यत्ययो वा तयोस्तत्र ज्येष्ठो मासः शुभप्रदः ॥ ५२४ ॥

टीका-जो कन्या ज्येष्ठ न हो और पुरुष ज्येष्ठ हो, ऐसा दोनों का भेद हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना शुभ है ॥ ५२४ ॥

वर्षप्रमाण--

पडव्दमध्ये नोद्धात्वा कन्या वर्षेऽयं यतः ।

सोमो भुङ्क्ते तत्तद्वर्गान्धर्वश्च तथान्वितः ॥ ५२५ ॥

टीका-प्रथम ६ वर्ष तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिये । कारण यह कि प्रथम दो वर्ष चन्द्रमा भोग करता है, तदनन्तर दो वर्ष गन्धर्व भोग करते हैं तत्पश्चात् उपरान्त २ वर्ष अग्निदेव भोग करते हैं, तदनन्तर विवाह करना शुद्ध जानना ॥१२॥

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा तु रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वृषली मता ॥ ५२६ ॥

गौरीदानान्नागलोकं वैकुण्ठं रोहिणीं ददत् ।

कन्यादानाद् ब्रह्मलोकं रौखं तु रजस्वलाम् ॥ ५२७ ॥

टीका-आठ वर्ष की कन्या को गौरी, नव वर्ष की कन्या को रोहिणी, दश वर्ष की अवस्था में कन्या, और बारह वर्ष की युवती को शूद्रा कहते हैं । गौरीदान से नागलोक-प्राप्ति, रोहिणीदान से वैकुण्ठ प्राप्ति, कन्यादान से ब्रह्मलोक-प्राप्ति शूद्रादान से घोर नरक की प्राप्ति होती है ॥ ५२६-५२७ ॥

विवाहो जन्मतः स्त्रीणां युग्मेऽन्वे पुत्रपौत्रदः ।

अयुग्मे श्रीप्रदः पुंसां विपरीतस्तु मृत्युदः ॥ ५२८ ॥

टीका-स्त्री का विवाह जन्म से सम वर्ष में करने से पुत्र पौत्र की प्राप्ति और पुरुष का जन्म से विषम वर्ष में विवाह हो तो लक्ष्मीप्राप्ति, अन्यथा मृत्युप्राप्ति होती है ॥ ५२८ ॥

कन्या द्वादशवर्षाणि याऽप्रदत्ता वसेद् गृहे ।

ब्रह्महत्या पितुस्तस्याः सा कन्या वरयेत्स्वयम् ॥ ५२९ ॥

टीका-यदि कन्या १२ वर्ष की अवस्था में पिता के घर में रहे तो पिता की ब्रह्महत्या का दोष होता है, तदनन्तर कन्या को अधिकार है कि अपनी इच्छा से पति को चरे । यह आचार्य की सम्मति है ॥ ५२९ ॥

मङ्गल-विचार—

लगने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।

पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्ता भार्या विनाशयेत् ॥ ५३० ॥

स्त्री को और पुरुष को मङ्गल रहता है उसका प्रकार जन्म-लगन से पता चलता है । १ । १२ । ४ । ७ । = इतने स्थानों में हो तो मङ्गली या मङ्गला होता है । स्त्री

मङ्गली से मङ्गला पुरुष को विवाह करना अथवा पुरुष के अह बलवान् हो तो भी विवाह करना ॥ ५३० ॥

भौम-परिहार—

जामित्रे च यदा सौरिर्लङ्घने वा हिवृकेश्यवा ।

अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ ५३१ ॥

टीका—रत्नी को अथवा पुरुष को ७ । १ । ४ । ८ । १० । जो हलने लगने में यदि दो तो मङ्गल का दोष नहीं होता ॥ ५३१ ॥

ज्येष्ठविचार—

टीका-प्रथम ६ वर्ष तक कन्या का विवाह नहीं करना चाहिये । कारण यह कि प्रथम दो वर्ष चन्द्रमा भोग करती है, तदनन्तर दो वर्ष गन्धर्व भोग करते हैं। तत्पश्चात् उपरान्त २ वर्ष अग्निदेव भोग करते हैं, तदनन्तर विवाह करना शुद्ध जाना ॥२१॥

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा तु रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वृषली मता ॥ ५२६ ॥

गौरीदानान्नागलोकं वैकुण्ठं रोहिणीं ददत् ।

कन्यादानाद् ब्रह्मलोकं रौरवं तु रजस्वलाम् ॥ ५२७ ॥

टीका-आठ वर्ष की कन्या को गौरी, नव वर्ष की कन्या को रोहिणी, दश वर्ष की अपरस्था में कन्या, और बारह वर्ष की युवती को शूद्रा कहते हैं । गौरीदान से नागलोक-प्राप्ति, रोहिणीदान से वैकुण्ठ प्राप्ति, कन्यादान से ब्रह्मलोक-प्राप्ति, शूद्रादान से घोर नरक की प्राप्ति होती है ॥ ५२६-५२७ ॥

विवाहो जन्मतः स्त्रीणां युग्मेऽदे पुत्रपौत्रदः ।

अयुग्मे श्रीप्रदः पुंसां विपरीतस्तु मृत्युदः ॥ ५२८ ॥

टीका-स्त्री का विवाह जन्म से सम वर्ष में करने से पुत्र पौत्र की प्राप्ति और पुरुष का जन्म से विषम वर्ष में विवाह हो तो लक्ष्मीप्राप्ति, अन्यथा मृत्युप्राप्ति होती है ॥ ५२८ ॥

कन्या द्वादशवर्षाणि याऽदत्ता वसेद् गृहे ।

ब्रह्महत्या पितुस्तस्याः सा कन्या वरयेत्स्वयम् ॥ ५२९ ॥

टीका-यदि कन्या १२ वर्ष की अवस्था में पिता के घर में रहे तो पिता को हत्या का दोष होता है, तदनन्तर कन्या को अधिकार है कि अपनी इच्छा से को बरे । यह आचार्य की सम्मति है ॥ ५२९ ॥

मङ्गल-विचार—

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।

पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्ता भार्या विनाशयेत् ॥ ५३० ॥

टीका स्त्री को और पुरुष को मङ्गल रहता है उसका प्रकार जन्म-लग्न से या से १ । १२ । ४ । ७ । = इतने स्थानों में हो तो मङ्गली या मङ्गला होता है । स्त्री

मङ्गली से मङ्गला पुरुष को विवाह करना अथवा पुरुष के अह वलवान् हों तो भी विवाह करना ॥ ५३० ॥

भौम-परिहार—

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिवुकेश्चवा ।

अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ ५३१ ॥

टीका—स्त्री को अथवा पुरुष को ७ । १ । ४ । ८ । १२ । जो इतने स्थानों में शनि हो तो मङ्गल का दोष नहीं होता ॥ ५३१ ॥

ज्येष्ठविचार—

द्विज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तावेकज्येष्ठः शुभावहः ।

ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहे सर्वसामतेः ॥ ५३२ ॥

टीका—पुरुष ज्येष्ठ अथवा कन्या ज्येष्ठ हो अथवा ज्येष्ठ मान तो तो मध्यम दो ज्येष्ठ की अपरथा में विवाह करना मध्यम दो और एक ज्येष्ठ में करना शुभ है और पुरुष ज्येष्ठ, स्त्री ज्येष्ठ, मास ज्येष्ठ अर्थात् तीनों ज्येष्ठ हो तो विवाह समस्त वर्जित है ॥ ५३२ ॥

टीका—जिस स्त्री की गोली हंस के मरना मीठी हो, शुद्धवर्ण हो, नेत्र बगल सतत के तुल्य हो अथवा पिङ्गल अथवा कुटुम्बके दय कुटुम्ब काना हो, यदि ऐसा स्त्री से विवाह हो तो गृहस्थ को सुख प्राप्त होगा ॥ ५३४ ॥

वरसूचक—

जातिविद्यावयःशीलमारोग्यं बहुपन्नता ।

अर्थित्वं वित्तसम्पत्तिरष्टावन्ते वरे गुणाः ॥ ५३६ ॥

टीका—वर के लक्षण—जाति में उत्तम हो और विद्यायुक्त हो, वय में बर्तनी और स्वभाव अच्छा हो और निरोगी हो, परिवार बहुत हो, स्त्री की इच्छा हो, व सम्पत्ति हो ऐसे आठ लक्षणों ने युक्त वर हो तो कन्या को देना चाहिये ॥ ५३६ ॥

कन्यादोष—

दीर्घनासां च लम्बोष्ठां चित्रां घर्वरनिस्वनाम् ।

सरोगां भ्रातृरहितां दुर्गन्धां परिवर्जयेत् ॥ ५३७ ॥

टीका—लम्बी नासिका वाली, लम्बे ओठ वाली, कुष्ठरोग यानी और चित्र वाली घर्वराती हो, रोगिणी हो, जिसके भाई न हों और जिसके देह से दुर्गन्ध हो उसके साथ विवाह न करे ॥ ५३७ ॥

वरदोष—

दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनाम् ।

शूराणां निर्धनानां च न देया कन्यका बुधैः ॥ ५३८ ॥

टीका—परिदलत जनो को चाहिये कि दूर रहने वाले मूर्ख मोक्षधर्मी (योगान्तर) शुद्ध करने वाले और दृष्टिी पुरुष को कन्या न दें ॥ ५३८ ॥

अस्तोदय—

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितस्यात्पश्चादशाहमिहपञ्चदिनानि वृद्धिः ।

प्राक्पक्ष एव गदिताऽत्र वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तु पक्षमपि वृद्धिशिशुर्विवर्ज्यः ।

टीका—पूर्व में शुक्र का उदय हो तो तीन दिन बालपन और अस्त हो तो पञ्च दिन वृद्धत्व वर्जित है, पश्चिम को उदय हो तो पांच दिन शिशुपन और १० दिन वृद्धत्व वर्जित है और शुरु के उदय अस्त में १५ दिन वर्जनीय है ॥ ५३९ ॥

अस्त और उदय का लक्षण—

यमशरभुजवासरवज्जिणो दिशि द्विमस्तसितास्तमन तथा ।

गगनवाणयमैर्दिशि पश्चिमे नवदिनास्तमनं तु भृगोर्बुधैः ॥५४०॥

टीका—२५२ दिन शुक्र पूर्व दिशा में उदय रहता है और ७२ दिन अस्त रहता है । और २५० दिवस पश्चिम में उदय रहता है फिर ६ दिन में अस्त होता है यह खिडतों ने कहा है ॥ ५४० ॥

कलांश से उदय और अस्त का विचार—

दसेन्दवः १२ शैलभुवश्च १७ शक्रा १४-

श्चन्द्रा ११ खचन्द्रा १० स्थितयः १५ क्रमेण ।

चन्द्रादितः काललवा निरुक्ता

ज्ञशुक्रयोर्वक्रकयोर्दिहीना ॥ ५४१ ॥

टीका—चन्द्रादिक ग्रहों के क्रम से १२।१७।१४।११।१०।१५ बताया है । चन्द्रादिक ग्रहों के अंश से इतने अंश के भीतर ग्रह रहने से अस्त रहता है जैसे भौम का अंश १७ है तो रवि और भौम का अन्नर उतर तक १७ अंश से न्यून रहेगा तब तक भौम अस्त रहेगा । इसी तरह सब ग्रहों का कुछ अंश शून्य पानी हो तो अस्त रहने में दो न्यून करना ॥ ५४१ ॥

विवाह में वर्जनीय--

नापादप्रभृतिचतुष्टये विवाहो ना पौषे न च मधुसंज्ञके विधेयः ।
नैवास्तं गतवति भार्गवे च जीवे वृद्धत्वे न खलु तयोर्न बालभावे ॥ ४४३ ॥

गोर्वाणमन्त्रिणि मृगेन्द्रमधिष्ठिते न

मासेऽधिके त्रिदिनसंस्पृशि नामभे च ।

टीका—आषाढ आदि लेकर ४ मास और पौष चैत्र मास और शुभ, शुक्र का अस्त और इन दोनों का वृद्धत्व और बालत्व और तिथि का वृद्धस्पर्ति, अधिकमास तथा क्षयमास इत्यादि विवाह में वर्जित है ॥ ४४३ ॥

मूलादि जन्मनक्षत्र का दोष—

मूलजा च गुणान् हन्ति व्यालजा कुलटाङ्गना ।

विशाखजा देवरक्ष्णी ज्येष्ठजा ज्येष्ठनाशिका ॥ ४४४ ॥

टीका—मूल नक्षत्र में कन्या का जन्म हो तो गुणों का नाश करे, आश्लेषा में व्यभिचारिणी, विशाखा में देवर की मृत्युकारक और ज्येष्ठ में ज्येष्ठ के मृत्युदायक होती है ॥ ४४४ ॥

जन्मनक्षत्रादि में वर्ज्य—

जन्मर्क्षे जन्मदिवसे जन्ममासे शुभं त्यजेत् ।

ज्येष्ठे मास्याऽऽद्यगर्भस्य शुभ्रवस्त्रं स्त्रियो यथा ॥ ४४५ ॥

अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि ।

व्यत्ययो वा तयोस्तत्र ज्येष्ठो मासः शुभप्रदः ॥ ४४६ ॥

टीका—जन्म के नक्षत्र, दिवस और मास में बालकों को शुभ कर्म वर्जित हैं । सद्यवा स्त्रियों को श्वेत वस्त्र धारण करना । और जो कन्या कनिष्ठ हो तथा पर ज्येष्ठ हो अथवा इससे विपरीत हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह शुभ है ॥ ४४५-४४६ ॥

वर्षप्रमाण—

जन्मतो गर्भाधानाद्वा पञ्चमाब्दात्परं शुभम् ।

कुमारीवराणं दानं मेखलाबन्धनं तथा ॥ ४४७ ॥

गुरुचन्द्रफल—

स्त्रीणां गुरुवलं श्रेष्ठं पुरुषाणां खेर्वलम् ।

तयोश्चन्द्रवलं श्रेष्ठमिति गर्भाण भाषितम् ॥ ४४८ ॥

टीका—स्त्रियों को गुरु का वल और पुरुषों को रवि का वल और चन्द्रमा का वल गर्भा मुनि ने श्रेष्ठ कहा है ॥ ४४८ ॥

गुरु का वल—

नष्टात्मजा धनवतो विधवा कुशीला

पुत्रान्विता गतधवा सुभगा विपुत्रा ।

स्वामिप्रिया विगतपुत्रधवा धनाढ्या

वन्ध्या भवेत् सुरसुरौ क्रमशोऽभिजन्म ॥ ४४९ ॥

टीका—जो कन्या के जन्म-स्थान में गुरुपति हो तो प्रिया के अनन्तर ही मृत्यु होती है, द्वितीय में धनवती, तृतीय में विधवा, चतुर्थ में वधुविवाहिनी, पञ्चम में पुत्रवती, षष्ठ में पतिनाश, सप्तम में सौभाग्यवती, अष्टम में नवम में पतिप्रिया, दशम में बालक तथा पति का नाश, एकादश में धनाढ्य, द्वादश में वधू के वैसे क्रम से फल जानिये ॥ ४४९ ॥

गुरु अनुकूल करने का विचार—

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गुरुः ।

विवाहे च चतुर्थाष्टद्वादशस्थो मृतिप्रदः ॥ ४५० ॥

टीका—जन्म, तृतीय, षष्ठ और दशम में गुरु हो तो नेष्ट है, परन्तु पूजा करने शुभ फलदायक होता है और चौथे में, अष्टम में, द्वादश में मृत्यु करता है, यह विवाह में करना उचित है ॥ ४५० ॥

गुरु का विचार —

द्वितीये पञ्चमे चैव सप्तमे नवमे तथा

एकादशे सुराचार्या कन्यायाः शुभकारकः ॥ ४५१ ॥

टीका—कन्या के जन्म-राशि से २।५।७।९।११ स्थानों में गुरु हो तो वधू का विवाह शुभ होता है। इसी प्रकार चटुक के उपनयन में भी देखना ॥ ४५१ ॥

वर को रवि का विचार—

तृतीयः षष्ठगश्चैव दशमैकादशस्थितः ।

रविः शुद्धो निगदितो वरस्यैव कस्यहे ॥ ५५२ ॥

जन्मन्यथ द्वितीये पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।

नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपोडनम् ॥ ५५३ ॥

चतुर्थे चाष्टमे चैव द्वादशे च दिवाकरे ।

विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ५५४ ॥

टीका—वर के जन्म-राशि से ३ । ६ । १० । ११ इन स्थानों में रवि हो तो विवाह शुभ होता है और १ । २ । ५ । ७ । ८ इन स्थानों में हो तो पूजा करने से शुभ होता है और ९ । १२ इन स्थानों में हो तो पूजा करने से भी शुभ नहीं होता है ॥ ५५२-५५४ ॥

अष्टमैत्रोज्ञान—

वर्णो वश्य तथा तारा योनिग्रहगणौ तथा ।

भकूटं नाडिमैत्री च इत्येताश्चात्र मैत्रिकाः ॥ ५५५ ॥

टीका—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहगण, भकूट, नाड़ी और मैत्री इन आठ । २ । विवाह में विचारना योग्य है ॥ ५५५ ॥

वर्णों का ज्ञान—

मीनालिकर्कटा विप्राः नृपाः सिंहाजघन्विनः ।

कन्यानक्रवृषा वैश्याः शूद्रा शुभतुलाघटाः ॥ ५५६ ॥

टीका—मीन, वृश्चिक और कर्क राशि वाला ब्राह्मण वर्ण । सिंह, मेष और धन राशि वाला क्षत्रिय वर्ण । कन्या, मकर और कुम्भ राशिवाला वैश्य वर्ण । तथा मिथुन तुला और शुभ राशिवाला शूद्र वर्ण होता है ॥ ५५६ ॥

वरणों का ज्ञान—

द्वन्द्वचापघटकन्यातुला मानवा यजुषो चतुष्पदो ।

कर्कमीनमकरा जलोदवाः केशरी वनचरालिकर्कटाः ॥ ५५७ ॥

टीका—मिथुन धन, कुम्भ, मकर और तुला ये मानव । यजुषो चतुष्पदो और कर्क मीन और मकर ये वनचर तथा कर्क जलोदवा और केशरी वनचर ।

वरयावश्य ज्ञान--

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः ।

सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनार्जलिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥ ५५५ ॥

टीका—सिंह को छोड़ सभी मनुष्य के वश में हैं और जलचर भक्ष्य हैं । सिंह भी वृश्चिक छोड़ सभी वश में हैं बाकी मनुष्यों के व्यवहार से समझना ॥ ५५५ ॥

तारावलि —

कन्यर्त्ताद्विरभं यावत्कन्याभं वरमादपि ।

गणयेन्नवभिः शेषे त्रिष्वद्विभसत्स्मृतम् ॥ ५५६ ॥

टीका—वधू के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक जो नक्षत्र-संख्या हो उसमें नव के भाग का भाग दे, जो शेष तीन अथवा सात बचे तो अशुभ और सब शुभ होते हैं । वैसे ही वर के नक्षत्र से वधू के नक्षत्र तक गिन कर पूर्ववत् प्रमाण लिये अनुसार जानना ॥ ५५६ ॥

योनि —

अश्वो गजश्छागसर्पौ सर्पश्चानौ विडालकाः ।

मेषो विडालकश्चैव मूपको मूपकश्च गाः ॥ ५६० ॥

महिषी च ततो व्याघ्रो महिषो व्याघ्रकः क्रमात् ।

मृगो मृगस्तथा श्वा च कर्पिर्नकुल एव च ॥ ५६१ ॥

नकुलो वानरः सिंहस्तुरगो मृगराट् पशुः ।

आधोरणः क्रमेणैव अश्विन्यादिभ्योनयः ॥ ५६२ ॥

वैरयोनि —

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैराणं च वभ्रूरुगं

वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्विडालोन्दुरु ।

लोकानां व्यवहारतोऽन्यदपि तज्ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं

दम्पत्योर्नृपमृत्योरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥ ५६३ ॥

५६१-५६३ श्लोकों का अर्थ चक्र में देखिये ॥ ५६०-५६३ ॥

रागियो के स्वामी-

नक्षत्रराशिवान् —

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादमेकं मेषः
 कृत्तिकापादत्रयं राहिणी मृगशिरार्द्धं वृषभः ॥
 मृगशिरोऽर्द्धमाघा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनम् ।
 पुनर्वसोः पादमेकं पुष्यमाश्लेषान्तं कर्कटकः ॥
 मघा पूर्वा उत्तरापादमेकं सिंहः ।
 उत्तरापादत्रयं हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ॥
 चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापादत्रयं तुला ।
 विशाखापादमेकमनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥
 मूलं पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादमेकं धनुः ।
 उत्तराषाढापादत्रयं श्रवणो धनिष्ठार्धं मकरः ॥
 धनिष्ठार्द्धं शततारका पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं कुम्भः ।
 पूर्वाभाद्रपदापादमेकमुत्तराभाद्रपदाखत्यन्तं मीनः

टीका—चन्द्रमा सप्त दो नक्षत्र एक राशि भोगते हैं इस प्रकार से द्वादश राशि भोग का क्रम और आर्य-मध्य तथा आदि नाडी का क्रम चक्र से मान्य होगा।

नवमज्यक —

मीनालिभ्यां युते कौट कुम्भे मिथुनमंयुते ।

मकरं कन्यकायुते न कुर्यान्नवमज्यके ॥ १७२ ॥

टीका—मीन से मकर के अन्तर पर कुम्भिका, कुम्भिक से मीन के अन्तर पर मकर का अन्तर मीन का, कुम्भ मिथुन का, मकर कन्या का अन्तर २ राशियों के नवमज्यक होने से, वे वर्जित हैं ॥ १७२ ॥

सृष्ट्युपट्टक —

मेघकन्यकयोगश्च तुलामीनकयोन्मथा ।

युग्मात्योन्तु बुधैर्द्वयोः सृष्ट्युं न नक्षत्रहोः ॥ १७३ ॥

कुम्भकर्कद्वयोश्चैव वृषकोदगद्वयोन्मथा ॥

टीका—मेघ और कन्या के परस्पर रहे और आठवें हो इसी संज्ञि से कुम्भ मीन, मिथुन, कुम्भिका मकर, अन्तः—कुम्भ, कर्क और वृष, घन इन दो राशियों के सृष्ट्युपट्टक कहलाता है सो वर्जित है ॥ १७३ ॥

प्रीतिपट्टक —

मिहो मीनयुतश्चैव तुला वृषयुता तथा ।

वतुः कर्कयुतं चैव कुम्भकन्यकयोन्मथा ॥ १७४ ॥

नक्षत्र मिथुने प्रीतिरजाऽत्योः प्रीतिरुत्तमा ॥

टीका—मिह, मीन, तुला, वृष । कुम्भ, कन्या, मकर, मिथुन, मेघ, कुम्भिका वतुः कर्क इन दो २ राशियों का प्रीतिपट्टक होता है सो शुभ है ॥ १७४ ॥

द्विद्वादश —

मेघभार्यो वृषमिथुनो कर्कहरी तुलकन्यके ।

अतिवतुर्षा मकरकुम्भावनो द्विद्वादशे राशी ॥ १७५ ॥

टीका—मेघ, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, मिह, तुला, कन्या, कुम्भिका, घन और मकर कुम्भ ये दो २ राशि दूसरे, आठवें होने से द्विद्वादश हैं सो वर्जनीय है ॥ १७५ ॥

चतुर्थ, दशम, तृतीय, एकादश, उभयसप्तम —

चतुर्थो दशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः ।

उभयोः सप्तमः साम्यमेकजं शुभमुच्यते ॥ १७६ ॥

टीका—चतुर्थ और दश की परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश तो शुभ और दोनों सप्तम सम हो अथवा एक नष्ट हो तो शुभ जानिये ॥ १७६ ॥

ग्रहों का शत्रुत्व, समत्व और मित्रत्व—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा खे-
 स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ।
 जीवेन्द्रणाकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सिताकीं समौ
 मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥५७७॥
 सूरः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्यो परे त्वन्यथा
 सौम्याकीं सुहृदौ समौ कुजगुरु शुक्रस्य शेषावरी ।
 शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य त्वन्ये खे-
 ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽपि मया कीर्तिताः ॥५७८॥

टीका—इन श्लोको का आशय चक्र में देखिये ॥ ५७७-५७८ ॥

ग्रहनाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	मङ्गल
शत्रु	शनि गुरु	०	बुध	चन्द्र	गुरु	शुक्र	मङ्गल
सम	बुध	गुरु गुरु भौमशनि	गुरु शनि	भौम २ शनि	गुरु	शुक्र	मङ्गल
मित्र	चन्द्र गुरु मङ्गल	रवि बुध	चन्द्र गुरु शुक्र	गुरु	शुक्र	मङ्गल	भौम

नवपञ्चक —

मीनालिभ्यां युते कौट कुम्भे मिथुनसंयुते ।

मकरं कन्यकायुक्ते न कुर्व्यान्नवपञ्चक ॥ १७२ ॥

टीका—मीन से मकर के अन्तर पर गृध्रिचक, गृध्रिचक से मीन के अन्तर पर प्रकार कर्क मीन का और गृध्रिचक मीन का, कुम्भ मिथुन का, मकर कन्या का इन २ राशियों के नवपञ्चक होते हैं, ये वर्जित हैं ॥ १७२ ॥

मृत्युपट्टक —

मेपकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा ।

बुधमाल्यामनु बुधैर्ज्ञेयो मृत्युर्वै नक्रसिंहयोः ॥ १७३ ॥

कुम्भकर्कद्वयोश्चैव वृषकोदसादयोस्तथा ॥

टीका—मेप और कन्या ये परस्पर जुड़े और आठवें हों इसी मति से तुलसी मीन, मिथुन, गृध्रिचक, मकर, सिंह—कुम्भ, कर्क और वृष, घन इन दो राशियों के मृत्युपट्टक कहलाता है जो वर्जित है ॥ १७३ ॥

प्रीतिपट्टक —

सिंहो मीनयुतश्चैव तुला वृषयुता तथा ।

घनुः कर्कयुतं चैव कुम्भकन्यकयोस्तथा ॥ १७४ ॥

नक्रस्य मिथुने प्रीतिरजाऽस्त्योः प्रीतिरुत्तमा ॥

टीका—सिंह, मीन, तुला, वृष । कुम्भ, कन्या, मकर, मिथुन, मेप, गृध्रिचक और घनु, कर्क इन दो २ राशियों का प्रीतिपट्टक होता है जो शुभ है ॥ १७४ ॥

द्विर्द्वादश —

मेपभूपौ वृषमिथुनौ कर्कहरी तुलकन्यके ।

अलिधनुर्पी मकरकुम्भावेता द्विर्द्वादशे राशी ॥ १७५ ॥

टीका—मेप, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, कन्या, गृध्रिचक, घनु और मकर ये दो २ राशि कुम्भ, वारद्वय होने से द्विर्द्वादश है जो वर्जनीय है ॥ १७५ ॥

चतुर्थ, दशम, तृतीय, एकादश, उभयसप्तम —

चतुर्थी दशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः ।

उभयोः सप्तमः साम्यमेकर्द्धं शुभमुच्यते ॥ १७६ ॥

टीका—वृष और मकर की परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश तो शुभ और दोनों सप्तम सम हो अथवा एक नक्षत्र हो तो शुभ जानिये ॥ १७६ ॥

ग्रहों का शत्रुत्व, समत्व और मित्रत्व—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा खे-
 स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ।
 जीवेन्द्रुष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोजरिः सिताकीं समौ
 मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमयुः शत्रुः समाश्चापरे ॥५७७॥
 सूरः सौम्यसितावरी रविमुतो मध्यो परे त्वन्यथा
 सौम्याकीं सुहृदौ समौ कुजगुरु शुक्रस्य शेषावरी ।
 शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य त्वन्ये खे-
 ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेष्मी मया कीर्तिताः ॥५७८॥

टीका—इन श्लोको का आशय चक्र में देखिये ॥ ५७७-५७८ ॥

ग्रहनाम	रवि	चन्द्र	भीम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि गुरु	०	बुध	चन्द्र	बुध गुरु	सूर्य चन्द्र	रवि
सम	बुध	शुक्र गुरु भीमशनि	शुक्र शनि	भीम गुरु शनि	शनि	गुरु भीम	रवि
मित्र	चन्द्र गुरु शनि	रवि बुध	चन्द्र गुरु रवि	सूर्य गुरु	सूर्य चन्द्र शनि	शुक्र गुरु भीम	रवि

गर्तगण्यमेत मे शशौ बहामितान—

दशम के गुण—

देरमन्त्ये गुणाभावो द्वयोः नाम्ये गुणद्वयम् ।

वश्यवैर गुणश्चैको वश्यमन्त्ये गुणार्द्धकम् ॥ १७६ ॥

टीका—यदि नाम में गुण शून्य एक जाति में गुण २, पक्ष और द्वे में ३
पक्ष और नाम में गुण शून्य () ॥ १७६ ॥

दशम के गुण का चक्र—

	१	२	३	४	५
१	०	१	१	२	३
२	१	०	२	३	४
३	१	२	०	३	४
४	२	३	३	०	४
५	३	४	४	४	०

तारा के गुण—

एकतो लभ्यते तारा शुभा चैवाशुमान्यतः ।

तदा साक्षां गुणश्चैकमन्ताराशुद्धौ मिथस्त्रयः ।

उभयानि शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत् ॥ १८० ॥

टीका—एक का शुभ और एक का अशुभ तारा हो तो गुण द्वे में द्वे में
का एक तारा अथवा शुभ तारा ही तो शुच ३ और जो दोनों की अशुभ तारा हो
गुण शून्य जानिये ॥ १८० ॥

तारा के गुण का चक्र—

१	२	३	४	५	६	७	८
१	३	३	११	३	११	३	३
२	३	३	११	३	११	३	३
३	११	११	०	११	०	११	११
४	३	३	११	३	११	३	३
५	११	११	०	११	०	११	११
६	३	३	११	३	११	३	३
७	११	११	०	११	०	११	११
८	३	३	११	३	११	३	३
९	३	३	११	३	११	३	३

योनि के गुण--

महावैरे च वैरे च स्वस्वभावे यथाक्रमात् ।

मैत्र्ये चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥ ५८१ ॥

टीका--महावैर का गुण०, दोनो की शत्रुता का गुण १, स्वभाव के गुण २, दोनों मैत्रता का गुण ३ और अतिमित्रता के गुण ४ जानिये ॥ ५८१ ॥

स्पष्टार्थ योनिचक्र- -

	अश्व	गज	मेघ	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	०	२	२	०	१	०	४	०	०
मेघ	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	०	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	०	०	२	०	०
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	०	२	२	२	०	४	०	२	-	१	३	३	-	०
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	०	०	१
गौ	१	२	३	२	२	०	०	४	३	०	३	०	०	१
महिष	०	३	३	२	०	०	०	३	४	१	०	२	२	२
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	२	०	०
मृग	३	२	३	०	२	३	२	३	२	१	४	१	०	२
वानर	३	३	०	०	०	३	२	०	२	१	०	४	-	-
नकुल	०	३	३	०	०	२	१	०	३	०	३	३	४	०
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	-	-	-	-	१	४

ब्रह्ममैत्री में वर के गुण—									
	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	रा.	गु.	मं.
सूर्य	५	५	५	३	५	०	०		
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥		
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥		
बुध	३	१	॥	५	॥	५	४		
शुक्र	५	४	५	॥	५	॥	३		
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५		

सत्कृत के गुण—

राशि एक भिन्न चरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय-एकादश इनके श्री भिन्नराशि वा नक्षत्र एक इनके गुण ७ प्रीतिपडएक अथवा द्विर्द्वादशक वा नवपञ्चक इनके वरदूरत्व योनिशत्रुता होने पर भी भकृत के गुण ६ होते हैं ॥

असत्कृत के लक्षण

वर योनि मैत्र व स्त्रोदूरत्व हो तो पडएक द्विर्द्वादश नवपञ्चमादि दुष्ट कृटों के गुण ४ जानिये ॥

योनि मैत्र व स्त्री दूरत्व इन में से एक हो तो दुष्ट कृत का गुण एक जानिये । एक नक्षत्र वा एक चरण ॥

भकृत चक्र—

	मे.	पु.	म.	क.	सि.	रु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७	७
पु.	७	७	०	७	७	०	७	०	७	७	७
मि.	०	७	७	०	७	७	०	७	०	७	७
क.	७	०	७	७	०	७	०	७	०	७	७
सि.	०	७	०	७	७	०	७	०	७	०	७
रु.	०	०	७	०	७	७	०	७	०	७	०
वृ.	७	०	०	७	०	७	७	०	७	०	७
ध.	०	०	७	०	७	०	७	७	०	७	०
म.	०	०	७	०	७	०	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	७	०	७	०	७	७	०

इस प्रकार गणों का मिलान १८ गुण से अधिक हो तो विवाह शुभ, न्यून हो तो अशुभ है ।

वर्ण के फल—

या स्याद्गर्णाधिका कन्या भर्ता तस्या न जीवति ।

यदि जीवति भर्ता तु ज्येष्ठपुत्रो विनश्यति ॥ ५८२ ॥

टीका—कन्या का वर्ण वर से श्रेष्ठ हो तो उसका पति अथवा ज्येष्ठ पुत्र का नाश होता है ॥ ५८२ ॥

वैरयोनि का फल—

जैसे अश्व और भैस की वैरयोनि है इसी प्रकार वधू और वर की वैरयोनि विचारनी चाहिये और राजा सेवक इत्यादि को भी विचारनी चाहिये, इस से शुभ की इच्छा करने वाले को परस्पर वैरयोनि वर्जित है ॥

गणों का फल—

स्वगणे चोत्तमा प्रीतिर्मध्यमा नरदेवयोः ।

कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरत्नसाधु ॥ ५८३ ॥

टीका—दोनों का एक गण हो तो उत्तम प्रीति, मनुष्य और देव में मध्यम प्रीति, देव और वैश्य में कलह, मनुष्य और राजास गण में मृत्यु होती है ॥ ५८३ ॥

कूट का फल—

पङ्कटकेऽपमृत्युः पञ्चमनवसेऽनपत्यता ज्ञेया ।

द्विर्द्वादशे निर्धनता शेषेषु मध्यमता ज्ञेया ॥ ५८४ ॥

टीका—दोनों को पङ्कटक मृत्युकारक और नवपञ्चम अनपत्यकारक और द्विर्द्वादश निर्धनताकारक, शेष मध्यम जानिये ॥ ५८४ ॥

नाडी का फल—

अग्रनाडीव्यधे भर्ता मध्यनाडीव्यधे द्रवम् ।

पृष्ठनाडीव्यधे कन्या प्रियते नात्र संशयः ॥ ५८५ ॥

टीका—दोनों की अग्रनाड़ी हो तो भर्ता को, मध्य नाड़ी हो तो दोनों को और पृष्ठ नाड़ी हो तो कन्या को मृत्युदायक होती है ॥ ५८५ ॥

इक्कीस महादोष--

पञ्चाङ्गशुद्धिरहितो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तितः ।

उदयास्तशुद्धिरहितो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ ५१५ ॥

तृतीयः पापग्रहवर्गो भृगुः षष्ठः कुजोऽष्टमः ।

गरुडान्तकर्तरी रिःफः पडष्टेन्दुश्च संग्रहः ॥ ५१६ ॥

दम्पत्योरष्टमं लग्नं राशी विषघटी तथा ।

दुसुर्हूर्तो वारदोषः खार्जूरिकसमाङ्घ्रिगम् ॥ ५१७ ॥

ग्रहणोत्पातभं क्रूरविच्छर्त्तं क्रूरसंयुतम् ।

कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ॥ ५१८ ॥

टीका--प्रथम पञ्चाङ्ग शुद्धिरहित दोष १, उदयास्तशुद्धिरहित २, संक्रान्तिदिन ३, पापग्रह का वर्ग ४, लग्न से छुटा शुक्र ५, लग्न से अष्टम मङ्गल ६, लग्न से धनः चन्द्र ७, त्रिविध गरुडान्तसमय ८, कर्तरी ९, लग्न में चन्द्र और पापग्रह १०, पद की राशि से अष्टम लग्न वर्जनीय ११, विषघटिका १२, दुष्ट मुहूर्त १३, यामार्द्ध १४, वारदोष १५, लक्षा १६, ग्रहण-नक्षत्र १६, उत्पात-नक्षत्र १७, पापग्रहों से विद्ध १८, पापग्रहयुक्त १९, पापांश २० और क्रान्तिसाम्य २१ ये इक्कीस महादोष जिन में त्याज्य है ॥ ५१५-५१८ ॥

कर्तरी दोष का लक्षण--

लग्नाच्चान्द्रव्ययद्विस्थौ पापखेटौ यदा तदा ।

कर्तरी वर्जनीया सा उद्वाहोपनयनादिषु ॥ ५१९ ॥

न हि कर्तरीजो दोषः सौम्ययोर् यदि जायते ।

शुभग्रहयुतं लग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्तरी ॥ ६०० ॥

टीका--लग्न अथवा चन्द्र से वारदोष और दूसरे स्थानों में पापग्रह पड़े हों तो कर्तरी दोष होता है, इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है। कर्तरी दोष भग्न उत्त स्थानों में सौम्यग्रह हो

हो तो क्रूर ग्रहों

टीका—अपने वर्ग से पाँचव वर्ग घेरी होता है, चौथे से मित्रता और तीसरे से उदासीनता होती है । इसी प्रकार वर्गभेद तीन प्रकार के है ॥ ५६० ॥

प्रीतिज्ञान—

स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च कथ्यते ।

उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे सृतिस्तथा ॥ ५६१ ॥

टीका—स्त्री पुरुष को समान वर्ग में, जैसे—दोनों सिंह ही हो तो महाप्रीति, दोनों हों तो समान प्रीति, और उदासीन हो तो थोड़ी प्रीति और शत्रु वर्ग में हो तो यु जानना ॥ ५६१ ॥

असत्कृत विचार—

कन्यर्त्ताद्विरनक्षत्रमशुभं निकटे यदि ।

वरर्त्ताद्दूरगं स्यर्त्ता देवर्त्तस्य शुभं भवेत् ॥ ५६२ ॥

टीका—स्त्रीनक्षत्र से वरनक्षत्र निकट हो तो अशुभ और वरनक्षत्र से स्त्रीनक्षत्र हो तो शुभ और जो नक्षत्र एक अथवा एक स्वामी हो तो शुभ जानिये ॥ ५६२ ॥

दुष्ट कूटों का दान—

पट्टके गोमिथुनं प्रदद्यात्कांस्यं सरूप्यं नवपञ्चमे च ।

नाड्यां सुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च ॥ ५६३ ॥

टीका—अत्यावश्यक विवाह में वधू और वर के दुष्ट कूटादिकों के दान—पट्टक दो गौ, नवपञ्चम में रूपा सहित कांसे का पात्र, एकनाड़ी में गौ और द्विर्द्वादश में घ, सुवर्ण, वस्त्र तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना इत्यादि करने से दुष्ट कूटादिक दूर ते है ॥ ५६३ ॥

विवाह के उक्त नक्षत्र—

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवैन्दवैः ।

एतैर्निर्दोषमैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः ॥ ५६४ ॥

टीका—मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाती, मघा, रेवती रोहिणी तृतीया उत्तरा और मृगशिरा ये निर्दोष नक्षत्र स्त्रियों के विवाह में शुभ है ॥ ५६४ ॥

टीका—अपने वर्ग से पाँचव वर्ग वैरी होता है, चौथे से मित्रता और नीसरे से उदासीनता होती है । इसी प्रकार वर्गभेद तीन प्रकार के है ॥ ५६० ॥

प्रीतिज्ञान—

स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च कथ्यते ।

उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिरुत्तमा ॥ ५६१ ॥

टीका—स्त्री पुरुष को समान वर्ग में, जैसे-दोनों सिद्ध हो जा तो मन्मथप्रति प्रीति, व हों तो समान प्रीति, और उदासीन हों तो थोड़ी प्रीति और मृत् प्रीति में से प्रीति प्रीति जानना ॥ ५६१ ॥

असत्कृत विचार—

कन्यक्षद्विरनक्षत्रमशुभं निकटे यदि ।

वरक्षद्विरगं रज्यर्क्षं देवर्क्षेति शुभं गच्छत ॥ ५६२ ॥

टीका—स्त्रीनक्षत्र से वरनक्षत्र निकट हो तो अशुभ होता है, वरक्षद्विरगं रज्यर्क्षं देवर्क्षेति शुभं गच्छत ॥ ५६२ ॥

दुष्ट कृतो का दान—

पल्लवके गोमिथुनं प्रदद्यात्कारणं सख्यं नृपसख्ये न

नाख्यां सुधेन्वन्नसुवर्णवरत्र द्विर्दादगे प्राणस्य नृपसख्ये न

टीका—अत्यावश्यक विवाह में पट्ट और दान देना प्रतीति है, नृपसख्ये न नाख्यां सुधेन्वन्नसुवर्णवरत्र द्विर्दादगे प्राणस्य नृपसख्ये न ॥ ५६३ ॥

दिवार के लिये दान—

मृत्तमैत्रकरदानीनदापोष्णं विन्दते ।

पत्नैर्निर्दोषमैः स्त्रीणां विना मृत्तमैत्रकरदानीनदापोष्णं विन्दते ।

टीका—मृत्तमैत्रकरदानीनदापोष्णं विन्दते ॥ ५६४ ॥

इक्कीस महादोष--

पञ्चाङ्गशुद्धिरहितो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तितः ।

उदयास्तशुद्धिरहितो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ ५१५ ॥

तृतीयः पापग्रहवर्गो भृगुः षष्ठः कुजोऽष्टमः ।

गण्डान्तकर्तरी रिःफः पडण्टेन्दुश्च संग्रहः ॥ ५१६ ॥

दम्पत्योरष्टमं लग्नं राशी विषघटी तथा ।

दुर्मुहूर्तो वारदोषः खार्जूरिकसमाङ्घ्रिगम् ॥ ५१७ ॥

ग्रहणोत्पातभं क्रूरविच्छर्त्तं क्रूरसंयुतम् ।

कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ॥ ५१८ ॥

टीका--प्रथम पञ्चाङ्ग शुद्धिरहित दोष १, उदयास्तशुद्धिरहित २, संक्रान्ति-विग्रह ३, पापग्रह का वर्ग ४, लग्न से छूटा शुक्र ५, लग्न से अष्टम मङ्गल ६, लग्न से द्वाविंश चन्द्र ७, त्रिविध गण्डान्तसमय ८, कर्तरी ९, लग्न में चन्द्र और पापग्रह १०, ग्रह की राशि से अष्टम लग्न वर्जनीय ११, विषघटिका १२, दुष्ट मुहूर्त १३, यामार्द्ध आदि वारदोष १४, लक्षा १५, ग्रहण-नक्षत्र १६, उत्पात-नक्षत्र १७, पापग्रहों से विज्ञ नक्षत्र १८, पापग्रहयुक्त १९, पापांश २० और क्रान्तिसाम्य २१ ये इक्कीस महादोष विवाह में त्याज्य हैं ॥ ५१५-५१८ ॥

कर्तरी दोष का लक्षण--

लग्नाच्चान्द्रव्ययद्विस्थौ पापखेटौ यदा तदा ।

कर्तरी वर्जनीया सा उद्वाहोपनयनादिषु ॥ ५१९ ॥

न हि कर्तरीजो दोषः सौम्ययोर्यदि जायते ।

शुभग्रहयुतं लग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्तरी ॥ ६०० ॥

टीका--लग्न अथवा चन्द्र से वारहवें और दूखरे स्थानों में पापग्रह एवं कर्तरी दोष होता है, इसमें विवाह और यक्षोपवीत वर्जित हैं। कर्तरी दोष जो इन्हीं उक्त स्थानों में सौम्यग्रह हों अथवा शुभग्रहयुक्त लग्न हो तो क्रूर भी कर्तरी दोष नहीं होता ॥ ५१९-६०० ॥

वधू वर की राशि से अष्टम लग्न—

वरवध्वोर्वटोश्चापि जन्मराशेश्च लग्नतः ।

त्याज्यमष्टमलग्नं स्याद्विवाहव्रतबन्धयोः ॥ ६०१ ॥

टीका—वर, वधू और बट्ट इन सबों की जन्मराशि और लग्न से अष्टम लग्न बाह और बहोपवीत में वर्जित है ॥ ६०१ ॥

दुष्ट मुहूर्त—

तिथ्यंशो दिनमानस्य रात्रिमानस्य चैव हि ।

मुहूर्तः कथितस्तेषु दुष्टमुहूर्त शुभे त्यजेत् ॥ ६०२ ॥

टीका—दिनमान और रात्रिमान इनका पन्द्रहवां अंश मुहूर्त होता है । इनमें 'हर्तों' को शुभकार्य में वर्जित करना ॥ ६०२ ॥

यामाह्नादिकथन

सूर्याद्यामदलं दिवेव निगमाद्यश्वीषु नागत्रिष्ट ।

संख्याकं बुलिक दिवेन्द्रविदिङ्नागतुर्वेदत्रिष्टम् ॥ ६०३ ॥

व्येकल निशि षोडशांशमरेर ति यशमुज्ज्वलति नैः ।

फालंकराटकमैनिघराटममरत्यनाम्णजिह्वयः क्रमात् ॥ ६०४ ॥

मार्गानि नक्षत्र--

वार	१२ मार्गानि नक्षत्रानि	१२ मार्गानि नक्षत्रानि	१२ मार्गानि नक्षत्रानि	१२ मार्गानि नक्षत्रानि	१२ मार्गानि नक्षत्रानि	१२ मार्गानि नक्षत्रानि	१२ मार्गानि नक्षत्रानि
रवि	४ वा	१२	२६	१४ वा	८ वा	६ वा	१० वा
चन्द्र	७ वा	२४	२०	१२ वा	६ वा	४ वा	८ वा
मङ्गल	२ रा	४	८	१० वा	४ वा	२ रा	६ वा
बुध	५ वा	१६	२०	८ वा	२ रा	१४ वा	४ वा
शुक्र	८ वा ७	२८	३२	६ वा	१४ वा	१२ वा	२ रा
शुक्र	३ रा	८	१२	४ वा	१२ वा	१० वा	१४ वा
शनि	६ वा	२०	२४	२ रा	१० वा	८ वा	१२ वा

लक्षा दोष--

भौमात्प्राकृति पडजिताष्टनखभं हन्त्यग्रतो लक्ष्या ।

खेटोर्कोर्कमितं शशी मुनिमितं पूर्णा न सन्मालवे ॥ ६०५ ॥

टीका—भौम जिस नक्षत्र का हो तिससे तीसरे नक्षत्र में लक्षा दोष और बुध जिस नक्षत्र का हो तिससे चारसवे नक्षत्र में, शुरु से छठे नक्षत्र में, शुक्र से २४ वे नक्षत्र में और शनि के नक्षत्र से ८ वे नक्षत्र में, राहु के नक्षत्र से २० वे नक्षत्र में, रवि के नक्षत्र से १२ वे नक्षत्र में और चन्द्रमा पूर्ण हो तो सातवे नक्षत्र में लक्षा दोष होता है। यह दोष मालवदेश में अशुभ और अन्य देशों में शुभ होता है ॥ ६०५ ॥

ग्रहण तथा उत्पात नक्षत्र --

यस्मिन् धिष्णये महोत्पातो ग्रहाणां वा भवेद्यदि ।

तस्मिन् धिष्णये शुभं कर्म परमासं वर्जयेद् बुधः ॥ ६०६ ॥

ॐ एक दिन का यामार्द्ध ८ कुलिक १६ वाराणसी जाने, परन्तु उनमें से जिस वार का जो वर्जित कोष्ठक में लिखा है ॥

टीका--जिस नक्षत्र में उत्पात अथवा ग्रहण हो तिस नक्षत्र में परमास (६ मास) एक शुभ कर्म वर्जित है ॥ ६०६ ॥

पापग्रहयुक्त और वेध नक्षत्र —

श्रुत्यग्निभेऽग्निजिद्ब्राह्मणे वैश्वेन्द्वर्त्ते तु रुद्रभे ।

मूलादित्ये च पुष्यैन्द्रे सैत्राश्लेषे मघान्तके ॥ ६०७ ॥

दसभागार्यमान्त्ये च हस्ताहिर्बुध्न्यभे तथा ।

चित्राजचरणे स्वाती वारुणे च परस्परम् ॥ ६०८ ॥

वासवेन्द्राग्निभे तद्वेधः सप्तशलाकजः ।

त्याज्यः पापाद्भवो यत्नाद् व्रतवन्धादिकर्मसु ॥ ६०९ ॥

टीका--पञ्च तथा सप्तशलाका चक्र में जिस रेखा पर जो नक्षत्र हो पाप ग्रह सन्मुख जो नक्षत्र है, उस पर पापग्रह हो तो वह शुभ नक्षत्र भी वेधित जानिये ना शुभ कार्यों में त्याज्य कर देना ॥ ६०७—६०९ ॥

नक्षत्र-चरणवेध—

सप्तपञ्चशलाकाभ्यां विद्धमेकागलेन यत् ।

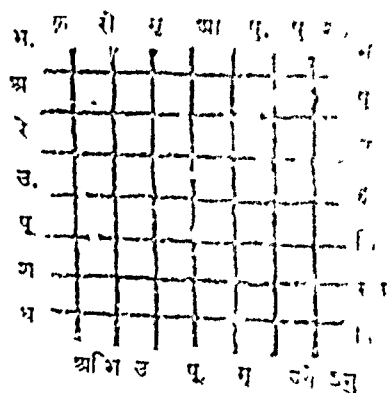
लत्तोपग्रहं धिषाय पादमात्र शुभे त्यजेत् ॥ ६१० ॥

वेधमाद्यं तयोरंघ्रयोरन्योन्य द्वितीययोः ।

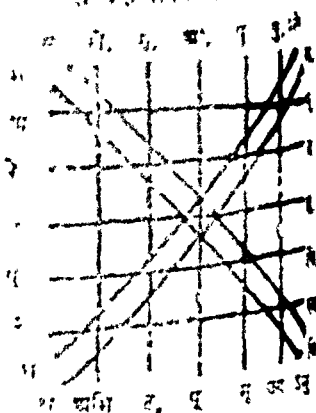
क्रूरैरपि त्यजेत् पाद केचिद्वचुर्महर्षयः ॥ ६११ ॥

टीका—यत्न गणन व्यतीपात साध्य संज्ञित कर्कश योगों के अन्त में जो उभे चण्डासुध दोष कहते हैं ॥ ६१२ ॥

पञ्चशलाका चक्र—



सातशलाका चक्र—



क्रान्तिसाम्य—

युग्मे धना कर्कशि वृश्चिकं च कन्याभमीने वृषनक्रमे च ।

मेपे च सिंहे च घटे तुलायां क्रान्ते च साम्यं शशिसूर्ययोगे ॥६१॥

टीका—मिथुन धन इन लग्नों के सूर्य और चन्द्रमा हों तो क्रान्तिसाम्य होता है। प्रकार कर्क वृश्चिक आदि दो २ राशियों के क्रान्तिसाम्य दोष जानिये ॥ ६१३ ॥

चक्र का क्रम—

ऊर्ध्व रेखात्रयं चैव तिर्यग्रेखात्रयं तथा ।

क्रान्तिसाम्यं बुधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनं तु योजयेत् ॥६१४॥

टीका—तीन ऊर्ध्व और तीन तिर्यग् रेखा खींचें मध्य भाग की रेखाओं में लग्न क्रम से लिये, छद्म लग्नों में से एक पर रवि और दूसरे पर चन्द्रमा हों क्रान्तिसाम्य होता है ॥ ६१४ ॥

जामित्र दोष—

लग्नेन्दोर्नास्तगः पापस्तुल्यांशे यदि स्थितः ।

तदा जामित्रदोषः स्यान्नहि न्यूनाधिकांशके ॥ ६१५ ॥

क्रूरो वा यदि वा सौम्यो लग्नाच्चन्द्राच्च खेचरः ।

एकोऽपि यदि जामित्रे सप्तंशो च तदा भवेत् ॥ ६१६ ॥

जामित्रं न प्रशंसन्ति गर्गकश्यपदेवलाः ।

त्रायषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदो रविः ॥ ६१७ ॥

टीका—लग्न से वा चन्द्रमा से सप्तम स्थान पापग्रह उससे तुल्यांश में स्थित तो जामित्र दोष होता है, यदि न्यून अंश हो वा अधिक अंश हो तो जामित्र दोष ना है। दूसरा पक्ष—लग्न से वा चन्द्र से सप्तम स्थान में शुभग्रह अथवा पापग्रह एक शुभ अंश हो तो जामित्र दोष होता है। गर्ग, कश्यप देवल इन ऋषियों के मतानुसार जामित्र दोष विवाह से वर्जित है। जो लग्न से एकादश, पष्ठ, तृतीय इन स्थानों में सूर्य हो तो जामित्र दोष शुभ और सुखदायक होता है ॥ ६१४-६१७ ॥

चरत्रयदोष—

कर्कलग्नेऽथवा मेषे घटांशो यदि दीयते ।

तुलायां मकरे चन्द्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ॥ ६१८ ॥

टीका—गुरु, शुक्र यथया बुध ६।४।७।६०।४।६ इन स्थानों में हो तो एक लग्न शुक्र तीन सौ, बुध एक सौ दोषों का नाश करते हैं ॥ ६२१ ॥

लग्नप्रमाण वा रास्युदय—

गजाग्निदत्ता गिरिपट्कदत्ता व्योमेन्दुरामास्सरामरामाः ।
 कुरामरामा गजचन्द्ररामा नागेन्दुलोकाः कुण्डलानलाश्च ॥ ६२१ ॥
 पद्मामरामाः खशशाङ्गरामाः सप्ताङ्गपलाश्च गजाग्निदत्ताः

टीका—राशि उदय अर्थात् मेघादि बारह राशि तिनका बारह लग्न होता है जिस राशि का सूर्य हो वही उदयकाल का प्रथम लग्न जानना । जिसको पलसंख्या क्रम कोष्टक में है ॥ ६२२ ॥

लग्न	मेघ	१०	१५०	६०	१५६	६०	१५०	२०	१७०	३०	१५०	३०
पल	२३८	२६७	३१०	३३६	३३९	३९८	३९८	३३७	३३६	३९०	२६७	३३९

लग्नों की घटिकाओं की संख्या—

मीने मेपे त्र्यष्टपञ्च क्रमान्नाढ्यः पलानि च ।
 वृषकुम्भेऽधिसप्तद्वि पञ्चदिङ्मिथुने सृगे ॥ ६२३ ॥
 धनुः कर्क शराः पट्त्रि सिंहाल्योः शरभूत्रयम् ।
 बाणाष्टदशतूलाङ्गे लग्ननाढ्यः पलानि च ॥ ६२४ ॥

टीका—मेघादि लग्नों की घटी और पलों का क्रम ॥ ६२३—६२४ ॥

लग्न	मेघ	शुभ	१०	६०	१५६	६०	१५०	१५०	१५०	१५०	१५०	१५०	१५०
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
पल	५८	२७	१०	३६	३९	१८	१८	३९	३६	१०	२७	५८	५८

प्रतिदिवस भुक्तपल जानने का क्रम—

मीनाजे सप्तपट्पञ्च पलानि विपलानि तु ।
 गोकुम्भेऽष्टौ युगशरादिर्गिंशतिर्नृशुङ्भृगो ॥ ६२५ ॥
 कर्क चापे भवाः सूर्याः सिंहाल्योरुद्वद्विंशतिः ।
 तुलाङ्गे दिक् च पट् त्रीणि लग्नेष्वेकांशसम्मितिः ॥ ६२६ ॥

टीका—जो लग्न उदय काल में हो तिसकी प्रतिदिन भोग्य पल विपल
या चक्र मे देखिये ॥ ६२५-६२६ ॥

लग्न	मेप	वृष	मि०	क०	सिंह	व०	तुला	शुक्र	धन	मकर	कुम्भ	मीन
ल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
पल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्न कथन—

यस्मिन्नाशौ यदा सूर्यस्तलग्नमुदयो भवेत् ।

तस्मात् सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥ ६२७ ॥

टीका—जिस राशि का सूर्य हो वही लग्न सूर्योदय होता है और उसका सप्तम
लग्न सूर्यास्त से होता है । उसी को अस्त लग्न जानिये ॥ ६२७ ॥

लग्न	वृष	मिथुन	कर्क	कुम्भ	तुला	धन	मीन
मेप	० ३०	० ५०	० १०	० १६	० ३०	० ३६	० ० ०
वृष	६ ११	६ १५	१ २०	१ २५	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मिथुन	० ३०	० ३६	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ६ ४०	० १६ १०
कर्क	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ६ १०	० १० ०	० १६ ४०	० ३६ १०
सिंह	४ १ ३०	५ ६ ४०	१ १० ०	१ १६ १०	१ ३० ०	० ३६ ४०	० ० ० ०
व०	५ १३ ३०	६ २१ ४०	१ ३० ०	१ ३६ ४०	१ ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
तुला	६ ३३ ३०	६ ३६ १०	६ ६ ० ०	६ ० ० ०	० ६ ० ०	६ ६ ० ०	१ १६ १०
शुक्र	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ६ १०	० १० ०	० १६ ४०	० ३६ १०
धन	४ ३३ ३०	५ ६ ४०	५ १० ०	५ १६ १०	५ ३० ०	५ ३६ ४०	० ० ० ०
मकर	१ १३ ३०	१ २६ ४०	१ ३० ०	१ ३६ ४०	१ ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
कुम्भ	१० २३ ३०	१० ३६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	१६ ६ ४०	१० ६ ४०
मीन	० ० ०	० ० ०	१ १ ० ०	१ ६ १०	१ १० ०	१ १६ ४०	१ ३६ ४०

लग्न के उक्त अंग देने का क्रम—

वृषश्च मिथुनं कन्या तुला धन्या भास्वत्या ।

मृगशिरा सुनयांगान्तु ततोऽन्ये कुलवांगकाः ॥ ६२ ॥

टीका—वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन ये अंग आदिग लग्नो दे हूँ । मेष मृगशिरा, मेषादि । २ लग्न या अंग ७ कोष्ठक में है तब में में जिसके अंग मृगशिरा हो उनमें कोष्ठक में लग्न मिले और उस अंग पट्टी के अग्रभाग देकर निकाले ॥ ६२ ॥

अन्येन कोष्ठक में ४ अङ्क है उनमें नाम राशिय अंग कल, धिक्का उत्तर । को मंगलः—अन्य का नाम मेष और वृष का नाम १५ म प्रकार १६ राशि होती है ।

तान्कालिक सूर्य सूर्य होने का साधन—

गतगम्यादिनाहतव्युत्पुक्तेऽस्तरमाणांगविद्युद्युतो ग्रहः स्यात् ॥

टीका—यद्यप्यग्र्य ग्रहों के कोष्ठक में पूर्णिमा से अमास्या पर्यन्त और से पूर्णिमा पर्यन्त सूर्य है, परन्तु पूर्णिमा के सूर्य से जिन दिन का सूर्य मर हो उस दिन को लेकर दिनों के अन्तर को वर्तमान दिन की सूर्य गति से बीज पूर्ण और ६० का भाग देने से जो अङ्क आये वह अङ्क पट्टी पर लाने । पूर्णिमा के सूर्य से जो बीज को सूर्य काग्रा हो तो पन्चाक्षर्य सूर्य के अंग को जो कोष्ठक में है उन अङ्कों को घटाने और जो अंग बाल न हो तो उनमें जोड़ने प्रकार से तान्कालिक सूर्य सूर्य हो जाता है ॥

भक्त दिवसों का उदाहरण ।

उदाहरण—

शके १७६६	भा ६०) १३२५ (२२ अंश	७।१।१७।१५ स्पष्टरवि
उनमें ४४४	१२०	२२।५ अयनांश मिलावे
घटाया	१२५	७। २३। २२। १५
१३२५	१२०	यह सायन सूर्य जानिये।
	५	
	६० गुणक	
	भाग ६०) ३०० (५ पला	
	३००	
	०००	

लग्न से इष्टकाल लाने का क्रम—

स्फुटसायनभागाकभोग्यांशफलसम्पत्तिः ।

सायनां रातनाश्चापि भुक्तां राफलसंयुताः ॥ ६३० ॥

मध्यलग्नोदयैर्युक्ताः पण्ड्याप्ता नाडिकास्तनोः ।

टीका—सायनसूर्य से भोग्य और सायन लग्न से भुक्त बनाने की रीति—दोनों का योग करके सूर्य लग्न के मध्य का उदय लेकर युक्त कर फिर उसमें ६० का भाग देने से लग्न पर से सूर्य का भोग्य-काल स्पष्ट हो जाता है ॥ ६३० ॥

उदाहरण—शके १७६६ कार्तिक शुक्ल ६ भौमवार को स्पष्ट सूर्य के राशि आरि ७।१।१७।१५ और अयनांश २२।५ को सूर्य के अंश और घड़ियों में मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादि ७।२३।२२।१५ और यह वृश्चिक राशि का सूर्य २३ अंश २२ घटिका १५ अंश ५, इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक राशि का है तो वृश्चिक का उदय कहिये ३३१ से भोग्यांश गुणने से २१६४ अङ्क हुए इनमें ३० का भाग देने से ७।३८ आये यह सूर्य का भोग्यकाल जानिये ।

लग्न से भुक्त लाने या प्रकार—

मकर लग्न वृष की उसको कोष्ठक में देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे तो राश्यादि ६।१३।१० कहिये । मकर राशि का लग्न २३ अंश २० घटिका होती है, इस लग्न के अंश घड़ी में अयनांश २।५।५ मिलाने से सायन लग्न १०।१।२५ हुआ कुम्भराशि के लग्न अंश में ५ घड़ी २५ सायन लग्न होता है, लग्न के भुक्तांश ५।२५ कुम्भ राशि उदय २६७ इनको गुणने से १४४६ अङ्क हुए, इनमें ३० का भाग देने से ४८।१२ आये यही लग्न का भुक्त होता है ।

भोग्य युक्त से इष्टकाल लाने का प्रकार—

भोग्य भुक्त योग १२१२० सूर्य अथवा लग्न जिस राशि के मध्यान्तर का उदय
२ घन ३३६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्य भुक्त योग १२१२० में मिलाये
तो अङ्क हुए ७६७ इस युक्त अङ्क में ६० का भाग दिया तो प्रप्त इष्टकाल की
घटी १२ पल ४७ हुए, इन पलों में वृत्ति के ५ पल जोड़ने से इष्टकाल १२:५२ का
जाता है ॥

उदाहरण—

सायन सूर्य के भोग्य लाने का प्र—

शेष जित राशि में सूर्य उदय होगा वह राशि अंगे जितनी राशि उदयराशि में था होगी उनको घटा दें जो उदय घटे तो अशुभ जानिये और शेष अंशों को ३० में गुण कर अशुभ उदय में भाग दें तो अंगादिक आयेंगे, उसमें शेष राशि में अशुभ राशि से पूर्व राशि तक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करें तो सप्त स्थानों जाता है ॥

उदाहरण-पौर्णिमा जो नायन सूर्य आया है वह ७१२३।५।१७ उसका उदय ३३। क' अंश २३।३५।१७ उसे ३० अंश में हीन करने से जो शेष बचे वह भोग्यांश १।२४।४० इनको उदय से गुने तो वे अंक २१२२ इनमें ३० का भाग दें तो भोग्यफल निकल आवे ॥

उसके दिवाव का क्रम—

३०	३५	१७ नायनसूर्य के अशु घटावे
२३		
६	२४	४३ शेष भोग्य
		३३१ उदय
अंश	कला	विकला
२१८६	१३२४	४३
१३६	६६६	१०६
३०) २१२२ (७०	७६४४	१२६
२१०	२३७	भाग ६०) १४२३३ (२३५ कला
२२	६०) ८१८१ (१३६ अ	१२०
६० गुणक	६०	२२३
३०) १३२० (४४	२१८	१८०
१२०	१८०	४३३
१२०	३८१	४२०
१२०	३६०	१३
०	२१	

उत्तर-७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये ।

इष्ट घटी में १२।५२ इनके पल ७५२ इस अङ्क में भोग्य काल घटाया तो शेष आ ७०।१।३६ हुआ, धन राशि का उदय ३३६ या मकर राशि का उदय ३६० इन दोनों का योग ६९४ हुआ, शेष अंक में न्यून किया तो शेष ५५।३६ रहे इन अंकों में कुम्भ राशि का २६७ घटा नहीं सकते इस लिये उसे अशुभ उदय जानिये ॥

दृष्ट घड़ी १२

गुणक ६० ५१

७२०

५२

७५२

भोग्यकाल

७०

४४

३३६ घनराशि का उदय ७०१

१६ इन अङ्कों में कुम्भ का उदय

३१० मकरराशि का उदय ६४६

नहीं घट सकता इसलिये

६४६

५५

१६ अशुद्ध उदय कहते हैं ।

अंशादि ५५।६ इनको ३० से गुणने से ये अङ्क १६।५८ हुए इनका अशुद्ध उदय में भाग दे जितने भाग आवे वे अंश और शेष अंश ५६ को ६० से गुणा तो हुआ ३३६० फेर इनके उदय में भाग दे तो घटी १२ और शेष १५० को ६० से गुणा तो हुआ १००० फिर उनके उदय में भाग दिया तो पल ३५ मेघ राशि से अशुद्ध की पूर्व राशि तक राशि १० और पहली के अंशादिक ०।१२।३५ तिनके और राशि के अंशों के लिखने से षष्ठ सायन लग्न १०।३०।१२।३५ अयनांश २।५ सायनलग्न के अंश घटियों में घटाने से षष्ठ लग्न १।१४।७।३१ मकर लग्न १४ अंश ७ घटिका ३५ पल जानिये ॥

शेषाङ्क

१५

१६

५६

१५६

१६५०

३५ गुणक

६०

६० गुणक

८ ६० (४८० (८-२६७) ३३६० (१२ घ-२६७ ६३ ६० (३५ प

२६७) १६५८ (६ अंश । ४८०

२६७

८०१

१६०२

६६०

१३५०

५६

५३४

१३३५

१५६

१५

राशि

अंश

घटी

पल

१०

६

१२

३५

१२

५

० अयनांश घटाने से

१४

७

१५

इस प्रकार मकर लग्न प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ॥ १६१-१६३ ॥

सूर्य और लग्न एक राशि के हों तो दृष्ट लाने का क्रम—

यदि तनुदिननाथवेकराशौ तदशान्तरहत-

उदयः स्यात् त्वाग्निहत्विष्टकालः ॥ ६३३ ॥

टीका-शरीर लक्षण लक्षण के लोका का जो भाग शरीर के लोका में शशि के उदय से मग ३० का भाग है तो लक्षण का जो भाग माना जाये, सो शरीर में लक्षण का भाग मग ३० का भाग माना जाये तो लक्षण का जो भाग माना जाये, सो शरीर में

लग्न के सभासम मर्तों का विचार

लग्ने चन्द्रसन्ना रिगौ शशिमिनी मर्तुने से तुवो-
 ऽज्जन्त्येऽयुः सुखगोऽयुः कुनश्मः शुक्लस्त्रीयः शुने ॥
 लभे सर्वलगाः शमा वसिन्नागाऽयुः सन्ना-
 श्चन्द्रस्यम्बुधने ध्रियेऽशमदकेऽयुः सन्नागाऽयुः ॥ ६३४ ॥

टीका-लग्न में चन्द्रमा और पापप्रद अथवा लग्न से पद स्थान में शुक्र है चन्द्र और सप्तम स्थान में कोई ग्रह हो शुभ स्थान में शुभ, लग्न में चन्द्र, चतुर्थ स्थानी राहु, अष्टमस्थानी मङ्गल वा शुभ राहु, और छठीय स्थान में शुक्र, ऐसे लग्न हो तो अनिष्ट, शोककारक अशुभस्थानी ग्रह जानिये ।

लग्न से एकदशस्थान में सम्पूर्ण ग्रह और निम्न स्थान छोड़कर और शेष स्थान में शुभग्रह हो और चतुर्थ, एकदश तथा पष्ठ स्थान में पापग्रह और २ । ३ । ४ स्थान में चन्द्रमा हो तो शुभ लग्नोकारक जानिये, और लग्नका स्वामी अथवा अंश का स्वामी अथवा द्रेष्काण का स्वामी ये पष्ठ वा अष्टम स्थान में हों तो मृत्युदायक जानिये ॥ ६३५ ॥

पञ्चभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरिष्टमादेश्यम् ।

स्थानादिफलसिद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥ ६३५ ॥

टीका लग्नों के पांच ग्रह शुभस्थानी हों तो पुष्टिकारक होते हैं और अशुभ हों तो अनिष्टकारक होते हैं और यवनादि मत से चार ग्रह भी इष्टकारक जानिये ॥ ६३५ ॥

पङ्कगर्गशुद्धि जानने का क्रम—

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः ।

त्रिंशांशश्चेति पङ्कगर्गस्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥ ६३६ ॥

टीका-प्रथम जानने से लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ६ छे वर्ग इनमें शुभग्रहों के वर्ग शुभ होते हैं ॥ ६३६ ॥

त्रिंशांशादि-कथनम्—

त्रिंशद्भागत्मकं लग्नं होरा तस्यार्द्धमुच्यते ।

लग्नात् त्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः ॥ ६३७ ॥

द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ।

टीका—लग्न के अंश ३० होते हैं तिनका अर्द्ध १५ अंश होरा कहाती है । और लघ्न ही का तीसरा भाग १० ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं और नवम भाग नवांश और लघ्न का बारहवां भाग द्वादशांश और तीसवां भाग त्रिंशांश, इस रीति से एक लग्न ३० अंश होते हैं और उन्हीं तीस अंशों के लघ्न वर्ग होते हैं ॥ ६३७ ॥

आदौ गृहज्ञानम्—

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥ ६३८ ॥

टीका—जिस ग्रह की जो राशि हो उस ग्रह का सो राशि ग्रह कहा जाता है ॥ ६३८ ॥

ग्रह	भौम	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	शरवक	धन	मकर	पुम्भ	मीन

होराकथनम्—

सूर्येन्द्रोर्विषमे लग्ने होरा चन्द्रार्कयोः समे ।

टीका—विषमलग्न में १५ अंश तक सूर्य की होरा तदनन्तर चन्द्रमा की होरा जानिये, सम लग्न में १५ अंश के अन्तर्गत लग्न हो ता चन्द्रमा की होरा तिसके ठोड़े सूर्य को जानिये । होरा चन्द्रमा की शुभ और सूर्य की अशुभ ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	व.	तु.	बु.	ध.	म.	उ.	मी.
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
अश १५	सु.	च.	सु.	व.	सु.	च.	सु.	च.	सु.	च.	सु.	च.
अश ३०	च.	सु.	च.	सु.	च.	सु.	च.	सु.	च.	सु.	च.	सु.

द्रेष्काणकथनम्—

द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्य च ॥ ६३९ ॥

द्रेष्काणश्च तृतीयस्तु लग्नो नवमराशिपः ।

टीका—द्रेष्काण कहिये लग्न के ३० अंश में से १० अंश का नाम प्रथम द्रेष्काण, ऐसे ही २० अंश ३० अंश का द्वितीय द्रेष्काण होता है । प्रथम द्रेष्काण का नवमी लग्न

का न्यामी होता है, जिसका द्रष्टव्यता का दृष्टान्त पञ्चम स्थान का न्यामी होता है, जोर दृष्टान्त द्रष्टव्यता के न्याय स्थान का न्यामी होता है, यदि न्याय दृष्टान्त
अन्यत्र जानिरे ॥ ६३६ ॥

न्यायार्थ पञ्चम—

न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय
१००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
२०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

न्यायार्थ—

न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय	न्याय
१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
२०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
२१	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
२२	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
२३	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
२४	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२५	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२६	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२७	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
२८	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
२९	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३०	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५

लग्न का नवांश—

मेघसिंहघनूर्लने नवांशा मेघतः स्मृताः ।

वृद्धकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥ ६४० ॥

कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतः स्मृताः ।

न्युग्मतौलिकुम्भेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥ ६४१ ॥

ढोका-मेघ ,सिंह तथा धन इन लग्नों का नवांश का क्रम मेघ से जानिये और र, कन्या तथा मकर इनका मकर से क्रम और मिथुन तुला कुम्भ इनके तुला से र कर्क, वृश्चिक तथा मीन इन लग्नों का नवांश कर्क राशि से जानना चाहिये । र्य, मङ्गल और शनि का नवांश अशुभ होता है ॥ ६४०--६४१ ॥

	मे,	वृ	मि	क	सि	कं	तु	र	ध	म	कु	मी
२०	म	श	शु.	च.	म.	श	शु	चं.	म	श	श	चं.
४०	शु.	श	म	र	शु	श	म	र	शु	श	म	र.
००	वु	गु	गु	वु	वु	गु	गु	वु	वु	गु	गु	वु
२२०	च	म	श	शु	च	म	श	शु	चं	म	श	श
४०	र	शु	श	म	र	शु	श	म	र	शु	श	मं
००	वु	वु	गु	गु	वु	वु	गु	गु	वु	वु	गु	गु
२२०	शु.	च	म	श	शु	च	मं	श	शु	चं	म	श
४०	म	र	शु	रा	म	र	शु.	श	मं	र	शु	श
००	गु	वु	वु	गु	गु	वु	वु	गु	गु	वु	वु	गु

द्वादशांश-कथन—

लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेव कीर्तिताः ॥ ६४२ ॥

ढोका-लग्न के अंश ३० तिनो के भाग १२ द्वादशांश कहलाते हैं तिनो का मम लते लग्न से जहाँ तक लग्न के अंश हों उस स्थान से द्वादशांश पनि जानिये, समें मङ्गल शनि और रवि इनके अंश अशुभ होते हैं ॥ ६४२ ॥



स्पष्टार्थ चक्र--

	भेप	रुप	मि.	क.	सि.	क	तु	ग	घ	ग	कुं	मो
२३०	मं.	शु	बु.	चं.	र.	बु	शु.	मं	गु.	श.	श.	गु.
५०	शु	बु.	चं.	र.	बु	शु	मं	गु.	श.	श.	गु	म
७३०	बु	च.	र.	बु.	शु	मं.	गु.	श.	श	गु	म	शु.
१००	चं.	र.	बु.	शु	मं	गु.	श	श.	गु.	मं.	शु.	तु
१२३०	र.	बु	शु	मं.	गु.	श	श	गु	मं.	श.	तु	च.
१५०	बु.	शु	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु	बु	चं.	र
१७३०	शु	मं	गु	श.	श	गु.	मं.	शु.	बु.	चं	र.	तु
२००	मं.	गु.	श.	श	गु	म.	शु	बु	च.	र	बु	तु
२२३०	गु	श.	श	गु.	मं.	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं.
२४०	श.	श	गु	म.	शु	बु.	चं.	र.	बु.	शु	मं	गु
२७३०	श.	गु	मं.	शु	बु	चं.	र.	बु	शु	मं	गु	श.
३००	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु	शु.	मं	गु	श.	श

विषमविशांश--

कुजाकिंगुरुविच्युक्रास्त्रिंशारापतयः क्रमात् ।

पञ्चपञ्चाष्टशैलेषु भागानां विषमे गृहे ॥ ६४३ ॥

टीका—विषम लग्न में पञ्चमांश लग्न पर्यन्त हो तो भोम के आगे ५ अंश शनि के ५ अंश गुरु के ८ अंश उसके आगे ७ अंश बुध के और ५ अंश शुक्र के इस क्रम से विषम लग्न में त्रिंशंशपति जानो इनमें मङ्गल शनि अशुभ जानिये ॥ ६४३ ॥

अ.मे.	म	मि	तु	घ
५	म	म	म	म
५	श	श	श	श
८	गु	गु	गु	गु
७	बु	बु	बु	बु
५	शु	शु	शु	शु

शुक्रजेज्याकिंभूपुत्रास्त्रिंशंशपतयः समे ।

पञ्चाङ्गाष्टेषु पञ्चानां भागानां कथिता बुधैः ॥ ६४४ ॥

टीका-सम लग्न में प्रथम अंश मे ५ पर्यन्त शुक्र, तिसके आगे ७ अंश बुध, तिसके आगे ८ अंश गुरु, तिसके आगे ५ अंश शनि, तिसके आगे ५ अंश मङ्गल ये समलग्न में विंशति जानिये, तिसमे मङ्गल शनि अशुभ है ॥ ६४४ ॥

अ.	बु	क	क	बु	म	मी
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
५	श	श	श	श	श	श
५	म	म	म	म	म	म

पद्वर्ग जानने का क्रम-

टीका- कार्तिक शुक्ल ६ मङ्गलवार लग्न मकर अंश १४ घटिका ११ पल ५१ स्वामी शनि गृहेश ये पद्वर्ग तिनमें शनि अशुभ शेष ५ वर्ग शुभ जानिये ॥

गृहेश	होरा	द्रेष्काण	नवमाश	रादशाश	प्रमाण
शनि	चन्द्र	शुक्र	शुक्र	गुप्त	ग

उत्तांश -

मेघे पष्ठघटौ वृषे त्रिदशगिना द्वन्द्वेऽद्विगोऽर्कानयः ।

कीटेऽब्ध्नवाद्योऽर्कभवनेऽङ्गाश्वारित्र्यां त्र्यर्षपट् ॥ ६४५ ॥

जूकेऽर्काद्विगुणा अलोऽगवगपट् चापे त्रिपद्विगोऽयो

नर्केऽशास्त्र्यरणा घट भववृषा मीनेऽद्विगोऽष्ट गुणा ॥ ६४६ ॥

टीका-इन श्लोकों का अर्थ क्या है इति चेत् ॥ ६४५-६४६ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
अश	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	७		६		५		४		३
		५		४		३		२	
			४		३		२		१

पद्वर्ग पञ्चवर्ग का नवर्ग जानने का क्रम-

वैश्विन् त्रिवर्ग मत्त मे मत्त मे मत्त मे मत्त मे मत्त मे ॥ ६४७ ॥

टीका—६ अथवा ४ अंग ४ अंग तन्म वे हो तो लग्न अतिष्ठ हो और
वे ३ अंग अनुम होने हैं और दो एक हो तो लग्न वर्जनीय है ॥ ६१३ ॥

लग्नांश फल—

लग्ने चतुर्दशो भागो वृषम्य मकरम्य च ।

कन्याकर्कटमीनानामष्टमे द्वादशेऽलिनः ॥ ६१४ ॥

टीका—चतु मकर ११ अंग, वृष्या १२ अंग, कन्या १२ अंग, मीन के ८ अंग और कर्कट के
८ अंग वे शुभ फल देने हैं ॥ ६१४ ॥

कुम्भम्यांशे च पट्टविंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ।

नृदुक्तासु कयोर्लग्नं शुभं सप्तदशांशके ॥ ६१५ ॥

टीका—कुम्भ के २६ अंग, तुला के २४, मिथुन के ७ और धनु के १० अंग
हैं इस प्रकार से जानिये ॥ ६१५ ॥

एकविंशतिमे भागे मेरव्याष्टादशे हरेः ।

सम्पूर्णफलदं चादौ मध्ये मध्यफलप्रदम् ॥ ६१६ ॥

टीका—मेर के २६ अंग, सिंह के २८ ऐसे लग्नों के आदि में, सम्पूर्ण और मध्य
फल अंश अनुसार जानिये ॥ ६१६ ॥

लग्नदर्शोत्तम-लक्षण—

अन्ते लुच्छफलं लग्नं यदि वर्गोत्तमं न चेत् ।

लग्नस्य स्वनवांशो यः स वर्गोत्तम उच्यते ॥ ६१७ ॥

टीका—लग्न के अन्त भाग में वर्गोत्तम न हो तो लग्न अतिष्ठ फल देना है
लग्न अपने नवांश में हो तो वर्गोत्तम कहिये ॥ ६१७ ॥

गोधूल लग्न का कथन—

गोधूलं पदजादिकं शुभकरं पञ्चाङ्गशुद्धा रे-

रर्वास्तात् परपूर्वतोऽर्धघटिकं तत्रेन्दुमष्टागिरम् ।

सोप्राङ्गं कुजमष्टमं गुरुयमाहभ्यातमर्ककर्म

जह्याद्विप्रमुग्धेति संकट इदं सद्योवनात् क्वचित् ॥ ६१८ ॥

टीका-शुद्धादिकों को पञ्चाङ्ग-शुद्ध देख करके सूर्य के अर्द्धास्त समय प्रथम पश्चात्
पक्षी गोधूलिका शुभ गोधूल लग्न से पष्ट और अष्टम स्थानोंमें चन्द्रमा और पाप ग्रह,
मि अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और संक्रान्ति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जित
र शुभ और किसी के मत में विवाहादिक के अतिकाल में वर और कन्या हो तो
रज शुभ होता है ॥ ६५२ ॥

वधूप्रवेश—

विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युरमेऽथवा षोडशवारान्तात् ।

तदूर्ध्वमध्ये युजि पञ्चमान्तादतः परतान्नियगो न चाम्नि ॥ ६५३ ॥

टीका-विवाह से सम १६ दिवस पर्यन्त वधूप्रवेश कहा । पञ्चमास में
पम मासादि कहे हैं, आगे रचेछा है ॥ ६५३ ॥

नीहारांशुयुत्तरादितियुस्मत्प्राप्तवाश्विनी-

शाक्रो भास्वरवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रे प्रयासं त्रियो ।

कुम्भाजालिगते रवौ शुभकरे प्राप्तोदये मार्गरे

जीवज्जारुजितां दिने नववधोऽस्मपदेनः शुभः ॥ ६५४ ॥

टीका-शुभ, तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी मृगशिरा अश्लेषा
मिनी, ध्रुवण, शततारका, चित्रा ये नक्षत्र और कुम्भा मकर मीन मेष म
र शुभ का उदय और गुरु शुभ शुभ से वार है ॥ ६५४ ॥

नूतन पञ्चाङ्गानुसारं

तादिपञ्चमगणपुष्यमृगशिरा चित्रा रोहिणी मृगशिरा अश्लेषा

गो शुभ प्रथमपञ्चमवारं शुभः ॥ ६५५ ॥

टीका-शुभ, तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी मृगशिरा अश्लेषा

मिनी, ध्रुवण, शततारका, चित्रा ये नक्षत्र और कुम्भा मकर मीन मेष म

गन्धर्वविवाह-मुहूर्त्त—

शूद्रान्त्येषु पुनर्भवापरिणयः प्रोक्तो विवाहोक्तभै-
र्नालोक्त्यं तिथिमासवेधशृगुजेज्यास्तादि तत्रार्कभात् ।

त्रिव्यर्क्षेषु मृतिर्धनं मृतिमृतो पुत्रामृतिर्दुर्भगं

श्रीरौनत्यमथो धृतीशकृततत्त्वर्क्षेज्ययः साभिजित् ॥ ६५६ ॥

टीका-शूद्रादि और रजक आदि और अन्य जाति जिनकी स्त्रियों का विवाह हो जाता है उनके लग्नाई का मुहूर्त्त विवाह नक्षत्र अथवा देवे । नात बार गुरु शुक्र इनके उदय अस्त का कुछ दोष नहीं है और सूर्य नक्षत्र से दित न्या गिने, क्रम से प्रथम ३ मरण, द्वितीय ३ धन, तृतीय ३ मरण, चतुर्थ ३ मरण, पञ्च ३ पुत्रप्राप्ति, षष्ठ ३ मरण, सप्तम ३ दुर्भगा, अष्टम ३ लक्ष्मी, नवम ३ औष्ठन और सूर्य नक्षत्र से अष्टारद्वय चौथे ग्यारद्वय पञ्चीसवें इन चारों नक्षत्रों में मृत्यु और नक्षत्र सब शुभ हैं ॥ ६५६ ॥

दूसरे मत के अनुसार—

इन्द्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयं वारुणं तथा ।

अश्विनीवसुदेवत्यं पट्टकाले शुभं स्मृतम् ॥ ६५७ ॥

टीका-ज्येष्ठा पुनर्वसु आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी ये नक्षत्र ॥ अर्थात् पुनर्विवाह धरेजा करने में शुभ जानिए ॥ ६५७ ॥

दत्तक पुत्र लेने का मुहूर्त्त—

हस्तादिपञ्चकभिर्गन्धसुपुण्यभेषु सूर्यर्जमाजगुरुभार्गववासरेषु ।

रिक्ताविवर्जिततिथावलिकुम्भलग्ने सिंहे वृषे भवति दत्तपण्डितोऽयम् ॥

टीका-हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य और रविवार मङ्गलवार गुरुवार शुक्रवार ये उक्त हैं और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी ये तिथि और वृश्चिक कुम्भ ये लग्न वर्जित हैं और सिंह वृष ये लग्न शुभ हैं ॥ ६५८ ॥

वर—कन्या गुणमेलापक चक्रम् ।

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
रा	मे	मे	मे	वृ	वृ	त्र	मि	मि	मि	क	न	न
भा	१	१	१	॥॥	१	॥	॥	१	॥॥	१	१	१
भा	न	न	न	कृ	कृ	सृ	सृ	आ	पु	पु	पु	पु
१	श्र	२८ ३	३३ ७	२७॥ ४	१८॥ ४	२१॥ ४	२०॥ ४	२६ ३	१७ ३	१८ ३	२०॥ ३	२०॥ ३
१	भ	३३ ३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ ४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२१॥ ३	२४॥ ०॥	२०॥ ३	२०॥ ३
१	कृ	२६॥ १	२८ ३	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	१६॥ १	१६॥ १	१८॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३
॥	कृ	१६ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥ ४	१७ ४	१७ १४	१७ ४	२० ४	२० ४
१	मे	२३॥ ४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२२ ४	२२ ४	२२ ४	२२ ४
॥	सृ	२३॥ ४	१४॥ ३४	१८॥ ४	२७॥ ३४	३४ ३	२८ ३	१८॥ २४	२२॥ ०४	२२॥ ४	२२॥ ४	२२॥ ४
॥	सृ	२६॥ ३	१७॥ ३	२१॥ ४+	१६ ४+	२६॥ ३४	१६॥ ३	२८ ०	२२ ०	१॥ ०	२२ ०	२२ ०
१	आ	१८॥ ३	२६॥ १	२१॥ १	१६ ४+	२४ ४	२४॥ ४	२८ ४	२८ ४	२८ ४	२८ ४	२८ ४
॥	पु	१८॥ ३	२४॥ ३	२१॥ ३	१६ ४+	२२ ४+	२२ ४+	२२ ४	२२ ४	२२ ४	२२ ४	२२ ४
१	पु	२१॥ ३	२८॥ ३	२४॥ ३	२१ ३	२४ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३
१	पु	२६॥ ३	२०॥ ३	२६॥ ३	२२ ३	२४ ३	२८ ३	२८ ३	२८ ३	२८ ३	२८ ३	२८ ३
१	आ	२४ १	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१६ ३	१६ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३	२२ ३
१	भ	१६ ४	१६ ४	१४॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४
१	पु	२४ ४	१७ ४	१६ ४	१० ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४
१	पु	१४॥ ३	२४ ४	२० ४	१० ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४
॥	पु	१६ ३	१६ ३	१६ ३	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४
१	पु	१६ ३	१६ ३	१६ ३	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४
॥	पु	१६ ३	१६ ३	१६ ३	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४	१०॥ ४

वर-ज्या गुरनेलापक चरन् ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85															

वर्	म.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
रा.	मे	मे	मे	मे	मे	मे	मे	मे	मे	मे	मे	मे
मा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
न.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.	पा.
१९	तु	॥	ने	२२	१५	२०	२३	१८	१८	१२	२०	१८
२०	तु	१	ने	२६	१५	२५	१७	१५	२५	२५	२५	२५
२१	तु	॥	वि	२१	२२	२०	१५	१०	१८	२०	२०	२०
२२	शु	१	मि	१६	१६	४॥	१६	१३	११	१२	१२	१२
२३	शु	१	अ	२३	१४	१८	२३	२०	१०	१५	१६	२५
२४	शु	१	ज्ये	१०	१०	२३	२५	२५	१२	२	४	६
२५	घ	१	सू	११	१६	२५	१६	१२	२१	१४	१२	१०
२६	घ	१	पू	२५	१०	१६	१४	१०	१६	१३	२	३६
२७	घ	१	उ.	२४	२५	११	६	१०	१६	२५	२०	२२
२८	म.	॥	उ.	२७	२८	१४	१२	१६	२२	१६	२४	२१
२९	म.	१	श्र	२८	२७	१४	१२	१७	२६	२३	१६	२१
३०	म	॥	ध	२०	११	२६	२३	११	२६	२६	१६	१४
३१	कुं.	॥	ध	१६	१०	१३	२५	१०	११	१८	१७	१२
३२	कुं.	१	श	१४	२०	२६	२१	२५	२०	१२	१२	६
३३	कुं.	॥	पू	१७	२४	१६	२४	३०	२३	१७	१७	११
३४	मी	१	पू	१४	२१	१६	१६	२५	२४	१७	१७	१७
३५	मी	१	उ	२३	१५	१८	२१	१८	१७	२५	२६	२६
३६	मी	१	रे	२५	२३	१०	१३	१७	२५	२४	२५	२६
३७	मी	१	न.	अ.	भ.	क.	क.	रौ.	सृ.	सृ.	आ.	पु.

वर्ग जानने का क्रम—

अकवटतपयशवर्गा अष्टौ ते क्रमतः स्मृताः ।

एकोनपञ्चाशद्वर्गाः स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ ६६६ ॥

अवर्गे षोडश ज्ञेयाः स्वराः कादिषु पञ्चसु ।

पञ्चपञ्चैव वर्गाः स्युर्यशौ तु चतुरक्षरौ ॥ ६६७ ॥

टीका—अवर्गादि शवर्ग पर्यन्त ४६ अक्षर हैं, उनमें अवर्ग के स्वर १६, और कवर्ग के पयन्त पांच पांच उनके अक्षर २५ और य श इन दोनों वर्गों के अक्षर चार होते हैं यह स्वरशास्त्र के ज्ञाता कहते हैं ॥ ६६६-६६७ ॥

वर्गों के स्वामी—

तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजशूकराः ।

वर्गेशाः क्रमतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पञ्चमो रिपुः ॥ ६६८ ॥

टीका—अवर्ग के स्वामी गच्छ १, कवर्ग का मार्जार २, चवर्ग का सिंह ३, टवर्ग का खग ४, तवर्ग का सर्प ५, पवर्ग का मूक ६, यवर्ग का गज ७, शवर्ग का शूकर ८, इन सभी वर्गों के स्वामी जानिये और जिस वर्ग का अक्षर अपने नाम का हो उसमें पञ्चम वर्ग का स्वामी उसका शत्रु, चोरा मित्र और तृतीय उदानोन जानिये ॥ ६६८ ॥

काविकीर्ति—

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ।

अष्टमिष्व हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥ ६६९ ॥

टीका—अपने नाम के वर्ग को द्विगुण करें, उसमें आधा हिस्सा का वर्ग निकालें १, ४ का भाग दें, पुन आधा हिस्सा का वर्ग द्विगुण कर उसमें नाम का वर्ग निकालें २, ४ का भाग दें, इन दोनों में से जितने अक्षरों में अक्षर हों वे ही ऋणी कहेंगे ॥ ६६९ ॥

चन्द्रमा से मुख जानने का क्रम—

वाह्मन्मैत्राज्ञगर्जस्थं चन्द्रे यान्योत्तमन्तरम् ।

पित्र्याद्रासवनस्तद्वत्प्रावर्गः स्याद्गुरुः सन्तः ॥ ६७० ॥

टीका—गुरु, शुक्र, सूर्य, चन्द्र इनको अपने उच्चादिक स्थानों में सूर्य, चन्द्र और गुरु इनका वन पाकर गृह का आरम्भ करना शुभ है ॥ ६४७ ॥

वर्ज्य—

विवाहोक्तान्महादोषाद्वते जामित्रशुद्धितः ।

रिक्ताकुजार्कवाराश्च चरलग्नं चरांशकम् ॥ ६४८ ॥

टीका—जामित्र शुद्धि बचाकर विवाह के जो दोष कहे हैं वे सब वर्जित हैं रिक्ता तिथि, भौमवार, रविवार, चरलग्न और लग्नों के अंश वर्जित हैं ॥ ६४८ ॥

त्यक्त्वा कुजार्कयोश्चांशं पृष्ठे चाग्रे स्थितं विधुम् ।

बुधेज्यराशिगं चार्कं कुर्याद् मेहं शुभाप्तये ॥ ६४९ ॥

टीका—रवि और भौम के अंश और पंछे वा आगे स्थित चन्द्र वर्जित हैं। कन्या, धन और मीन इन राशियों का सूर्य गृहआरम्भ में शुभ है ॥ ६४९ ॥

द्वारशुद्धि—

द्वारशुद्धि निरीक्ष्यादौ भूशुद्धिं वृषचक्रतः ।

निष्पञ्चके स्थिरे लग्ने द्यङ्गे वाऽलयमारभेत् ॥ ६५० ॥

टीका—प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्र से नक्षत्रशुद्धि देख कर पञ्चक वा द्विस्वभाव लग्न में गृह का कार्य आरम्भ कीजिये ॥ ६५० ॥

ग्राम अनुकूल —

स्वनामराशेर्यद्राशिर्द्विशराऽङ्केशदिङ्मितः ।

स ग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोऽन्यथा ॥ ६५१ ॥

टीका—अपनी राशि से २।५।६।११।१० जिस ग्राम की राशि हो वह शुभ और अन्यथा अशुभ जानिये ॥ ६५१ ॥

एकमे सप्तमे व्योमे गृहहानिस्त्रिषष्ठे ।

तुर्ग्याष्टद्वादशे रोगा शेषस्थाने भवेत्सुखम् ॥ ६५२ ॥

टीका—एक राशि अथवा सप्तम हो तो शून्य, तीसरी अथवा छठवीं हो तो गृह की हानि, चौथी या आठवीं बारहवीं हो तो रोगकारक जानिये और शेष स्थान शुभ है ॥ ६५२ ॥

वर्ग जानने का क्रम—

अकचटतपयशवर्गा अष्टौ ते क्रमतः स्मृताः ।
 एकोनपञ्चाशद्वर्णाः स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ ६६६ ॥
 अवर्गे षोडश ज्ञेयाः स्वराः कादिषु पञ्चसु ।
 पञ्चपञ्चैव वर्णाः स्युर्यशौ तु चतुरक्षरौ ॥ ६६७ ॥

का-अवर्गादि शवर्ग पर्यन्त ४६ अक्षर है, उनमें अवर्ग के स्वर १६, और कवर्ग
 पर्यन्त पांच पांच उनके अक्षर २५ और य श इन दोनों वर्गों के अक्षर चार
 होते हैं यह स्वरशास्त्र के ज्ञाता कहते हैं ॥ ६६६-६६७ ॥

वर्गों के स्वामी—

ताद्व्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजशूकराः ।
 वर्गेशाः क्रमतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पञ्चमो रिपुः ॥ ६६८ ॥

का-अवर्ग के स्वामी गण्ड १, कवर्ग का मार्जार २ चवर्ग का सिंह ३ टवर्ग का
 खवर्ग का सर्प ४, पवर्ग का मूषक ५, यवर्ग का गज ६, शवर्ग का शूकर ७
 वर्गों के स्वामी जानिये और जिस वर्ग का अक्षर अपने नाम का हो उसने पांच
 स्वामी उसका शत्रु, चोरा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये ॥ ६६८ ॥

कादिणी—

टीका—इतिहास से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का मुख उत्तर को और मकराया से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का मुख उत्तर को और मकराया से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का मुख पूर्व को और, घनिष्टा से ७ चन्द्रमा हो तो गृहों का पश्चिम को और मुख शुभ जानिये ॥६७७॥

आयादिसाधन—

गृहेशकरमानेन गृहस्याऽऽयादि साधयेत् ।

करश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलिनस्तथा ॥ ६७१ ॥

टीका—गृह स्वामी के हस्तमान से अथवा अंगुली मान से उक्त साधन करे ॥ ६७१ ॥

पिराडानयन—

एकोनितेऽर्जहतादितिव्यो रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ।

युक्ता घनैश्चापि युना विभक्ता भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिराडः ॥

टीका—इष्ट नक्षत्र में १ न्यून कर १५२ से गुणा करना । इष्ट आय में १ न्यून से गुणा करना । दोनों को जोड़ कर १७ और जोड़ना, योगफल में २१६ का देना, जो शेष रहे वही पिराड होता है । तन्वाई और चौड़ाई के गुण में जो शेष भाग देने से शेष पिराड होता है ॥ ६७२ ॥

उदाहरण—जैसे मूल नक्षत्र और सिंह आय है तो पिराड क्या होगा ?

इष्टनक्षत्र=१६—१=१५ । १५×१५२=२२८६

इष्ट आय=३—१=२ । २×१५=३०

अथ २२८६ + ३०=२३१६ ।

२३१६ ÷ २१६ यहां शेष १०५ पिराड हुआ ।

लाभव्ययादि साधन—

पिराडे नवाङ्काङ्गजाग्ननागानागाविधनागैर्गुणिता क्रमेण ।

विभाजिते नागानागाङ्काङ्गजाग्ननागैर्गुणिता क्रमेण ॥६७३॥

टीका-पिरड को ६ जगह रखकर क्रम से ६।६।६।८।३।८।८।४।८ इन
मन्त्रों से गुणा कर क्रम से ८।७।६।१०।८।२७।१४।२७।१२० ले भाग देना।
जो शेष बचै सो क्रम से आय, वार अंश द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और
आयु होता है ॥ ६:३ ॥

उदाहरण—

जैसे पिरड १०७ है तो—

१०७	१०७	१०७	१०७	१०७	१०७
६	६	६	८	३	८
८) ६६३ (७) ६६३ (६) ६६३ (१८) ८४६ (८) ३२१ (२७) ८४६ (
८	७	६३	८४	३२	८१
१६	२६	१२	१६	१ ऋण	४७
१६	२१	६	१०		२७
शेष देआय	४३	३ अश	४ द्रव्य		१६
	४६				नक्षत्र
	४=वार				

१०७	१०८	१०७
८	४	८
१५) ८४६ (२७) ४२८ (१२०) ८४६ (
७५	८७	८४०
१०६	१४८	१६ आय
१०५	१३५	
१ तिथि	२२ योग	

जिनमें आयु अधिक हो और द्रव्य ऋण से अधिक हो तो मृत पुनर्जन्म

टीका—शुक्रिका से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का मुख दक्षिण की अनुराधा से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का मुख उत्तर की, और मङ्गल नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का मुख पूर्व की ओर, धनिष्ठा से ७ नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो गृहों का पश्चिम की ओर मुख मुख जानिये ॥६७०॥

आयादिसाधन—

गृहेशकरमानेन गृहस्याऽऽयादि साधयेत् ।

करश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥ ६७१ ॥

टीका—गृह स्वामी के दत्तमान से अथवा अंगुली मान से इष्ट साधन करे ॥ ६७१ ॥

पिण्डानयन—

एकोनितेष्टर्जहतादितिथ्यो रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ।

युक्ता वनेश्चापि युता विभक्ता भूपाश्वभिः शेषमितो हि पिण्डः ॥६७२॥

टीका—इष्ट नक्षत्र में १ न्यून कर १५२ से गुणा करना । इष्ट आय में १ न्यून कर २१ से गुणा करना । दोनों को जोड़ कर १७ और जोड़ना, योगफल में २१६ का देना, जो शेष रहे वही पिण्ड होता है । लम्बाई और चौड़ाई के गुण में जो २१६ भाग देने से शेष पिण्ड होता है ॥ ६७२ ॥

उदाहरण—जैसे मूल नक्षत्र और सिंह आय है तो पिण्ड क्या होगा ?

इष्टनक्षत्र=१६—१=१५ । १५×१५२=२२८०

इष्ट आय=३—१=२ । २×२१=४२

अथ २२८० + ४२+१७=२३३९ ।

२३३९ ÷ २१६ यहां शेष १०७ पिण्ड हुआ ।

लामव्ययादि साधन—

पिण्डे नवाङ्गाङ्गजाग्निनागानागाब्धिनागैर्गुणिता क्रमेण ।
विभाजिते नागनगाङ्गसूर्यनागर्क्षतिथ्यर्क्षमानुभिश्च ॥६७३॥

टीका-पिण्ड को ६ जगह रखकर कम से ६।६।६।८।३।८।८।४।८ इन गड़ों से गुणा कर कम से ८।८।८।१८।८।२७।१४।२७।१०० से भाग देना जो शेष बचे सो कम से प्राय, वार प्रांश द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तित्थि, योग और आयु होता है ॥ ६३३ ॥

उदाहरण—

जैसे पिण्ड १०७ है तो—

१०७ ६	१०७ ६	१०७ ६	१०७ ८	१०७ ३	१०७ ८
८) ६६३ (७) ६६३ (६) ६६२ (१२) ८५६ (८) ३२१ (२७) ८५६ (
८	७	६३	८४	३२	८१
१६	२६	१२	१६	१ ऋण	४६
१६	२१	६	१२		२७
शेष ३आय	४३	३ अश	४ द्रव्य		१६
	४६				नक्षत्र
	४=वार				

१०७ ८	१०८ ४	१०७ ८
१५) ८५६ (२७) ४२८ (१२०) ८५६ (
७५	७७	८४०
१०६	१५८	१६ आयु
१०५	१३५	
१ तित्थि	२३ योग	

जिनमें आयु अधिक हो और द्रव्य ऋण से अधिक हो तो गृह शुभ होता है।

क्षेत्रफल—

विस्तारगुणितं दैव्यं गृहक्षेत्रफलं भवेत् ।

तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायोध्वजादिकः ॥ ६७४ ॥

टीका—ध्वज आदि साधन का प्रकार—चौड़ाई, लम्बाई प्रथवा लम्बाई, चौड़ाई तो आपस में गुणने से क्षेत्रफल जानिये और उसी में आठ का भाग देने से जो शेष बचे उसे ध्वज आदि आय जानिये ॥ ६७४ ॥

आय के नाम—

ध्वजो धूम्रोऽथ सिंहः श्वा सौरभेयः खरो गजः ।

ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥ ६७५ ॥

टीका—ध्वजा १, धूम्र २, सिंह ३, श्वान ४, घेल ५, गर्वभ ६, हस्ती ७
काक ८ इस क्रम से आया एक जानिये ॥ ६७५ ॥

वर्णानुसार उक्त आय—

ब्राह्मणस्य ध्वजो ज्ञेयः सिंहो वै क्षत्रियस्य च ।

वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥ ६७६ ॥

टीका—ब्राह्मण को ध्वजा आय, क्षत्रिय को सिंह, वैश्य को वृषभ और सर्व
को गज आय कहे गये हैं ॥ ६७६ ॥

मतान्तर से आयों का फल—

ध्वजे कृतार्थो मरणं च धूम्रे सिंहे जगश्चाथ शुनि प्रकोपः ।

वृषे च राज्यं च खरे च दुःखं ध्वांते मृतिश्चैव गजे सुखं स्यात् ॥ ६७७ ॥

टीका—ध्वज आय का फल कृतार्थ, धूम्र आय का मरण, सिंह आय का जग, श्वान आय का कोप, वृष आय का राज्य, खर आय का दुःख, ध्वांत आय का मृति और गज आय का सुख प्राप्ति फल होता है ॥ ६७७ ॥

नक्षत्र के अनुसार व्ययसाधन—

पूर्वद्वारे वृषः श्रेयान् गजः प्राग्यमदिङ्मुखः ।

क्षेत्रमष्टाहतं धिष्ण्यविभक्तं स्याद् गृहस्य भम् ॥

भेष्टभक्ते व्ययः शेषमायादल्पो व्ययः शुभः ॥ ६७८ ॥

टीका—पूर्वाभिमुख गृहों का वृषाय और गजाय श्रेयस्कर होता है और पूर्व दक्षिण
भिमुख गृहों का गजाय श्रेष्ठ कहा है । पूर्व में क्षेत्रफल को आठ से गुणा करें और
का भाग दें, जो शेष बचे सो घर के नक्षत्र जाने, उन नक्षत्रों में ८ का भाग दें, जो शेष
सो उस गृह का व्यय होता है और आय की अपेक्षा व्यय अल्प हो तो शुभ है ॥ ६७८ ॥

गृहों की राशि—

अश्विन्यादित्रयो मेघो मघादित्रितयो हरिः ।

मृलादित्रितयो धन्वी भद्रयं शेषराशिषु ॥ ६७९ ॥

टीका-गृहों के अश्विनी, भरणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों की राशि में १ रोहणी और मृगशिरा की चतु २, आर्द्रा पुनर्वसु की मिथुन ३, पुष्य, आश्लेषा की कर्क ४, और मघा पूर्वा और उत्तरा की सिंह ५, हस्त और चित्रा की कन्या ६, स्वाती और विशाखा की तुला ७, और अनुराधा ज्येष्ठा की वृश्चिक ८, मूल पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा की धनु ९, श्रवण और धनिष्ठा को मकर १०, और शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा की कुम्भ ११, उत्तराभाद्रपदा तथा रेवती की मीन १२, इस क्रम से राशि जानिये ॥ ६७६ ॥

गृहों के नाम लाने का प्रकार—

गृहस्य पूर्वतो दिक्षु क्रमात्कक्ष्यब्धिदन्तिनः ।

संस्थाप्याऽलिन्दजानङ्गान् सैर्कास्तान् षोडश गृहाः ॥ ६८० ॥

टीका-गृहों के पूर्वादशा के क्रम से अङ्क स्थापित करें, वे ऐसे-पूर्व को १, दक्षिण को २, पश्चिम को ३, और उत्तर को ४ ऐसे चारों दिशा के अङ्क में साल की नक्षत्राधिक करके मिलावे, जो अङ्क हो वही गृह का नाम जानिये ॥ ६८० ॥

गृहों के नाम—

ध्रुवं धान्यं जयं नन्दं खरं कान्त मनोरमम् ।

सुमुखं दुर्मुखं क्रूरं रिपुदं धनदं ज्ञयम् ॥ ६८१ ॥

आक्रन्द विपुल ज्ञेय विजय चेति षोडश ।

गृहं ध्रुवादिक ज्ञेय नामतुल्यफलप्रदम् ॥ ६८२ ॥

टीका-और इन गृहों के ध्रुव, धान्य और जय इत्यादिन से सत्तार नाम के नामों का शुभ फल नामानुसार जानिये ॥ ६८१-६८२ ॥

गृह लाने का प्रकार—

व्ययेन सद्यते जेत्रे गृहनाकाङ्गान्तिनः ।

त्रिभिर्भक्तांगकान्तेषां त्रिभिर्नामा न गोचरे ॥ ६८३ ॥

टीका—घोड़े का जाइय हो उसे छे नहय में भिनाये और गुरों के लक्षर संयुक्त करके बीच का भाग छे, और यदि दो बने तो मध्य को एक पूर्ण भाग लग जाने में शुभ का होना है ॥ ६८३ ॥

गृहों का भाग—

नवभागं गृहं कुर्यात्पञ्चभागं तु दक्षिणं ।

त्रिभागं वामतः कुर्याच्छेष द्वारं प्रकल्पयेत् ॥ ६८४ ॥

टीका—गृहको चारों नव भाग कर उसमें से, पांच भाग दक्षिण को, तीन भाग को और एक भाग मध्य में रखे, और उसमें से द्वार कल्पना करे ॥ ६८४ ॥

दक्षिण भाग जानने का प्रकार—

दक्षिणाङ्गः स वै प्रोक्तो मन्दिरान्निरमृते सति ॥ ६८५ ॥

टीका—घर से बाहर निकलने के समय दक्षिण तरफ जो भाग हो वह दक्षिण तथा वाम तरफ भाग हो वह वाम होता है ॥ ६८५ ॥

गृहों के द्वार—

द्वारस्योपरि यद्द्वारं द्वारस्यान्यच्च सम्मुखम् ।

व्ययदं तु यदा तच्च न कर्तव्यं शुभेषुभिः ॥ ६८६ ॥

टीका—द्वार के ऊपर का द्वार और सामने सामने के द्वार व्ययदायक होते हैं। शुभाभिलाषी पुरुषों को ऐसे द्वार वर्जने चाहिये ॥ ६८६ ॥

गृहों के स्थानों की योजना का प्रकार—

स्नानागारं दिशि प्राच्यामाग्नेय्यां पाचनालयम् ।

याम्यायां शयनागारं नैऋत्यां शस्त्रमन्दिरम् ॥ ६८७ ॥

प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यां पशुमन्दिरम् ।

भास्वकोशं चोत्तरस्यामीशान्यां देवमन्दिरम् ॥ ६८८ ॥

टीका-पूर्व में स्नान का घर १, अग्निकोण में रसोई का स्थान २, दक्षिण में सोने
स्थान ३, नैऋत्य में शस्त्रालय ४, पश्चिम में भोजन का स्थान ५, वायव्य में पशु-
दर ६, उत्तर में भण्डारकोश ७, ईशान्य में देवमन्दिर ८, इस प्रकार से स्थानों
योजना करावै ॥ ६८७-६८८ ॥

अल्पदोष—

अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषाय स भवेद्गृहम् ।

आयव्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं भं च वर्जयेत् ॥ ६८९ ॥

टीका-जिस गृह में दोष तो अल्प हों परन्तु वह बहुत गुणों करके श्रेष्ठ हो तो
नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध हो तो त्याग करके वर्जित करे ॥ ६८९ ॥

गृहारम्भचक्र—

आरम्भे वृषभं चक्रं स्तम्भे ज्ञेयं तु कूर्मकम् ।

प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तुचक्रं दुर्घैः शुभम् ॥ ६९० ॥

टीका-गृहारम्भ में वृषभचक्र, स्तम्भस्थापन में कूर्मचक्र और गृहप्रवेश में कलश
देख लीजिये ॥ ६९० ॥

गृहारम्भ के मास—

पौषफाल्गुनवैशाखभाद्रपदावर्गवर्तिकाः ।

मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥ ६९१ ॥

टीका-पौष १, फाल्गुन २, वैशाख ३, भाद्रपद ४, मास ५, इन मासों में गृहारम्भ, शिलास्थापन और स्तम्भप्रतिष्ठा काम करिये पुत्र, अरोग्य, धन
प्रेमता, आयु की वृद्धि और मन की प्राप्ति होती । ॥ ६९१ ॥

दिशानुसार गृहों का मृत्त करना—

कर्कनक्रहरिक्रमगतैर्ज्यैः पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि ।

तोत्तिमेपवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरमुखानि वदन्ति ॥ ६१३ ॥

टीका—कर्क, मकर, सिंह और कुम्भ इन राशियों का सूर्य हो तो घर का द्वार पूर्व
अथवा पश्चिम को करे और तुला, मेष और वृश्चिक इन राशियों का सूर्य हो तो गृह
द्वार दक्षिण अथवा उत्तर को करे । इस प्रकार रत्नमाला ग्रन्थ में कहा है ॥ ६१३ ॥

गृहारम्भ के नक्षत्र—

व्युत्तराष्टगरोहिण्यां पुष्यभैत्रकरत्रये ।

धनिष्ठादितये पौष्णे गृहारम्भः प्रशस्यते ॥ ६१४ ॥

आदित्यभौमवर्ज्यं तु सर्वे वराः शुभावहाः ।

चन्द्रादित्यवलं लब्ध्वा लग्ने शुभनिरोक्षिते ॥ ६१५ ॥

स्तम्भोच्छ्रायस्तु कर्ताव्यो ह्यन्यतु परिवर्जयेत् ।

प्रासादेष्वेवमेवं स्यात्कूपवापीषु चैव हि ॥ ६१६ ॥

टीका—तीनों उत्तरा, मृग, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा,
मिथुन और रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं और रवि और भौम चार छोड़कर शेष चार शुभ
हैं । स्थिर लग्न में शुभग्रह को दृष्टि देंगे तब स्तम्भारोपण करावे, अन्य कर्मों को
नहीं है । शिवालय कूप तड़ाग वापी इन एत्यों को शुभ जानिये ॥ ६१४-६१६ ॥

वृषचक्र—

त्रिंशद्वाविधत्रिवेदाविधद्वित्रिभेष्वर्कतः शशी ।

कुय, गच्छिन्मी समुद्रासं स्थैर्यं लक्ष्मीं दरिद्रताम् ॥ ६१७ ॥

धनं हेतुान् गनिः क्रमान्मृत्युमारम्भे वृषचक्रकम् ।

टीका—सूर्य-नक्षत्र से दिवस-नक्षत्र तक जितने नक्षत्र हों उनमें प्रथम भाग ३
तब लक्ष्मीदायक, दूसरा भाग ४ उद्वासवायक, तृतीय भाग ४ स्थिरताकारक, चतुर्थ
भाग ३ लक्ष्मी, पञ्चम भाग ४ दरिद्रता, षष्ठ भाग ३ धनदायक, सप्तम भाग २ नक्षत्र
कारक, अष्टम ३ नक्षत्रकारक, नवम ३ मृत्यु । इस क्रम से जिस दिन का नक्षत्र शुभफल दायक
होई उसी में गृहारम्भ करावे ॥ ६१७ ॥

अथ मासप्रवेशसारणीयम् ।

[illegible]

दुष्टयोग—

वज्रव्याघातशूलाश्च व्यतीपातश्च गरुडकः ॥

विष्कुम्भपरिघौ वज्र्यौ वारौ मङ्गलभास्करौ ॥ ७०१ ॥

टीका—वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गरुड विष्कुम्भ परिघ और भीम रविवार ये हैं ॥ ७०१ ॥

कर्मचक्र—

तिथिस्तु पञ्चगुणिता कृत्तिकाद्यृक्षसंयुता ।

तथा द्वादशमिश्रा च नवभागेन भाजिता ॥ ७०२ ॥

फल—

जले वेदा मुनिश्चन्द्रः स्थले पञ्च द्वयं वसुः ।

त्रिषट्कनव चाकाशे त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥ ७०३ ॥

जले लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च ।

आकाशे मरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥ ७०४ ॥

टीका—गृहारम्भ की तिथियों का पाँच से गुणा करे और कृत्तिका नक्षत्र ने दिवस नक्षत्र तक की नक्षत्र सख्या को उस गुणनफल में मिलावै फिर १२ और १ मिलावै नव का भाग दे जो ४ । ७ । १ शेष रहे तो कूर्म जलरथान से जानिए । फल लाभ और ५ । २ । ८ वचे तो कूर्म स्थल जानिए तिसका फल हानि । ६ । ६ वचें तो कूर्म आकाश में जानिए तिसका फल मरण ये तीनों प्रकार कर्म कहा है ॥ ७०२-७०४ ॥

स्तम्भचक्र—

सूर्याधिष्ठितभद्रयं प्रथमतो मध्ये तथा विशतिः

स्तम्भाग्रं रससंख्यया मुनिवरैरुक्तं सुहृत् शुभम् ।

फल—

स्तम्भाग्रं मरणं भवेद्गृहपतेर्मृते धनार्थज्ञयो

मध्ये चैव तु सर्वसौख्यमनुलं प्राप्नोति कर्त्ता तदा ॥ ७०५ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यन्त स्वस्मान्त देहने का २२ नक्षत्र स्वस्म मूल निवृत्ता फल नक्षत्र और द्वितीय २० नक्षत्र स्वस्म का फल लक्ष्मी और कीर्तिप्राप्ति और तृतीय ६ नक्षत्र स्वस्म का स्वस्म फल मृत्यु जानिष देहे शुभ फल देह के स्वस्मारोपण कराये ॥ ७०४ ॥

देहर्ता का गृहर्त—

मृते भौमे (?) त्रिभुजं गृहपतिमराणं पञ्च गर्भं सुखं
 मध्ये देयाष्टभुजं धनमुनसुखदं पुच्छदेशेऽष्टहानि ।
 पश्चान्तेयं त्रिभुजं गृहपतिमुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं
 सूर्यर्त्ताचिन्द्रभुजं प्रतिदिनगणयेद्योगचक्रं विलोम्य ॥७०५॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक की नक्षत्र संख्या और फल देहे से जाने । प्रथम तीन नक्षत्र मूल में निवर्त स्वस्मारोपण करे तो मृत्यु, नक्षत्र गर्भ में फल सुख, तीसरे ८ नक्षत्र मध्य में फल धन मुन सुख, चतुर्थ ६ पुच्छ भाग में फल मित्रदानि, पश्चिम ३ अग्र भाग में फल भोग पुत्रताम फल है ॥ ७०६ ॥

द्वारचक्र—

अर्कचत्वारि ऋक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ।
 द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्दे शाखायां च चतुश्चतुः ॥ ७०७ ॥
 अधश्चत्वारि देयानि मध्ये त्रीणि प्रदापयेत् ।
 ऊर्ध्वे तु लभते राज्यमुद्रासं कोणकेषु च ॥ ७०८ ॥
 शाखायां लभते लक्ष्मां मध्ये राज्यप्रदं तथा ।
 अधःस्थे मराणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥ ७०९ ॥

टीका—सूर्य-नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यन्त लिखने का क्रम—तिसमें प्रथम ४ ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वार कोण चार २ तिनमें प्रतिकोण में २ नक्षत्र फल उद्धारन, बीच की दो शाखाओं में नक्षत्र चारि तिनका फल लक्ष्मी और नक्षत्र ४ तिनका फल मरण, मध्य में ३ नक्षत्र तिनका फल राज्य यह जानिष ॥ ७०९ ॥

१५ - १९५७

[illegible]

हेतुना ना मर्न—

मृते भौमे (?) त्रिकृत्तं गृह्णन्मिरगां पञ्च गर्भे सुखं स्या-
न्मध्ये देयाष्टकृत्तं धनसुखसुखदं पुच्छद्देशेऽष्टहानिः ।

पश्चात्तेयं त्रिकृत्तं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं

सूर्यज्ञानिन्द्रज्ञानं प्रतिदिनगणयेद्योगचक्रं विलोक्य ॥७०६॥

शीतल-गुरु नक्षत्रने दिवस नक्षत्र तक ही नक्षत्र संख्या और फल ऐसे क
 से जाने । प्रथम तीन नक्षत्र मूल में निचम स्वभावोपपन्न हों तो मृत्यु, द्वितीय
 नक्षत्र गर्भ में फल सुख, तीसरे नक्षत्र मध्य में फल भय गुण गुण, चतुर्थ नक्षत्र
 पुच्छ भाग में फल मित्रहानि, पञ्चम ३ अग्र भाग में फल भोग पुत्रलाभ ऐसे शु
 फल हैं ॥ ७०६ ॥

क्षारचक्र—

अर्कचत्वारि ऋक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ।

द्वौ द्वौ कोणेऽपु दद्याद्वै शाखायां च चतुश्चतुः ॥ ७०७ ॥

अथश्चत्वारि देयानि मध्ये त्रीणि प्रदापयेत् ।

अथै तु तमते राज्यमुद्रासं कोणकेषु च ॥ ७०८ ॥

शाखायां लभते लक्ष्मां मध्ये राज्यप्रदं तथा ।

अधःस्थे मरणं प्रोक्तं द्वाश्चक्रं प्रकीर्तितम् ॥ ७०६ ॥

टीका—सूर्य-नक्षत्र से दिवस गणत्र पर्यन्त लिखने का क्रम--तिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वार कोण चार २ तिनमें प्रतिकोण में २ नक्षत्र तिनका फल उद्घासन, बीच की दो शाखाओं में नक्षत्र चारि तिनका फल लक्ष्मी और नीचे नक्षत्र ४ तिनका फल मरण, मध्य में ३ नक्षत्र तिनका फल राज्य यह ज्ञानिप॥५०५-५०६

शान्ति का अग्निचक्र—

सैका तिथिवारियुता कृताप्ता शेषे गुणोऽथ सुवि वह्निवामः ।

सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥७१०॥

टीका—जिस तिथि को शान्ति साहुति करनी हो तिस में एक मिलावे और जो बार हो सो अङ्क मिलावे ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल, तीन अथवा शून्य बचै तो अग्नि मृत्युलोक में जानिए तिसका फल सुख प्राप्ति और उसमें शान्ति करना भी शुभ है और एक शेष रहे तो स्वर्ग में अग्नि तिसका फल प्राणनाश और दो बचै तो पाताल से तिसका फल धन नाश जानिए ॥ ७१० ॥

ग्रह के सुख में आहुति का विचार—

तरणिविद्वद्गुभास्करचन्द्रमाकुजसुरेज्यविधुनुदकेतवः ।

रविमतो दिनभं गणयेत्क्रमाप्रतिस्रगं त्रितयं त्रितयं न्यसेत् ॥७११॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक जितने नक्षत्र हो तिनका इस क्रम से फल जानिए । प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य के फल अशुभ, द्वितीय भाग ३ बुध के फल शुभ, तृतीय भाग उन शुक के फल शुभ, फिर ३ शनि के फल अशुभ, फिर ३ चन्द्र के फिर ३ भौम के फिर ३ गुरु के तिस पीछे ३ राहु के फिर ३ केतु के इस में शुभ ग्रह के शुभ, पाप ग्रह के अशुभ जानिए ॥ ७११ ॥

गृहप्रवेश का सुहर्त्त—

अथ प्रवेशे नवमन्दिरस्य यात्रानिवृत्तावथ भूपतीनाम् ।

सौम्यायने पूर्वदिने विधेयं वास्त्वर्चनं भूतबलिश्च सम्यक् ॥ ७१२ ॥

टीका—नवीन गृह के प्रवेश के और राजा के यात्रा निवृत्त होने के बाद दुर्ग में प्रवेश के सुहर्त्त में उत्तरायण सूर्य हो और प्रवेश के प्रथम दिवस में वास्तुपूजा और भूतबलि करके प्रवेश योग्य है ॥ ७१२ ॥

चित्रानुराधासृगपौष्णपुष्यस्वातीध्रुविष्ठाश्रवण च गृहम् ।

वारेण्यसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः ॥ ७१३ ॥

टीका—चित्रा अनुराधा रेवती पुष्य स्वाती धनिष्ठा प्रवश नक्षत्र नक्षत्र में रवि भौम ये बार तथा रिक्ता तिथि को त्याग दे गृह प्रवेश करिए । ७१३ ।

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यन्त स्नानत्रय के देगने का क्रम—प्रथम दो नक्षत्र स्नान मूल तिथिका फल धनपुत्र और द्वितीय २० नक्षत्र स्नान का मध्य तिथि का फल लक्ष्मी और तृतीय ४ नक्षत्र स्नान का अग्रभाग तिथिका फल मृत्यु जानिष ऐसे शुभ फल ऐसे दो स्नानारोपण करावे ॥ ७०४ ॥

देहर्ता का गृह्य—

मृते भौमे (?) त्रिकृत्तं गृहपतिमरणां पञ्च गर्भे सुखं स्या-
न्मध्ये देयाष्टकृत्तं धनसुनसुखदं पुच्छदेशेऽष्टद्वानिः ।
पश्चात्तेयं त्रिकृत्तं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं
सूर्यर्जाचित्रकृत्तं प्रतिदिनगणयेद्योगचक्रं विलोक्य ॥ ७०६ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक की नक्षत्र संख्या और फल ऐसे क्रम जाने । प्रथम तीन नक्षत्र मृत में निधन स्नानारोपण करे तो मृत्यु, द्वितीय ४ नक्षत्र गर्भ में फल सुख, तीसरे ८ नक्षत्र मध्य में फल धन सुन सुख, चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छ भाग में फल मित्रद्वानि, पञ्चम ३ अग्र भाग में फल भोग पुत्रनाम ऐसे शुभ फल हैं ॥ ७०६ ॥

द्वारचक्र—

यर्काचत्वारि ऋक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ।
द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्रे शाखायां च चतुश्चतुः ॥ ७०७ ॥
वश्चत्वारि देयानि मध्ये त्रीणि प्रदापयेत् ।
र्ध्वे तु लभते राज्यमुद्रासं कोणकेषु च ॥ ७०८ ॥
। १५ थां लभते लक्ष्मां मध्ये राज्यप्रदं तथा ।
अधःस्थे मरणां प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥ ७०९ ॥

टीका—सूर्य-नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यन्त निधन का क्रम—तिनमें प्रथम ४ नक्षत्र तिन्का फल राज्यप्राप्ति, द्वार कोण चार, २ तिन्में प्रतिकोण में २ नक्षत्र तिन्का उद्घासन, बीच की दो शाखाओं में नक्षत्र चारि तिन्का फल लक्ष्मी और नीचे ४ तिन्का फल मरण, मध्य में ३ नक्षत्र तिन्का फल राज्य यह जानिष ॥ ७०७-७०९ ॥

1

शुभ-लगत विषे २।१।४।७।९०।५।६। रधानो मे क्षीणचन्द्र स्थित हो तो शुभ है और स्वराशि का शत्रु नवांशक में हो तो भी अशुभ जीव जन्म हुआ पर पञ्चमी से होता हे ॥ ७६८ ॥

टीका—लगन में वृद्धरूपति ४ शुक्र ४ बुध १०० वर्ष की आयु का होता है।
ने से उस वृद्ध की १०० वर्ष की आयु निश्चय कर ली जाती है।

टीका-शुद्ध प्रौढ १० दशमरसानी ११ रसि ।
न में शुद्धरसम कराये ता २०० वर्ष की आयु ।

ਸੰਧੀ-ਪੁਰ ਪੁਰਾਣਾ ੨੨੨ ਪੰਨਾ ੧੧੧
ਪੰ ੧੧੧ ਪੰਨਾ ੧੧੧ ੧੧੧ ੧੧੧

मौलाना अबुल क़ादिर खान

7167-100

1944-1945

कलशानक—

प्रवेशः कलशेऽर्कजातिपन्ननागाष्टपट् क्रमात् ।

अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ॥ ७१४ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक जो नक्षत्र हो उस में प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और छठ नक्षत्र शुभ, आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष शुभ ऐसे काशनाक में जानिए ॥ ७१४ ॥

वामार्क का लक्षण—

रन्ध्रात्पुत्राद्धनादायात् पञ्चस्वर्के स्थिते क्रमात् ।

पूर्वाशादिमुखं गेहं विशेषदामो भवेदतः ॥ ७१५ ॥

टीका—घर में प्रवेश करने के समय सूर्य वामार्क हो तिसको जानने का क्रम—प्रवेश लग्नों में अष्टम स्थान में पञ्चम स्थानी सूर्य हो और घर का द्वार पूर्व तथा दक्षिण की ओर को हो तिसका स्थान ८ या ५ से पञ्चम स्थान पर्यन्त और घर का मुख पश्चिम को हो २ स्थान से पञ्चम स्थान पर्यन्त ३ अथवा गृहों का मुख उत्तर को हो तो सूर्य ११ स्थान से ५ स्थानों तक आवे तो प्रवेश में वामार्क होते हैं ॥ ७१५ ॥

शुभाशुभ ग्रह और लग्न—

त्रिकोणकेन्द्रगैः शुभैस्त्रिषष्ठलाभसंस्थितैः ।

असद्ग्रहैः स्थिरोदये गृहं विशेषद्वले विधौ ॥ ७१६ ॥

टीका—त्रिकोण और केन्द्र स्थान में शुभग्रह हो ऐसे स्थिर लग्न देख के जो दूसरे छूटे तथा लाभ स्थान में पापग्रह हो तो वही चन्द्रमा में गृह प्रवेश का शुभ जानिए ॥ ७१६ ॥

त्रिषडायगतैः पापैरष्टान्त्येतरगैः शुभैः ।

चन्द्रे लग्नेऽरिभ्रान्त्यवर्जिते स्याच्छुभं गृहम् ॥ ७१७ ॥

टीका—३ । ६ । ११ स्थान में पापग्रह शुभ और ६ । ८ । १२ स्थान में वा इत स्थान में शुभग्रह हो तो शुभ जानिये परन्तु चन्द्रमा लग्न तथा पष्ठ द्वादश स्थान में न हों ॥ ७१७ ॥

मापाटीकासमेतः ।

अशुभ योगी के फल—

धनकेन्द्रत्रिकोणस्थः क्षीणचन्द्रो न शोभनः ।

शत्रोर्नवांशगः खेटः स्वास्तसंस्थोऽपि नो शुभः ॥ ७१८ ॥

टीका—लग्न घिरे २।६।४।७।१०।१।६। स्थानों में क्षीणचन्द्र स्थित हो तो ७०° और स्वर्राशि का शत्रु नवांशक में हो तो भी अशुभ क्षीण चन्द्र हुआ पत्र पत्रों में होता है ॥ ७१८ ॥

आयुष्य-प्रमाण—

लग्ने जीवः सुखे शुक्रो बुधः कर्मसंयोगे रविः ।

रविजः सहजे नृन शतायुः स्यात्तदा गृहम् ॥ ७१९ ॥

टीका—लग्न में बुधरवि ४ शुक्र ४ बुध १०० वर्ष की आयु देता है । रवि १०० वर्ष की आयु देता है ।

दशम प्रमाण

भृगुर्लग्ने बुधो व्योम्नि त्वासेर्ज्यः ।

वयस्यसमञ्चं वयस्यार्द्धत्वमाणा ॥ ७२० ॥

टीका—लग्न में बुध १०० वर्ष की आयु देता है । व्योम्नि १०० वर्ष की आयु देता है ।

जीवो नद्यो भूयः शोभिः ।

प्राग्भूयः पश्चात् ।

टीका—जीवो नद्यो भूयः शोभिः प्राग्भूयः पश्चात् ।

जीवो नद्यो भूयः शोभिः प्राग्भूयः पश्चात् ।

जीवो नद्यो भूयः शोभिः प्राग्भूयः पश्चात् ।

जीवो नद्यो भूयः शोभिः प्राग्भूयः पश्चात् ।

स्वर्गं हिमगो लाभे नुग्ज्ये केन्द्रमंस्थिते ।

वनधान्यसुतारोव्ययुक्तं घासं चिरं भवेत् ॥ ७२३ ॥

टीका—यदि का चन्द्र ११ मघान में होत हुन तब ३।४।७।१०। में हो का घट वृद्ध घनयुक्त और सुत आरोव्य मन्थित चिरमान रहे ॥ ७२३ ॥

कुलं मत से पृथ्वी गोधने का प्रधान—

कुलार्थपृथ्वीपरिशोधहन्तवे प्रष्टुमुत्ताद्यः प्रथमं मृदा भवेत् ।

वर्गादिवर्णाः किल तद्विधिं स्मृतं गत्यं मुनीन्द्रैर्हपयास्तु मय्यमाः ७२४

स्मृत्येष्टदेवता प्रष्टुर्वचनम्याद्यमजरम् ।

गृहीत्वा तु ततः गत्यागत्यं मन्यन्विचारयेत् ॥ ७२५ ॥

टीका—कुल के निमित्त अर्थानुवृत्त वृत्त के प्रकार का प्रथम भूमि गोधने का प्रधान—पृथ्वी पर देवता को समस्त करने आत्मन के प्रथम करे । उसके मुख से आदि अजर जिस वर्ण का निकले उसने उक्त अर्थ का वचन पश्य वर्ण पृथ्वी अष्ट दिशाओं में मय्य मागो द प य वर्णों के अर्थ उक्त होत स्थान में अनुक्त शब्द है जिसका प्रसार नीचे लिखा है जिससे उन २ स्थानों का ज्ञान जानिरे ॥ ७२४-७२५ ॥

अथ प्रश्नाजर-फलम् ।

पृथ्वी—

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नग्नत्वं तदा भवेत् ।

सार्वहस्तप्रमाणेन तत्र मातुपनृत्तुक्तम् ॥ ७२६ ॥

आग्नेय—

आग्नेयां दिशि कः प्रश्ने खरगत्यं करद्वये ।

राजदराडो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्तते ॥ ७२७ ॥

दक्षिण—

याम्यायां दिशि चः प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम् ।

नग्नत्वं गृहे तस्य मरणां चिरोगतः ॥ ७२८ ॥

नैऋत्य—

नैऋत्यां दिशि टः प्रश्ने सार्धहस्तादधःस्थले ।

शुनोऽस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥ ७२६ ॥

पश्चिम—

तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ।

साङ्गहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ ७२७ ॥

वायव्य—

वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्चतुष्करः ।

कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं सदा ॥ ७२८ ॥

उत्तर—

उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः ।

तच्छीघ्रं निर्धनत्वाय कुबेरसदृशस्य च ॥ ७२९ ॥

ईशान—

ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं माल्दहस्तः ।

तद्गोधनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ ७३० ॥

सायभाषा—

नैर्ऋत्य—

नैर्ऋत्यां दिशि ढः प्रश्ने सार्धहस्तादधःस्थले ।

शुनोर्जस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥ ७२१ ॥

पश्चिम—

तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ।

सार्द्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ ७३० ॥

वायव्य—

वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्वतुष्करः ।

कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं सदा ॥ ७३१ ॥

उत्तर—

उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्य करादधः ।

तच्छीघ्रं निर्धनत्वाय कुवेरसदृशाय च ॥ ७३२ ॥

ईशान—

ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्तनः ।

तद्गोधनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ ७३३ ॥

मध्यभाग—

हृपया मध्यकोष्ठे च वक्षोमात्रं भवेदधः ।

नृकपालमथो भस्म लोहं तत्कुलनागकृन् ॥ ७३४ ॥

टीका—पृच्छा के मुख से आदि अक्षर (अ) मार्ग का निकलने का पूर्व का देह का
हवा खोदे तो मनुष्य की हड्डी निकले यह सत्यवाक्य जाति १। (अ) निम्न भाग
दाप के गहराव में गहरे की अरिष निकले उसके राजा का दाप का निम्न भाग
१२। (च) अक्षर का उच्चारण हो तो दक्षिण की ओर इति उत्तर होकर देह का
स्थि निकले तिसका फल चित्काट के रोग से मरने २। (उ) का उच्चारण हो तो दक्षिण
तप दिशा में देह दाप गहरा खोदने से पूर्व की अरिष निकले इसका फल राजा का
जीवे धा(त) का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशा में देह दाप गहराव में दाप का अरिष
निकले तिसका फल गृह का स्वामी का दाप से मरने ३। (द) का उच्चारण हो तो

स्वर्जगे हिमगो लाभे सुरेज्ये केन्द्रसंस्थिते ।

धनधान्यसुनारोग्ययुक्तं धाम चिरं भवेत् ॥ ७२३ ॥

टीका—कर्क का नक्षत्र ६१ स्थान में और गुरु केन्द्र ६।४।७।१०। में हो ता
घन गृह धनयुक्त और सुख आरोग्य मर्तिन विष्णु कहते हैं ॥ ७२३ ॥

दूसरे मत से पृथ्वी शोधने का प्रकार—

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुमुखाद्यः प्रथमं स्फुटो भवेत् ।

वर्गादिवर्णः किल तद्विशि स्मृतं शल्यं मुनीन्द्रेर्हपयाम्नु मध्यमाः ७२४

स्मृतेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ।

गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यं सम्यग्विचारयेत् ॥ ७२५ ॥

टीका—कुण्ड के निमित्त अर्थात् नूतन गृह के बनाने का प्रथम भूमि शोधने का
प्रकार—पृच्छुक षष्ठ देवता को स्मरण करके ब्राह्मण से प्रश्न करे । उसके मुख से आदि
अक्षर जिस वर्ण का निकले उसके उच्चार अ क च ट न प यद वर्ग पूर्वादि अष्ट दिशाओं
में मध्य भागो ह प य वर्गों के अक्षर जहाँ हों इस स्थान में अशुभ शल्य है तिसका
प्रकार नीचे लिखा है तिससे उन २ स्थानों का फल जानिये ॥ ७२४-७२५ ॥

अथ प्रश्नाक्षर-फलम् ।

पूर्व—

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।

सार्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुषमृत्युकृत् ॥ ७२६ ॥

आग्नेय—

आग्नेय्यां दिशि कः प्रश्ने खरशल्यं करद्वये ।

राजदण्डो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्त्तते ॥ ७२७ ॥

दक्षिण—

याम्यायां दिशि चः प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम् ।

नरशल्यं गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ॥ ७२८ ॥

४ दाय पर जली हुई धातु की भूरी या कोयले निकले तिसरा फल मित्रकाग टुक
 मरण दर्शन (य) दर्न हो तो एक दाय उत्तर कोण में प्राग्ग के दाय निकले तिसरा
 फल सुख समान भी घनादर इच्छी हो अ (र) हो तो रोगान दिना में उड़ दाय पर न
 की अस्थि निकले तिसरा फल गोघन का नाग हो म (ह प य) हो तो मय भाग में छुट
 दरादर गहराय में मनुष्य का कपान या मन्म या लोहा निकले तिसरा फल सुलग्न
 जिस दर्न का मन्मकर्ता के मुख से उच्चार हो उली दिना की देंगे । ७२६-७२४।

अथ यात्रा-प्रकरणम् ।

शुक्रसन्मुख—

एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ।

विवाहे तोर्ययात्रायां प्रतिगुक्रो न विद्यते ॥ ७२५ ॥

टीका—गांव से गांव लयरा महर से महर जाने में, दुर्भिक्ष कालमें तथा देशोपद्रव
 में, विवाह समय में, तोर्ययात्रा में सम्मुख शुक्र हो तो दोष नहीं है ॥ ७२५ ॥

पौष्णदास्ताग्निपादान्तं यावन्तिष्ठति चन्द्रमाः ।

तावच्छुक्रो भवेदन्वः सम्मुखे गमनं शुभम् ॥ ७२६ ॥

टीका—रेवती, अश्विनी, मरुती और कुत्तिका के मध्य चरण का चन्द्रमा होने से
 शुभ अन्व होता है उसके सम्मुख गमन में दोष नहीं है ॥ ७२६ ॥

शुभाशुभ फल—

दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति मङ्गलम् ।

वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोचयेदस्तगः शुभम् ॥ ७२७ ॥

टीका—गमन अर्थात् यात्रा में दक्षिणा शुक्र हो तो दुःखदायक, सम्मुख कार्यनाशक
 और वाम भाग या पीछे का शुक्र मङ्गलदायक और पूर्व में अस्त हो तो पश्चिम को
 गमन शुभ और पश्चिम में अस्त हो तो पूर्व में गमन शुभ जानिए ॥ ७२७ ॥

जोर में शुक्र का विचार—

पूर्वस्थिते भृगौ जायान्नबोद्धा राजसेऽनले ।

पश्चिमस्थे भृगौ यायात्तद्रदीशानवातयोः ॥ ७२८ ॥

टीका—पूर्य में शुक्र हो तो नवोद्गा अग्नि, और नैऋत्य कोण में जाय । पश्चिम
शुक्र हो तो उसी प्रकार वायव्य और ईशान कोण में यात्रा करै ॥ ७३८ ॥

घात-चन्द्रनिर्णय-

प्रयाणकाले युद्धे च कृशौ वाणिज्यसंग्रहे ।

वादे चैव गृहारम्भे वर्जितो घातचन्द्रमाः ॥ ७३९ ॥

टीका—यात्रा युद्ध खेती कर्म व्यापार अन्न आदि भरने में विवाह में पुत्र-
ारम्भ में घातचन्द्रमा वर्जित है ॥ ७३९ ॥

घातप्रकरण-

घातं तिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च ।

यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञो ह्यन्यवर्गसु योगिनम् ॥ ७४० ॥

टीका—घाततिथि, घातवार, घातनक्षत्र यात्रा में वर्जित है ।
भ जानिए ॥ ७४० ॥

४ दास्य नर उनी हुई आहु की मूर्ति पर डोरे से लिपटे लिपटा नर निम्नस्थ हुआ
 मदन कर्मणः यः दां दे तो एक दास उतर कोने में प्राण के दास निम्नस्थ लिपटा
 नर उतर मदन की चमत्कार दिखी तो ७ (ग), तो तो डोरे लगा दिया मैं देव दास न मैं
 की कृति लिपटे लिपटा नर सोमन दा मनु हो न (हृदय) को तो मदन न मैं देव
 दास नर गदगद मैं मनुय न मदन दा मदन दा मनु निम्न लिपटे लिपटा नर सुमन ६
 निम्न दां का मदनदा के मुख से उच्चार हो उठी दिव को देते १७३-७३४

अथ यात्राप्रकरणम् ।

गुह्यमनुव—

एकग्रामे पुरे वापि दुर्मिने गच्छविन्दे ।

विवाहे तोययात्रायां प्रविशुको न विद्यते ॥ ७३४ ॥

टीका—ग्राम के रां अन्न मदन के मदन दां में, दुर्मिने अन्न के दां देवदा
 में, विवाह मदन में, तोयं नग में मनुय सुन हो तो देव नहीं है ॥ ७३४ ॥

पौत्रपुत्राग्निसाग्नान् यावपिष्ठिनि वन्दमाः ।

जावच्छुको भवेदन्वः मन्मुते गलनं गुमम् ॥ ७३६ ॥

टीका—पौत्रः, अग्निः, मन्मते और वृद्धि के प्रदान वर का चमत्कार होवे है
 गुह्य अन्न देता है उसके मनुय नर में देव नहीं है ॥ ७३६ ॥

गुमायुम कल—

वज्रिणे दुःखदः शुक्रः मन्मुते हनि मङ्गलम् ।

वामे पृष्ठे गुमो नित्यं रोदयेदन्तः गुमम् ॥ ७३७ ॥

टीका—वज्र अर्थात् बाण में दहिना सुन हो तो दुःखदायक, मन्मुते काजंकर
 और वाम भाग का पीछे का सुन मानवदाय और पूर्व में अन्न हो तो पत्निक के
 नर सुन और पत्निक में अन्न हो तो पूर्व में नर सुन जानिए ॥ ७३७ ॥

जोग में शुक्र का विचार—

पूर्वम्यिने मृगौ जायात्रवेहा राजसेज्जने ।

पश्चिमम्ये मृगौ यायात्रवेहा राजसेज्जने ॥ ७३८ ॥

टीका—पूर्व में शुक्र हो तो नवोदा अग्नि, और नैऋत्य कोण में जाय । पश्चिम में शुक्र हो तो उसी प्रकार वायव्य और ईशान कोण में यात्रा करै ॥ ७३८ ॥

घात-चन्द्रनिर्णय-

प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्यसंग्रहे ।

वादे चैव गृहारम्भे वर्जितो घातचन्द्रमाः ॥ ७३९ ॥

टीका—यात्रा युद्ध खेती कर्म व्यापार अन्न आदि भरने में विवाद में गृह के आरम्भ में घातचन्द्रमा वर्जित है ॥ ७३९ ॥

घातप्रकरण-

घातं तिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च ।

यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञो ह्यन्यकर्मसु शोभनम् ॥ ७४० ॥

टीका—घाततिथि, घातवार घातनक्षत्र यात्रा में वर्जित है और अन्य कार्यां शुभ जानिए ॥ ७४० ॥

मेघे रविर्मघा प्रोक्ता षष्ठी प्रथमचन्द्रमाः ।

वृषभे पञ्चमी हस्तश्चतुर्थी शनिरेव च ॥ ७४१ ॥

मिथुने नवमी स्वाती अष्टमी चन्द्रवासरः ।

कर्के द्विरनुराधा च बुधः षष्ठी प्रकीर्तिता ॥ ७४२ ॥

सिंहे षष्ठश्चन्द्रमाश्च दशमी शनिमूलके ।

कन्यायां दशमश्चन्द्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥ ७४३ ॥

तुले गुरुर्द्वितीया रयान्मन्दमस्तौ च चन्द्रमाः ।

वृश्चिके रेवती सप्त दशमी भार्गवस्तथा ॥ ७४४ ॥

धने चतुर्थी भरणी द्वितीया भार्गवस्तथा ।

मकरे चाष्टमी ज्ञानं द्वादशी भौमवासरः ॥ ७४५ ॥

कुम्भे एकादशश्चार्द्रा चतुर्थी शुक्रवासरः ।

मीने च द्वादशः सार्धं द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ ७४६ ॥

मेवादि १२ राशि से घातचन्द्रादि चतुष्टय गत्ता कर यात्रा में शुभ नक्षत्र आदि
देखना ॥ ७४१-७४६ ॥

राशि	मेघ	शुभ	मिथु	कर्क	मिथ	कन्या	तुला	शनि	धन	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्र	१	१	४	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	चन्द्र	शुभ	श.	श.	शु	शु.	शु	म	शु	शु
नक्षत्र	मघा	उस्त	स्वा.	अनु	मू.	ध.	श.	२.	भ.	रो.	आ	आगले
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

कालचन्द्र—

मेघे वेदा वृषेऽष्टौ च मिथुने च तृतीयकः ।

दश कर्क रविः सिंहे कन्यायामङ्कसम्मिताः ॥ ७४७ ॥

षट् तुले वृश्चिके खेन्दुर्धने रुद्राः प्रकीर्तिताः ।

मकरे ऋषयः प्रोक्ताः कुम्भे वाणा उदाहृताः ॥ ७४८ ॥

मीने त्वन्धिः कालचन्द्रः शौनकश्चेदमब्रवीत् ।

टीका—मेघराशि को ४ वृष को ८ मिथुन को ३ कर्क को १० सिंह को १२ कन्या
को ६ तुला को ६ वृश्चिक को १० धन को ११ मकर को ७ कुम्भ को ५ मीन को ४
चौथा चन्द्रमा काल चन्द्र जानिए। ये कालचन्द्र शौनक ऋषिप्रोक्त सर्व कर्मों में
वर्जित हैं ॥ ७४७-७४८ ॥

तिथिपरत्व से वर्जित लग्न—

नन्दायामलिहयोस्तु तुलामकरयोस्तथा ।

भद्रायां मीनधनुषोः कालस्तिष्ठति सर्वदा ॥ ७४९ ॥

जयायां स्त्रीमिथुनयोः रिक्तायां मेषकर्कयोः ।

पूर्णायां कुम्भवृषयोर्मनुष्यमरणं ध्रुवम् ॥ ७५० ॥

टीका—नन्दा तिथि को वृश्चिक सिंह तुला मकर और भद्रा तिथि को मीन धन
और जया तिथि को कन्या मिथुन और रिक्ता तिथि को मेष कर्क और पूर्णा तिथि को
कुम्भ वृष इन तिथियों में लग्न वर्जित है ॥ ७४९-७५० ॥

यात्रा के नक्षत्र—

हस्तेन्दुमैत्रश्रवणाश्वितीष्यपौष्णाश्रविष्ठाश्व पुनर्वसुश्व ।

श्रोकानि धिषायानि नव प्रयागे त्यक्त्वा त्रिपञ्चाऽऽदिमसप्तताराः ॥

टीका—हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु इन नक्षत्रों में यात्रा युक्त है। परन्तु ३।५।१।७ ये तारायें गमन में वर्जित हैं ॥७५१॥

मध्य नक्षत्र—

उत्तरा रोहणी चित्रा मूलमार्द्रा तथैव च ।

षाढोत्तरा भाद्रविश्वे प्रयागे मध्यमाः स्मृताः ॥ ७५२ ॥

टीका—रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उत्तराषाढा ये यात्रा में मध्यम हैं ॥ ७५२ ॥

तिस्रः पूर्वा मघा ज्येष्ठा भरणी रौद्रकृत्तिके ।

सार्प स्वाती विशाखा च नित्य गमनवर्जिताः ॥ ७५३ ॥

कृत्तिका एकावशत्या भरण्याः सप्त नाडिकाः ।

एकादश मघायाश्च त्रिपूर्वाणां च षोडश ॥ ७५४ ॥

विशाखासार्पचित्रास्तु स्वाती रौद्रचतुर्दश ।

याद्यास्तु घटिकास्त्याज्याः शेषांशे गमनं शुभम् ॥ ७५५ ॥

टीका—तीनों पूर्वा, मघा, ज्येष्ठा, भरणी, आर्द्रा, कृत्तिका, नाश्लेषा इत्यादी यात्रायां न नक्षत्रों को प्रयाग काल में वर्जित करें, परन्तु जो बात याद रखनी चाहिये वह यह है तो तीनों पूर्वा को १६ घटिका मघा को ११ ज्येष्ठा सप्तहत्विर् भरणी को ७ घटिका कृत्तिका को २१ जम्भनक्षत्र सम्पूर्ण यात्रालेख विशाखा चित्रा स्वाती सप्तहत्विर् इति नक्षत्राणि १४ घटिका को छोड़ कर यात्रा करें । ७५३-७५५ ।

यात्रा में दानों का विधान—

४ वै क्लेशमनर्थक च गमने लोनि च कन्दुलि

चाङ्गारेऽनलतक्करदरस्य प्राज्जोति चार्पयेत् ।

जेमारोग्यसुख करोति च सुखं लभस्य गच्छेत् ।

मन्दे वन्धनरान्निरोधनं शान्तं च नि नान्निदिदि

टीका-रविवार को गमन करे तो मार्ग में फलेश और कार्य की हानि हो, सोम-वार को गमन करे तो वन्धु और प्रियदर्शन, मङ्गल में अग्नि-चोर-भय और ज्वर-प्राप्ति, बुधवार में द्रव्य और सुख-प्राप्ति, गुरुवार में आरोग्य और सुख, शुक्रवार में लाभ और शुभ फलप्राप्ति, शनिवार में गमन करे तो वन्धन रोग और मरण होय ॥७५६॥

होरा-कथन—

वारात्पष्ठस्य पष्ठस्य होरा सार्द्धदिनाडिका ।

अर्कशुक्रौ बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरासुनः ॥ ७५७ ॥

गुरुर्विवाहे गमने च शुक्रो बोधे च सौम्यः सकलेषु चन्द्रः ।

कुजे च युद्धं रविराजसेवा मन्दे च वित्तं त्विति होरयोगः ७५८

यस्य ग्रहस्य वारेऽपि कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम् ।

तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वकर्म विधीयते ॥७५९॥

टीका-जिस वार का होरा जानना हो उसमें प्रथम २॥ घटिका उसी का होरा तिसके छठे वार का दूसरा होरा इस क्रम से सर्वदिवस के कालहोरा जानिये । प्रत्येक का प्रणाम २॥ घटी प्रथम २ रविवार का होरा राजसेवा को शुभ है, द्वितीय शुक्र का गमन को, तृतीय बुध का धान-प्राप्ति को, चतुर्थ चन्द्र का सर्व कार्य को, पञ्चम शनि का द्रव्य के संग्रह को, छठा गुरु का विवाह को, सातवाँ मङ्गल का युद्ध को जानिये । इस प्रमाण से होरा का क्रम जानिये और जिस २ ग्रह का जो वार हो तिसमें जो २ कथित कृत्य है सो २ उसके होरा में करे ॥ ७५७-७५९ ॥

सूर्य के होरा में शकुन—

सूर्यस्य होरे रजकी सुवस्त्रं कुमारिका विप्रचतुष्टयं च ।

काकत्रयं द्वौ नकुलौ तथैव चापस्तथैको वृषभश्च गौश्च ॥७६०॥

टीका-रवि के होरा में गमन करे तो आगे जो शकुन हो तिनको कहते हैं-रज की, सुवस्त्र, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, न्योला, दो चाप (नीलकण्ठ), एक बैल और गाय ये शकुन मिलें ॥ ७६० ॥

चन्द्र का होरा—

चन्द्रस्य होरे द्विजयुग्मकाकभेरीमृदङ्गा नकुलाः खरोष्ट्रौ ।

हयश्च गोमेषशुनस्तथैव पुष्पाणि नारीद्वयमेव मार्गे ॥ ७६१ ॥

टीका-चन्द्रमाके होरा में गमन करे तो मार्ग में दो ब्राह्मण और काक नगरे मृदङ्ग और न्योला गर्दभ ऊँट घोड़ा गाय मेढ़ा कुत्ता और पुष्प दो स्त्रियाँ ये शकुन मिलें ॥७६१॥

मङ्गल का होरा—

मार्जारयुद्धं कलहः कुटुम्बे रजस्वला स्त्री भवनस्य दाहः ।

नपुंसकः श्वत्रितयं द्विजश्च नग्नो विमुक्तो धरणीसुतस्य ॥७६२॥

टीका-मङ्गल के होरा में गमन करे तो मार्जारयुद्ध अथवा स्त्री-पुरुष का कलह अथवा रजस्वला स्त्री अथवा जलता हुआ घर किंवा नपुंसक तीन कुत्ता किंवा नग्न ब्राह्मण मिले ॥ ७६२ ॥

बुध का होरा—

बुधस्य होरे शकुनास्तु सर्वे स्त्री पुत्रयुक्ता कलशस्तु पूर्णः ।

सुवातकश्चापगजौ कुमारः पुष्पाणि नारी खलु दर्पणश्च ॥७६३॥

टीका-बुध के होरा में सर्पशकुन स्त्री पुत्रयुक्त, पानी से बना कलश पूर्ण, वातक पक्षी, चाप (नीलकण्ठ) पक्षी, गज और बालक, पुष्प, स्त्री दर्पण के आनंद में मिलें ॥ ७६३ ॥

पश्चिम—

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी ।

भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमां दिशम् ॥ ७७१ ॥

टीका—रोहिणी पुष्य नक्षत्र षष्ठी चतुर्दशी तिथि और मङ्गल रवि गुरुवार इनमें पश्चिम गमन न करे ॥ ७७१ ॥

उत्तर—

करे चोत्तरफल्गुन्यां द्वितीयां दशमीं तथा ।

बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेद्भुत्तां दिशम् ॥ ७७२ ॥

टीका—हरत उत्तराफल्गुनी नक्षत्र २१६० तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तर दिशा में गमन न करे ॥ ७७२ ॥

विदिवश्ल—

ऐशान्यां ज्ञे शनौ शूले आग्नेव्यां गुरुसोमयोः ।

वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैऋत्यां शुक्रसूर्ययोः ॥ ७७३ ॥

टीका—आशानुसार विदिशाओं का मन्त्र है । १ । । जिसके मन्त्र न करे १७२५५ निवार में ऐशान दिशा का वर्जित है शन और सोमवार में न करे १७२५५ निवार में वायव्य को शुक्र और रविवार में न करे १७२५५ निवार में । ७७३ ।

शुलदोष निवारणा ३ मन्त्रः

उत्तम प्रश्न न हो तो—

मनु का वाक्य—

गमनं प्रतिराजंस्तु सम्मुखादर्शनेन च ।

प्रशस्तौश्चैव संभाषेत्सर्वानेतांश्च कीर्तयेत् ॥ ७६७ ॥

टीका—राजा के प्रति कहते हैं—गमन काल में पूर्वोक्त शकुनों का कीर्तन किंवा इनका ध्वज दर्शन न हो अथवा मन में स्मरण करिके गमन करै तो भी शुभ हो ७६७

वारानुसार वस्त्र-धारण—

रवौ नीलं बुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ।

श्वेतं गुरौ भृगौ भौमे रक्तं सोमे तु चित्रकम् ॥ ७६८ ॥

टीका—रविवार को नीला वस्त्र धारण करै, बुधवार को पीत, शनिवार को काला, गुरु व शुक्र को श्वेत. मङ्गल को रक्त, सोमवार में विचित्र प्रकार वस्त्र धारण करके गमन करे ॥ ७६८ ॥

नक्षत्र तिथि वार—अनुसार दिक्गन्त वर्ज्य—

पूर्वदिशा—

मूलश्रवणशक्रेषु प्रतिपन्नवमीषु च ।

शनौ सोमे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ ७६९ ॥

टीका—मूल ध्वज ज्येष्ठा ये नक्षत्र प्रतिपदा नवमी ये दो तिथि और शनि सोम बुधवार इनमें पूर्व दिशा को न जावे ॥ ७६९ ॥

दक्षिण दिशा—

पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यौ पञ्चमीं च त्रयोदशीम् ।

गुरुं धनिष्ठामार्द्रां च ग्राम्ये सप्त विवर्जयेत् ॥ ७७० ॥

टीका—पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी नक्षत्र और पञ्चमी त्रयोदशी तिथि गुरुवार धनिष्ठा मार्द्रा इनमें दक्षिण दिशा को गमन न करे ॥ ७७० ॥

पश्चिम—

रोहिर्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी ।

भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमां दिशम् ॥ ७७१ ॥

टीका—रोहिणी पुष्य नक्षत्र षष्ठी चतुर्दशी तिथि और मङ्गल रवि गुरुवार इनमें पश्चिम गमन न करे ॥ ७७१ ॥

उत्तर—

करे चोत्तरफल्गुन्यां द्वितीयां दशमीं तथा ।

बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तां दिशम् ॥ ७७२ ॥

टीका—द्वस्त उत्तराफल्गुनी नक्षत्र २१० तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तर दिशा गमन न करे ॥ ७७२ ॥

विदिक्शूल—

ऐशान्यां ज्ञे शनौ शूले आग्नेय्यां गुरुसोमयोः ।

वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैऋत्यां शुक्रसूर्ययोः ॥ ७७३ ॥

टीका—यानुसार विदिक्शूलों का शूल होता है । तिसमें गमन न करे बुध और शनिवार में ईशान दिशा का वर्जित है गुरु और सोमवार में आग्नेय को और मङ्गल वायव्य को शुक्र और रविवार में नैऋत्य को वर्जित है ॥ ७७३ ॥

शूलदोष निवारणार्थं भक्षण—

इस और मीन के चन्द्रमा में वर्जित कर्म—

सम्पत्तिजननेनाग्निप्रियाकाष्ठवृणार्जनम् ।

यत्पुत्रिगमनं कुर्यान्न चन्द्रे कुम्भमीनगे ॥ ७७६ ॥

टीका—जब कन्याका और अग्निप्रिया और कृष्ण काष्ठदि संग्रह और पुत्रि को गमन के समय कर्म कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में वर्जित हैं ॥ ७७६ ॥

सम्बुल चन्द्र का फल—

कर्मभगाणुदोषं वारसंक्रान्तिदोषं

दुनियिदुलिकदोषं वामयानार्धदोषम् ।

दुजगनिरविदोषं राहुकेन्द्रादिदोषं

हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्बुलस्यः ॥ ७७७ ॥

टीका—जब सप्तम वार संक्रान्ति दुनियि दुलिक यानार्ध मङ्गल शनि गति राहु केन्द्र इत्यादि दोषों को सम्बुलस्य चन्द्रमा गमन करने से दूर करता है ॥ ७७७ ॥

दिग्गत्रों में चन्द्रमा का बाल—

मेघे च मिह धनपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च यान्ये ।

तुलानुदुन्ये नियुने प्रतान्या कर्कादिमीने दिशि चोत्तरम्याम् ॥ ७७८ ॥

टीका—मेघ मिह धन धन राशियों का चन्द्रमा पूर्व में, वृष कन्या मकर का दक्षिण में, तुला दुन्ये नियुन का पश्चिम में, कर्क दक्षिण मीन का उत्तर में बाल करता है ॥ ७७८ ॥

सम्बुल आदि चन्द्र का फल—

सम्बुलशायलाभाय वाजिणः सुखसम्पदः ।

पृष्ठे प्राणविताराय वामे चन्द्रे धनज्ञयः ॥ ७७९ ॥

टीका—दिग्बुलार सम्बुल चन्द्रमा होने गमन करे तो धन लाभ हो और दक्षिण हो तो धन सम्पत्ति की प्राप्ति हो और पृष्ठ भाग में चन्द्रमा हो तो प्राणवितार और वाम भाग में हो तो धनज्ञय प्राप्ति ॥ ७७९ ॥

आलेख विचार—

पूर्वांहे चोत्तरं गच्छेत्प्राच्यां मध्याह्ने तथा ।

दक्षिणे वायव्ये तु पश्चिमे द्यौरात्रके ॥ ७८० ॥

टीका--दिवस के प्रथम प्रहर में उत्तर को दूसरे प्रहर में तथा संध्या में पूर्व को और तृतीय प्रहर में दक्षिण को और अर्द्धरात्रि में पश्चिम को गमन करे ॥ ७८० ॥

योगिनीवास--

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया दिशि चोत्तरे ।

तृतीयैकादशी वह्नौ चतुर्द्वादशि नैऋति ॥ ७८१ ॥

पञ्च त्रयोदशी याम्ये षष्ठभूतं च पश्चिमे ।

सप्तमी पूर्ववायव्ये अमावास्याष्टमी शिवे ॥ ७८२ ॥

फल--

पृष्ठे च शिवदा प्रोक्ता वामे चैव विशेषतः ।

योगिनी सा भवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणां ॥ ७८३ ॥

टीका--प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में, द्वितीया और दशमी को उत्तर में, तृतीया और एकादशी को आग्नेय में और द्वादशी को नैऋत्य में, पञ्चमी और त्रयोदशी को दक्षिण में, षष्ठी और चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी और पूर्णिमा को वायव्य में, अमावास्या और अष्टमी को ईशान में, इस प्रकार से योगिनी का वास जानिये । जिस दिन अमावास्या भाग श्रवण वामभागी हो तो शुभ जानिये अन्यथा अशुभ है ॥ ७८३-७८४ ॥

वारानुसार कालराहु का वास--

अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीक्यां बुधनैऋति ।

याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति ॥ ७८४ ॥

टीका--रविवार को उत्तर में सोमवार को वायव्य में बुधवार को दक्षिण में शनिवार को नैऋत्य में गुरुवार को दक्षिण में शुक्रवार को आग्नेय में शनिवार को पश्चिम में, इस प्रकार से कालराहु का अनुसार जानिये ॥ ७८४ ॥

फल--

रविदिनगुरुपूर्वे सोमशुक्रे च याम्ये

वरुणदिशि तु भौमे वास्तवे अग्निदिशि

प्रतिदिनमिति मत्वा कालराहुदिशान्

सकलजगन्मन्त्रार्थं जानन्मुक्ते च भित्ति

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में वर्जित कर्म—

शय्याविनानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठनृणां जन्मम् ।

याग्यदिग्गमनं कुर्यान्न चन्द्रे कुम्भमीनगे ॥ ७७६ ॥

टीका—पलङ्ग धनवाना और प्रेताग्निक्रिया और तृण काष्ठादि संग्रह और दक्षिण को गमन ये सकल कर्म कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में वर्जित हैं ॥ ७७६ ॥

सम्मुख चन्द्र का फल—

करणाशगणादोषं वारसंक्रान्तिदोषं

कुतिथिकुलिकदोषं वामयामार्द्धदोषम् ।

कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं

हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ॥ ७७७ ॥

टीका—करणा नक्षत्र चार संक्रान्ति कुतिथि कुलिक यामार्द्ध मङ्गल शनि रवि राहु केतु इत्यादि के दोषों को सम्मुखस्थ चन्द्रमा गमन करने से दूर करता है ॥ ७७७ ॥

दिशाश्रों में चन्द्रमा का वास—

मेघे च सिंहे धनपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।

तुलासु कुम्भे मिथुने प्रतीच्यां कर्कातिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ ७७८ ॥

टीका—मेघ सिंह धन इन राशियों का चन्द्रमा पूर्व में, वृष कन्या मकर का दक्षिण में, तुला कुम्भ मिथुन का पश्चिम में, कर्क वृश्चिक मीन का उत्तर में वास करता है ॥ ७७८ ॥

सम्मुख आदि चन्द्र का फल—

सम्मुखश्चार्थलाभाय दक्षिणः सुखसम्पदः ।

पृष्ठे प्राणविनाशाय वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ ७७९ ॥

टीका—दिशानुसार सम्मुख चन्द्रमा होते गमन करें तो अर्थ लाभ हो और दक्षिण हो तो धन सम्पत्ति की प्राप्ति हो और पृष्ठ भाग में चन्द्रमा हो तो प्राणनाश और वाम भाग में हो तो धनक्षय जानिये ॥ ७७९ ॥

कालवेला विचार—

पूर्वाह्णे चोत्तरां गच्छेत्प्राच्यां मध्याह्णे तथा ।

दक्षिणे चापराह्णे तु पश्चिमे ह्यर्धरात्रके ॥ ७८० ॥

टीका--दियस के प्रथम प्रहर में उत्तर को दूसरे प्रहर में तथा गन्धात में पूर्व को और द्वाय प्रहर में दक्षिण को और अर्द्धरात्रि में पश्चिम को गमन करे ॥ ७८० ॥

योगिनीवास—

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया दिशि चोत्तरे ।

तृतीयैकादशी वह्नौ चतुर्द्वादशि नैऋति ॥ ७८१ ॥

पञ्च त्रयोदशी याम्ये षष्ठभूतं च पश्चिमे ।

सप्तमी पूर्ववायव्ये अमावास्याष्टमी शिवे ॥ ७८२ ॥

फल—

पृष्ठे च शिवदा प्रोक्ता वामे चैव विशेषतः ।

योगिनी सा भवेन्नित्य प्रयागे शुभदा नृणां ॥ ७८३ ॥

टीका--प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में, द्वितीया और दशमी को उत्तर में, तीज और एकादशी को आग्नेय में और द्वादशी को नैऋत्य में, पञ्चमी और त्रयोदशी को दक्षिण में, षष्ठी और चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी और पूणिमा को वायव्य में, अमावस्या और अष्टमी को ईशान में, इस प्रकार से योगिनी का वास जानिये । जिसका फल पृष्ठ-भाग अथवा वामभागी हो तो शुभ जानिये अन्यथा अशुभ है ॥ ७८३-७८४ ॥

वारानुसार कालराहु का वास—

अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋति ॥

याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालराहुः ॥ ७८५ ॥

टीका--रविवार को उत्तर में सोमवार को वायव्य में मङ्गल को पश्चिम में बुधवार को नैऋत्य में गुरुवार को दक्षिण में शुक्रवार को आग्नेय में शनिवार को ईशान में इस प्रकार से कालराहु पार अनुसार जानिये ॥ ७८५ ॥

फल—

रविदिनगुरुपूर्वे सोमशुक्रे च याम्ये

वरुणदिशि तु भौमे चान्तरे अग्निमन्दे ।

प्रतिदिनमिति मत्वा कालराहुर्दिशानां

सकलगमनकार्यं वानपृष्ठं च निर्दिष्टः ॥ ७८६ ॥

में पातक लोह और घड़वानल ये तीनों शुभ अग्रभाग में खड्ग शुभ वाम भाग में कषच शुभ दक्षिण भाग में कान्ति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचार के उस दिशा को युद्ध में किया यात्रा में गमन करें तो शुभ हो ॥ ७८८-७८९ ॥

पन्थाराहुचक्र--

सुधर्म दसपुण्योरगवसुजलपद्मो गमैत्रायथार्थे ।

याम्याज्याङ्घ्रीन्द्रकर्णादिति पितृपवनो ह्यन्यथो भानि कामे ॥

बह्वार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिमगाऽऽख्यानिमोऽश्वरोहि-

रायर्मणाब्जेन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षणि पन्थादिराहौ ॥ ७९० ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेष	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शततारका
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वती	उज्जेशा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा
वाम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजित	उत्तराभाद्रपदा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	रेवती

टीका-नक्षत्र २८ तिनके भाग ४ तिनके भाग प्रथम धर्म मार्ग के नक्षत्र ७ द्वितीय अर्थ मार्ग के नक्षत्र ७ तृतीय काममार्ग के नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्ग के नक्षत्र ७ इस प्रकार चार धर्मों के नक्षत्र जानिए, तिनके मार्ग के नक्षत्र में सूर्य हो तो चन्द्रमा चार धर्मों के नक्षत्र में पारता है जिनके फल करते हैं ॥ ७९० ॥

धर्ममार्गों के फल--

धर्ममार्गे गते सूर्ये अर्थाशे चन्द्रमा यदि ।

तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विबुधैः शुभम् ॥ ७९१ ॥

टीका--धर्ममार्गों नक्षत्र में सूर्य और धर्ममार्गों नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो शत्रु करने से मार्ग में शत्रुभय होता है ॥ ७९१ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव सन्धिते ।

संहारश्च भवेत्तत्र भङ्गो हानिः प्रजायते ॥ ७९२ ॥

टीका--धर्ममार्गों नक्षत्रों में सूर्य और चन्द्रमा दोनों एक ही नक्षत्र में पड़ें तो संहार प्रजायत होता है ॥ ७९२ ॥

टीका-रवि अथवा गुरु इन नारों में पूर्व को गमन करे तो कालराहु वाम पृष्ठ भाग को जानिये तिसमें गमन करे तो सर्वकार्य की सिद्धि हो, सोम शुक्र में दक्षिण को गमन करे, भौमवार में पश्चिम को, शनिवार में उत्तर को गमन करे तो कार्यसिद्ध हो ॥ ७८४ ॥

क्षुधित राहु—

इन्द्रे वायी यमे रुद्रे तोयेऽग्नीं शशिरत्नसोः ।

यामार्द्धं क्षुधितो राहुभ्रमत्येव दिगष्टके ॥ ७८६ ॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगो न च चन्द्रमाः ।

सिध्यन्ति सर्वआर्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥ ७८७ ॥

टीका-प्रथम यामार्द्ध में क्षुधित राहु पूर्व को जानिये, द्वितीय में वायव्य को तृतीय में दक्षिण को चतुर्थ में ईशान को पश्चिम में पश्चिम को पष्ठ में आग्नेय को सप्तम में उत्तर को अष्टम यामार्द्ध में नैऋत्य को इस प्रकार के अष्ट दिशाओं में भ्रमण करता है परन्तु दक्षिण भाग में स्थित रवि विचार के गमन करे तो तिथि नक्षत्रादिक का दोष जाता रहे और समस्त कार्य सिद्ध हो ॥ ७८६-७८७ ॥

काल कहां है तिसका ज्ञान—

कालः पलं पातकलोहपातवडवानलाः खड्गकवचक्रान्तिकाः ।

नखाश्चतुर्विंशति षट्पथादिगूल्वाधृतिर्वेदशृणाः क्रमेण ॥ ७८८ ॥

तिथ्या युतं वै वसुभाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदन्ति ।

फल—

कालं च पृष्ठे पलसंमुखेन पातं च लो' वडवां च पष्ठे ।

खड्गश्च चापे कवचं च वापे क्रान्तिश्च योज्या दिशि दक्षिणस्याम् ॥ ७८९ ॥

टीका—कालों के नाम । १ काल २ पल ३ पातक ४ लोहपात ५ पड़वानल ६ खड्ग ७ कवच ८ क्रान्ति ऐसे आठ नाम हैं, तिनके अङ्क २०१२४७१०१११२४३ क्रम से लिखे हैं । उनमें गमन काल की जो तिथि है उसको एक २ अङ्क में मिलावे आठ का भाग दे शेष जो अङ्क रहे तिस दिशा को काल जानिये, इस प्रकार पूर्वादि आठ दिशा क्रम से जानिये । पृष्ठभागो काल शुभ सम्मुख का फल शुभ पृष्ठ भाग

में पातक लोह और घडवानल ये तीनों शुभ अग्रभाग में सङ्ग शुभ वाम भाग में कवच शुभ दक्षिण भाग में प्राप्ति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचार के उस दिशा को युद्ध में किंवा यात्रा में गमन करें तो शुभ हो ॥ ७८८-७८९ ॥

पन्थाराहुचक्र—

सुधर्म दसपुण्योरगवसुजलपद्मोगमैत्रायणार्थः ।

याम्याज्याङ्घ्रिन्द्रकर्णादितिपितृपवनोद्भूतयो भानि कामे ॥

वह्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिमगाऽऽख्यानिमोज्ञोऽथरोहि—

रायर्गम्णाञ्जेन्दुविश्वान्तियभदिनकरर्क्षाणि पन्थादिराहौ ॥ ७९० ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	घनिष्ठा	शततारका
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वती	ज्येष्ठा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा
वाम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजित	उत्तराभाद्रपदा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	रेवती

टीका—नक्षत्र २८ तिनके भाग ४ तिनके भाग प्रथम धर्म मार्ग के नक्षत्र ७ द्वितीय अर्थ मार्ग के नक्षत्र ७ तृतीय काममार्ग के नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्ग के नक्षत्र ७ इस प्रकार चार वर्गों के नक्षत्र जानिए, तिनके मार्ग के नक्षत्र में सूर्य हो तो चन्द्रमा चार वर्गों के नक्षत्र में पिरता है जिनके फल कहते हैं ॥ ७९० ॥

धर्ममार्ग के फल—

धर्ममार्गे गते सूर्ये अर्थाशे चन्द्रमा यदि ।

तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विबुधैः शुभम् ॥ ७९१ ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्र में सूर्य और धर्ममार्गी नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो गमन करने से मार्ग में शुभुभय होता है ॥ ७९१ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव समिधे ।

संहारश्च भवेत्तत्र सङ्गो हानिं प्रजायते ॥ ७९२ ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्र में सूर्य और चन्द्रमा हो तो गमन करने से मार्ग में संहार और भय होता है ॥ ७९२ ॥

भयमार्गं गते सूर्ये चन्द्रो व्यतीतिरिति ।

विषया नाम्नां धैर्यं योगः कुशलमुद्रवत् ॥ ७६३ ॥

टीका—भयमार्गं भयान्न का सूर्य और चन्द्रमार्गं चन्द्रों का चन्द्रमा होतो शब्द विषय और योग का फल होता है ॥ ७६३ ॥

भयमार्गं गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगते यदि ।

गृह्णन्नागो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः ॥ ७६४ ॥

टीका—भयमार्गं भयं शब्द मोक्षमार्गं चन्द्रमा ऐसे योग का फल गृह्णन्नाग यो लोभ होता है ॥ ७६४ ॥

भयमार्गं के फल—

भयमार्गं गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६५ ॥

टीका—भयमार्गं भयं शब्द मोक्षमार्गं चन्द्रमा ऐसे योग का फल गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६५ ॥

भयमार्गं गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६६ ॥

टीका—भयमार्गं भयं शब्द मोक्षमार्गं चन्द्रमा ऐसे योग का फल गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६६ ॥

भयमार्गं गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६७ ॥

टीका—भयमार्गं भयं शब्द मोक्षमार्गं चन्द्रमा ऐसे योग का फल गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६७ ॥

भयमार्गं गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६८ ॥

टीका—भयमार्गं भयं शब्द मोक्षमार्गं चन्द्रमा ऐसे योग का फल गन्तव्यो भवेत्तस्य तत्र धीः सर्वदा सुखी ॥ ७६८ ॥

काममार्गी के फल—

काममार्गे गते सूर्य चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।

गजाश्वाश्च विलभ्यन्ते राजसंमानसंभवात् ॥ ७१६ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो हाथी घोड़ा भूमि इनका
॥१॥ और राजसम्मान पावै ॥ ७१६ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे चैवार्थसंस्थिते ।

सकलं जायते तस्य विघ्नभङ्गं विनिदिशेत् ॥ ८०० ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चन्द्रमा ऐसा योग हो तो सब विघ्नो का
॥१॥ होता है ॥ ८०० ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।

विग्रह दारुणं चैव कार्यनाशं विनिदिशेत् ॥ ८०१ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और चन्द्रमा हो तो विग्रह और कार्य नाश होता है ॥ ८०१ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगतेऽपि वा ।

राज्ञो लाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिदिशेत् ॥ ८०२ ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चन्द्रमा हो तो राजा के लिये स्वर्ण
॥१॥ लाभ हो ॥ ८०२ ॥

मोक्षमार्गी के फल

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

दमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिध्यति ॥ ८०३ ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो दमलाभ होता है ॥ ८०३ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

विपलं तस्य कार्यं च दारुणं विनिदिशेत् ॥ ८०४ ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो विपल होता है ॥ ८०४ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

सर्वान्निबन्धान्नाति उपरि च विनिदिशेत् ॥ ८०५ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये कामांगे चन्द्रमा यदि ।

विग्रहे दारुणं वैव चौरकुक्षममुद्रवत् ॥ ७१३ ॥

टीका—धर्ममार्गी नक्षत्र का सूर्य और काममार्गी नक्षत्रों का चन्द्रमा हो तो शस्त्र विग्रह और चोर मय होता है ॥ ७१३ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे भोजगते यदि ।

गृहलाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः ॥ ७१४ ॥

टीका—धर्ममार्गी सूर्य और भोजमार्गी चन्द्रमा ऐसे योग का फल गृह लाभ व मार्गसुख होता है ॥ ७१४ ॥

अर्थमार्गी के फल—

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीः सर्वदा सुखी ॥ ७१५ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और भोजमार्गी चन्द्रमा ऐसे योग का फल लाभ और लक्ष्मी प्राप्ति और सुखी होता है ॥ ७१५ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।

प्रथमं जायते कार्यं तत्र भङ्गो भविष्यति ॥ ७१६ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और चन्द्रमा दोनों हो तो प्रथम कार्य सिद्धि होय और पछे भङ्ग हो जाता है ॥ ७१६ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामांगसंस्थिते ।

सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्र संशयः ॥ ७१७ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चन्द्रमा हो तो ऐसे योग का फल सर्व कार्य सिद्ध होता है ॥ ७१७ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे भोजस्थिते यदि ।

भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ७१८ ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और भोजमार्गी चन्द्रमा ऐसे योग का फल भूमिलाभ व हर्षयुक्त सुख पावे ॥ ७१८ ॥

काममार्गी के फल---

काममार्गे गते सूर्य चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।

गजाश्वाश्च विलभ्यन्ते राजसंमानसंभवात् ॥ ७६६ ॥

टीका--काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो हाथी घोड़ा भूमि इनका भी और राजसम्मान पावै ॥ ७६६ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे चैवार्थसंस्थिते ।

सकलं जायते तस्य विघ्नभङ्गं विनिदिशेत् ॥ ८०० ॥

टीका--काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चन्द्रमा ऐसा योग हो तो सब विघ्नों का नाश होता है ॥ ८०० ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।

विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिदिशेत् ॥ ८०१ ॥

टीका--काममार्गी सूर्य और चन्द्रमा हो तो विग्रह और कार्य नाश होता है ॥ ८०१ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगतेऽपि वा ।

राज्ञो लाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिदिशेत् ॥ ८०२ ॥

टीका--काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चन्द्रमा हो तो राजा से कोई लाभ व स्वर्ण लाभ हो ॥ ८०२ ॥

मोक्षमार्गी के फल---

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।

हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिध्यति ॥ ८०३ ॥

टीका--मोक्षमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो हेम लाभ और सर्व सिद्धि मिले ॥ ८०३ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये अर्थाशे चन्द्रमा यदि ।

विफलं तस्य कार्यं च चौरराजसिद्धिर्भवेत् ॥ ८०४ ॥

टीका--मोक्षमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चन्द्रमा हो तो चोर राजा की सिद्धि के विफल कार्य व चौरराजसिद्धि ॥ ८०४ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामस्थिते यदि ।

सर्वसिद्धिर्भवति कार्यं च जयमेव हि ॥ ८०५ ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चन्द्रमा हो तो सर्व कार्यसिद्धि और जयप्राप्ति हो ॥ ८०५ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।

विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥ ८०६ ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और चन्द्रमा हो तो दारुण विग्रह और विघ्न प्राप्ति हो ॥ ८०६ ॥

पन्थाराहुव कर्म करने योग्य—

यात्रा शुद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ।

व्यापारेषु च सर्वेषु पन्था राहुः प्रशस्यते ॥ ८०७ ॥

टीका—यात्रा में और विवाह में और नगरादि प्रवेश में और व्यापार अर्थात् सर्व वस्तु के लेने देने में पन्था राहु का विचार होता है ॥ ८०७ ॥

गर्गादिकों का मुहूर्त—

उपः प्रशंसते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ।

अङ्गिरो मन उत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः ॥ ८०८ ॥

टीका—गर्ग जी के मत से रात्रि की पिडुली ५ घटी उपकाल में गमन शुभ और बृहस्पति के मत से शुभ शकुन और अङ्गिरा के मत से मन का उत्साह शुभ और जनार्दन के मत से ब्रह्मवाक्य शुभ जानिये ॥ ८०८ ॥

उपःकालो विना पूर्व गोधूलिः पश्चिमां विना ।

विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाभिजित् ॥ ८०९ ॥

टीका—उपा काल में पूर्व को छोड़ कर बाकी दिशाओं में यात्रा करना । गोधूली में पश्चिम को छोड़कर, अर्द्धरात्रि में उत्तर को छोड़कर तथा मध्याह्न में दक्षिण को छोड़ कर बाकी दिशाओं में यात्रा करना ॥ ८०९ ॥

शुभाशुभ वाहन—

आत्मनो जन्मननुत्रादिनननुत्रमेव च ।

एकोकृत्य हरेद्भागं नन्दशेषे च वाहनम् ॥ ८१० ॥

रासमोऽश्वो गजो मेघो जम्बुकः सिंहसंज्ञकः ॥

काकश्चैव मयूरश्च हंस इत्येव वाहनम् ॥ ८११ ॥

फल—

रासमे अर्थनाशश्च धनलाभश्च घोटके ।

लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्ये हि मेघे च मरणां ध्रुवम् ॥ ८१२ ॥

जम्बुके स्वल्पलाभश्च सर्वसिद्धिश्च सिंहके ।

काके च निष्फलं कार्यं मयूरे च सुखावहम् ॥ ८१३ ॥

हंसे तु सर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानां फलं स्मृतम् ।

टीका—अपने जन्मनक्षत्र के दिन राजपत्र तथा गिनकर नव रा भाग दे डी मेघ वने
तो पावन जानिये, १ वच्चे तो गर्वभ हो उसका फल अर्थनाश, २ वच्चे तो मेघा हो
उसका फल धनलाभ, ३ वच्चे तो हस्ती हो उसका फल लक्ष्मी, ४ वच्चे तो सिंह हो
उसका फल मरण, ५ वच्चे तो जम्बुक हो उसका फल स्वल्पलाभ ६ वच्चे तो सिंह हो
उसका फल सर्वकार्यसिद्धि, ७ वच्चे तो काक हो उसका फल निष्फल कार्य ८ वच्चे तो मयूर
हो उसका फल सुखप्राप्ति और ९ वच्चे तो हंस हो उसका फल सर्वसिद्धि का फल
मानिये ॥

भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ।

पुरुषार्थप्रदं बृहि करुणाकर शङ्कर ॥ ८१६ ॥

टीका—श्रीपार्वतीजी श्रीमहादेवजी से प्रश्न करती हैं कि हे प्राणनाथ! दया के समुद्र ! श्रीशम्भो ! जो मुहूर्त त्रिपुर दंत्य के घघ में कहे गए हैं जो कि शुभ के देनेवाले, सर्व-कालिक सिद्धि के देनेवाले और पुरुषार्थ के देनेवाले हैं ऐसे उन मुहूर्तों को प्राणियों के उपकार के लिये दया-निधान शङ्करजी ! आप मुझसे वर्णन करिए ॥ ८१५-८१६ ॥

ईश्वर उवाच—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपकम् ।

ज्योतिःसारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ८१७ ॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगः करणं तथा ।

कुलिकं यमयोगश्च न भद्रा न च चन्द्रमाः ॥ ८१८ ॥

न शूलं योगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः ।

व्यतीपाते च संक्रान्तौ भद्रायामशुभे दिने ॥ ८१९ ॥

शिवाल्लिखितमित्येतत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।

कदाचिच्चलते मेरुः सागराश्च महीधराः ॥ ८२० ॥

टीका—श्रीमहादेवजी उत्तर देते हैं कि हे देवि ! तुम सुनो, मैं तीन लोक के प्रकाशक ज्ञान को कहता हूँ । जोकि ज्योतिःसार का सार है अर्थात् ज्योतिःशास्त्र के सारांश का सारांश अर्थात् उससे भी महीन है और निश्चय करके देवताओं को भी दुर्लभ है । इस मुहूर्त में तिथि, नक्षत्र, योग, करण, कुलिक, यम-योग, काल, चन्द्रमा, दिशाक्षण, योगिनी, राशि अर्थात् लग्न, काल-होरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रान्ति, भद्रा और अशुभ दिन इतने फुयोग इस मुहूर्त में नहीं विचारने योग्य हैं । शिवजी का लिखा हुआ यह मुहूर्त सब प्रकार के विघ्नों की शान्ति करनेवाला है । चाहे सुमेरु पर्वत बलायमान हो किंवा समुद्र, पर्वत चले, पर ये वाक्य अटल हैं ॥ ८१७-८२० ॥

शिवद्विघटिका मुहूर्त—

सूर्यः पतति वा भूमौ वहिर्वा याति शीतताम् ।

निश्चलश्च भवेदायुर्नान्यथा मम भाषितम् ॥ ८२१ ॥

गुणत्रयप्रयोगेन चलत्येव ब्रह्मनिर्वास ॥ ८२२ ॥

टीका—सूर्य पृथ्वी पर गिरे किंवा अग्नि उखी हो व वायु निश्चल हो, ऐसे कर्म परन्तु हमारा वाक्य अन्यथा न होगा, ऐसा महादेवजी कहते हैं। आदि में सोलह अक्षरों से तीन गुणों के प्रयोग करके दिन रात्रि ये चलते हैं ॥ २२१-२२२ ॥

सुहृत्ज्ञान—

रौद्र श्वेतं तथा मैत्रं चार्विण्य चतुर्थकम् ।

पञ्चमं जयदेवं च षष्ठं वैरोचन तथा ॥ ८३३ ॥

तुल्य सप्तमञ्चैव ह्यष्टम चासिञ्जित्थम् ।

रावणं नवमं प्रोक्तं बालवं दशमं तथा ॥ ८२४ ॥

टीका—रोद्र १ श्वेत २ मेघ ३ चार्पट ४ ताम्र " ॥ ११०० ॥ १००० ॥
भिजिस् ८ रावण ६ घाल १० ॥ ८२२-८०४ ॥

विभीषण रुद्रसंज्ञं द्वादशाब्जं पुनश्च नमः ।

याम्यं त्रयोदश ज्ञेय सौम्य प्रान्त = ३०६ नक्षत्राणि ॥ ५८ ॥

भार्गव तिथिसूत्र च सविता पाठः - ३ ।

एतानि प्रोक्तव्यार्थेषु निर्योक्तानि यथावत् ।

टीका—विभाजन १६ नवम्बर १९५६

सौंदर्य रोज़र मार्ग : २०००

ଆବଦାନାମି : ୧୦୦୦, ୧୦୦୦, ୧୦୦୦

कार्य पत्र

संसाधन

ज्ञात्वैवं तुरदेवनाम्नि विदिते शस्त्रास्त्रकं साधयेत् ।

कार्यं स्यादभिजिन्मुहूर्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥ ८२८ ॥

टीका—रौद्र-मुहूर्त में घोर-कार्य शुभ है तथा श्वेत में हाथी-वन्धन शुभ है, मैत्र में स्नान दानादि श्रेष्ठ है तथा चार्वाट में स्तम्भन प्रतिष्ठादि शुभ हैं । और जयदेव में सब कार्य शुभ हैं तथा वैरोचन में राजगद्दी शुभ है । तुरदेव में शस्त्राभ्यास शुभ है तथा अभिजित् मुहूर्त में ग्रामप्रवेश सदा शुभ है ॥ ८२७-८२८ ॥

रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यं च बालवे ।

विभीषणे शुभं कार्यं यन्त्रकार्यं सुनन्दने ॥ ८२९ ॥

याम्ये भवेन्माराणकार्यमुग्रं

सौम्ये सभायामुपवेशनं स्यात् ।

स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्ते

सावितृनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥ ८३० ॥

टीका—रावण में वैरसाधन, बालव में युद्धकार्य, और विभीषण में शुभ कार्य तथा मन्वन में यन्त्र अर्थात् पेंच चलावे । याम्य में मारण कार्य करे, सौम्य में सभाप्रवेश करे तथा भार्गव में स्त्रीप्रसङ्ग करे और सावित्र मुहूर्त में विद्या पढ़े ॥ ८२९-८३० ॥

वारपरत्व से मुहूर्तोदय ज्ञान—

उदये रौद्रमादित्ये मैत्रं सोमे प्रकीर्तितम् ।

जयदेवं कुजे वारे तुरदेवं बुधे स्मृतम् ॥ ८३१ ॥

रावणं च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् ।

शनौ याम्यं मुहूर्तं च दिवारात्रिप्रयोजनः ॥ ८३२ ॥

दिनादौ यत्प्रवर्त्तते रात्र्यादौ तदनन्तरम् ।

दिनान्ते यः समायाति तस्मादेकान्तरेण वै ॥ ८३३ ॥

टीका—रविवार के उदय में प्रथम रौद्र-मुहूर्त का प्रवेश, सोमवार के उदय में मैत्रमुहूर्त, मङ्गलवार के उदय में जयदेव और बुधवार के उदय में तुरदेव होता है ।

भापाटीकासमेतः ।

वृद्धस्पति के उदय में रावण मुहूर्त, शुक्र के उदय में विभीषणसंलग्न और शनैश्चर के उदय में याभ्य मुहूर्त होता है । इसी क्रम से दिन रात्रि के क्रम से मुहूर्त वास जानिये । दिनमान में सोलह का भाग देना जो लघ्व मिले, वही मुहूर्त का प्रमाण जानिये । और दिनमान को साठ में घटा देना जो शेष रहे वही रात्रिमान है । उसमें सोलह का भाग देकर लघ्व मिले उसी के प्रमाण से रात्रि में भी सोलह मुहूर्त होते हैं । दिन रात्रि के प्रयोग से दिन के आदि में जो मुहूर्त हो उससे दूसरा रात्रि को होता है । और जो मुहूर्त दिन के अन्त में होता है वह एक मुहूर्त छोड़कर रात्रि के अन्त में होता है ॥ ८३१-८३३ ॥

गुणों का वास—

उरुसोमदिने सत्त्वं रजश्चाङ्गारके भृगौ ।

रवौ मन्दे बुधे वारे तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ ८३४ ॥

टीका—वृद्धस्पति और सोमवार के उदय में दो मुहूर्त तक सतो गुण का निवास, मङ्गल या शुक्र को दो मुहूर्त तक रजोगुण का वास होता है । तथा रविवार, मङ्गलवार और बुधवार को दो मुहूर्त तक तमोगुण का वास जानना चाहिये ॥ ८३४ ॥

गुणों के वर्ण—

सत्त्वं गौरं रजः श्याम तामस कृष्णमेव च ।

इमं वर्णं विजानोष्यात्सत्त्वादीनां यथोदितम् ॥ ८३५ ॥

टीका—सतो गुण गौर वर्णान्वित होता है । रजोगुण श्याम वर्णान्वित होता है । तामसगुण कृष्ण वर्णान्वित होता है । तमोगुण कृष्ण वर्णान्वित होता है । यथोदितम् यथा उक्तम् ॥ ८३५ ॥

गुणों का णम्—

सत्त्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसम्पत्तिम् ।

तमसा वेदमेवादि साधयेत्तमोऽपि ॥ ८३६ ॥

टीका—सतो गुण साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसम्पत्तिम् । तमोगुण वेदमेवादि साधयेत्तमोऽपि ॥ ८३६ ॥

अङ्कमुहूर्त—

तिथयः पक्षगुणिताः सप्तभिर्भाजिताश्च ताः ।

वाराः स्युर्वह्निगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः ।

चतुर्गुणानि भान्यङ्क (६) भाजितानि यथाक्रमम् ॥ ८३७ ॥

टीका—जिस तिथि में यात्रा करना चाहे उसे १५ से गुणा करके सात का भाग दे और जो वार हो उसे तीन से गुणा करके आठ का भाग दे और नक्षत्र को चार से गुणा करके ६ का भाग देना फल आगे लिखे मुताबिक कहें ॥ ८३७ ॥

फल—

पीडा स्यात्प्रथमे शून्ये मध्यशून्ये महद्भयम् ।

अन्त्यशून्ये तु मरणं त्र्यङ्के च विजयी भवेत् ॥ ८३८ ॥

टीका—प्रथमतिथि के भाग का शून्य बचे तो पीडा और वार के भाग में शून्य बचे तो बहुत भय हो, नक्षत्र के भाग में शून्य हो तो मरण हो और तीनों जगह अङ्क बचे तो विजय हो ॥ ८३८ ॥

भ्रमणाडल मुहूर्त—

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं सप्तभिर्भागमाहरेत् ।

त्रिपट्के भ्रमणं चैव द्विःसप्ते महदाडलम् ॥ ८३९ ॥

प्रथमं पञ्च चत्वारि आडलो नास्ति निश्चितम् ।

आडले ताडनं प्रोक्तं भ्रमणे कार्यनाशनम् ॥ ८४० ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर सात का भाग दे, ३।६ शेष बचे तो भ्रमण और २।७ शेष बचे तो महदाडल योग होता है और १।४।५ शेष बचे तो आडल नहीं होता आडल में ताडन और भ्रमण में कार्यनाश फल जानिये। इसे यात्रा में विचार करे ॥ ८३९-८४० ॥

हेवर मुहूर्त—

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं पक्षादितिथिवारयुक् ।

नवभिस्तु हरेद्भागं सप्तशेषे तु हेवरम् ॥ ८४१ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र पर्यन्त गिन के उसमें परिवा से तिथि की संख्या जो हो वह और बार सबको एक में मिला के नव का भाग देने से ७ शेष बचे तो हैबर योग होता है वह यात्रा में शुभ कहा है ॥ ८४१ ॥

घवाड मुहूर्त—

सूर्यभाद्रगणयेच्चान्द्रं त्रिगुणं तिथिमिश्रितम् ।

नवभिस्तु हरेद्भागं त्रीणि शेषं घवाडकम् ॥ ८४२ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर उसे तीन से गुणा कर तिथि मिलाय नव का भाग दे जो तीन बचे तो घवाडक मुहूर्त होता है ॥ ८४२ ॥

टेलक मुहूर्त—

सूर्यभाद्रगणयेच्चान्द्रं तिथिवारं च मिश्रितम् ।

सप्तभिस्तु हरेद्भागं नवशेषे तु टेलकम् ॥ ८४३ ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिन कर उसमें तिथि और बार जोड़ देना और ७ का भाग देना ६ शेष बचे तो टेलक मुहूर्त होता है ॥ ८४३ ॥

गौरव मुहूर्त—

सूर्यभाद्रगणयेच्चान्द्रं तिथिवारं च मिश्रितम् ।

अर्कसंख्यैर्हरेद्भागं नवशेषे तु गौरवम् ॥ ८४४ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा का नक्षत्र गिनकर उसमें तिथि बार जोड़ देना और १२ का भाग देना जो ६ शेष बचे तो गौरव मुहूर्त होता है ॥ ८४४ ॥

इनका फल—

प्रवेशे गौरवं दद्यान्निर्गमे हैबर तथा ।

तत्करे टेलकं दद्याद्घवाडं त्वर्कर्मसु ॥ ८४५ ॥

टीका—प्रवेश में गौरव मुहूर्त, यात्रा में हैबर मुहूर्त, त्वर्कर्म में टेलक मुहूर्त, तथा सब कार्यों में घवाड मुहूर्त देना ॥ ८४५ ॥

वार के अनुसार नक्षत्र—

गुरा शनौ रवौ भीमे नुनो वै दक्षिणः नक्षत्रः ।

अन्यवारसु वामन्तु स्वर्गं वै नुनः पश्चिमः ॥ ८४६ ॥

निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ।

यः स्वरः स च नासाग्रे योगिनां मतमीदृशम् ॥ ८४७ ॥

टीका—गुरु, शनि, रवि और भौम इन चारों चारों में दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करने में शुभ हो और सोम, बुध और शुक्र इन चारों में वामस्वर चले तो गमन में श्रेष्ठ है ऐसा स्वरविचार योगियों के मत में कहा है ॥ ८४६-८४७ ॥

वारानुसार छाया-शकुन—

अष्टौ पादा बुधे स्युर्नव धगणिते सप्त जीवे पदानि ।

ज्ञेयं त्रैकादशार्कं शनिशशिवृषु प्रोक्तमर्थे चतुष्कम् ॥

तस्मिन्काले सुहूर्ते सकलगुणयुते कार्यसिद्धिः शुभोक्ता ।

नास्मिन्पञ्चाङ्गशुद्धिर्न खलु शशिवलं भाषितं गर्गमुख्यैः ॥ ८४८ ॥

टीका—बुधवार में आठ पाद (पैर) अपनी छाया हो तो गमन करै, भौम वार को नव पाद हो तो गमन करै, गुरुवार को ७ हो तो, रविवारको ११ हो तो गमन करे, शनि सोम और शुक्र में चार पाद हो तो गमन करे इस सर्वगुणयुक्त सुहूर्त में उत्तम कार्य की सिद्धि कहा है । इसमें चन्द्रवल, पञ्चाङ्गशुद्धि आदि न देखे यह गर्ग आदि मुनियों ने कहा है ॥ ८४८ ॥

काकशब्द शकुन का फल—

काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु मापयेत् ।

त्रयोदशयुतां कृत्वा ष्भिर्भागं समाहरेत् ॥ ८४९ ॥

लाभः खेदस्तथा सौख्यं भोजनं च तथागमः ।

अशुभं च क्रमेणैव गर्गस्य वचनं यथा ॥ ८५० ॥

टीका—काक का शब्द सुन के अपने पैरों की छाया नाप के १३ और मिला के ६ का भाग दे जो शेष बचे उसका फल—१ वचे तो लाभ, २ में खेद, ३ में सुख, ४ में भोजन, ५ में धनप्राप्ति और पूरा भाग लग जाय तो अशुभ हो यह गर्ग मुनि का वचन है ॥ ८४९-८५० ॥

काकशब्द शकुनान्तर—

काकस्य वचनं श्रुत्वा तृणमुत्थापयेत् कुतः ।

त्रयोदशयुतं कृत्वा एकहीनं तु कास्येत् ।

सप्तभिस्तु हरेद् भागं शेषाङ्के फलमादिशेत् ॥ ८५१ ॥

टीका—काक के शब्द को सुनकर पृथिवी पर से तृण उठाकर जितना षड्गुल हो उसमें १३ मिला कर एक हीन करे और ७ का भाग दे जो शेष बचे उसका नोचे लिये अनुसार फल कहना ॥ ८५१ ॥

फल—

लाभो नष्टः प्रियं सौख्यं भोजनं प्रियदर्शनम् ।

कलहो मरणं चैव फलन्येतानि निर्दिशेत् ॥ ८५२ ॥

एक शेष का फल लाभ, दो शेष बचे तो नाश तीन शेष बचे तो प्रिय का सुख हो, चार शेष बचे तो उत्तम भोजन मिले, पांच शेष बचे तो प्रिय दर्शन हो, ६ शेष बचे तो कलह झगडा हो और सात शेष बचे तो मरण फल कहना ॥ ८५२ ॥

पिङ्गल शब्द शकुन—

उल्लासः किल्बिले चैव चिल्बिल्यां भोजनं तथा ।

वन्धनं सिद्धिखिद्यौ स्यात्कुर्कुर्शब्दे महद्भयम् ॥ ८५३ ॥

टीका—जो कि किल्बिल शब्द हो तो उल्लास (आनन्द) होता है और चिल्बिल शब्द हो तो भोजनप्राप्ति होती है और सिद्धि खिद्य शब्द हो तो वन्धन और कुर्कुर्शब्द हो तो महाभय होता है ॥ ८५३ ॥

छिक्वानुसार पादच्छाया शकुन—

बुधश्छिक्वास्वरं श्रुत्वा पादच्छायां च कारयेत् ।

त्रयोदशयुतां कृत्वा चाष्टमिर्भागमाहरेत् ॥ ८५४ ॥

लाभः सिद्धिर्हानिश्चोर्ध्वं भयं श्रीर्हानिःपश्चिमं ।

क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गोणं च पक्ष्यदिनम् ॥ ८५५ ॥

टीका--छौंक का शब्द सुनकर अपने पैर की छाया नापकर १३ मिलावे आठ का भाग दे, शेष का फल क्रम से यह है--१ में लाभ, २ में सिद्धि, ३ में हानि, ४ में शोक, ५ में भय, ६ में लक्ष्मी, ७ में दुःख और ८ में निष्फल, ऐसा गर्गमुनि ने कहा है ॥ ८५४-८५५ ॥

छिका शकुन-

छिकाप्रश्नं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशुभं फलम् ।

आग्नेय्यां शोकदुःखं स्याद्वरिष्ठं दक्षिणे तथा ॥ ८५६ ॥

नैऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टभक्षणम् ।

वायव्ये धनलाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ॥ ८५७ ॥

ईशान्यां च शुभं ज्ञेयमात्मछिका महद्भयम् ।

ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ॥ ८५८ ॥

आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने ।

वामाङ्गे पृष्ठतश्चैव पट् छिकाश्च शुभावहाः ॥ ८५९ ॥

टीका--पूचादि क्रम से दिशाओं में होने वाले छौंक का फल-पूर्व की छौंक अशुभ, आग्नेय की शोक दुःख, दक्षिण की अरिष्ट, नैऋत्य की शुभ, पश्चिम की मिष्टभक्षण, वायव्य की धन दायक, उत्तर की कलहकारक, ईशान्य की शुभ दायक और अपनी छौंक बहुत भय देती है। ऊपर की छौंक शुभ, मध्य की छौंक में बड़ा भय होता है। और आसन में, सोने में, भोजन में, बाईं ओर या पीछे हो तो ये ६ शुभ जानिये ॥ ८५६-८५९ ॥

खज्जन दर्शन-

वित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धिमनुलां शक्रे हुताशे भयं

याम्ये मित्रवधः क्षयश्च निऋते लाभः समुद्रालये ।

वायव्ये वरमिष्टमन्नमशनं सौम्येऽर्थलाभस्तथा

ईशान्ये मरणां ध्रुवं निगदितं दिग्लक्षणां खज्जने ॥ ८६० ॥

टीका--आकाश में खज्जरोट देखो तो धनप्राप्ति, पूर्व में कार्य सिद्धि हो, आग्नेय में अग्नि का भय हो, दक्षिण में मित्र का वध हो, नैऋत्य में क्षय, पश्चिम में दर्शन

हो तो लाभ, वायव्य में सुन्दर मीठा भोजन, उत्तर में धनप्राप्ति, ईशान में मरण, ऐसा राजरीट के दिशाओं में दर्शन का फल है ॥ ८६० ॥

अन्यत्र—

अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु

राज्यप्रदः कुशलदः शुचिराद्रिनेषु ।

भस्मारिथकेशतुपचर्मनखेषु दृष्टः

दुःखं ददाति बहुणः खलु खञ्जरीटः ॥ ८६१ ॥

टीका—रुमल के फूल पर, गो पर, हाथी पर, घोड़ा पर, बड़े खर्ष पर, बैठा खञ्जरीट देखै तो राज्य प्राप्ति । पवित्र भूमि में देखै तो कुशल । भस्म, दाढ़, केश, तुप चर्म, नख इत्यादि पर देखै तो निश्चय बहुत दुःख मिलै । यह फल विशेष करके हरतार्क में प्रथम दर्शन का है ॥ ८६१ ॥

पल्ली का पतन और सरट का आरोहण—

राज्यं तु शिरसि ज्ञेयं ललाटे बन्धुदर्शनम् ।

भ्रूमध्ये राजसमानमुत्तरोष्ठे धनज्ञयम् ॥ ८६२ ॥

अधरोष्ठे धनैश्वर्यं नासान्ते व्याधिपिडनम् ।

आयुष्यं दक्षिणे कर्णे बहुलाभस्तु वामके ॥ ८६३ ॥

अक्षस्तु बन्धनं ज्ञेयं भुजे भूपतिलुप्यता ।

राजक्षोभं तथा वामे कण्ठे शत्रुविनाशनम् ॥ ८६४ ॥

स्तनद्वये च दुर्भाग्यमुदरे मराडनं शुभम् ।

प्रजानाशः पृष्ठदेशे जातुजङ्घे शुभावहम् ॥ ८६५ ॥

करद्वये वस्त्रलाभः रक्त्वाविजयी भवेत् ।

नाभौ बहुधनं प्रोक्तमृषीर्यैव हयादिकम् ॥ ८६६ ॥

दक्षिणे मणिवन्धे च मनस्तापो धनज्ञयः ।

मणिवन्धे तथा वामे कीर्तिर्दृष्टि धनप्रदम् ॥ ८६७ ॥

नखेषु धनलार्भं च वस्त्रे मिष्टान्नभोजनम् ।

गुल्फयोर्विन्धनं ज्ञेयं केशान्ते मरणां ध्रुवम् ॥ ८६ ॥

अध्वा तु दक्षिणे पादे वामे बन्धुविनाशनम् ।

स्त्रीनाशः स्यात्पादमध्ये पादान्ते मरणां भवेत् ॥ ८६ ॥

पत्न्याः प्रपतने ज्ञेयं सरसस्याधिरोहणं ।

यात्रोद्यतमनुप्यस्यैतच्छुभागुमसूत्रकम् ॥ ८७ ॥

तिलमापादिदानं च स्नात्वा देयं द्विजन्तये ।

पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन्मन्त्रं षडक्षरम् ॥ ८७ ॥

शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवर्हणम् ।

शिवालये प्रदद्याद् दीपं दोषोपशान्तये ॥ ८७ ॥

टीका—मनुष्यों के गमन-समय में अन्न पर पत्नी अथवा ज्विपत्नी गिरे अथवा गिरगिट चढ़े तो शुभाशुभ सूचक फल स्थानानुसार इस प्रकार फलना ॥

१ शिर पर राज्य प्राप्ति

१६ जानुओं पर शुभ

२ ललाट पर बन्धुदर्शन

१७ जंघाओं पर शुभ

३ भ्रुकुटी पर राज्यसम्मान

१८ हाथों पर वखलाम

४ उत्तरोष्ठ पर धनदाय

१९ कन्धो पर विजय

५ अधरोष्ठ पर घन और ऐश्वर्य

२० नाभि पर बहुधन

६ नासिका पर व्याधिपोड़ा

२१ उरु पर मोड़ा आदि की सवारी

७ दक्षिण कान पर आयुष्य

२२ दाहिना पहुँचा पर धनदाय

८ बायें कान पर बहुत लाभ

२३ वाम मणिकण्ड पर कीर्ति

९ नेत्रों पर बन्धन

२४ गरा पर धनलाम

१० घाँह पर राजासन

२५ मुरा पर मिष्टान्न-भोजन

११ घाम बाहु पर राज्यभय

२६ टमनों (पैर की गाँठ) पर बन्धन

१२ कण्ठ पर शत्रुनाश

२७ केशों पर मरण

१३ स्तनों पर दुर्भाग्य

२८ दाहिने पाँव पर मार्ग चलमा

१४ उदर पर शुभमण्डन

२९ वाम पाँव पर बन्धुनाश

१५ पृष्ठ पर बुद्धिनाश

३० पावमध्य पर स्त्रीनाश

टीका—छिपकली अङ्गों पर गिरे अथवा गिरगिट चढ़े तो सचैल रतान करके तिल और उड़द ब्राह्मण को दान दे और शिव को नमस्कार करके १०० अथवा एक हजार शिव मन्त्र जपे और शिव के मन्दिर में घृत का दीपक दोष की शान्ति के लिये बाल कर रहे ॥ ८६२-८७२ ॥

अङ्गस्फुरण—

मनुस्वाच—ब्रूहि मे त्वं निमित्तानि अशुभानि शुभानि च ।

सर्वधर्मभृतां श्रेष्ठ त्वं हि सर्व विबुद्धयसे ॥ ८७३ ॥

टीका—मनुजी मत्स्य भगवान् के प्रति प्रश्न करते हैं कि हे धर्म धारियों में श्रेष्ठ ! अङ्गस्फुरण का शुभाशुभ फल वर्णन कीजिए ॥ ८७३ ॥

अङ्गस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत् ।

अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च ॥ ८७४ ॥

टीका—अङ्गस्फुरण दक्षिणभाग में शुभ और वामभाग वा पृष्ठभाग वा हृदय में अशुभ कहा है ॥ ८७४ ॥

अङ्गानां स्पन्दनं चैव शुभाशुभविचेष्टितम् ।

तन्मे विस्तरतो ब्रूहि येन स्यात्तद्विधो भुवि ॥ ८७५ ॥

टीका—मनु प्रश्न करते हैं कि, अङ्ग के स्थान के स्फुरण का शुभाशुभ फल विस्तर विस्तार सहित वर्णन कीजिये ॥ ८७५ ॥

मत्स्य उवाच—

पृथ्वीलाभः भवेन्मृध्नि ललाटे रविनन्दन ।

स्थानवृद्धिः समायाति भ्रून्सोः प्रियनङ्गस्य ॥ ८७६ ॥

भृत्यलब्धिश्चाग्निदेशे दृगुपान्तं धनानमः ।

उत्क्राष्टो पगमे मध्ये दृष्ट राजन् दिवन्तः ॥ ८७७ ॥

दृग्बन्धने संज्ञके च जयः गर्भाश्रमवाप्तवान् ।

योपि ह्यसौष्वाङ्गदेने अङ्गान्ते निवृत्तिः ॥ ८७८ ॥

नासिकायां प्रीतिमौल्यं प्रियाप्तिरधमोष्ठयोः ।

कण्ठे तु भोग्यलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥ ८७१ ॥

सुहृच्छ्रेष्ठश्च बाहुभ्यां हस्ते चैव धनागमः ।

पृष्ठे पराजयः सन्धौ जयो वक्षःस्थले भवेत् ॥ ८८० ॥

कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्विष्टा स्त्रियाः प्रजननं भगे ।

स्थानभ्रंशो नाभिदेशे यन्त्रे चैव धनागमः ॥ ८८१ ॥

जानुसन्धौ परेः पन्धिर्वलवद्विभवेन्नृप ।

एकदेशे भवेत्स्वामी जङ्घाभ्यां रविनन्दन ॥ ८८२ ॥

उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां प्रस्फुरणो नृप ।

अलाभश्चाध्वगमनं भवेत्पादतले नृप ॥ ८८३ ॥

१ मस्तक स्फुरण से पृथ्वीलाभ हो ।

२ तलाट्टरफुरण से स्थान की वृद्धि ।

३ ध्रुवुद्धि में प्रियदर्शन ।

४ नेत्रों में भुन्यलाभ ।

५ नेत्रों की कोरों में धनप्राप्ति ।

६ कण्ठमध्य में राज्यप्राप्ति ।

७ हृदयस्थान में युद्ध में जाने से जय ।

८ अपाङ्गदेश में स्त्रीलाभ ।

९ कर्णान्त में प्रियमित्र की मुक्ति ।

१० नासिका में प्रीति सुख ।

११ अधरोष्ठ में प्रियवस्तु की प्राप्ति ।

१२ कण्ठ में पशुप्राप्ति ।

१३ कन्धों में भोगवृद्धिप्राप्ति ।

१४ दोनों बाहु में मित्र-मिलाप ।

१५ दोनों हाथों में धनप्राप्ति ।

१६ पृष्ठ में दुस्तर से पराजय ।

१७ उरस्थान में धन प्राप्ति ।

- १८ कुत्ति में जयप्राप्ति
- १९ शिश्न इन्द्रिय में स्त्रीप्राप्ति ।
- २० नाभि में रथानभ्रंश ।
- २१ श्रोतों में धनप्राप्ति ।
- २२ जानुसन्धि में बलवान् शत्रुओं से सन्धि ।
- २३ जघा में एक देश का स्वामी हो ।
- २४ पादों में उत्तम स्थान की प्राप्ति ।
- २५ तलुओं में अलाभ और गमन ।

स्त्रीयों का अङ्गस्फुरण—

लाञ्छनं पीठकं चैव ज्ञेयं स्फुरणवत्तथा ।

विपर्ययेण विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः ॥ ८८४ ॥

दक्षिणोऽपि प्रशस्तेऽङ्गे प्रशस्तं स्याद्विशेषतः ।

टीका—स्त्रियों का अङ्गस्फुरण भूमध्य और पृष्ठ में हो तो पुरुषों की के समान का करता है परन्तु और सब अङ्ग पुरुषोंसे विपरीत अर्थात् वाम अङ्ग स्त्रिया का गुण कहा है ॥ ८८४ ॥

अन्यथासिद्धिर्यत्नोऽस्य फलस्य शस्तस्य च निन्दितस्य ।

अनिष्टनिर्दोषमे द्विजानां कार्यं पुर्वार्णे तु तर्पणं स्यात् ॥ ८८५ ॥

टीका—अनिष्ट फला के निवारण हेतु ब्राह्मणों को तृप्त करना, पुर्वार्णिक —

वा अङ्गस्फुरण और दुःस्वप्न का दोष जाता रहे ॥ ८८५ ॥

नेत्रस्फुरण—

नेत्रयोर्ध्वं हरति सखल मानस दुःखजाल

नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नामिवान्ते च सुखम् ।

नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत्सर्गं भङ्गहेतु—

वर्षे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे नेत्रेति ॥ ८८६ ॥

टीका—नेत्रों के ऊर्ध्वप्रातः स्फुरण धन की प्राप्ति का हेतु होता है और दक्षिणे नेत्र के अधोप्रातः स्फुरण दुःख की प्राप्ति का हेतु होता है ।

नेत्रों के अधोप्रातः स्फुरण धन की प्राप्ति का हेतु होता है और दक्षिणे नेत्र के अधोप्रातः स्फुरण दुःख की प्राप्ति का हेतु होता है ।

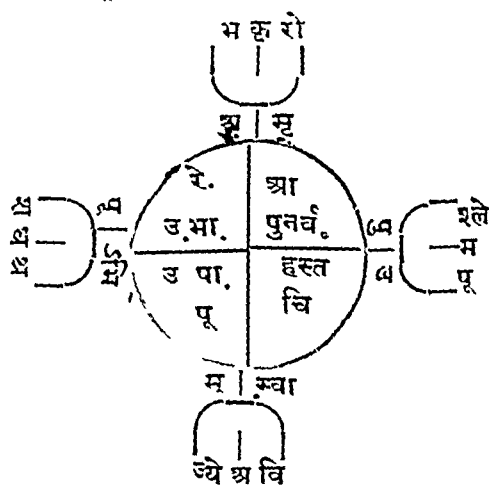
पलक में स्फुरण हो तो युद्ध में बराबर पराजय हो । ये सवफल वामनेत्र का स्त्रियों के और दक्षिण नेत्र का पुरुषों के विचार करना (उसके विपरीत स्त्रियों के विचार जानना) ॥८८६॥

त्रिशूलयन्त्र—

रोगिणश्च कुजाद्यर्क्षं दिनाद्यर्क्षं च युद्धतः ।

कृत्तिकागमने दद्यादन्यत्र रविदीयते (?) ॥ ८८७॥

टीका—रोगों के प्रश्न का त्रिशूल मध्याग्र में जिस नक्षत्र में मङ्गल हो तिसको धर और चन्द्रमा जिस स्थान विषे यन्त्र में हो सो फल देवे इस प्रमाण से आगे फल जानिये । युद्ध में जाना हो तो दिवस नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक गिने और गमन करना हो तो कृत्तिका से दिवस नक्षत्र तक गिने और दूसरे कर्मों में सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक इस क्रम से जानना ॥ ८८७ ॥



त्रिशूलाग्रे भवेन्सृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके ।

लाभं क्षेमं जयारोग्यं चन्द्रगर्भेषु सम्मतम् ॥ ८८८ ॥

टीका—त्रिशूल के अग्रभाग में दिवस नक्षत्र हो तो सृत्यु और बाहिरी अष्टक में हो तो मध्यम और मध्याष्टक में हो तो लाभ क्षेम जय आरोग्य ये सब फल जानिये ॥ ८८८ ॥

गमन की लग्न—

चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ।

लग्ने स्थिरे न गन्तव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ॥ ८८९ ॥

टीका—मेघ कर्क तुला मकर ये चर लग्न और मिथुन कन्या धन मीन ये द्विस्वभाव लग्न इन आठों में गमन करना शुभ फलदायक है और बाकी चार लग्न स्थिर हैं उनमें गमन न करे ॥ ८८६ ॥

दूसरा प्रकार—

लग्ने कामुकमेषतौलिगमने कार्य विलम्बान्मृणां

पञ्चत्वं मकरे तथैव च घटे तद्वत्फलं वृश्चिके ॥

सिंहे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धि लभेत्

कन्यामीनगतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नं वसु ॥ ८८७ ॥

टीका—धन मेघ तुला इन तीनों लग्नों में गमन करे तो कार्य में विलम्ब हो और फिर कुम्भ वृश्चिक ये तीनों लग्न मृत्युकारक हैं, सिंह कर्क वृष इन तीनों में कार्य सिद्धि हो, कन्या मीन मिथुन ये लग्न शुभ अन्न, सोरप और धन के दापक मानना ॥ ८८७ ॥

द्वादश स्थानों के अनुसार गमनलग्न में ग्रहबल—

प्रथमस्थान—

जन्मस्थं चाष्टमं त्याज्यं लग्नं द्वादशमेव च ।

ग्रहाणां च बलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः ॥ ८८८ ॥

टीका—लग्न, अष्टम और द्वादश में पापग्रह को छोड़ कर ग्रहबल देख कर गमन करे तो दिग्विजय और कार्य सिद्धि हो ॥ ८८८ ॥

स्थाने यदा स्युर्गुरुपौग्यशुक्राः सिध्यन्ति कार्याणि च पदमेति ।

राज्ञः पदं वा सुखदेशलाभं मासस्य मध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥ ८८९ ॥

टीका—लग्न में गुरु अथवा शुभ ग्रह हो तो पाप दिवस में सुख, पद लाभ हो राज्यपद सुख किया देशलाभ हो ॥ ८८९ ॥

दूसरे स्थान के पर—

जीवो बुधो वा भृगुनन्दनो वा स्थाने द्वितीये गमनस्य जने ।

सुखलाभं च उरुलाभं मानस्य मध्ये न वदन्ति ॥ ८९० ॥

टीका—दूसरे स्थान में गुरु बुध अथवा शुक हो तो वस्त्र और नुस्ख लाभ, एक मास के मध्य में हो, चौदहवें दिवस में नहीं हो ॥ ८६३ ॥

क्रूरा धनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्च केतुस्त्रिभिरेव मासैः ।
वित्तस्य नाशं च ददाति मृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदन्ति ॥ ८६४ ॥

टीका—दूसरे स्थान में रवि अथवा राहु मङ्गल शनि केतु इनमें से कोई भी क्रूर ग्रह हो तो तीन मास में मृत्यु और वित्तनाश हो, यह मुनीश्वरों ने सत्य वाक्य कहा है ॥ ८६४ ॥

तृतीय स्थान के फल—

स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ च सोमस्य सृनुश्च निशापतिश्च ।
करोति कार्यं सफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥ ८६५ ॥

टीका—तृतीय स्थान में गुरु शुक अथवा चन्द्र बुध हों तो दो पक्ष अथवा तीन दिन में कार्यसिद्धि हो ॥ ८६५ ॥

चतुर्थ स्थान—

क्रूराश्चतुर्थे गमने यदा तु न स्युश्च शेषाः शुभदा हि कार्ये ।
तत्रापि दैवेन भवेच्च सिद्धिर्मासत्रयेणापि दशाहमध्ये ॥ ८६६ ॥

टीका—यदि यात्रा के समय क्रूर ग्रह जो कहे हैं उनमें से कोई ग्रह चतुर्थ स्थान में हो उसे छोड़ कर शेष ग्रह शुभ हों तथापि दैवयोग करके तीन मास या दश दिन के मध्य में कार्यसिद्धि हो ॥ ८६६ ॥

पञ्चम स्थान—

गुरुभृगुश्चन्द्रबुधौ यदा स्याच्छुभे च लग्ने तु सुते च युक्ताः ।
कुर्वन्ति कार्यस्य च सिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापि वदन्ति सत्यम् ॥ ८६७ ॥

टीका—गुरु शुक चन्द्र और बुध ये चारों ग्रह पञ्चम स्थान में हों तो शुभ हो और दो मास में अभीष्टकार्य की सिद्धि हो ॥ ८६७ ॥

षष्ठ स्थान—

जीवश्च शुकश्च बुधश्च पष्ठे करोति यात्रां सफलां विलम्बात् ।
पक्षद्वयेनापि वदन्ति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सवलश्च चन्द्रः ॥ ८६८ ॥

टीका—गुरु शुक्र और बुध ये ग्रह पृष्ठस्थान में हों तो यात्रा करने से कार्य सफल और मृग नक्षत्र का चन्द्रमा उस स्थान में हो तो सकल कार्य एक मास में सिद्ध हो ॥ ८६८ ॥

सप्तम स्थान—

चेत्सप्तमस्था गुरुसोमसौम्याः कुर्वन्ति यात्राविजयं नृपाणां ।
सर्वे नृपास्तस्य भवन्ति वश्या मासद्वयेनापि च पञ्चभिर्दिनैः ॥ ८६९ ॥

टीका—गुरु, सोम और बुध सप्तम स्थान में हों तो यात्रा में विजय हो और सब राजा दो मास वा पांच दिवस में उस राजा के वशीभूत हों ॥ ८६९ ॥

अष्टम स्थान—

क्रूराश्च सर्वे यदि लग्नकाले मृत्युस्थिता मृत्युकरा भवन्ति ।
सौम्यो गुरुर्वा भृगुनन्दनो वा दीर्घायुषं मृत्युकरश्च चन्द्रः ॥ ८७० ॥

टीका—यदि लग्न से अष्टम स्थान में क्रूर ग्रह अर्थात् शनि रवि भौम गुरु येतु हों तो मृत्यु कारक और ये न हों सौम्यग्रह हों तो धानु की मृत्ति परन्तु चन्द्र तो मृत्यु-कारक जानना ॥ ८७० ॥

नवम स्थान—

स्थिता यदि भवन्ति हि पापखेदाः प्रयाणकाले च तथैव चन्द्रमाः ।
जयं वै सखले च चन्द्रे मासत्रयेणापि दिनैश्चतुर्भिः ॥ ८७१ ॥

टीका—यदि यात्राकाल में नवम स्थान में पापग्रह तथा चन्द्रमा हो और चन्द्रमा हो तो तीन मास और चार दिन में कार्यसिद्धि हो ॥ ८७१ ॥

स्थितौ वा यदि जीवशुक्रौ सौम्य सूर्यदि लग्नकाले ।
ने चरे वा यदि वा स्थिरे वा वार्षिक्यं सिद्धिश्च गच्छेत् ॥ ८७२ ॥

टीका—धर्मस्थान में शुक्र, शुक्र और सौम्यग्रह अर्थात् बुध येतु न हों तो वार्षिक्य सिद्धि हो तो वार्षिक्य और लाभ हो ॥ ८७२ ॥

दशम स्थान—

स्थिताः पापखेदास्तु साग्याः कुर्वन्ति कार्यं मन्त्रिचक्षणम् ।
ने चरे वा यदि वा स्थिरे वा मासत्रयेणापि च वैद्यमानम् ॥ ८७३ ॥

टीका—दूसरे स्थान में गुरु बुध अथवा शुक्र हों तो वस्त्र और तुरङ्ग लाभ, एक मास के मध्य में हो, चौदहवें दिवस में नहीं हो ॥ ८१३ ॥

क्रूरा धनस्या रविराहुभौमाः सौरिश्च केतुन्निभिरिव मासैः ।

वित्तस्य नाशं च ददाति मृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदन्ति ॥ ८१४ ॥

टीका—दूसरे स्थान में रवि अथवा राहु मङ्गल शनि केतु इनमें से कोई भी क्रूर ग्रह हो तो तीन मास में मृत्यु और वित्तनाश हो, यह मुनीश्वरों ने सत्य वाक्य कहा है ॥ ८१४ ॥

तृतीय स्थान के फल—

स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ च सोमस्य मृत्युश्च निशापतिश्च ।

करोति कार्यं सफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥ ८१५ ॥

टीका—तृतीय स्थान में गुरु शुक्र अथवा चन्द्र बुध हों तो दो पक्ष अथवा तीन दिन में कार्यसिद्धि हो ॥ ८१५ ॥

चतुर्थ स्थान—

क्रूराश्चतुर्थे गमने यदा तु न स्युश्च शेषाः शुभदा हि कार्ये ।

तत्रापि दैवेन भवेच्च सिद्धिर्मासत्रयेणापि दशाहमध्ये ॥ ८१६ ॥

टीका—यदि यात्रा के समय क्रूर ग्रह जो कहे हैं उनमें से कोई ग्रह चतुर्थ स्थान में हो उसे छोड़ कर शेष ग्रह शुभ हों तथापि दैवयोग करके तीन मास या दश दिन के मध्य में कार्यसिद्धि हो ॥ ८१६ ॥

पञ्चम स्थान—

गुरुभृगुश्चन्द्रबुधौ यदा स्याच्छुभे च लग्ने तु सुते च युक्ताः ।

कुर्वन्ति कार्यस्य च सिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापि वदन्ति सत्यम् ॥ ८१७ ॥

टीका—गुरु शुक्र चन्द्र और बुध ये चारों ग्रह पञ्चम स्थान में हों तो शुभ हो और दो मास में अभीष्टकार्य की सिद्धि हो ॥ ८१७ ॥

षष्ठ स्थान—

जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च षष्ठे करोति यात्रां सफलां विलग्नात् ।

पक्षद्वयेनापि वदन्ति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्च चन्द्रः ॥ ८१८ ॥

तारक

टीका—गुरु शुक्र और बुध ये ग्रह पृष्ठस्थान में हैं तो यात्रा करने से कार्य सकल और मृग नक्षत्र का चन्द्रमा उस स्थान में हो तो सकल कार्य एक मास में सिद्ध हो ॥ ८६८ ॥

सप्तम स्थान—

चेतसप्तमस्था गुरुसोमसौम्याः कुर्वन्ति यात्राविजयं नृपाणाम् ।

सर्वे नृपास्तस्य भवन्ति वश्या मासद्वयेनापि च पञ्चभिर्दिनैः ॥ ८६९ ॥

टीका—गुरु, सोम और बुध सप्तम स्थान में हैं तो यात्रा में विजय हो और सब राजा दो मास वा पांच दिवस में उस राजा के वशीभूत हैं ॥ ८६९ ॥

अष्टम स्थान—

कूराश्व सर्वे यदि लग्नकाले मृत्युस्थिता मृत्युकरा भवन्ति ।

सौम्यो गुरुर्वा भृगुनन्दनो वा दीर्घायुषं मृत्युकरश्च चन्द्रः ॥ ८७० ॥

टीका—यदि लग्न से अष्टम स्थान में कूराश्व अर्थात् शनि रवि सोम राह ये वे हैं तो मृत्यु कारक और ये न हों सौम्यग्रह हैं तो प्रायः जीवित रहेंगे तो मृत्यु-कारक जानना ॥ ८७० ॥

नवम स्थान—

धर्मस्थिता यदि भवन्ति हि पापखेटाः प्रयाणकाले च तर्ह्येव चन्द्रमा ।

तदा जयं वै सखले च चन्द्रे मासत्रयेणापि दिनेष्वप्युद्भिः ॥ ८७१ ॥

टीका—यदि यात्राकाल में नवम स्थान में पापखेटा अर्थात् शनि रवि सोम राह ये सबल हो तो तीन मास और चार दिन में कार्य सिद्ध हो ॥ ८७१ ॥

धर्मस्थितौ वा यदि जीवशुक्रौ नोत्तम्य मृत्युर्दि लग्नकाले ।

लग्ने चरे वा यदि वा शिघ्रे वा कार्यं न सिद्धिरित्युक्तं ॥ ८७२ ॥

टीका—धर्मस्थान में शुक्र शुभ और शिघ्रकारक अर्थात् बुध राह ये सबल स्थित हो तो कार्य सिद्ध हो ॥ ८७२ ॥

तर्ह्येव

कर्मस्थिताः पापखेटास्तु मासत्रयेण च कार्यं न सिद्धिरिति ।

लग्ने चरे वा यदि वा शिघ्रे वा कार्यं न सिद्धिरिति ॥ ८७३ ॥

टीका—दशमस्थान में शनि को छोड़ कर अन्य पापग्रह हों और सौम्य ग्रह चर
अथवा स्थिर लग्न में हों तो तीन मास में अथवा एक मास में कार्यसिद्धि हो ॥ ६०३ ॥

लाभस्थान—

लाभस्थितौ गुरुबुधौ भृगुनन्दनो वा क्रूराश्च सर्व शशिनैव युक्ताः ।
सद्यः फलाप्तिश्च भवेत्प्रयातुः पञ्चैकमध्ये दिवसत्रये वा ॥ ६०४ ॥

टीका—एकादश स्थान में गुरु बुध अथवा शुक्र हो और चन्द्र सहित समस्त पाप-
ग्रह हों तो यात्रा करने वाले को तत्काल कार्यसिद्धि हो अथवा १ पक्ष के अन्दर या
तीन दिन में कार्यसिद्धि हो ॥ ६०४ ॥

व्ययस्थान—

सर्वे शुभा द्वादशसंस्थिताश्च यात्रा भवेत्तत्र विचित्रलाभः ।
पापाश्च सर्वे व्ययदा भवन्ति यात्राफलं गर्गमुनिप्रणीतम् ॥ ६०५ ॥

टीका—द्वादश स्थानों में सर्वग्रह शुभ हों तो विचित्र लाभ हो और पापग्रह हों
तो व्ययकारक जानिये यह यात्राफल गर्गमुनि का कहा हुआ है ॥ ६०५ ॥

मुमुहूर्त में स्वयं जाना न होनेपर प्रस्थान रखना—

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम् ।

विप्रादिक्रमतः सर्वं स्वर्णधान्याम्बरादिकम् ॥ ६०६ ॥

टीका—मुहूर्त के समय जो किसी कार्य चर से आप न जा सके तो प्रस्थान करना
योग्य है उसकी विधि ब्राह्मणादि के अनुसार कहते हैं—ब्राह्मण यज्ञोपवीत का और
क्षत्रिय शस्त्र का, वैश्य मधु का और गृध्र फल का प्रस्थान करै इस क्रम से जानिये ।
और सुवर्ण पत्र धान्य सबों को युक्त है ॥ ६०६ ॥

प्रस्थान कितने दिवस तक उपयोगी होता है—

राजा दशाहं पञ्चाहमन्यो वै प्रस्थितो वसेत् ।

अङ्गप्रस्थानसम्पूर्णा वस्तुप्रस्थानकेऽर्द्धकम् ॥ ६०७ ॥

टीका—राजाओं को प्रस्थान करने पर दश दिवस, औरों को पाँच दिवस तक
मुहूर्त उपयोगी रहता है इन दिनों के बाद फिर न वसे। वस्तु के प्रस्थान में मुहूर्त का
आधा फल जानिये और अङ्ग के प्रस्थान में पूर्ण फल जानिये ॥ ६०७ ॥

प्रस्थान के स्थान का विचार—

गेहाद्गेहान्तरं गर्गः सीम्नः सीमान्तरं भृगुः ।

वाणक्षेपं भरद्वाजो वसिष्ठो नगराद्बहिः ।

प्रस्थानेऽपि कृते नेयान्महादोषान्विते दिने ॥ १०८ ॥

टीका—गर्गजी के मत से दुसरे घर में भृगु के मत से सीमा के बाहर तथा भरद्वाज के मत से वाण के पतनस्थान, अर्थात् जितना तीर जाता है और वसिष्ठ के मत से नगर के बाहर प्रस्थान करै। उस प्रस्थित स्थान से भी महा दोष युक्त देवस में यात्रा न करै ॥ १०८ ॥

प्रस्थान दिवस में वर्ज्य पदार्थ—

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडं द्यूताश्रुदुग्धासवं

क्षाराभ्यंगभयासिताम्बरवमिस्तैलं वट्टज्जेद्गमे ।

क्षौरक्षौररतीः क्रमात्त्रिशरसप्ताहं परं तद्दिने

रोगस्त्र्यार्तवकं सितान्यतिलकं प्रस्थानकेऽपीति च ॥ १०९ ॥

टीका—क्रोध क्षौर स्त्रीसंग परिश्रम मांस गुड़ प्लूत रोदन दूध मद्य क्षार अमृत विषयक भय नील वस्त्र वमन तैल कटुपदार्थ इतनी वस्तु प्रस्थान दिन में वर्जित तिनमें दूध क्षौर स्त्रीसंग ये क्रम से १।५।७ दिवस प्रस्थान दिन से पहिले वर्जित। शेष और कही हुई वस्तु केवल प्रस्थान दिन में वर्जित है और इतने के लिए रोग रक्त क्षुण्ण वर्ण आदि तिलक और रत्नी के वस्तु विषयक, रोग दिन से पहिले प्रस्थान के दिन वर्जित है ॥ १०९ ॥

टीका—इन्धन भस्म गुट्ट घी दुष्ट पदार्थ लगाने घाला मलिन मन्द् नग्न मनुष्य ये अशुभ जानिये ॥ ६११ ॥

मुक्तकेशो रुजार्तश्च कापायाम्बरधारिणः ।

उन्मत्तः कन्थितोऽसत्यो दीनो वाथ नपुंसकः ॥ ६१२ ॥

टीका—सले केश युक्त मनुष्य रोगी गेरुआ वस्त्र पहिने मनुष्य, उन्मत्त कन्थायुक्त पुरुष, असत्यभाषी पुरुष, दम्बि अथवा नपुंसक ये भी अशुभ शकुन जानिये ॥ ६१२ ॥

त्रायः पङ्कस्तथा चर्म केशवन्धनमेव च ।

तथैवोद्धृतसाराणि पिण्याकादि तथैव च ॥ ६१३ ॥

टीका—लोहे का गण्ड, कीचड़, चर्म, केश बांधता हुआ मनुष्य, जिनके सार निकाल लिये गये हैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक (खरी) ये भी अशुभ जानिये ॥ ६१३ ॥

चाण्डालस्य शवं चैव राजवन्धनपालकाः ।

वधकाः पापकर्माणो गर्भिणी स्त्री तथैव च ॥ ६१४ ॥

टीका—चाण्डाल का मुर्दा बन्धुओं के रक्तक वधकर्ता पापी पुरुष गर्भिणी स्त्री ये भी अशुभ जानिये ॥ ६१४ ॥

तुपं भस्म कपालास्थि भिन्नभाण्डानि यानि च ।

रिक्तानि चैव भाण्डानि सृतसारङ्ग एव च ।

एवमादीनि चान्यानि ह्यप्रशस्तानि दर्शने ॥ ६१५ ॥

टीका—भूखी छिलका भस्म कपाल अस्थि वा फूटे चर्तन, मरा हुआ सारङ्ग पत्ती ये गमनकाल में हानिकारक हैं ॥ ६१५ ॥

क्व यासि तिष्ठ आगच्छ किं ते तत्र गतस्य तु ।

अन्यशब्दाश्च येऽनिष्टास्ते विपत्तिकरा अपि ॥ ६१६ ॥

टीका—कहां जाते हो, ठहरो, आओ, वहां जाने से तुमको क्या होगा ये तथा और भी अनिष्ट शब्द विपत्तिकारक होते हैं ॥ ६१६ ॥

ध्वजादौ वायसस्थानं क्रव्यादानं विगर्हितम् ।

स्खलनं वाहनानां च वस्त्रमङ्गस्तथैव च ॥ ६१७ ॥

टीका—ध्वजा वा पताका के ऊपर काक बैठे अथवा प्रेताग्निदान और वाहनों से गिरना पस्त्र का किसी में अर्चना ये भी अशुभ जानिये ॥ ६१७ ॥

दुष्टशकुन—दोषनिवारण—

दुष्टे निमित्ते प्रथमे ह्यमङ्गल्यविनाशनम् ।

केशव पूजयेद्विद्वान् स्तवेन मधुसूदनम् ॥ ६१८ ॥

टीका—यात्रा समय में ऊपर कहे हुए अपशकुनो में से जो प्रथम अमङ्गल दृष्टि आवै तो नाशकारक हो इसके निवारण के लिये विष्णु की पूजा और स्तोत्र का पाठ करें ॥ ६१८ ॥

द्वितीये च ततो दृष्टे प्रतीपे प्रविशेद्गृहम् ।

अथेष्टानि प्रवक्ष्यामि मङ्गलानि तवानघ ॥ ६१९ ॥

टीका—जो दूसरी बार भी अशुभ दृष्टि आवे तो घर में लोट जावे अर्थात् यात्रा बन्द करदे । इसके बाद मङ्गल कारक शकुन कहते हैं ॥ ६१९ ॥

गमन काल में शुभाशुभ शकुन—

टीका—गाय, घोड़ा, हस्ती, वृद्ध, एक पशु, बकरी, देवता की मूर्ति, मित्र, ब्राह्मण, जलती हुई अग्नि शुभ हैं ॥ ६२२ ॥

गणिका च महानागा दूर्वाश्चार्द्राश्च गोमयम् ।

रुक्मं रौप्यं च तोम्रं च सर्वरत्नानि चाप्यथ ॥ ६२३ ॥

टीका—गणिका, हस्ती, आर्द्र दूर्वा तथा गोबर सोना रूपा ताँबा और सर्व रत्न ये शुभ जानिये ॥ ६२३ ॥

श्रौपधानि च सर्वज्ञो यवाः सिद्धार्थकास्तथा ।

खड्गपात्रं पताका च मृत्तिकायुधपीठकम् ॥ ६२४ ॥

टीका—श्रौपधी सर्वज्ञ पुरुष यव अथैत सरसों खड्गपात्र पताका मृत्तिका, आयुध आसन ये शुभ हैं ॥ ६२४ ॥

राजलिङ्गानि सर्वाणि शवं रुदितवर्जितम् ।

घृतं दधि पथश्चैव फलानि विविधानि च ॥ ६२५ ॥

टीका—समस्त राजलिङ्ग अर्थात् छत्र चामरादिक रोदन-रहित मृतक घृत दधि दूध और नाना प्रकार के फल ॥ ६२५ ॥

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नन्द्यावर्तः सकौस्तुभः ।

वादित्राणां शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥ ६२६ ॥

टीका—अपने लिये आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभमणि के साथ नन्द्यावर्त मणि, पाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशक हैं ॥ ६२६ ॥

गान्धारपट्जऋषभा ये गीताः सुस्वराः स्वराः ।

यायुर्निशर्करोऽनुष्णाः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥ ६२७ ॥

टीका—गान्धार पट्ज ऋषभ ये राग और अच्छे गाने सुन्दर स्वर कढ़ाड़ी रहित पचन अथवा अनुष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ॥ ॥ ६२७ ॥

प्रतिलोमो नरो नीचो विज्ञेयो भयकृद्गद्विजः ।

अनुकूलो मृदुः स्निग्धः सुखस्पर्शः सुखावहः ॥ ६२८ ॥

टीका—वर्णमन्दार मनुष्य तैमे ही नीच अन्त्यजादिक भयकर पक्षी अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे और सुखस्पर्श मनुष्यादिक सुखकारी शुभ होने हैं ॥ ६२८ ॥

शस्तान्येतानि धर्मज्ञ यत्र स्यान्मनसः प्रियम् ।

मनसस्तुष्टिरेवात्र परमं जयलक्षणम् ॥ ६२६ ॥

धोखा-हे धर्मज्ञ उपर कहे हुए शुकुन शुभ जानिये और जो अपने मन को प्यारी
 वस्तुओं का दर्शन उत्तम और मन को तुष्टिकारक वस्तु जयदायक जानिये ॥६२६॥

किंतांसावत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्य लाभो विजयप्रवादः ।

मङ्गल्यलब्धिः श्रवणं च राज्ञां ज्ञेयानि नित्यं विजयावहानि॥६३०॥

टीका—यात्रासमय मन में दर्प, शुभ तथा लाभकायक विचित्रता के भा-
गि का धरण शुभ जानना ॥ ६३० ॥

जेमद्वाग नीलकण्ठाः श्वोत्तमस्वरजगुहः ।

प्रथाने वायतः श्रेष्ठाः प्रवेगे दक्षिणाः गमाः ॥ ४० ॥

राजा—महूर कुत्ता उलूक पक्षी गर्दम, जरायु प्र राग ...
मम मे १०० और प्रवेश स्वयं दक्षिण-भाग मे १०० ...

टीका—गाय, घोड़ा, हस्ती, वृद्ध, एक पशु, बकरी, देवता की मूर्ति, मित्र, ब्राह्मण, जलती हुई अग्नि शुभ हैं ॥ ६२२ ॥

गणिका च महानागा दूर्वाश्चार्द्राश्च गोमयम् ।

रुक्मं रौप्यं च तोम्रं च सर्वरत्नानि चाप्यथ ॥ ६२३ ॥

टीका—गणिका, हस्ती, आर्द्र दूर्वा तथा गोबर सोना रूपा ताँवा और सर्व रत्न ये शुभ जानिये ॥ ६२३ ॥

औषधानि च सर्वज्ञो यवाः सिद्धार्थकास्तथा ।

खड्गपात्रं पताका च मृत्तिकायुधपीठकम् ॥ ६२४ ॥

टीका—औषधी सर्वज्ञ पुरुष यव श्वेत सरसों खड्गपात्र पताका मृत्तिका, आयुध आसन ये शुभ हैं ॥ ६२४ ॥

राजलिङ्गानि सर्वाणि शवं रुदितवर्जितम् ।

घृतं दधि पयश्चैव फलानि विविधानि च ॥ ६२५ ॥

टीका—समस्त राजचिह्न अर्थात् छत्र चामरादिक रोदन-रहित मृतक घृत दधि दूध और नाना प्रकार के फल ॥ ६२५ ॥

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नन्द्यावर्तः सकौस्तुभः ।

वादित्राणां शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥ ६२६ ॥

टीका—अपने लिये आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभमणि के साथ नन्द्यावर्त मणि, पाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशक हैं ॥ ६२६ ॥

गान्धारपड्जत्रपभा ये गीताः सुस्वराः स्वराः ।

वायुर्निश्शर्करोऽनुष्णाः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥ ६२७ ॥

टीका—गान्धार पड्ज त्रपभा ये राग और अच्छे गाये सुन्दर स्वर कढ़ाड़ी रहित पवन अथवा अनुष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ॥ ६२७ ॥

प्रतिलोमो नरो नीचो विज्ञेयो भयकृद्द्विजः ।

अनुकूलो मृदुः स्निग्धः सुखस्पर्शः सुखावहः ॥ ६२८ ॥

टीका—वर्णसङ्कर मनुष्य तैसे ही नीच अन्त्यजादिक भयङ्कर पक्षी अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे और सुखस्पर्श मनुष्यादिक सुखकारी शुभ होते हैं ॥ ६२८ ॥

शस्तान्येतानि धर्मज्ञ यत्र स्यान्मनसः प्रियम् ।

मनसस्तुष्टिरेवात्र परमं जयलज्जाम् ॥ १२१ ॥

टीका—हे धर्मज्ञ उपर कहे हुए शकुन शुभ जानिये और जो अपने मन को प्यारी वस्तु हो उसका दर्शन उत्तम और मन को तुष्टिकारक वस्तु जयदायक जानिये ॥ १२१ ॥

वितोत्सवत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्य लाभो विजयप्रवादः ।

माङ्गल्यलब्धिः श्रवणं च राज्ञां ज्ञेयानि नित्यं विजयावहानि ॥ १२० ॥

टीका—यात्रासमय मन में हर्ष, शुभ तथा लाभकारक विजयप्रद और मङ्गल शक्ति का भवण शुभ जानना ॥ १२० ॥

क्षेमङ्करा नीलकण्ठाः श्वोलूकखरजम्बुकाः ।

प्रस्थाने वामतः श्रेष्ठाः प्रवेशे दक्षिणाः शुभाः ॥ १२१ ॥

टीका—मयूर कुत्ता उलूक पत्ती गर्दभ, जम्बुक प्रस्थान समय वामभागी हों तो गमन में शुभ और प्रवेश समय दक्षिण-भाग में शुभ जानिये ॥ १२१ ॥

कथा—प्रारम्भ चक्र—

वेदाँविधेवेदंश्रुतिवेदवेद-

फलं गुरोर्भादिगुणमेव गरायम् ।

अर्थश्च लाभश्च तथा च सिद्धि-

लाभो मृतीराजभयं च मोक्षः ॥ १२२ ॥

कथारम्भं प्रकुर्वीत प्रोक्तं पूर्वैर्महापिभिः ॥ २ ॥

टीका—गृहस्पति के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक कथारम्भस्य विचारना लाजिब
अथ चार नक्षत्र अर्थ के देनेवाले हैं, फिर चार लाभप्रद हैं, फिर चार मोक्ष
देनेवाले हैं, ऐसे ही चार लाभप्रद हैं, चार राजभय को देनेवाले हैं और चार मोक्ष
को देनेवाले हैं । यह कथारम्भस्य पूर्वोक्तार्थ से कथा है ॥ १२२ ॥

टीका-उत्तराफल्गुनी, एस्त, अश्विनो, श्रवण, विशाखा और मृगशिरा इन नक्षत्रों में रविवार के सहित शुभ दिनों में मन्त्र, यन्त्र और व्रतादि का साधन शुभ है ॥ ६३७ ॥

नित्यक्षौरमुहूर्त—

क्षौरै प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।

उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौषधनैश्चराः ॥ ६३८ ॥

रिक्ता हेयाष्टमी षष्ठी क्षौरै चन्द्रक्षयो निशा ।

सन्ध्याविष्टयन्तगराडान्ता भोजनान्तश्च गोगृहम् ॥ ६३९ ॥

टीका-मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका, ये नक्षत्र तथा रविवार, मङ्गल, शनैश्चर ये नित्य क्षौर अर्थात् दृजामत बनाने में वर्जित हैं । रिक्ता तिथि ४।४।१४ अष्टमी, छठ, अमावस, रात्रि, सन्ध्या, भद्रा तथा गराडान्त और भोजन के पीछे तथा

लघुश्रवो निलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे

चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ १४२ ॥

टीका—गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी का पूजन करते पञ्चम वर्ष में शुभ है। एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, छठ, पञ्चमी, तीज ये तिथियाँ उत्तरायण सूर्य हो, लघुसंज्ञक नक्षत्र या श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं। तथा चरसंज्ञक लग्न १।४।७।१० वर्जित हैं शुभ दिनों में बालक लिखना प्रारम्भ करे ॥ १४२ ॥

विद्यारम्भ मुहूर्त—

मृगात्कराच्छ्रुतत्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये

गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽहि पङ्कशत्रिके ।

शिवार्कदिग् द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः

शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ १४३ ॥

टीका—मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनो, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य, आश्लेषा इन नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। रविवार, गुरुवार, बुधवार, शुक्रवार ये दिन शुभ हैं। और छठ, पञ्चमी, तीज, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया ये तिथियाँ शुभ हैं। और आचार्यों के मत से ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती और अनुराधा ये शुभ हैं। और शुभग्रह त्रिकोण १।५ वा. केन्द्र १।४।७।१० में होने चाहिये ॥ १४३ ॥

गणितारम्भमुहूर्त—

शतद्वयेऽनुराधार्द्र रोहिणीरेवतीकरे ।

पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भं गणितादिषु ॥ १४४ ॥

टीका—शतभिष, पूर्वभाद्रपद, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त, पुष्य, इन ७ में और गुरु, बुधवार को गणितारम्भ शुभ है ॥ १४४ ॥

व्याकरणारम्भमुहूर्त—

रोहिणीपञ्चके हस्तात्पुनर्भे मृगभेऽश्विभे ।

पुष्ये शक्रेत्यविदारे शब्दशास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ १४५ ॥

टीका—रोहिणी, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में तथा शुक्र, बृहस्पति, बुधवार से व्याकरणशास्त्र पढ़ना शुभ है ॥ १४५ ॥

न्यायादिशास्त्रारम्भमुहूर्त—

व्युत्तरे रोहिणीपुण्ये पुनर्भे श्रवणे करे ।

अश्विन्यां शतमे स्वाती न्यायशास्त्रादिकं पठेत् ॥ १४६ ॥

टीका—तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, अश्विनी, शतभिष, और स्वाती इन नक्षत्रों में न्यायशास्त्र आदि पढ़ना शुभदायक है ॥ १४६ ॥

धर्मशास्त्रपुराणारम्भमुहूर्त—

हस्तादिपञ्चके पुण्ये रेवतीद्वितये ऋगे ।

श्रवत्रये शुभारम्भो धर्मशास्त्रपुराणयोः ॥ १४७ ॥

टीका—हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों में धर्मशास्त्रारम्भ और पुराणारम्भ शुभ है ॥ १४७ ॥

वैद्यविद्या तथा गारुडीविद्यारम्भमुहूर्त—

शुक का परिहार—

एकग्रामे चतुष्कोणे दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।

विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १५८ ॥

टीक—एक ग्राम में, चारों कोणों में तथा दुर्भिक्ष में, राजा से विवाद होने और विवाह में अर्थात् वधूपवेशादि में या तीर्थयात्रा आदि में शुक के सम्मुख तथा दक्षिण का दोष नहीं होता है ॥ १५८ ॥

गोत्रभेद से शुकपरिहार—

कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगावाङ्गिरसेषु च ।

भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १५९ ॥

टीका—कश्यपगोत्र, वशिष्ठगोत्र, भृगुगोत्र, अङ्गिरागोत्र, भरद्वाजगोत्र, वत्सगोत्र इन गोत्रों में शुक के सम्मुख तथा दक्षिण का दोष नहीं होता है ॥ १५९ ॥

पुनः शुकपरिहार—

पित्र्ये गृहे चैत्कुचपुष्पसम्भवः

स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः ।

भृग्वङ्गिरावत्सवशिष्ठकश्यपा-

ञ्जोणां भरद्वाजसुनेः कुले तथा ॥ १६० ॥

टीका—पिता के घर में जिस स्त्री के कुच उठें या रजस्पला हो उस स्त्री लिये शुक के सम्मुख और दक्षिण का दोष नहीं है । भृगु-गोत्र, अङ्गिरस-गोत्र, वत्स-गोत्र, वशिष्ठ-गोत्र, कश्यप-गोत्र, अत्रि-गोत्र, भरद्वाज-गोत्र इन गोत्रों में सम्मुख दक्षिण शुकका दोष नहीं होता है ॥ १६० ॥

शुकान्ध के मत से परिहार—

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।

तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ १६१ ॥

टीका—रेवती से मृगशिरा तक नक्षत्रों में चन्द्रमा हो तो शुक अन्ध होता है । सम्मुख और दक्षिण क होता है ॥ १६१ ॥

प्रवेश शुभ होता है । ध्रुवसंज्ञक^१ नक्षत्र, निप्रसंज्ञक^२ और मृदुसंज्ञक^३ तथा श्रवण, घनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में चतुःप्रवेश शुभ होता है । और चौध, त्रयोदशी, इन तिथियों में रविवार, भोमवार इन दिनों में और किसी आचार्य के मत से कुछ दिन में भी चतुःप्रवेश अशुभ होता है ॥ ६५२-६५३ ॥

द्विरागमनमुहूर्त—

विवाहाद्विषमे वर्षे कुम्भमेवालिगे रवौ ।

बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनोमृगे ॥ ६५४ ॥

रेवतीरोहिणी पुष्ये ज्युत्तरे श्रवणत्रये ।

हस्तत्रये पुनर्वसवौ तथा मूलानुराधयोः ॥ ६५५ ॥

कन्यामीनतुले युग्मे वृषे प्रोक्तबलान्विते ।

लग्ने पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते ॥ ६५६ ॥

सम्मुखे दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन ।

गर्भिणी तु विगर्भा स्यान्नवोढा वन्ध्यतामियात् ॥ ६५७ ॥

बालकश्चेद्विपद्येत विगेहादपि चेद्ब्रजेत् ॥

टीका—विवाह से विषम वर्ष में द्विरागमन शुभ है । कुम्भ, मेष, वृश्चिक के मूल और सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति बली हों और शुभ दिन हो, अश्विनी, मृगशिरा, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल तथा मूल और अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं । तथा कन्या, मीन, तुला, मिथुन, ये लग्न स्त्रियों के द्विरागमन में शुभ हैं । तथा सम्मुख और दक्षिण मूल में गर्भी वि । यदि गर्भिणी स्त्री जावे तो बिना गर्भ को हो जावे और जो नवीन गर्भाश्रु गर्भवती जावे तो वन्ध्या होवे, यदि बालक को साध ले जावे तो शिशु मृत्यु प्राप्त होवे ॥ ६५४-६५७ ॥

^१ रोहिणी, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र ध्रुवसंज्ञक हैं ।

^२ हस्त, अश्विनी, पुष्य, अश्लेषा ये नक्षत्र निप्रसंज्ञक हैं ।

^३ मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा देवती ये मृदुसंज्ञक नक्षत्र हैं ।

फारसीविद्यारम्भमुद्दत्त—

ज्येष्ठाश्लेषा तथा पूर्वा रेवतीभरणीद्वये ।

विशाखाद्रौत्तराषाढाशतभे पोषवासरे ॥

लग्ने स्थिरे च चन्द्रे च फारसीमोर्वी पठेत् ॥ १५० ॥

टीका—ज्येष्ठा, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, रेवती, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़, शतभिष ये नवत्र और शनि, मङ्गल, रविवार को फारसी तथा अरबी विद्या पढ़ना शुभ है ॥ १५० ॥

लेखनारम्भमुद्दत्त—

शुभे तिथौ शुभे वारे रेवतीयुगले तथा ।

श्रवणे चानुराधायां तथैवाद्रादिषु त्रिषु ॥

हस्तादित्रितये कुर्याल्लेखनारम्भणं सुधीः ॥ १५१ ॥

टीका—शुभ तिथि और शुभ वारों में लेखनारम्भ शुभ है। रेवती, अश्विनी, श्रवण, अनुराधा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा और स्याती ये नवत्र लिखने में शुभ हैं ॥ १५१ ॥

वधूप्रवेशमुद्दत्त—

समादिपञ्चाङ्गदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टदिनान्तराले ।

शुभः परस्तादिपमाव्दमासदिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥ १५२ ॥

श्रुवन्निप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघाऽनिले ।

वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ॥ १५३ ॥

टीका—विवाह के दिन से सोलह दिन के भीतर सम दिन में अर्थात् दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दसवें, बारहवें, चौदहवें, सोलहवें और सातवें, पौचवें, नवें, दिनों में वधूप्रवेश करना शुभ होता है । और १६ दिनों के बाद विषम दिनों में, एक मास पूरा हो जाने पर विषम महीनों में तथा एक वर्ष के बाद विषम वर्षों में वधूप्रवेश करना शुभ है । और पौच वर्ष बीतने के बाद अपनी इच्छा के अनुसार सम-विषम वर्ष, मास आदि का विचार न करके किंवा जहाँ तक वधूप्रवेश सुद्दत्त मिल सकें, वहाँ तक वर्ष, मास आदि का विचार करके वधू

शुभ होना है । भुवसंज्ञक^१ नक्षत्र, निमसंज्ञक^२ और मृदुसंज्ञक^३ तथा
अरु, घनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में वधू प्रवेश शुभ होता है । और
शुभ, नभो, चतुर्दशी, इन तिथियों में रविवार, भौमवार इन दिनों में और किसी
नक्षत्र के मत से कुछ दिन में भी वधूप्रवेश अशुभ होता है ॥ ६५२-६५३ ॥

द्विरागमनमुहूर्त—

विवाहाद्विषमे वर्षे कुम्भमेवालिगे रवौ ।

बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनोमृगे ॥ ६५४ ॥

रेवतीरोहिणी पुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये ।

हस्तत्रये पुनर्वसवौ तथा मूलानुराधयोः ॥ ६५५ ॥

कन्यामीनतुले युग्मे वृषे प्रोक्तवृत्तान्विते ।

लग्ने पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते ॥ ६५६ ॥

सामुखे दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत् कदाचन ।

गर्भिणी तु विगर्भा स्थानबोधा वन्द्यतामिष्यते ॥ ६५७ ॥

बालकश्चेद्विषयेन विगोहादपि चेत्तजेत् ॥

टीका—विवाह से विषम वर्ष में जिसनक्षत्र में मंगल हो, उसमें रविवार, अश्विन, चतुर्दशी, मंगलवार, स्वाती, मघा, मूल, घनिष्ठा, अरु, नभो, चतुर्दशी, इन तिथियों में रविवार, भौमवार इन दिनों में और किसी नक्षत्र के मत से कुछ दिन में भी वधूप्रवेश अशुभ होता है ॥ ६५२-६५३ ॥

प्रस्थान द्वारा यात्रा—

सृगे गत्वा शिवे स्थित्वाऽदितौ गच्छञ्जयेद्विप्लव ।

मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे हि स्थित्वा मूले ब्रजँस्तथा ॥१६२॥

प्रस्थाय हस्तेऽनिलतन्त्रधिणायै स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद् द्विदैवै ।

वसन्त्यपुण्ये निजसीम्नि चैकरात्रोषितः क्षमां लभतेऽवनीशः ॥१६३॥

टीका—सृगशिरा में जाके आर्द्रा में ठहर के पुनर्वसू में यात्रा करे तो शत्रु को जीत लेता है। अतुराधा में प्रस्थान करके ज्येष्ठा में टिक के मूल में यात्रा करे तो भी शत्रु को जीत लेता है। एव हरत में प्रस्थान करके चित्रा-स्वाती में ठहर के विशाखा में यात्रा करने से, तथा धनिष्ठा, रेवती, पुष्य नक्षत्रों में अथवा रोमा (मेघान) में एक रात्रि टिक के यात्रा करने से, राजा भूमि को पाता है ॥ १६२-१६३ ॥

योग—अधियोग और योगाधियोग —

एको ज्ञेयसितेषु पञ्चमतपःकेन्द्रेषु योगस्तथा

द्वौ चेत्तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोगः स्मृतः ।

योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेम रिपूणां वध

वाथो क्षेमयशाऽवनीश्च लगते योगाधियोगे वजन ॥१६४॥

टीका—जल, सपन, दशम, चतुर्थ स्थानों को शुभग्रह देगता हो, सप्तम, द्वादश, दशम स्थानों में पापग्रह न हों तो यात्रा करने वाले को किसी प्रकार का भय नहीं होता है । यदि पत्थर पर चढ़ के जाय तो भी समुद्र पार कर लेता है ॥ ६६२ ॥

एक दिन में यात्रा-प्रवेशविचार—

यद्येकस्मिन्दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशो स्तः ।

तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ॥ ६६६ ॥

टीका—यदि एक ही दिन में यात्रा-प्रवेश दोनों हो तो पण्डितों को चाहिये कि प्रवेश का ही मुहूर्त दें यात्रा का मुहूर्त न दें ॥ ६६६ ॥

राजाओं को विजयदशमी सिद्धमुहूर्त—

इपमासि सिता दशमीविजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता ।

श्रवणार्क्ष्युता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसिद्धिकरी ॥ ६६७ ॥

टीका—आश्विन सुदी १० को विजया दशमी कहते हैं । यह शुभ कर्मों के करने के लिये सिद्धिदायिका होती है । यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो अत्यन्त शुभ दायिका है । राजाओं की यात्रा में जयसिद्धि देने वाली होती है ॥ ६६७ ॥

प्रस्थानप्रकार—

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ।

क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ ६६८ ॥

टीका—यदि कार्य के कारण यात्रा में विलम्ब हो तो घ्राण को जनेऊ, क्षत्रिय छथियार, वैश्य को सहद और शूद्रों को आमले का फल अथवा सबों को जो भी प्रिय हो वही वस्तु प्रस्थान में रखें ॥ ६६८ ॥

प्रस्थानदिनप्रमाण—

पूर्वे सप्त दिनान्येव याम्ये पञ्च दिनानि च ।

पश्चिमे दिवसांस्त्रीन् वै दिनानां द्वयमुत्तरे ॥ ६६९ ॥

टोका—पूर्व में ७ दिन, दक्षिण में ५ दिन, पश्चिम में ३ दिन और उत्तर में २ दिनों
प्रस्थान रहता है । अतः प्रधानोत्तर उक्त दिनों के अन्दर ही यात्रा कर देने
जालिये ॥ ६६६ ॥

यात्रा करने वाले को नियम—

क्रोधक्षौररतिश्रमामिपयुडघृताश्रुदुग्धासव-

क्षाराभ्यङ्गमयाः सिताम्बरवमिरतैल कट्टुःश्लेदुग्मे ।

क्षौरक्षौररतीः क्रमात्त्रिशरसप्ताहं पर तद्दिने

रोगं स्यात्तर्पकं सितान्यतिलकं प्रधानं कर्ज्यानि च ॥ ६७० ॥

टीका—जग्न, स्वप्न, गृह्य, चतुर्थ स्थानों को शुभप्रद देखा हो, स्वप्न, गृह्य, दशम स्थानों में पापप्रद न हो तो यात्रा करने वाले को किसी प्रकार का भय नहीं होता है । यदि पथपर पर चढ़ के जाय तो भी समुद्र पार कर लेता है ॥ ६६४ ॥

एक दिन में यात्रा-प्रवेशविचार—

यद्येकस्मिन्दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशो स्तः ।

तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ॥ ६६६ ॥

टीका—यदि एक ही दिन में यात्रा-प्रवेश दोनों हो तो पण्डितों को चाहिये कि प्रवेश का ही मुहूर्त देगा यात्रा का मुहूर्त न देगा ॥ ६६६ ॥

राजाओं को विजयदशमी सिद्धमुहूर्त—

इषमासि मिता दशमीविजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता ।

श्रवणार्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसिद्धिकरी ॥ ६६७ ॥

टीका—आश्विन सुदी १० को विजया दशमी कहते हैं । यह शुभ कर्मों के करने के लिये सिद्धिदायिका होती है । यदि ध्वज नगर से युक्त हो तो अत्यन्त शुभ दायिका है । राजाओं को यात्रा में जयसिद्धि देने वाली होती है ॥ ६६७ ॥

प्रस्थानप्रकार—

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ।

क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ ६६८ ॥

टीका—यदि कार्य के कारण यात्रा में विलम्ब हो तो घ्राण को जनेऊ, घन्टिया को हथियार, वैश्य को खट्ट और शूद्रों को आमले का फल अथवा सबों को जो ज्यादा प्रिय हो चढ़ी वस्तु प्रस्थान में रखे ॥ ६६८ ॥

प्रस्थानदिनप्रमाण—

पूर्वे सप्त दिनान्येव याम्ये पञ्च दिनानि च ।

पश्चिमे दिवसांस्त्रीन् वै दिनानां द्वयमुत्तरे ॥ ६६९ ॥

टीका—पूर्व मे ७ दिन, दक्षिण मे ५ दिन, पश्चिम में ३ दिन और उत्तर में २ दिनों तक प्रस्थान रहता है । अतः प्रस्थानोत्तर उक्त दिनों के अन्दर ही यात्रा कर देने जाति ॥ ६६६ ॥

यात्रा करने वाले को नियम—

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडघृताश्रुदुग्धासव-

क्षाराभ्यङ्गमयाः सिताम्बरवमिस्तैलं कट्टञ्जेदुगमे ।

क्षौरक्षौररतीः क्रमात्त्रिंशत्सप्ताह पर तद्धिने

रोगं ख्यातवकं सितान्यतिलकं प्रधानकेऽपीति च ॥ ६७० ॥

टीका—अग्नि में हवन करके, देवताओं का पूजन करके, ब्राह्मणों को नमस्कार करके, विद्याधीशों का पूजन करके, ज्योतिषी ब्राह्मणों को दान देकर दिगर्धीशों का ध्यान करके राजा यात्रा करे । देवता के, अथवा गुरु के, अथवा मुन्य गनी (पट्टराजी) के मकान से हविष्य खाकर ब्राह्मणों की अनुमति से माहलिक वस्तुओं को देवता और माहलिक शब्दों (ध्वनियों) को सुनता हुआ राजा यात्रा करे ॥ ६७२—६७३ ॥

मनोविशुद्धि में यात्रा करना—

चेतो निमित्तशकुनेरतिसुप्रशस्तै-

ज्ञात्वा विलग्नवत्तमुर्व्यधिपः प्रयाति ।

सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि

चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेयात् ॥ ६७४ ॥

टीका—चित्त-शुद्धि हो, निमित्त (लक्षण) शकुन अच्छे हों और लग्नवत् उत्तम हो तो राजा को यात्रा करना चाहिये । शकुनादि के अच्छे रहने पर भी यात्रा शुभदायिका होती है पर हृदय की शुद्धि (दार्ढिक उत्साह) का होना अधिक ध्येष्ट है । उसके बिना (शकुनादि के शुभ रहने पर भी) यात्रा करना ध्येष्ट नहीं है ॥ ६७४ ॥

यात्रा में शुभशकुन—

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माभ्वरं

वेश्यावाद्यमयूरचापनकुला वज्रैकपश्वामिषम् ।

सद्भावयं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका

रत्नोष्णीपसितोज्जमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥ ६७५ ॥

आदर्शज्जिनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं

शावं रोदनर्वाजतं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ।

भारद्वाजनृत्यानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा

दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः ॥ ६७६ ॥

टीका—ब्राह्मण, घोड़े, हाथी, फल (ऋतुद्भय), अन्न, दुग्ध, दधि, गो, सरसो, कमल, वस्त्र, वेश्या, वाजा, मोर, चाप (नीलकण्ठ), नकुल (न्यौला), वेष्टा हुआ अश्वेला

पशु (गैया, बैल, भैस इत्यादि), मांस, समीचीन वचन, फूल, ईख, जल से भरा घट, छाता, जमीन से उठी मिट्टी अर्थात् किसी के सिर पर मिट्टी का बोझ, कन्या, रत्न, ढाड़ो, सफेद धैल, मद्य, पुत्रसहित लौभाग्यवती स्त्री, प्रज्वलित अग्नि, दर्पण, ओजन, घोया हुआ वस्त्र, रजक (छोटी), मीन, घी, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, पताका, सटत, बकड़ी, हथियार, गोरोचन, भरद्वाज पत्नी, पास की वेदध्वनि, माङ्गलिक गीत, शंकुण, पीछे जाता हुआ खाली घड़ा ये पदार्थ यात्रा के समय देखने में आवे तो शुभ होते हैं ॥ ६७५—६७६ ॥

शुभशकुन—

तैलाङ्गारकमश्मभरमफणिनः कार्पासलौहाजिनं
तक्रं तस्करकृष्णधान्यलवणं काष्ठास्थिविष्ठावसाः ।
पिरयाकस्तुपरज्जुसृङ्खलगुडं पद्मो घटो रिक्तको
नासाहीनविनग्नुसुरिडतवसत्पद्माजखर्चान्वराः ॥ ६७७ ॥
दीनः केशविमुक्तकोऽपि हृदयानारुढको गर्दरा
सौष्ट्रः सौरभवाहनोऽपि रुदितश्चेत्यादिकः वर्जयेत् ।
द्वाराघातविडालयुद्धकलहं रक्तगम्बरव्यत्ययो
मा गच्छ वव च यासि तिष्ठ वचन यात्रानिषेधात् =

नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणो

व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः ॥१७१॥

टीका—गोघा (गोह), जाहक (गात्रसंकोची जीव), सूअर, साँप, खरगोश का कीर्तन शुभ है । किन्तु इनका शब्द और दर्शन शुभ नहीं है । वन्दर, भालुओं का इससे विपरीत जानना अर्थात् इनका शब्द और दर्शन शुभ है किन्तु कीर्तन शुभ नहीं है । नदी के पार जाने, भय कार्य, प्रवेश, युद्ध, नष्ट वस्तु की खोज में, यात्रा में कोई अशुभ शकुन शुभ नहीं होते हैं । राजा के दर्शन में यात्रा में कहे शुभ शकुन शुभ होते हैं ॥१७१॥

दुःशकुनापवाद—

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।

द्वितीये षोडशप्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत् ॥ १८० ॥

टीका—यात्रा में पहले वार के अपशकुन में ११ रखांस काल तक ठहर के दूसरे अपशकुन में १६ प्राण तक ठहर कर यात्रा करे परन्तु तीसरे अपशकुन में कदापि यात्रा न करे ॥ १८० ॥

यात्रानिवृत्त का गृहप्रवेशमुद्घर्त—

यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवक्षिप्रचरैः पुनर्गमः ।

द्वीशेनले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात् १८१

टीका—यात्रा से निवृत्त हो (लौट) कर मृदु (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, श्रु-
राधा), ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) नक्षत्रों में गृहप्रवेश करना शुभ होता है । यदि
क्षिप्रसंघक (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्), चर संघक (स्वाती, पुनर्वसु, अश्लेषा,
घनिष्ठा, शतभिष) नक्षत्रों में प्रवेश करे तो फिर से यात्रा करनी पड़े । विशाखा,
कृत्तिका, दारुण संघक (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा) तथा उग्र संघक (पूर्वा
तीनों, भरणी, मघा) में प्रवेश करे तो क्रम से स्त्री, गृह, पुत्र और अपना विनाश
होता है ॥ १८१ ॥

वर्णस्वरचक्र—

कादिहान्ताँलिखेद्वर्णान्स्वराधो ङजणोज्झितान् ।
 तिर्यक्पञ्चक्रमेणैव पञ्चत्रिंशत्प्रकोष्ठके ॥ १८२ ॥
 नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वराद्धःस्थितः ।
 स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ॥ १८३ ॥
 अस्वरो मेषसिंहालीरिः कन्यायुग्मकर्कटाः ।
 धनुर्मीनावुकारः स्यादेकारश्च तुलावृषौ ॥ १८४ ॥
 शोस्वरो मृगकुम्भौ च राशीशास्तु ग्रहस्वराः ।
 स्वराधः स्थापयेत्त्वेदान् राशेर्यो यस्य नायकः ॥ १८५ ॥
 अकारे सप्त ऋज्ञाणि रेवत्यादिक्रमेण च ।
 पञ्च पञ्च इकारादावेवमृजस्वरोदयः ॥ १८६ ॥
 अकारादिक्रमान्यस्य नन्दादितिथिपञ्चकम् ।
 दिनस्वरोदयो नित्यं स्वस्वतिथ्यादि जायते ॥ १८७ ॥

५-४-७३

[illegible]

बोझ—उ. ज. र. यहाँ की चोखुर बजायदि में हजार तक यहाँ की रेश की
के बज में लिगे । मनुष्य के मन का आदिम भाँ निरु स्वर के लीये रहे बोझ
मनुष्य का प्राँस्वर होता है ॥

होता—अ स्वर में मेघ, तिष्ठ वृश्चिक को, रश्मि के नीचे कल्प, नियुक्त ऊर्ध्व को, लक्ष्मण के नीचे धनु मीन को, एकार के नीचे तुलावृष को, ओं में नीचे मकर, कुम्भ को रहै। इन चतुर्विंश के स्थानों को भी वृत्तस्वरों के नीचे रहें। रेखा के नीचे ७ तन्त्र प्रकार के नीचे, २, ५ तन्त्र ३, ६, ९, ओं स्वरों के नीचे स्थान करै। मित ३, ३, ६, ९, ओं स्वरों के नीचे मन्दा, मृदादि विधियों को स्थान करै। अर्थात् अक्षरी विधियों में मित स्वरों रूप होता है।

साङ्गन्त, ऋणन्त, वैशाल इत में ऋकार स्वर का उद्भव, आगाह, आनप-

कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भरय मकरस्य च ।
 घातस्तामसवेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ ११७ ॥
 धनुःकर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः क्रमोदिताः ।
 वृषे मेघे तुलायां च वृश्चिके श्यामवर्णता ॥ ११८ ॥
 मिथुने मकरे कुम्भे कन्यासिंहे च कृष्णता ।
 गौरश्च प्रियते सत्त्वे श्यामवर्णे रजोगुणः ॥ ११९ ॥
 कृष्णे तामसवेलायां प्रियते नात्र संशयः ।
 यस्मिन्वर्षे भवेन्मासो गौणाधिक्यस्तथा ज्ञयः ॥ १००० ॥
 मासेन गृह्यते मासः सर्वकार्यार्थसाधने ।
 माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा ॥ १००१ ॥
 नभस्ये मासि वाराणां मुहूर्त्तानि यथाक्रमात् ।
 रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले ॥ १००२ ॥
 गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ।

रेखाज्ञान—

शून्य	आवर्त्तक	काल	अमृत ।
०	१	६	*

रवी नम रथयान नरजो गोपुन्दनामा नम आरुगामो ।

रति	रो	उ	मे	ना	ज	ने	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा
नि	त	प	ग	म	र	र	त	त	प	म	र	र	त	त	स	स

मोम हरिपुन्नपतिः सुगः प्रत्य च गौरीतुतविणुसू ।

मे	मे	ना	च	दे	तु	अ	ग	वा	वि	सु	या	गो	भा	रो	श्वे
नि	म	म	र	र	प	प	म	म	र	र	त	त	स	स	र

मोमो गमोमामगोऽय युमं युमे हरिज्वेव गजातनश्च ।

मे	मे	ना	च	दे	तु	अ	ग	वा	वि	सु	या	गो	भा	रो	श्वे	मै	वा
नि	म	म	र	र	प	प	म	म	र	र	त	त	स	स	र	र	त

मोमो गमोमामगोऽय युमं युमे हरिज्वेव गजातनश्च ।

मे	मे	ना	च	दे	तु	अ	ग	वा	वि	सु	या	गो	भा	रो	श्वे	मै	वा
नि	म	म	र	र	प	प	म	म	र	र	त	त	स	स	र	र	त

राजो वृन्निहो युगलं नमो यलन्मीशलस्त्रोवृत्तामन्मन्त्रः ॥

श्वे	मे	ना	ज	ने	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	रो	श्वे
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	म	म	र	र	त	त	त

पवं निशायां खल्विणुश्रुत्यं युमं च नारायणविन्तनाथो ॥

वा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	गो	भा	सा	रो	श्वे	मै	सीम
त	त	स	स	र	र	न	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रो

नक्त च विन्त द्विपदो मुकुन्दः पदत्रयं श्रीपतिखंनिभः श्रीः ॥

वै	तु	अ	ता	ग	वि	सु	या	सो	भा	सा	रो	श्वे	मै	वा	ज	भीम
स	स	र	र	र	त	म	स	र	र	त	त	म	म	र	र	रात्रो

गत्रो सुपर्णध्वज एव युमं नमोऽथदामोदरकुञ्जरास्यौ ।

अ	रा	ग	प	ग	सु	या	गो	भा	सा	रो	श्वे	मै	वा	ज	वे	दुध
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	म	र	र	त	त	रात्रो

कन्यासिन्धुसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च ।
 घातस्नामसवेचायां विररीतं शुभावहम् ॥ ६६७ ॥
 वधुःककटर्मोनाख्या गौरवर्णाः क्रमोदिताः ।
 वृषं मेघं तुलायां च वृश्चिकं श्यामवर्णता ॥ ६६८ ॥
 मिथुने मकर कुम्भे कन्यासिंहे च कृष्णता ।
 गौरश्च प्रियते सत्त्वे श्यामवर्णे रजोगुणः ॥ ६६९ ॥
 कृष्णे तामसवेचायां प्रियते नात्र संशयः ।
 यस्मिन्वर्षे भवेन्मासो गौणाविक्रयस्तथा जयः ॥ १००० ॥
 मासेन गृह्यते मासः सर्वकार्यार्थसाधने ।
 माघश्रावणचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा ॥ १००१ ॥
 नभस्ये मासि वाराणां सुहृत्तानि यथाक्रमात् ।
 रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवार्यं रुद्रयामले ॥ १००२ ॥
 गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ।

रेखाज्ञान—

रुद्र	आदर्श	काल	अनृत ।
०	६	८	५

गुरौ गोपिनाथस्तथा विघ्नराजो नभः केशवः कुञ्जराग्रस्तथैव ।

निशायां पदं नन्दनः सूर्यसुनुर्नभो माधवश्चापमेकं हरिश्च ॥

[illegible]

शुक्ले कृष्णे माधवः खं मुरारिर्गौरीपुत्रः श्रीपतिः शून्यमेकम् ।

नक्तं कालः केशहा खं च युग्मं पादद्वन्द्वो वामनः खं च पादौ ॥

[illegible]

शनौ पदः श्रीखतभोतभः खं नारायणो ना हरिखं हरिश्च ।

रात्रौ च शून्यं यमयुग्ममाघौ खविधनराजौ नृहरिश्च पादौ ॥

[illegible]

तथा श्विने कार्तिकमार्गपौषे सूर्यादिवारेषु मूहर्तयोगाः ।

नामाक्षराणां यच्चनप्रवृत्तया विचारपूर्वं विबुधैर्विचिन्त्यम् ॥

सूर्ये नृसिंहौ द्विपदं च चापौ हरिर्नमः खे पदमव्युतोऽन्विष्टः ।

रात्रौ पदं चापद्यमन्युतं च युग्मं यमो विष्णुससिद्धिसंज्ञौ ॥

[illegible]

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	री	श्वे
द्वि	स	स	र	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

प्रैमे महेश्वरनमोऽथ विष्णुर्नमो युगं गोपतिखं गणेशः । नतं गजेन्द्रमगमच्युतपत्र युगं न गन्तं नृगिज्ज युगम् ॥

भीम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	री	श्वे	मै	ना
द्वि	र	र	र	त	त	स	न	र	र	र	त	त	स	स	र	त
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

युधे धनु श्रीपतिपायुगं नारायण स्याद्वर्णनाथसिद्धिः । रात्रौ त कालो ऋगिज्जालो नोऽग्निगोरोत्तराग्नयन्ति ।

पुष	तु	अ	रा	वा	वि	८	या	सौ	भा	सा	री	श्वे	मै	चा	ज	वै
नि	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

गुणो हरिः ज्ञानयुगं सुरेशः श्रीविष्णुराजो गमनं तथा श्रीः । निशां द्वैद्यास्त्रिहार्मुकं च पदे मुगरी मयुगं पुन ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	१	भा	सा	री	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दि	य	ग	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

अथ चैपहरामुहूर्तः ।

अथ चौपहरा—मुहूर्तः । श्रीमुखन्दर-गोरखनाथकृतयात्रानिचारम्भः—तृतीया त्रयोदशी का फल, चोय, चतुर्दशी का फल, पञ्चमी पूर्णिमा का फल, अमावस्या के दिन गमन न करै । मूल में काम अञ्छा न करै । कृष्ण वा शुक्लपक्ष की तिथि का फल—जिस मास की तिथि को जाय तो अपने चित्त से गमन करै । चन्द्रमा का बल भरणी भद्रा दिशाशूल योनिनी कालवास तिथियात नक्षत्रघात चन्द्रघात व्यतीपात कल्याणी संक्रान्ति अनेक कुयोग के दोष न होंगे, यह गोरखनाथ ने कहा है । जो तिथि साथ कर यात्रा करेगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्य सिद्धि करके आवेगा ।

पौ	मा	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	मा	आ	का	मा.	प्रथमप्रहर	द्वितीयप्रहर	तृतीय प्रहर	चतुर्थ प्रहर	ति	पूर्व	यक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	=	१०	११	१२	१३	अर्थलाम	सोहय	आतिमुख	राजपद	१	सुग	कलेरा	शुभ	गमनाथ
२	३	४	५	६	७	=	१०	११	१२	१३	१	मला न हो	कलेरा	विन होय	आतिमुग	२	दुस	नेट	पित	मन्म
३	४	५	६	७	=	१०	११	१२	१३	१	२	अर्थ प्राप्ति	राजपद	आतिमुग	विन होय	३	द्वयपलेरा	दुस	अर्थप्राप्ति	भनप्राप्ति
४	५	६	७	=	१०	११	१२	१३	१	२	३	कलेरा होय	अशुभ	आतिमुग	आतिभय	४	ताम	सुग	महा	भनप्राप्ति
५	६	७	=	१०	११	१२	१३	१	२	३	४	अर्थ लाम	मन्त्रलाम	राष्ट्रभय	कार्यविधि	५	ताम	भनलाम	भनागम	भनप्राप्ति
६	७	=	१०	११	१२	१३	१	२	३	४	५	सकट होय	कलेरा	सर्वमुग	वर्त रेना	६	शुभ	लाम	भिनताम	भनप्राप्ति
७	=	१०	११	१२	१३	१	२	३	४	५	६	विलम्ब होय	अर्थप्राप्ति	यमघण्ट	सर्वमुग	७	ताम	कट	द्वयलाम	भनप्राप्ति
८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	यमघण्ट	अशुभ	सर्वमुग	यमघण्ट	८	कट	सोना	सोना	सोना
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	अर्थलाम	अशुभ	सर्वमुग	सर्वमुग	९	सुग	ताम	कार्यविधि	कट
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	विन्ता होय	विन्ता होय	कार्यविधि	मुग से आये	१०	सुग	दुस	अर्थगमन	भनप्राप्ति
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	विपद	विन होय	सुग पाये	सुग प्राप्ति	११	०-मुग	लाम	द्वयनारा	मुगप्राप्ति
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	यल	यल	अशुभ	कार्यविधि	१२	सुग	यल	अशुभ	अशुभ

गोरक्षमत के अनुसार तिथिचक्र तथा फल--

मासे शुक्लादिके पौषे तिथिः प्रतिपदादितः ।

द्वितीयाद्यास्तु माघे स्युस्तृतीयाद्यास्तु फाल्गुने ॥१००३॥

एवं चान्येषु मासेषु तिथ्यो द्वादशसंज्ञिकाः ।

लेख्याश्चक्रे त्रयोदश्याः संविहाय तिथित्रयम् ॥१००४॥

तृतीयादित्रये तत्र त्रयोदश्यादिकं फलम् ।

याम्ये प्राच्यादिकाष्टासु वक्ष्ये द्वादशधा क्रमात् ॥१००५॥

सौख्यं शून्यं धनात्तिश्च लाभो लाभो मयं धनम् ।

कष्टं सौख्यं कलिमृत्युः शून्यं प्राच्यां फल क्रमात्॥१००६॥

क्लेशो नैःस्वमथो सौख्यं द्रव्याप्तिर्लामपीडनम् ।

सौख्यं लाभः कष्टसिद्धिर्लाभः सौख्यं तु दन्तिनो ॥१००७॥

भयं नैःस्वं प्रियाप्तिश्च भयं द्रव्यं मृतिर्धनम् ।

मलेशालाभोऽर्थसिद्धिः स्वं लाभो मृत्युश्च पश्चिमे ॥१००॥

धनं मिथुं धन लाभः सौख्य लाभः सुख सुन्दर ।

कष्टं द्रव्यं च शून्यं च कष्टमुत्तरदिव्वात्मम् ॥ ४००६ ॥

टाका—एत श्लोको वा अर्थ वक्तुं दृष्टिये ॥ १००६-१००८ ॥

[illegible]

अथ चौपहरामुहूर्तः ।

अथ चौपहरा—मुहूर्तः । श्रीमुखन्दर-गोरखनाथकृतयात्रानिमित्तारम्भः—तृतीया त्रयोदशी का फल, चौथी चतुर्दशी का फल, पञ्चमी पूर्णिमा का फल, अमावस्या के दिन गमन न करै । मूल में काम श्रवणा न करै । कृष्ण वा शुक्लपक्ष की तिथि का फल—जिस मास की तिथि को जाय तो अपने चित्त से गमन करै । चन्द्रमा का चल भरणी भद्रा विशाखल ज्येष्ठी कालवास निथिघात नक्षत्रघात वन्दघात व्यतीपात कल्याणी संक्रान्ति अनेक कुयोग के दोष न होंगे, यह गोरखनाथ ने कहा है । जो तिथि साथ कर यात्रा करेगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्य सिद्धि करके आवेगा ।

घो मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	मा	आ	का	मा	श्रवमप्रहर	द्वितीयप्रहर	तृतीय प्रहर	चतुर्थ प्रहर	ति	पूर	दक्षिण	पारिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	अर्थलाभ	सौख्य	आतेमुख	राजपद	१	गुप्त	कौश	गुप्त	गमनाये
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भला न हो	कौश	भिन होय	आतेमुख	२	हुस	नेत्र	भिन	मन्म
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	अर्थ प्राप्ति	राजपद	अतिमुग	विन होय	३	अर्थ होय	दुःख	अर्थप्राप्ति	वोगागेन
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कौश होय	अशुभ	कार्यसिद्धि	अतिभय	४	ताम	सुख	मन्म	मन्म
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	अर्थ लाभ	मन्मलाभ	यन्मुभय	नार्थसिद्धि	५	लाभ	भनलाभ	भनलाभ	भनलाभ
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	सकट होय	कौश	सर्वमुख	वर्ज देना	६	गुप्त	लाभ	भनलाभ	भनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	विलम्ब होय	अर्थप्राप्ति	यमघण्ट	सर्वमुख	७	लाभ	कट	द्वयनाम	भनप्राप्ति
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	यमघण्ट	अशुभ	सर्वमुख	यमघण्ट	८	कट	सुख	कौश	कौश
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	अर्थलाभ	अशुभ	मुखरे आये	सर्वमुख	९	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	नष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	विना होय	विना होय	कार्यसिद्धि	सर्वमुख	१०	कौश	दुःख	अर्थगमन	भनप्राप्ति
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	विना होय	विन होय	सुख पाये	सुखपाप्ति	११	नष्ट	लाभ	द्वयनाम	भनप्राप्ति
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	मृत्यु	अशुभ	कार्यसिद्धि	१२	गुप्त	कट	अशुभ	अशुभ

गोरक्षकमत के अनुसार तिथिचक्र तथा फल—

मासे शुक्लादिके पौषे तिथिः प्रतिपदादितः ।

द्वितीयाद्यास्तु माघे स्युस्तृतीयाद्यास्तु फाल्गुने ॥१००३॥

एवं चान्येषु मासेषु तिथ्यो द्वादशसंज्ञिकाः ।

लेख्याश्चक्रे त्रयोदश्याः संविहाय तिथित्रयम् ॥१००४॥

तृतीयादित्रये तत्र त्रयोदश्यादिके फलम् ।

याम्ये प्राच्यादिकाष्ठासु वक्ष्ये द्वादशधा क्रमात् ॥१००५॥

सौख्यं शून्यं धनार्तिश्च लाभो लाभो भयं धनम् ।

कष्टं सौख्यं कलिमृत्युः शून्यं प्राच्यां फल क्रमात् ॥१००६॥

क्लेशो नैःस्वमथो सौख्यं द्रव्याप्तिर्लाभपीडनम् ।

सौख्यं लाभः कष्टसिद्धिर्लाभः सौख्यं तु दक्षिणे ॥१००७॥

भयं नैःस्वं प्रियाप्तिश्च भयं द्रव्यं मृतिर्धनम् ।

क्लेशालाभोऽर्थसिद्धिः स्वं लाभो मृत्युश्च पश्चिमे ॥१००८॥

धनं मिश्रं धनं लाभः सौख्यं लाभः सुखं सुखम् ।

कष्टं द्रव्यं च शून्यं च कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥ १००९ ॥

†—इन श्लोकों का अर्थ चक्र में देखिये ॥ १००२-१००९ ॥

दि	वे	ज्ये	आ	मा	आ	मा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७
५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१

अथ चौपहरामुहूर्तः ।

अथ चौपहरा—मुहूर्तः । श्रीमुकुन्दर-गोरखनाथरुतयात्रानिमित्तरम्भः—तृतीया त्रयोदशी का फल, चोय, चतुर्दशी का फल, पञ्चमी पूर्णिमा का फल, अमावस्या के दिन गमन न करे । मूल में काम अच्छा न करे । कृष्ण वा शुक्लपक्ष की तिथि का फल—जिस मास की तिथि को जाय तो अपने चित्त से गमन करे । चन्द्रमा का वल भरणी भद्रा दिशाशूल योगिनी कालवास तिथिघात नक्षत्रघात चन्द्रघात व्यतीपात कल्याणी संक्रान्ति अनेक कुयोग के दोष न होंगे, यह गोरखनाथ ने कहा है । जो तिथि साथ कर यात्रा करेगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्य सिद्धि करके आवेगा ।

पौ मा.	फा.	चै.	ज्ये.	आ.	मा.	आ.	का.	मा.	प्रथमप्रहर	द्वितीयप्रहर	तृतीयप्रहर	चतुर्थप्रहर	ते	पूर्व	वक्षिण	परिचय	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	अर्थलाभ	सौख्य	अतिमुख	राजपद	१	गुरु	दक्षिण	गुरु	गमनाये
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	भला न हो	कलेश	विघ्न होय	आनेगुरु	२	दुःख	नेष्ट	पित्त	मन्त्रम
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	अर्थ प्राप्ति	राजपद	अतिमुख	विघ्न होय	३	द्रव्यरक्षेश	दुःख	अर्थप्राप्ति	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	कलेश होय	अशुभ	कार्यसिद्धि	अतिभय	४	ताम	गुरु	माल	धनलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	अर्थ लाभ	मन्त्रलाभ	शत्रुभय	नार्यसिद्धि	५	ताम	गुरु	धनगम	सुख होय
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	सकट होय	कलेश	सर्वगुरु	वर्ज रक्षा	६	शुभ	लाभ	भिक्षाभ	अर्थगम
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	विलम्ब होय	अर्थप्राप्ति	यमघट	सर्वगुरु	७	ताम	कट	द्रव्यलाभ	सुख प्राप्ति
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	यमघट	अशुभ	सर्वगुरु	यमघट	८	कट	सुख	रक्ष	योग्य
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	अर्थलाभ	अशुभ	गुरुते आगे	सर्वगुरु	९	गुरु	ताम	कार्यसिद्धि	कट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भित्ता होय	विघ्न होय	कार्यसिद्धि	सर्वगुरु	१०	रक्ष	कट	अर्थगमन	धनप्राप्ति
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	विघ्न	विघ्न होय	गुरु पाये	गुरुप्राप्ति	११	० रक्ष	ताम	द्रव्यनाश	सुखप्रद
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	गुरु	गुरु	अशुभ	कार्यसिद्धि	१२	गुरु	कट	अशुभ	अशुभ

अमृतं राजसम्मानं मुसले च धनत्रयः ।
 गदाख्ये चाक्षया विद्या मातङ्गे कृतवर्द्धनम् ॥ १०१८ ॥
 राजसे तु महत्कष्टं चरे कार्यं च सिध्यति ।
 स्थिरयोगे गृहारम्भो प्रवृद्धे पाणिपोडनम् ॥ १०१९ ॥

के नाम	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
अनन्द	अश्विन	मृग	आश्विन	हस्त	अश्विन	उ० पा०	शत०	सिद्धि
कालदण्ड	भरणी	आर्द्रा	नषा	नित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू० भा	मृग
धृत्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाषाढा	स्वाती	मूल	श्रवण	उ० भा	असुख
जापति	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	विशाखा	पू० पा०	धनिष्ठा	रेवती	सौभाग्य
गोम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ० पा०	शत०	अश्विन	अविश्वी०
वास	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू० भा०	भरणी	धनक्षय
वन	पुनर्वसु	पूर्वाषाढा	स्वाती	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	सौभाग्य
श्रीवत्स	पुष्य	उ० फा०	विशाखा	पू० पा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहि	साख्य
गज	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ० पा०	शत०	आश्विन	मृग	क्षय
सुंदर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्म०
छन	पूर्वाषाढा	स्वाती	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुन०	राजसम्मान
मैत्र	उ० फा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	पुष्टि
मानस	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शत०	अश्विन	मृगशिरा	आश्विन	सौभाग्य
पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनप्रति
लुम्बक	स्वाती	मृग	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुन०	पू० फा	धनहनि
उत्पात	विशाखा	पू० पा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	मघा	प्राणनाश
मृग	अनुराधा	उ० पा०	शत०	आश्विन	मृग	अश्विन	हस्त	मृग
काय	ज्येष्ठा	अभि	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	भरणी
सिद्धि	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाषाढा	भरणी	वीर्य
शुभ	पू० पा०	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ० पा०	मघा	मृग
अमृत	उ० पा०	शत०	अश्विन	मृग	अश्विन	हस्त	मृग	मृग
सुख	अभिजात	पू० भा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	उ० पा०	मृग
नद	श्रवण	उ० भा	चित्रा	ज्येष्ठा	पुन०	पू० फा	मृग	मृग
नात	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	मघा	चित्रा	उ० पा०	मृग
राक्षस	राक्षसि	अश्विन	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग
चर	पूर्वाषाढा	भरणी	आर्द्रा	मघा	मृग	मृग	मृग	मृग
स्थिर	उ० भा	चित्रा	ज्येष्ठा	पुन०	पू० फा	मृग	मृग	मृग
प्रवर्ध	रेवती	रोहिणी	पुष्य	मघा	मृग	मृग	मृग	मृग

आनन्दादिशुभाशुभयोग--

सूर्योऽश्विभातुहिनरोचिषि चन्द्रधिष्ण्या-

त्सार्पाच्च भूमितनयेऽथ बुधे च हस्तात् ।

मैत्रादगुरौ भृगुसुते खलु वैश्वदेवा-

च्छायासुते वरुणात्क्रमशः स्युरेवम् ॥ १०१० ॥

आनन्दः कालदराडश्च धूम्रो धाता क्रमेण च ।

सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजो नाम्ना श्रीवत्सो वज्रमुद्गरः ।

छत्रं मैत्रं मानसश्च पद्माख्यो लुम्बकस्तथा ॥ १०११ ॥

उत्पातो मृत्युकाणाख्यः सिद्धिश्चैव शुभोऽमृतः ।

मुसलोऽथ गदाख्यश्च मातङ्गो राजसश्चरः ॥ १०१२ ॥

स्थिरः प्रवर्द्धमानश्च योगाऽष्टाविंशतिः क्रमात् ।

फल--

आनन्दे लभते सिद्धिं कालदराडे मृतिं तथा ।

धूम्राख्ये न सुखं प्रोक्तं सौभाग्यं च प्रजापतौ ॥ १०१३ ॥

सौम्ये चैव महत्सौख्यं ध्वाङ्क्षे चैव धनक्षयश्च ।

ध्वजनाम्नि च सौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यसम्पदः ॥ १०१४ ॥

वज्रे क्षयो मुद्गरे च श्रीनाशस्तु तथैव च ।

छत्रे च राजसम्मानं मैत्रे पुष्टिर्न संशयः ॥ १०१५ ॥

मानसे चैव सौभाग्यं पद्माख्ये च धनागमः ।

लुम्बके धनहानिश्च ह्युत्पाते प्राणनाशनम् ॥ १०१६ ॥

मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणे च क्लेशमादिशेत् ।

सिद्धियोगे भवेत्सिद्धिः शुभे कल्याणमेव च ॥ १०१७ ॥

अमृते राजसम्मानं मुसले च धनज्ञयः ।

गदाख्ये चाक्षया विद्या मातङ्गे कृतवर्द्धनम् ॥ १०१८ ॥

राक्षसे तु महत्कष्टं चरे कार्यं च सिध्यति ।

स्थिरयोगे गृहारम्भो प्रवृद्धे पाणिपीडनम् ॥ १०१९ ॥

नौमिक नाम	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१ अमृत	अश्वि०	मृग०	आश्लेष०	हस्त	अश्वि०	उ०पा०	शत०	सिद्धि
२ मलदंड	भरणी	चित्रा	मघा	नित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू० भा	मृत्यु
३ धृज	कृत्तिक्	पुनर्वसु	पूर्वाषा०	स्वाता	मूल	श्रवण	उ० भा	असुर
४ प्रजापति	रोहिणी	पुष्य	उ० फा०	विशाखा	पू० पा०	धनिष्ठा	रेवता	सौभाग्य
५ सौम्य	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ०पा०	शत०	अश्वि०	अधिरुद्धि०
६ ध्वज	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि०	पू० भा०	भरणी	धनक्षय
७ श्वज	पुनर्वसु	पूर्वाषा०	स्वाता	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत	सौभाग्य
८ श्रवण	पुनर्वसु	उ० फा०	विशाखा	पू०पा०	धनिष्ठा	रेवता	रोहि	सौख्य
९ गज	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ०पा०	शत०	अश्वि०	मृग०	क्षय
१० सुदर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि०	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्म०
११ धृज	पूर्वाषा०	स्वाता	मूल	विशाखा	उ० भा०	कृत	पुन०	राजसम्मान
१२ धैर्य	उ० फा०	विशाखा	पूर्वाषा०	धनिष्ठा	रेवता	रोहिणी	पुष्य	पुष्टि
१३ मानस	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा	शत०	अश्वि०	मृगशिरा	आश्लेषा	सौभाग्य
१४ पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि०	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनप्रति
१५ लुम्बक	स्वाता	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत्ति०	पुन०	पू० भा	धनदंति
१६ उत्प्रात	विशाखा	पू०पा०	धनिष्ठा	रेवता	रोहिणी	पुन०	पू० भा	श्रावणा
१७ मृत्यु	अनुराधा	उ०पा०	शत०	आश्लेषा	मृग०	आश्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८ बाण	ज्येष्ठा	अभि०	पू० भा०	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	लक्ष्म
१९ सिद्धि	मूल	श्रवण	उ० भा०	कृत	पुनर्वसु	पुनर्वसु	उ० भा०	सौभाग्य
२० शुभ	पू०पा०	धनिष्ठा	रेवता	रोहि०	पुन०	पू० भा०	हस्त	सौभाग्य
२१ अमृत	उ०पा०	शत०	अश्वि०	मृग	आश्लेषा	मघा	चित्रा	लक्ष्म
२२ सुख	अभिजित	पू० भा	भरणी	आर्द्रा	मघा	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म
२३ नद	श्रवण	उ० भा	कृत्तिक्	पुन०	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म	लक्ष्म
२४ राक्षस	धनिष्ठा	रेवता	रोहिणी	पुन०	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म	लक्ष्म
२५ राक्षस	मत्तभिष्ठा	अश्विनी	आर्द्रा	मघा	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म	लक्ष्म
२६ चर	पूर्वाषा	भरणी	आर्द्रा	मघा	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म	लक्ष्म
२७ स्थिर	उ० भा०	कृत्तिक्	पुन०	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म	लक्ष्म	लक्ष्म
२८ प्रवर्धमान	रेवता	रोहिणी	पुन०	पू० भा	चित्रा	लक्ष्म	लक्ष्म	लक्ष्म

टीका—आनन्दादियोग अष्टादश हैं, इनमें एक एक योग को द्वार और उन्मेष हैं । उनका क्रम ऐसे जानिये—रविवार को अश्विनो, सोमवार को मृग, मङ्गलवार को आश्लेषा, बुधवार को कर्क, शुक्रवार को अश्लेषा, शनिवार को उत्तराषाढा और शनिवार को शततारका इन चारों में इन नक्षत्रों का संयोग हो तो आनन्दादिक योग जानिये, ऐसे अष्टादश योगों का क्रम पीछे चक्र में लिखा है ॥ १०१०-१०१६ ॥

चरयोगः—

रवौ पूषा गुरो पुष्यः शनौ मूलं भृगो मघा ।

सौम्ये ब्राह्मं विशा भौमे चन्द्रे(?)ऽऽर्क्षं चरयोगकः ॥ १०२० ॥

क्रकचयोगः—

रवौ तु द्वादशी प्रोक्ता भौमे च दशमी तथा ।

चन्द्रे चैकादशी प्रोक्ता नवमी बुधवासरे ॥ १०२१ ॥

शुक्रे च सप्तमी ज्ञेया शनौ चैव तु पष्ठिका ।

गुरौ चाष्टमिका ज्ञेया योगोऽयं क्रकचो बुधैः ॥ १०२२ ॥

दग्धयोगः—

बुधे तृतीया कुजपञ्चमी च पष्ठ्यां गुरावष्टमि (?) शुक्रवारे ।

एकादशी सोमशनिर्नवम्यां द्वादश्यथार्कज्विति दग्धयोगः ॥ १०२३ ॥

मृत्युयोगः—

रवौ भौमे भवेन्नन्दा भद्रा जीवशशाङ्कयोः ।

जया शुक्रे बुधे रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ १०२४ ॥

सिद्धियोगः—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिता ।

शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगा उदाहृताः ॥ १०२५ ॥

क्र.सं.	पदम्	विवरणम्	अर्थः	विवरणम्	अर्थः	विवरणम्	अर्थः
१	अक्षय	पूर्वदिने	अक्षयः	अक्षयः	अक्षयः	अक्षयः	अक्षयः
२	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
३	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
४	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
५	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
६	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
७	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
८	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
९	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
१०	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
११	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
१२	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने
१३	अक्षय	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने	१२ दिने

दास दासो लेने का मुहूर्त्त—

दासचक्र—

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थं मृत्युसंग्रहे ।

शीर्षे त्रीण्यर्थलाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् ॥१०३३॥

हृदि पञ्च धनं धान्यं पादे पट्कं दरिद्रता ।

पृष्ठे द्वे प्राणसन्देहो नाभौ वेदाः शुभावहम् ॥ १०३४ ॥

गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थकम् ।

एकं वामे नाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकृत् ॥ १०३५ ॥

टीका—नराकार चक्र के अक्षय स्थानों में अङ्क स्थापित करै शिरपर ३ नक्षत्र धरै

उसका फल अर्थलाभ, मुख में ३ फल नाश. हृदय में ५ फल धनघात्य बुद्धि, पदों पर ६

फल दरिद्र,

भय पीडा,

दाहिने हा।

७३३-१०३५॥

फल—

शिरःस्थाने भवेत्लाभो मुखे हानिः प्रजायते ।

पादयोरर्थलाभः स्याद्बृहदये सौख्यवर्द्धनम् ॥ १०४० ॥

स्तनयोस्तु महालाभो गुह्यस्थाने महद्भयम् ।

अर्थमादिगवां ज्ञेये महिष्यां सूर्यभान्न्यसेत् ॥ १०४१ ॥

इदमेव वृषे ज्ञेयं विशेषः पत्सु षोडश ।

टीका—गाय लेना हो तो उत्तराफल्युनी से दिसवनक्षत्र तक गिनें उनमें से मस्तक पर ३ फल लाभदायक, मुख में २ फल हानि, पद पर ८ फल अर्थलाभ, हृदय में ५ फल सुख, स्तन में ८ फल महालाभ, भग पर १ फल प्रजावृद्धि, गुह्य पर ४ फल भय जानिये । और महिषी (भैंस) लेना हो तो भी इसी क्रम से शुभाशुभ फल जानिये । परन्तु सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने और वृषभ लेना हो तो भी ३० फल से क्रम जानिये परन्तु पद पर १६ नक्षत्र घरे, शेष स्थानों में २ घरे और गाय के समान शुभाशुभ फल जानै ॥ १०३६-१०४१ ॥

अश्वक्रयमुहूर्त—

अश्वे तु सूर्यभाच्चैव साभिजिद्धानि विन्यसेत् ।

पञ्च स्कन्धे जन्मभान्तं पृष्ठे तु दशकं न्यसेत् ॥ १०४२ ॥

पुच्छे ज्ञेयं द्वयं प्राज्ञैश्चतुष्पादं चतुष्टयम् ।

उदरे पञ्च धिष्ण्यानि मुखे द्वे च प्रकीर्तिते ॥ १०४३ ॥

फल—

सौभाग्यमर्थलाभश्च स्त्रीनाशो रणभङ्गता ।

नाशश्च ह्यर्थलाभश्च फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥ १०४४ ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से अपने जन्मनक्षत्र तक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करें और इस क्रम से स्थानों का फल जाने । कन्धे पर ५ फल सौभाग्य, पोंड पर १० फल अर्थलाभ, पुच्छ पर २ फल स्त्रीनाश, पैरों पर ४ फल रणभङ्गता, उदर पर ५ फल नाश और मुख में २ फल अर्थलाभ, ऐसा फल पण्डितों ने कहा है ॥ १०४२-१०४४ ॥

शिविकारोहण-चक्र-मुहूर्तः—

सूर्यभादिनभं यावत्पञ्च पञ्च चतुर्दिशि ।

मध्ये तु सप्त देयानि चक्रं ज्ञेयं सुखावहम् ॥ १०४५ ॥

फल—

पूर्वभागे तु चारोग्यं दक्षिणे कष्टकारकम् ।

पश्चिमे कृशता चैव उत्तरे व्याधिसम्भवः ॥ १०४६ ॥

मध्यमे च शुभं प्रोक्तमायुर्वृद्धिकरं परम् ।

पालकारोहणं चैव बालकस्य बुद्धौ हतम् ॥ १०४७ ॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से जन्मनक्षत्र पर्यन्त पालकी अथवा पालना इनमें से जिसपर आरोहण करना चाहे उसके चारो ओर तथा मध्य भाग में नक्षत्र लिखने का क्रम—
पूर्वभाग में ५ फल आरोहण, दक्षिण में ५ फल कष्टकारक, पश्चिम में ५ फल कृशता,
उत्तर में ५ फल व्याधिनाश और मध्य में ७ फल शुभ तथा आयुर्वृद्धि
जानना ॥ १०४५—१०४७ ॥

हस्तिक्रयमुहूर्त—

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभान्तं च सूर्यभात् ।

कर्णे शीर्षे द्विजे पुच्छे द्वयं सर्वत्र योजयेत् ॥ १०४८ ॥

शुराढायां तु द्वयं योज्य वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ।

पङ्क्ते चतुर्षु पादेषु साभिजिदौ न्यसेत्कमात् ॥ १०४९ ॥

फल—

कर्णे चैव महत्प्रभो मस्तके लाभ एव च ।

दन्ते चैव भवेत्प्रभो पुच्छे हानिः प्रजायते ॥ १०५० ॥

शुराढायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सत्यनयकः ।

उदरे रोगसम्भूतिर्मुखे तु मृत्युः सत्यः ॥ १०५१ ॥

पादयोश्च भवेत्प्रभो गजे चैव विनिर्दिष्टम् ।

टीका—पहले सूर्यनक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक स्थापित करने का क्रम लिखा है परन्तु इसके स्थान और फलों तथा नक्षत्रों की संगणना भिन्न है । प्रथम कानों पर २ फल लाभ, मरतकपर २ फल लाभ, दाँतों पर २ फल लाभ, पूंछ पर २ फल हानि, खंडपर २ फल शुभ, पोट पर ४ फल सुख सम्पदा, गेटपर ४ फल रोग, मुखपर ४ फल मध्यम, पावों पर ६ फल लाभ, गेहे फल जानिये ॥ १०४८—१०५१ ॥

छत्रचक्र—

त्र्युत्तरा रोहिणी रोद्रं पुष्यश्च शततारका ।
धनिष्ठा श्रवणं चैव शुभानिच्छत्रधारणो ॥ १०५२ ॥

फल—

त्रीणि मूले सप्त दराडे कराडे चैव तु पञ्चकम् ।
मध्ये वसु प्रदातव्यं शिखरे वेद एव च ॥ १०५३ ॥
मूले च जायते नाशो दराडे हानिर्धनक्षयः ।
कराडे च राजसम्मानं मध्ये छत्रपतिर्भवेत् ॥ १०५४ ॥
शिखरे कीर्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ।

टीका—तीनों उत्तरा, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, शततारका, धनिष्ठा और श्रवण ये नक्षत्र छत्रधारण में शुभ हैं। परन्तु अपने जन्मनक्षत्र से सूर्यनक्षत्र तक लिखने के क्रमसे प्रथम मूलपर ३ फल नाश, दराडपर ७ फल हानि और धनक्षय, कराडमें ५ फल राजसम्मान, बीच में ८ फल छत्रपति, शिखर पर ४ फल नाश और कीर्ति की वृद्धि जानना ॥ १०५२-१०५४ ॥

मञ्चकचक्र—

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं मञ्चमूले चतुश्चतुः ।
गात्रेऽविधं त्वेकविन्धासु मध्ये सप्त विनिर्दिशेत् ॥ १०५५ ॥

फल—

मूले तु सुखसौभाग्यं गात्रे प्रोक्तं भयं महत् ।
मध्ये सत्पुत्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरं परम् ॥ १०५६ ॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से दिवसनक्षत्र तक मञ्चकचक्र में शङ्क स्थापन करने की विधि—पहिले मञ्च के मूल में चार २ फल सुखप्राप्ति, मध्य गात्र पर ४ फल भयप्राप्ति, आगे विन्धा पर १ फल भय तथा मध्य में ७ फल पुत्रलाभ और आयु की वृद्धि होय ॥ १०५५-१०५६ ॥

तिलों की घानी करने का सुहूर्त—

घाणाचक्रं प्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चान्द्रमेव च ।

त्रीणि त्रीणि त्रयं त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ॥१०५७॥

त्रीणि त्रीणि तु भान्यत्र योजयेद्घाणके शुभम् ।

फल—

हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशो द्रव्यमेव च ।

स्वामिघातो निर्धनता मृत्युरेव सुखं क्रमात् ॥१०५८॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र पर्यन्त घानीचक्र के नव भाग करे ।
नीचे लिखे अनुसार जानिये ॥ १०५७—१०५८ ॥

तिलों की घानी—

१ प्रथम भाग	हानि
२ द्वितीय भाग	पेश्वर्य
३ तृतीय भाग	आरोग्य
४ चतुर्थ भाग	नाश
५ पञ्चम भाग	द्रव्य
६ षष्ठ भाग	स्वामिघात
७ सप्तम भाग	निर्धन
८ अष्टम भाग	मृत्यु
९ नवम भाग	सुख

शरत्तिथि पर—

सूर्यभाज्जन्मभान्न च घटुप्येव न योजयेत् ।

त्रापाणे वाणसु प्रायः गणानि —

गणमूले तथा पञ्च पञ्च मन्त्रे —

पश्चेत् तैव न योजयेत् —

पश्चेत् तैव न योजयेत् —

पश्चेत् तैव न योजयेत् —

टीका—सूर्यनक्षत्र से जन्मनक्षत्र पर्यन्त भवनपर राश्यापन करने का विधि—प्रथम शराग्र पर ५ दानि, शर पर ५ दानि, शुभमूल पर ५ दानि, फिर मन्त्र पर ५ शुभा और धौच के दण्ड पर राज्यभक्त दो इनमें से शुभाशुभ फल देण के धनुष घातन कगना चाहिये ॥१०५६-१०६१॥

रथनक्र—

रथाकारं लिखेनक्रं सूर्यभाजुनिभं न्यसेत् ।
रथाग्रे त्राणि ऋजाणि षट् चक्रेषु ततो न्यसेत् ॥१०६२॥
ऋजुत्रयं मध्यदण्डे रथाग्रे भत्रयं तथा ।
शुगे च भत्रयं ज्ञेयं षट् ऋजाण्यन्तिमेष्वनि ॥१०६३॥
शेषमृजुत्रयं योज्यं चक्रज्ञैः सर्वतोमुखे ।

फल—

शृङ्गे मृत्युर्जयश्चक्रं सिद्धिर्ज्ञेया च दण्डके ।
रथाग्रे दण्ड अचानं मध्ये चैव सुखं शुभम् ॥ १०६४ ॥
बुधैरेवं फलं ज्ञेयं जन्मभान्तं क्रमेण च ।
गर्गोक्तानि चक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधैः ॥१०६५॥

टीका—रथ के शास्त्र का चक्र गीचकर उसके स्थानों पर सूर्यनक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक लिखने का क्रम—प्रथम शृङ्गों पर ४ फल मृत्यु, पक्षियों पर ६ फल जय, मध्यदण्डों पर ३ फल सिद्धि, रथ के अग्रभाग पर ३ फल धनलाभ, बुधों पर ३ फल भद्र अन्त के मार्ग पर ६ फल शुभ और सर्वत्र ३ फल शुभ जानिये ॥१०६२-१०६५॥

ऊँसों के रस काढ़ने का सूहृत्—

वेददिनेत्रभृभृतवाणहस्तः साः क्रमात् ।

फल—

प्रथमे च भवेत्क्षमोद्विर्ताये हानिरेव च ॥ १०६६ ॥
तृतीये सर्लाभश्च चतुर्थे च क्षयस्तथा ।
पञ्चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठ्याने शुभं स्मृतम् ॥ १०६७ ॥
सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यकम् ।
सूर्यभाद्रगण्येचान्द्रमिथुयन्त्रे नियोजयेत् ॥ १०६८ ॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक ऊखों के रस के घानों के ८ भाग करे । फल नीचे लिखे हैं इनमें जिस दिन शुभफल आवै उस दिन काढ़े ॥ १०६६—१०६७ ॥

ऊखों के रस की घानी—

४ प्रथम भाग	लक्ष्मी
२ द्वितीय भाग	हानि
२ तृतीय भाग	सर्वलाभ
१ चतुर्थ भाग	क्षय
५ पञ्चम भाग	मृत्यु
५ षष्ठ भाग	शुभ
२ सप्तम भाग	पीड़ा
६ अष्टम भाग	धनधान्य

वाग लगाने का मुहूर्त—

गोसिहालिगतेषु चान्तरगते भानौ बुधादित्रये

चन्द्रार्के च शुभा बुधैरभिहिताऽरामप्रतिष्ठाक्रिया ।

आश्लेषा भरणीद्वयं शतभिषक्यक्त्वा विशाखां कुहू

रिक्तां पञ्चतिमष्टमीं परिहरेत्पष्टीमपि द्वादशीम् ॥ १०६६ ॥

टीका—उत्तरायण में वृष सिंह अथवा वृश्चिक इन राशियों का नवम बुध और शुक्र शुभ चन्द्र रवि इनमें कोई पार हो ऐसा शुभ दिन देखा कर नवीन वाग लगावे । आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावस्या रिक्ता तिथि प्रसिद्ध अष्टमी पष्टी और द्वादशी इन सबों को छोड़कर अन्य तिथियों में वाग लगावे ॥ १०६६ ॥

सिक्का ढालने का मुहूर्त—

मृदुध्र वक्षिप्रचरेषु भेषु यागे प्रशस्ते शनिचन्द्रद्वयै ।

वारै तथा पूर्णजलाह्वये च मुद्रा प्रशस्ता गुग्गुला हि गन्ता ॥ १०६७ ॥

टीका—मृदु ध्रुव क्षिप्र चर इन नक्षत्रों में और शनि चन्द्र द्वय वारों तथा पूर्णजलाह्वये च मुद्रा प्रशस्ता गुग्गुला हि गन्ता परके सिक्का अर्थात् रुपया ढालना शुभ है ॥ १०६७ ॥

हृदिर्मासा मुहूर्त—

स्वातीत्रासमृगतरादित्युगे राजनवद्वयं मया

रेवत्युत्तरविष्णुभ हृदिर्मासा मुहूर्तः कृत्वा विजये तिजे ।

गोक्षन्याभपमन्मथाश्च गुग्गुला वागः पुनः पुनः

पष्टीद्वादशिति पर्वते तथा वारै विजये तिजे ॥ १०६८ ॥

टीका—स्वाती रोहिणी मृगशिरा उत्तरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा मघा उत्तराफल्गुनी श्रवण ये नक्षत्र और वृष कन्या मकर मिथुन ये लग्न शुभ हैं। मङ्गल शनि और पृष्ठी द्वादशी तथा रिक्ता दोनों पर्व अर्थात् १५।३० और दोनों द्वितीया इनको छोड़कर कृपिकर्म का आरम्भ और बीजादिकों का वपन(बोना)करावै ॥१०१॥

हलचक्र—

त्रिकं त्रिकं त्रिकं पञ्च त्रिकं पञ्च त्रिकं त्रिकम् ।

सूर्यभाद्रगाणयेचान्द्रमशुभं च शुभं क्रमात् ॥१०७२॥

टीका—प्रथम हलधारण करने का मुहूर्त्त—सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्र पर्यन्त गिन कर ८ भाग करे उनमें प्रथम भाग ३ फल अशुभ, द्वितीय भाग ३ फल शुभ, तृतीय भाग ३ फल अशुभ, चतुर्थ भाग ५ फल शुभ, पञ्चम ३ फल अशुभ, षष्ठ ३ फल शुभ, सप्तम ५ फल अशुभ, और अष्टम ३ नक्षत्र शुभ है। जिस नक्षत्र के भाग में दिवस नक्षत्र आवे उस दिन हलधारण करै ॥ १०७२ ॥

नौका बनाने वा जल में उतारने का मुहूर्त्त—

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्रचित्राशीतोष्णारश्मिवसुजीवकभान्यमृनि
वारेचजीवभृगुनन्दनकौ प्रशस्तौ नौकादिसङ्घटनवाहनमेषुकुर्यात् १०७३

टीका—रेवती पुनर्वसु अश्विनी आश्लेषा शततारका अनुराधा चित्रा मृगशिरा हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार शुभ हैं। इनमें नौका बनवाना वा जल में उतारना उत्तम है ॥ १०७३ ॥

नौका चक्र—

रविभुक्तर्दामारभ्य कुर्यात् त्रीण्युदये च षट् ।

नात्यां त्रीणि हृदि त्रीणि पृष्ठे भूः पार्श्वर्ग त्रयम् ॥१०७४॥

शुक्राणो त्रीणि परामध्ये नौकाचक्रे भसंस्थितिः ।

उपरिस्थं च मध्यस्थं षट् श्रेष्ठं च परं न सत् ॥१०७५॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से तीन ३ नक्षत्र लिखने का क्रम—ऊपर के भाग में ६, नाली में ३, हृदय पर ३, पांव में १, पार्श्व में ३, शुक्राण में ३, नौका के मध्यभागमें ६ दीजिये उसमें से ऊपर और मध्य के नक्षत्र शुभ और अन्य स्थानों के अशुभ जानिये ॥१०७४—१०७५॥

लग्न और ग्रहचल—

त्रिषडायगतः सूर्यश्चन्द्रो द्वित्र्यायगः शुभः ।

कुजार्का त्रिषडायस्थौ त्रिषट्खेतरगो गुरुः ॥१०७६॥

द्विसुतास्ताष्टरिः फायरिपुसंस्थो बुधः स्मृतः ।

सुखान्त्यारान्विनाऽन्यत्र नौयाने शुभदः सितः ॥ १०७७ ॥

1—नौका में माल भरने अथवा चलाने को लग्न का ग्रहफल ज्ञान—तृतीय पक्ष इन स्थानों में सूर्य चन्द्रमा मङ्गल और शनि ये हो तो शुभ और ३६११ इन में छूटकर अन्य स्थानों में गुरु शुभ, २११७८१२६ इन स्थानों में बुध हो तो २६ इन स्थानों को छोड़ अन्य स्थान का शुभ शुभ जानिये ॥ १०७६-१०७७ ॥

नौका-स्थान के ग्रह—

॥ पापखगाः सौम्याः शुक्राणो शुभकारकाः ।

यान्मृत्युदाः क्रूराः पृष्ठे क्रूषे च भीतिकृत् ॥ १०७८ ॥

वाह्ये स्थितास्ते च ह्यलाभाय स्मृता बुधः ।

चैचार्य दैवज्ञो नौयानसमय वदेत् ॥ १०७९ ॥

1—नौकाखली लिख कर जिसमें जो २ ग्रह जित २ स्थान में पड़ें ता 1—नाली में पापग्रह शुभ, शुक्राण पर शुभ, ये विपरीत हों ता शुभ ग्रह पीठ पर अथवा कूर्प पर आये ता भयात्क और इन ग्रहों में से ग्रह लाभ हो यह विचार करके ज्योतिषी नौकायान समय का पता १०७८-१०७९

दीपिकावली—

॥ पिकायां मुखे पञ्च राजसम्मानलानदः ।

एते नव धनप्राप्तिर्मध्येऽष्टौ स्वामिन्मृत्युदाः ॥ १०८० ॥

एते पञ्च भवेद्राज्यमग्नि-कुलादि दो पञ्चाश ।

1—शुक्राणा नक्षत्र से दिक्नक्षत्र पर्यन्त जिसमें १०८०-१०८१

एत पर १ धनप्राप्ति, २ भव दे, ३ स्वामिन्, ४ मृत्युदा, ५ पिकायां

१०८० जानिये ॥ १०८० ॥

१०८०

शुक्राणां मुखे नक्षत्र ये नक्षत्र १०८०

ये ह्यलाभाय स्मृता बुधः १०८०

१०८० ॥ १०८० ॥

१०८० ॥ १०८० ॥

फल—

शीघ्रं जलं न जलं मध्यमजलमजलं बहुजलं च ।

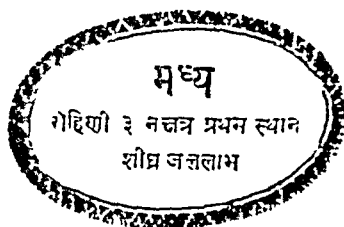
अमृतजलं बहुज्ञारं सजलं मध्यजलं क्रमाज्ज्ञेयम् ॥१०८३॥

मत्स्ये कुलारे मकरेऽधिकजलं तथैव चार्धं वृषकुम्भयोश्च ।

अलौचतौलौचजलाल्पता मता शेपाश्चसर्वेऽजलदाः प्रकीर्तिताः १०८४ ॥

ईशान
३ नक्षत्र नक्षत्रस्थान
मध्यम जलआग्नेय
३ नक्षत्र द्वितीयस्थान
मध्यम जल

पूर्व

३ नक्षत्र द्वितीयस्थान
जलाभाजउत्तर
३ नक्षत्र अष्टमस्थान
सजलदक्षिण
३ नक्षत्र चतुर्थस्थान
अल्पजल

अक्षय्य

३ नक्षत्र पञ्चमस्थान

पश्चिम

वज्र
३ नक्षत्र षष्ठमस्थान
अल्पजलनैऋत्य
३ नक्षत्र सप्तमस्थान
अल्पजल

टीका—नया कूप और वापो खोदने का मुहूर्त—रोहिणी से वर्त्तमान दिवस के नक्षत्र पर्यन्त का क्रम—मीन कर्क मकर इन तीन राशियों का चन्द्रमा हो तो बहुत जलनिकले, कुम्भ इनका चन्द्र हो तो उसका आधा जल रहे, वृश्चिक तुला इनका चन्द्रमा हो तो अल्पजल रहे शेष राशियों के चन्द्रमा में खोदे तो जल नहीं निकले । यह बात है ॥१०८१-१०८४ ॥

अथ प्रश्नप्रकरणम् ।

तिथ्यादिप्रयुक्त प्रश्न—

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।

अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वं रजस्तमः ॥ १०८५ ॥

फल—

सिद्धिस्तात्कालिकी सत्त्वे रजसा तु विलम्बिता ।

तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ॥ १०८६ ॥

टीका—जिस तिथि चार नक्षत्र और प्रहर में प्रश्न करै उसका उत्तर नीचे लिखने है ।
एष-तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोड़ा तो १७ हुए इस में ३ का
देया तो शेष २ बचै तो दूसरा रज हुआ उसका फल कार्य में विलम्ब है । इस
से ३ बचै तो तम निष्फल और १ बचै तो सत्त्व कार्य सिद्धि हो ॥ १०८५ ॥ १०८६ ॥

अपनी छाया से प्रश्न फल—

आत्मच्छाया त्रिगुणिता त्रयोदशसमन्विता ।

वसुभिश्च हरेद्भागं शेषं चैव शुभाशुभम् ॥ १०८७ ॥

लाभश्चैकै त्रिके सिद्धिर्वृद्धिः पञ्चमसप्तमे ।

द्वये हानिश्चतुः शोकं षष्ठाष्टे मरणं भूदृष्टे ॥ १०८८ ॥

टीका—अपनी छाया को त्रिगुनी करने पर १३ मिले ५ वें पद पर ५५ तक

शेष बचे पद फल नीचे के चक्र से जानिये ॥ १०८७—१०८८ ॥

पद १	पद २	पद ३	पद ४	पद ५	पद ६	पद ७	पद ८	पद ९	पद १०	पद ११	पद १२	पद १३	पद १४	पद १५	पद १६	पद १७	पद १८	पद १९	पद २०	पद २१	पद २२	पद २३	पद २४	पद २५	पद २६	पद २७	पद २८	पद २९	पद ३०
राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज	राज

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।

अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वं रजस्तमः ॥ १०८५ ॥

किल -

शीघ्रं जलं न जलं मध्यमजलमजलं बहुजलं च ।

अमृतजलं बहुवारं सजल मध्यजलं क्रमाज्जयेत् ॥१०-३॥

मत्स्ये कुलारे मकरेऽधेकजलं तथैव चार्धं वा कुम्भयोश्च ।

अली च तीली च जलाल्पना मना शशाश्च गर्वेऽजनदाः प्रसीतिनाः ॥१०-४॥

विज्ञान
१ नवग्रह नक्षत्राणां
माध्यम

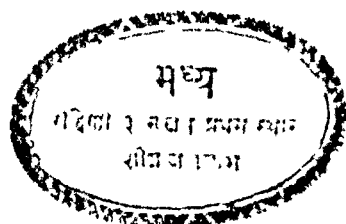
आग्नेय
१ नक्षत्र नक्षत्राणां
माध्यम

पूर्व

१ नक्षत्र नक्षत्राणां
माध्यम

उत्तर

१ नक्षत्र नक्षत्राणां
माध्यम



दक्षिण
१ नक्षत्र नक्षत्राणां
माध्यम

L. B. B.

M. B. B. B. B. B.

पश्चिम

१ नक्षत्र नक्षत्राणां
माध्यम

१ नक्षत्र नक्षत्राणां
माध्यम

टीका-नया कूप और चापो खोदने का मुहूर्त-रोहिणी से वर्षामान दिवस के नक्षत्र पर्यन्त का क्रम-मीन कर्क मकर इन तीन राशियों का चन्द्रमा हो तो बहुत जल निकले, वृष कुम्भ इनका चन्द्र हो तो उसका आधा जल रहे, वृश्चिक तुला इनका चन्द्रमा हो तो अल्पजल रहे, शेष राशियों के चन्द्रमा में रोदे तो जल नहीं निकले। यह बात है ॥१०-५१-१०-५४॥

भाषाटीकासमेतः ।

अथ प्रश्नप्रकरणम् ।

तिथ्यादिप्रयुक्त प्रश्न—

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।

अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वं रजस्तमः ॥ १०=५ ॥

फल—

द्वेस्तात्कालिकी सत्त्वे रजसा तु विलम्बिता ।

सा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ॥ १०=६ ॥

जिस तिथि वार नक्षत्र और प्रहर में प्रश्न करै उसका उत्तर नीचे लिखने हो ।
तेथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोड़ा तो १७ हुए इस में ३ का
तो शेष २ बचै तो दूसरा रज हुआ उसका फल कार्य में धिलम्ब है । इस
१ बचै तो तम निष्फल और १ बचै तो सत्त्व कार्य सिद्धि हो ॥ १०=५-१०=६ ॥

अपनी छाया से प्रश्न फल—

यात्मच्छाया त्रिगुणिता त्रयोदशसमन्विता ।

सुभिश्च हरेद्भागं शेषं चैव शुभाशुभम् ॥ १०=७ ॥

लाभश्चैके त्रिके सिद्धिर्वृद्धिः पञ्चमसम्पत्तेः ।

द्वये हानिश्चतुः शोकं षष्ठाष्टे मरणं भुङ्क्ते ॥ १०=८ ॥

बा—अपनी छाया को त्रिगुनी करके उत्तर १३ निम्न लिखने हो ।
वे यह फल नीचे के चक्र से जानिये ॥ १०=७-१०=८ ॥

लाभ	हानि	शोक	मरण
१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।

अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वं रजस्तमः ॥ १०=५ ॥

वर्तमानं च नक्षत्रं गणयेत् कृत्तिकादितः ।

सप्तमिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ १०६० ॥

प्रश्नाक्षरं रुद्रयुक्तं सप्तभिर्भाजितं तथा ।

फलमेवं क्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषां हि शुभाशुभम् ॥ १०६१ ॥

टीका—तिथि प्रहर पात्र नक्षत्र इन सबको जोड़ करके स्थान का भाग दे जो शेष बचे वह फल जानिये । दूसरा प्रकार—कृत्तिका से वर्तमान नक्षत्र तक गिनने का भाग दे । तीसरा प्रकार—प्रश्न के अक्षरों में २१ मित्ता के स्थान का भाग दे शेष बचे वह फल जानिये ॥ १०६०—१०६१ ॥

फल—

एकशेषे भवेत्स्थाने द्वितीये पथि वर्तते ।

तृतीयेऽप्यर्द्धभागे तु चतुर्थे ग्राममादिशेत् ॥ १०६२ ॥

पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत् ।

शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ १०६३ ॥

टीका—१ शेष रहे तो स्थान में जानिये, २ रहे तो मार्ग में, ३ बचे तो अर्धमार्ग में, ४ बचे तो ग्राम में आया जानिये, ५ बचे तो मार्ग से लौट गया कहिये, ६ बचे तो रोगग्रस्त और ७ बचे तो शून्य अर्थात् मरण जानिये ॥ १०६२—१०६३ ॥

दूसरा प्रकार—

धनसहजगतो सितामरेज्यौ कथयेदागमनं प्रवासिपुंसाम् ।

तनुहिबुक्कगताविमौ च तद्वज्रभटिति नृणां कुरुते गृहप्रवेशम् ॥ १०६४ ॥

टीका—द्वितीयस्थानीय शुक्र तृतीयस्थानीय गुरु अथवा प्रश्नलग्न में शुक्र चतुर्थ में गुरु ऐसा योग हो तो परदेशी घर में शीघ्र ही आया जानिये ॥ १०६४ ॥

कार्यप्रश्न—

दिशा प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।

अष्टमिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥१०६५॥

टीका—पृच्छक का मुख जिस दिशा को हो वह दिशा और प्रहर वार तथा नक्षत्र लक्षणों को एकत्र कर आठ का भाग दे जो शेष बचे उससे शुभाशुभ फल जानिये ॥ १०६५ ॥

फल—

पञ्चके त्वरिता सिद्धिः षट्त्वर्ये च दिनत्रयम् ।

त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥१०६६॥

टीका—१।५ शेष बचे तो शीघ्र कार्य सिद्धि जानिये, ६।४ वच तो तीन दिन में सिद्धि, ३।७ वचे तो विलम्ब, १।८ वचे तो कार्य नहीं होगा ॥ १०६६ ॥

अङ्कप्रश्नफल—

अङ्कं द्विगुणितं कृत्वा फलनामानुरैर्युतम् ।

त्रयोदशयुतं कृत्वा नव भेर्भागमाहरेत् ॥१०६७॥

एकं हि धनवृद्धिश्च द्वितीये च धनत्रयः ।

तृतीये क्षेममारोग्य चतुर्थे व्याधिरेव हि ॥ १०६८ ॥

स्त्रीलाभः पञ्चशेषं न्यात्वाष्टे वनग्निनागलक्ष् ।

सप्तमे चेप्सिता भिक्षिरष्टमे मरणा मुदः ॥ १०६९ ॥

नवमे राज्यमप्राप्तिर्गर्गम्य द्वादशे च मृत्युः ।

टीका—जितने अङ्क हों उनमें से एक को द्विगुणित करके फलनामा के अनुसार युत में त्रयोदश युत करके नव भाग में भाग देकर फल जानिये ॥ १०६७ ॥
१।५ एक धन वृद्धि, २।४ द्वितीये धनत्रय, ३।३ तृतीये क्षेम, ४।२ अरोग्य, ५।१ चतुर्थे व्याधि, ६।० पञ्चशेष स्त्रीलाभ, ७।९ न्यात्वाष्टे वनग्निनागलक्ष्, ८।८ सप्तमे चेप्सिता, ९।७ भिक्षिरष्टमे मरणा मुदः, १०।६ द्वादशे च मृत्युः, ११।५ नवमे राज्यमप्राप्तिर्गर्गम्य, १२।४ द्वादशे च मृत्युः ॥ १०६८ ॥
१।३ स्त्रीलाभ, २।२ पञ्चशेष, ३।१ न्यात्वाष्टे, ४।० वनग्निनागलक्ष्, ५।९ सप्तमे, ६।८ चेप्सिता, ७।७ भिक्षिरष्टमे, ८।६ मरणा मुदः, ९।५ द्वादशे, १०।४ च मृत्युः, ११।३ नवमे, १२।२ राज्यमप्राप्तिर्गर्गम्य, १३।१ द्वादशे, १४।० च मृत्युः ॥ १०६९ ॥

नवग्रहात्मकं यन्त्रं कृत्वा प्रश्नं निरीक्षयेत् ।
फलं पूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यं प्रश्नकोविदेः ॥११००॥

४	१	८
२	५	९
३	७	६

टीका—नवग्रहात्मक यन्त्र बना के उसमें आशोकन करे, जो चन्द्र आगे उसका फल पूर्वोक्त प्रकार से जानिये ॥ ११०० ॥

द्वारा—

सप्तत्रयाङ्गे कथयन्ति वार्ता नवैकपञ्च त्वरितं वदन्ति ।
अष्टौ द्वितीये न हि कार्यसिद्धौ रसाश्च वेदावट्टिकात्रयं च ॥११०१॥
टीका—पुर्व जो चन्द्र को है उनके प्रमाण से करे, पञ्च तो फल भिन्न हैं, शेष ७ वा ३ रहे तो पार्ता करना जानिये और जो १ २ १२ वने तो कार्य शीघ्र हो तथा ८ २ वने तो कार्य नहीं हो और ६ ८ वने तो तीन मही में कार्य हो ॥ ११०१ ॥

वारनक्षत्रयुक्त पन्थाप्रश्न—

बुधे चन्द्रे भवेन्मार्गे समीपे गुरुशुक्रयोः ।
स्वौ भौमे तथा दूरे शनी च परिपोड्यते ॥११०२॥
निर्जीवा सप्त ऋक्षाणि सजीवा द्वादश स्मृताः ।
व्याधिता नव ऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तु चन्द्रभम् ॥११०३॥

टीका—बुध अथवा सोमवार को प्रश्न करे तो मार्ग में चलता हुआ जानिये और शुक तथा शुक्र को प्रश्न करे तो समीप आया जानिये, रवि तथा भौम को दूर जानिये और शनि को पीड़ायुक्त जानिये । सूर्य से चन्द्रनक्षत्र पर्यन्त लिखने का क्रम—प्रथम ७ नक्षत्र पर्यन्त चन्द्रमा आवै तो निर्जीव, द्वितीय १२ नक्षत्र तक चन्द्रमा आवै तो जीवित जानिये, तृतीय नव नक्षत्र पर्यन्त चन्द्रमा आवै तो रोग की उत्पत्ति जानिये, इस प्रकार से पन्थाप्रश्न समझ लीजिये ॥ ११०२—११०३ ॥

नष्टवस्तु-प्रश्न—

तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नवह्निविमिश्रितम् ।
पञ्चभिस्तु हरेद्भागं शेषं तत्त्वं विनिदिशेत् ॥ ११०४ ॥

फल—

पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयमप्सु व्योम्नि न लभ्यते ।

तेजसि राजसाज्ज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत् ॥ ११०५ ॥

टीका—प्रश्न समय के तिथि, चार, नक्षत्र और लग्न इनमें तीन मिला के ५ का भाग दे। जो शेष १ बचे तो पृथ्वी में, २ बचे जल में परस्पर मिले नहीं, ३ बचे तो आकाश में यह भी मिले नहीं, ४ बचे तो तेज में वह राज्य में गई जानिये, और ५ बचे तो वायु में इसमें शोक जानिये ॥ ११०४-११०५ ॥

गर्भिणीप्रश्न—

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमे तृतीयसप्ते नवपञ्चमे च ।

गर्भः पुमान् वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीता ११०६

टीका—गर्भिणी जिस लग्न में प्रश्न करे उस लग्न से प्रश्न फल कहै। लग्न तृतीय अथवा सप्तम नवम पञ्चम स्थान में रवि भौम और मुख ये ग्रह स्थित हों तो पुत्र हो और इन्हीं स्थानों में अन्य ग्रह पड़े हों तो कन्या हो ॥ ११०६ ॥

मुष्टिप्रश्न—

मेघे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम् ।

कर्के च पाण्डुरं ज्ञेयं सिंहे भूषं प्रकीर्तितम् ॥ ११०७ ॥

कन्यायां नीलमिश्रं तु तुलायां पीतमिश्रितम् ।

वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतं विनिश्चितम् ॥ ११०८ ॥

नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णं मीने पीतं वदेत्सुर्धाः ।

टीका—प्रश्नकर्ता की मुष्टि में जिस रङ्ग की पस्तु है उसने दशाने की तिथि—जो मेघ लग्न हो तो लाल, वृष हो तो पीत, मिथुन हो तो नील—इसी रङ्ग की पस्तु मिले। कर्क में भूषं, कन्या में नीलमिश्रित, वृश्चिक में ताम्रवर्ण से मिलित, मकर और कुम्भ में पीत, मीन में नीलवर्ण की पस्तु मुष्टि में है ॥ ११०७-११०८ ॥

फल—

एके दुर्गा सप्तके वै विलम्बश्चाङ्गे तुर्ये दिक्षु भूतेषु नाशः ।
 द्वे सिद्धिर्गमके वृद्धिरुक्ता शीघ्रं कार्यं स्यात्त्रिषड्द्वादशेषु ॥१११४॥
 टीका—१।११७ वचै तो देर मे काम हो, ८।१।१०।१५ वचै तो नाश, ११ वचै
 तो सिद्धि, २ वचै तो वृद्धि और ३।६।१२ वचै तो शीघ्र प्रश्न कार्य हो, ऐसा
 जानिये ॥१११४॥

रोगप्रश्न फल—

तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहरमेकतः ।
 अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत् ॥१११५॥
 ह्याग्नौ देवतावाधा पैत्री वै नेत्रदन्तिषु ।
 षट्चतुषु भूतवाधा नो वाधा ह्येकपञ्चके ॥१११६॥

टीका—तिथि, वार, नक्षत्र प्रहर और लग्न इन सबको एकत्र कर के पा भाग ८
 शेष वच उसमे फल कहिये ७ अथवा ३ वचै तो देवता की वाधा, २।८ वचै तो देवता
 की, ६।४ वचै तो भूत की, १।५ वचै तो वाधा नहीं है ऐसा जानिये ॥१११६॥

कुलदेवता का, तुला में चण्डिका का, वृश्चिक में नाडीदोष, धन में यक्षिणी, मकर में ग्रामदेवता, कुम्भ में अपुत्रा स्त्री की वृष्टि का, और मीन में आकाशगामियों का दोष बतावै ॥ १११७-१११६ ॥

मेघ का प्रश्न—

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ।

रोहिणीकालमाख्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ ११२० ॥

रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघ (?) डम्बरम् ।

मध्याह्ने जलबिन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥ ११२१ ॥

टीका—आषाढ के कृष्णपक्ष की दशमी एकादशी और द्वादशी इन तीनों दिवसों में रोहिणी नक्षत्र आवै तो सुभिक्ष, मध्यम, दुर्भिक्ष ये तीन फल तिथिक्रम से जानिये और रात्रि मेघरहित हो प्रातःकाल मेघ गजें, मध्याह्न में बुन्द पड़े, ऐसे लक्षण जिस संघत्सर दें हों उसमें महर्घता जानिये ॥ १११६-११२१ ॥

जललग्न—

कुम्भकर्कवृषा मीनमकरौ वृश्चिकस्तुला ।

जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम् ॥ ११२२ ॥

लभत्येव सदो वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ।

टीका—कुम्भ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला ये ७ जललग्न हैं इनमें सूर्य नक्षत्र मिलै तो वर्षा जानिये ॥ ११२२ ॥

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषाविष्णुमघासु च ।

स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥ ११२३ ॥

टीका—अश्विनी, मृगशिर, पुष्य, रेवती, अघण, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश करै तो वृष्टि अधिक हो ॥ ११२३ ॥

स्त्री-नपुंसक-पुरुष-नक्षत्र—

आर्द्रादेदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ।

मृलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ ११२४ ॥

वायुर्नपुंसके मे च स्त्रीणां मे चाभ्रदर्शनम् ।

स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ११२५ ॥

टीका—आर्द्रा से स्वाती पर्यन्त १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं और विशाखा से ज्येष्ठा तक ३ नपुंसक हैं और मूल से मृगशिरा पर्यन्त १४ पुरुष नक्षत्र हैं, नपुंसक नक्षत्र में सूर्य चन्द्रमा हो तो वायु चले, और दोनों स्त्री नक्षत्र में हो तो मेघदर्शन हो, जो स्त्री और पुरुष नक्षत्र का योग हो तो निश्चय करके वर्षा हो ॥ ११२४-११२५ ॥

सूर्य तथा चन्द्र नक्षत्र की संज्ञा—

अश्विन्यादित्रयं चैव ह्यार्द्रादेः पञ्चकं तथा ।

पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरा रेवतीद्वयम् ॥ ११२६ ॥

उक्तानि शशिमन्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यमान्यथ ।

रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफल्गुनिका तथा ॥ ११२७ ॥

सूर्ये सूर्ये भवेद्यायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति ।

चन्द्रसूर्ये भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥ ११२८ ॥

टीका—अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा चतुष्पादा अथवा धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चन्द्रनक्षत्र और मेघ दर्शनकर नक्षत्र हैं । अश्विनी-द्वयस नक्षत्र और मघानक्षत्र ये दोनों जो सूर्य के हो तो वायु चले, और रोहिणी चन्द्रमा के हो तो मेघ नहीं वर्षे, किन्तु जो चन्द्र और सूर्य नक्षत्र का योग हो तो वर्षा अच्छी हो ॥ ११२६-११२८ ॥

धान्यप्रश्न—

काषाये जयशर्मलाभङ्गिरो मित्राणि नव भूत
गौराये प्रियभुरधनानिलपरे लानागिन्नापदिन
ख्याङ्गे कलहः श्रियश्च नाने नानानि मित्राणि
रोरोरां विपदः पराङ्गलः न नानागिन्नापदिन

कुलदेवता का, तुला में चण्डिका का, वृश्चिक में नाडीदोष, धन में यक्षि-
ग्रामदेवता, कुम्भ में अपुत्रा रथी की लष्टि का, और मीन में आकाशगामि-
यतावी ॥ १११७-१११८ ॥

मेघ का प्रश्न—

आपादस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ।

रोहिणीकालमास्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ ११२० ॥

रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघ (?) डम्बरम् ।

मध्याह्ने जलविन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥ ११२१ ॥

टीका—आपाद के कृष्णपक्ष की दशमी एकादशी और द्वादशी इन तीनों में रोहिणी नक्षत्र आवै तो सुभिक्ष, मध्यम, दुर्भिक्ष ये तीन फल तिथिक्रम से और रात्रि मेघरहित हो प्रातःकाल मेघ गजं, मध्याह्न में बुन्द पड़े, ऐसे लक्षण संघर्षर दे हों उसमें महर्घता जानिये ॥ १११८-११२१ ॥

जललग्न—

कुम्भकर्कवृषा मीनमकरौ वृश्चिकस्तुला ।

जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम् ॥ ११२२ ॥

लभत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ।

टीका—कुम्भ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला ये ७ जललग्न हैं सूर्य नक्षत्र मिलै तो वर्षा जानिये ॥ ११२२ ॥

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषाविष्णुमघासु च ।

स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥ ११२३ ॥

टीका—अश्विनी, मृगशिर, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में ऋषवेश करै तो वृष्टि अधिक हो ॥ ११२३ ॥

स्त्री-नपुंसक-पुरुष-नक्षत्र—

आर्द्रादेदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ।

मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ ११२४ ॥

वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् ।

स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ११२५ ॥

टीका—आर्द्रा से स्वाती पर्यन्त १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं और विशाखा से ज्येष्ठा ३ नपुंसक हैं और मूल से मृगशिरा पर्यन्त १४ पुरुष नक्षत्र हैं, नपुंसक नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो वायु चले, और दोनो स्त्री नक्षत्र में हो तो मेघदर्शन हो, जो स्त्री पुरुष नक्षत्र का योग हो तो निश्चय करके वर्षा हो ॥ ११२५-११२५ ॥

सूर्य तथा चन्द्र नक्षत्र की संज्ञा—

अश्विन्यादित्रयं चैव ह्यार्द्रादेः पञ्चकं तथा ।

पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरा रेवतीद्वयम् ॥ ११२६ ॥

उक्तानि शशिमन्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यमान्यथ ।

रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफल्गुनिका तथा ॥ ११२७ ॥

सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति ।

चन्द्रसूर्ये भवेद्योगस्तदा वर्षति सेवराट् ॥ ११२८ ॥

टीका—अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुरष ज्ञानेया मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चन्द्रनक्षत्र और शेष सूर्यनक्षत्र जानिये । फल—दिवस नक्षत्र और मघानक्षत्र ये दोनो जो सूर्य के हो तो वायु चलें और जो दोनो चन्द्रमा के हो तो मेघ नहीं वर्षें, किन्तु जो चन्द्र और सूर्य नक्षत्र का योग हो तो वर्षा अच्छी हो ॥ ११२६-११२८ ॥

धान्यप्रश्न—

कापाये जयशर्मलाभकुगिरौ मित्राणि नव नुभ

गौराये प्रियभुरधनानिलपरे लाभारिनागादिकम् ।

रय्याङ्गे कलहः ध्रियश्च वगले रयानानि मित्राग्नौ

रोरोरां विपदः पराङ्गकलहः स नवगोशब्दः ॥ ११२९ ॥

टीका—सत्ताइस दाने धान के लेकर एक राशि करे, उसी राशि में से एक चुटकी भर निकाल कर रखे, ऐसे तीन राशि करै उसमें तीन २ दाने जुड़े जुड़े करता जाय जो तीन राशियों में से एक २ बचै तो जय और लाभ हो । १ का कहिये १ पा कहिये १ ये कहिये १ ऐसी तीन राशियों से पृथक् २ एक २ बचै उसका फल जय और लाभ ॥

३ कु क० १ गी क० ३ रौ क० २ विस्तारिष्वसिद्धि ।

२ गौ क० ३ रा २ ये १ प्रियभोग धनप्राप्ति ।

४ ल ३ प १ रे ३ लाभ और पुत्र का नाश ।

५ र २ प १ ग ३ कलह हो ।

६ ब ३ ल ३ ग ३ लक्ष्मी और मित्रलाभ ।

७ रो २ रो २ रां २ विपत्तिप्राप्ति ।

८ प १ रां २ ग ३ कलह ।

९ खा २ ल ३ य १ शोकप्राप्ति—ऐसे ३ बार करने से बुरा भला फल जानिये और राशि की गणना के समय तीन २ दाने गिने ॥ ११२६ ॥

पशु के विषय का प्रश्न—

द्यूमणिभान्नवभेषु वने पशुस्तदनु षट्सु च कर्णपथे स्थितम् ।

अचलभेषु गतं गृहमागतं द्ययगतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ ११३० ॥

टीका—जो सूर्यनक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र नवम हो तो पशु वन में जानिये, और जो ६ नक्षत्रान्त आवै तो मार्ग में जानिये, उसके आगे ७ नक्षत्रान्त आवै तो घर में आया जानिये, उसके पीछे २ नक्षत्रान्त आवै तो आने वाला नहीं जानिये, उसके आगे ७३ नक्षत्रान्त आवे तो मृत्यु होवै, ऐसा जानिये ॥ ११३० ॥

राज्यादि भङ्ग योग—

यदि भवति कदाचिच्चाश्विनी नष्टचन्द्रा

शशिरविकुजवारे स्वातिरायुष्ययोगे ।

गगनचरपशूनां जङ्गमस्थावराणां

नृपतिजनविनाशो राज्यभङ्गस्तथोक्तः ॥ ११३१ ॥

टीका—कदाचित् शनि, रवि और भौम इनमें किसी वार से युक्त अमावस्या को अश्विनी वा स्वाती नक्षत्र और आयुष्मान् योग हो जाय तो पक्षी, पशु, जङ्गम, स्थावर, राजा और जन इनका नाश और राज्यभङ्ग होना है ॥ ११३१ ॥

११ पाँच की छाया विधान है, गुरु को १३ पाँच की छाया विधान किया है। इस छायाबल में जो यात्रा करते हैं, उनको लक्षा, पात, व्यतीपात, भद्रा, घात, संक्रान्ति, और दिशाशून्य के फल नहीं होते। अपनी छाया के साधन करने में मनुष्य की कार्य-सिद्धि अवश्य होती है—पुनः अपनी छाया जो दो तीन से गुणा कर ८ का भाग दे १ बचै तो लाभ, २ बचै तो लक्ष्मीप्राप्ति, ३ बचै तो हानि, ४ बचै तो रोग, ५ बचै तो वृद्धि, ६ बचै तो भय, ७ बचै तो सिद्धि, ८ बचै तो मृत्यु हो तो इस क्रम के अनुसार यथावत् फल देती है सो यात्रा में विचार लेना चाहिये ॥ ११३४—११३६ ॥

वायुपरीक्षाकथन—

आषाढमासस्य च पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वाति वातः ।

पूर्वस्तदा शस्ययुता च मेदिनी नन्दन्ति लोका जलदायिनो घनाः ॥

टीका—जो आषाढ़ मास में पूर्णिमा के दिन सूर्यास्तकाल में पवन पूर्व दिशा का हो तो पृथ्वी धान्ययुक्त, लोक सुखी और मेघ की सृष्टि हो ऐसा फल जानना ॥ ११३७ ॥

कृशानुवाते मरणं प्रजानामन्नस्य नाशः खलु वृष्टिनाशः ।

याम्ये मही शस्यविवर्जिता स्यात्परस्परं यान्ति नृपा विनाशम् ११३८

टीका—अग्नि कोण की वायु चले तो प्रजा का मरण, अन्न का नाश और वर्षा का नाश हो और दक्षिण दिशा का पवन हो तो पृथ्वी धान्य से वर्जित हो और परस्पर राजाओं में विग्रह हो यह फल दक्षिण दिशा का जानना ॥ ११३८ ॥

नैशाचरो वाति यदाऽत्र वातो न वारिदो वर्षति वारि भूरि ।

तदा मही शस्यविवर्जिता स्यात्क्रन्दन्ति लोकाः क्षुधया प्रपोढिताः ११३९

टीका—नैऋत्य कोण का जो पवन हो तो धोड़ी वर्षा हो, पृथ्वी धान्य से वर्जित, क्षुधा से रोगी और पीड़ित लोग रोदन करें ॥ ११३९ ॥

आषाढमासे यदि पौर्णमास्यां सूर्यास्तकाले यदि वाऋणोऽनिलः ।

प्रवाति नित्यं सुखिनो जनाः स्थुर्जलान्नयुक्ता वसुधा तदा स्यात् ॥ ११४०

टीका—आषाढ़ मास में पूर्णिमा के दिन जो सूर्यास्तकाल में पश्चिम दिशा का पवन हो तो प्रजा सुखी रहे और पृथ्वी जल अन्न से पूरित हो ऐसा पश्चिम दिशा का फल जानना ॥ ११४० ॥

वायव्यवाते जलदागमः स्याद्धान्यस्य नाशः पवनोद्धताद्यैः ।

सौम्येऽनिले धान्यजलाकुला धरा नन्दन्ति लोका भयदुःखवर्जिताः ११४१

टीका—जो वायव्य कोण का पवन हो तो जल का आगमन, अन्न का नाश और
पूर्वा प्रचण्ड वायु से युक्त और उत्तर दिशा का पवन हो तो श्रेष्ठ वर्षा और धन धान्य
से पुष्पो युक्त, लोक सुखी, भय दुःख से वर्जित हो ऐसा कहना चाहिये ॥ ११४१ ॥

ईशानवृद्धिवहुवारिपूरिता धरा च गावो बहुदुर्यसंयुताः ।

भवन्ति वृक्षाः फलपुष्पदायिनो वातेऽभिनन्दन्ति नृपाः परमम् ११४२

टीका—जो ईशान कोण का पवन चले तो पृथ्वी जल से परिणत हो और जो
से और वृक्ष फल पुष्पों से युक्त और राजाओं की परम कल्याण हो ऐसा
चाहिये ॥ ११४२ ॥

वर्ष निगालने का प्रमाण—

गताब्दवृन्दैर्मुनिशून्यचन्द्रैर्निर्गते नभोऽप्येतन्महं ॥ ११४३ ॥

त्रिधा फलवार्षटीपलानि खल्वन्यथा ॥ ११४४ ॥

टीका—वर्तमान समय में जल न बरसना, नभो अप्येतन्महं
ये मुनि उग्रव्योम सन्तु ११४३ ॥ ११४४ ॥
११४४ ॥ भाग देपर २ जगह २१ अपर ११ ॥ ११४४ ॥
जगह ११ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥
११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥
११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥
११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥
११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥
११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥ ११४४ ॥

तिथि बनाने का क्रम—

याताब्दवृन्दो गुणवेदरामैर्निध्नः कुरामैर्विहता दिनाद्यम् ।

घसैः सहोत्थैः सहितं खरामैर्भक्तं च शेषा तिथिरत्र वर्षे ॥ ११४४ ॥

टीका—गत वर्षों को ३४३ से गुणा करें पुनः ३१ का भाग दें जो अंक प्राप्त हो सो तिथि जानें। इसमें जन्म की तिथि युक्त करें फिर ३० का भाग देने से जो शेष रहे सो वर्ष की तिथि होगी परन्तु कहीं कहीं १ तिथि उनाधिक हो जाती है ॥ ११४४ ॥

नक्षत्र लाने का क्रम—

व्योमेन्दुभिः संगुणिता गताब्दाः

खशून्यवेदाश्विनवैविहीनाः ।

जन्मर्जयोगैः सहिता ह्यवस्था

नक्षत्रयोगो भवतो भतष्टौ ॥ ११४५ ॥

टीका—गत वर्षों को १० से गुणा करें फिर दो जगह रफ्तो और एक जगह में २४ का भाग दें जो लब्धि हो वह दूसरे में घटा दें। और जन्मर्ज या योग जोड़ दें उस नक्षत्र में २७ का भाग देने से शेष नक्षत्र होगा ॥ ११४५ ॥

ग्रहचालन—कथन—

स्वष्टकालो यदाग्रे स्यात्पंक्ति संशोधयेद्धनम् ।

पंक्तिरेव यदाग्रे स्यादिष्टं च शोधयेद्वृणम् ॥ ११४६ ॥

टीका—इष्टकाल पञ्चाङ्गस्थ पंक्ति से आगे हो तो पंक्ति को काल में शोधन करना तो धन चालन होता है। और जो पंक्ति इष्टकाल से आगे हो तो इष्ट को पंक्ति में शोधन करना तो ऋण चालन होता है ॥ ११४६ ॥

ग्रहस्पष्टीकरण—

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निध्नी खषड्ग्रहा ।

लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ ११४७ ॥

टीका—गत दिन से अथवा आगामी दिन से सूर्यादि ग्रहों की गति को गुण देना और ६० से भाग देना, लब्धि अंशादि जो आये सो गत दिन का हो तो ग्रह में ऋण करना और ऐष्य (आगामी) दिन का हो तो युक्त करना इससे ग्रहस्पष्ट होता है ॥ ११४७ ॥

भयात और भोग बनाने की रीति-

गतर्जनाब्जः खरसेषु शुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः ।

भयातमेतच्च निजर्जनाडिकाः शुद्धाः सुयुक्तास्तु भोगसंज्ञकाः ११४ =

टीका—गत नक्षत्र की घटियों को ६० में शुद्ध करना और वर्ष में सूर्योदय से जो
ए घटी हो उसे युक्त करना तो भयात होता है । उसको ६० में शुद्ध कर उस में
तत्मान नक्षत्र की घटी युक्त करना तो भोग होता है ॥ ११४ = ॥

चन्द्रस्यष्ट-क्रम-

खण्डन् भयातं भोगोद्भूतं न

घतर्कम्नधिष्णयेषु युक्तं द्विनिष्पन्नम् ।

नवाप्तं शशी भागपूर्वरु युक्तिः

खखाभ्राष्टवेदा भोगेन गच्छाः ॥ ११५ =

टीका—घते हुए नक्षत्र का विगत भाग देकर तीन बार भाग दे, गत नक्षत्र को ६० में शुद्ध करना ।
जो भयात है उसे इनमें जोड़ दे फिर ६० में शुद्ध करना ।
चन्द्रमा अष्टपूर्वक होता है और अष्टोत्तराश्वि १०८ घटी का होता है ।
ये घट्यादि भोग का भाग दे चन्द्रमा का भाग देकर १०८ में शुद्ध करना ।

समागणश्चन्द्रवृत्तात्तु नि नवाप्तं शशी भागपूर्वरु युक्तिः

नष्टो दिनेशः विन नवाप्तं शशी भागपूर्वरु युक्तिः

टीका—गत नक्षत्र का विगत भाग देकर तीन बार भाग दे, गत नक्षत्र को ६० में शुद्ध करना ।

जो भयात है उसे इनमें जोड़ दे फिर ६० में शुद्ध करना ।

चन्द्रमा अष्टपूर्वक होता है और अष्टोत्तराश्वि १०८ घटी का होता है ।

ये घट्यादि भोग का भाग दे चन्द्रमा का भाग देकर १०८ में शुद्ध करना ।

नवाप्तं शशी भागपूर्वरु युक्तिः

पञ्चाधिकारी-

मुन्येशो वर्षलग्नेशस्तत्त्वैराशिकनायकः ।

दिवार्कराशेनायश्च रात्रौ चन्द्रर्त्तनायकः ॥ ११५१ ॥

जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षे पञ्चाधिकारिणः ।

टीका—वर्ष में पञ्चाधिकारी बनाने का काम—मुन्येश १ पर्वलग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य के राशि का स्वामी और रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र के राशि का स्वामी ४ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्ष में पञ्चाधिकारी शुभाशुभ फल के लिये अधिकार देना जिसके दो तीन अधिकार हों उन्हे बलवान् जानना चाहिये ॥ ११५१ ॥

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिने निशीज्येन्दुबुधर्त्तमाजाः ।

मेघाचतुर्णां हरिभाद्रिलोमं नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ ११५२ ॥

टीका—त्रिराशिपति का काम १२ लग्नों के अनुसार दिन रात्रि के विभाग से चक्र में लिया है ॥ ११५२ ॥

राशयः ।	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवा स्वामिनः	सू.	शु	श	शु	वृ	च.	बु	मं.	श	म	वृ	च
रात्रौ स्वामिनः	वृ	च.	बु	मं.	सु	शु	श	शु	श	म	वृ	च

दृष्टिक्रम चक्र-

पादं त्रिरुद्रे सदलं स्वतुर्ये पादत्रयं स्यान्नवपञ्चमेऽपि ।

पश्यन्ति पूर्णं समसप्तके च ग्रहा न चान्यत्र विलोकयन्ति ॥ ११५३ ॥

टीका—इसका अर्थ चक्र में स्पष्ट किया है देखिये ॥ ११५३ ॥

१	४	४०	भाव
११	१०	०	
१५	३०	६०	कलादृष्टि

लग्नस्थमुन्था प्रकरोते सौख्यं नृपप्रसादं वेजयं रिपूणाम् ।

हर्षोदयं बाहुबलप्रतापं वृद्धिं विलारं धनलाभमुग्रम् ॥ ११५४ ॥

अन्या धनस्थानगलाभमुग्रं करोति मिष्टान्नसमागमं च ।
वैर्यसिद्धिं निजबाहुवीर्यात्सुखोदयं मित्रसुतोदयं च ॥ ११५५ ॥

लोकाज्जयं निजजनाच्च सहोत्थसौख्य
देहात्तिकीर्त्तिशुभकार्यसमृद्धिदात्री ।

सत्सङ्गतिं च सकलां तनुते हि मैत्र्यं
मन्था पराक्रमगता नृपतिप्रसादम् ॥ ११५६ ॥

वित्तज्ञयं च रिपुना-(?) दयशश्च वृद्धिं
वैरोदयं स्वजनराजकुलेषु कुर्यात् ।

गुप्तात्तिकृद्भूदि रुजस्य विवृद्धिदात्री
तुर्ये न्निहाविविधरोगभयानि पुंसाम् ॥ ११५७ ॥

माहात्म्यसुरार्चनं च सुबुद्धिवृद्धिर्यशसः प्रवृद्धिः ।

वित्तप्रलाभो जनताप्रसादः पुत्राप्तिसौख्यं सुतगे न्निहायाम् ॥ ११५८ ॥

नृपाद्वयं चौरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजं भयं च ।

कार्यार्थहानिः कुमतीष्ट[?] वैरं षष्ठे न्निहा दुष्टरजं विदध्यात् ॥ ११५९ ॥

सौख्यार्थनाशो वनितादिकष्टं चिन्तामनोमोहमनत्परोगम् ।

क्लेशोदयं स्वेष्टजनेषु वैरं यशोविनाशो नगरे न्निहायाम् ॥ ११६० ॥

दुष्टाद्वयार्त्तिर्धनधान्यनाशो विपन्नभीतिर्व्यसनानि मेहाः ।

कान्ताविनाशं स्वजनेषु पीडां नृपाद्वयं चाष्टमगे न्निहायाम् ॥ ११६१ ॥

धर्मार्थलाभं स्वजनेषु मैत्री नृमोक्षमेः प्रतिपन्नः प्रवृत्तिः ।

प्रमोदभाग्योदयकार्यमिच्छिः प्रययोरगोन्वा प्रवृत्तिं न्निहायाम् ॥ ११६२ ॥

मनोरथाप्तिः स्वजनेषु मोक्षं तेजोमयं स्वजनं च ॥

भृपात्प्रसादो दूरमेन्निहायाम् शत्रुवैरोदयः स्ववृद्धिः स्वजनं च ॥ ११६३ ॥

सुखार्थलाभं शुभवृद्धिं मनोरथाप्तिं नृपतिमदायम् ।

निजेष्टसौख्यं मनसां प्रहयं करोति मुन्याभवगे वसितम् ॥११६४॥

निस्वयमत्वं निजमित्रकटं दुष्टार्तिरुक्कृन्दृपतेर्भयं च ।

धर्मार्थनारोरिपुत्रौरभीतिः स्वामीष्टगीडा व्ययगेन्यिहायाम् ॥११६५॥

त्रिपताकिचक्र का प्रकार-

रेखात्रयं तिर्यग्वोर्ध्वसंस्थमन्यान्यविद्धाग्रकमीराक्रेणात् ।

स्मृतं बुधैस्तत्रिपताकिचक्रं प्राङ्मुख्यरेखाग्रहवर्षलग्नात् ॥११६६॥

टीका—रेखा ३ टेढ़ी ३ सीधी करें और परस्पर ईशान कोण से रेखा का वेध करें इसको परिचित जन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसमें पूर्व से मध्य रेखा पर वर्तमान का न्यास करना ॥ ११६६ ॥

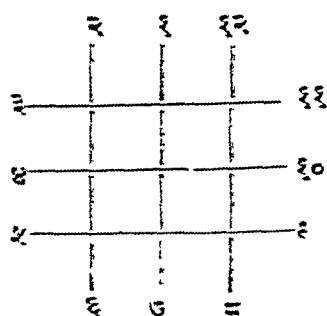
ग्रहन्यास-

न्यसेद्भुवक्रं किल तत्र सैका याताज्जुसंख्या विभजेन्नगेन ।

शेषोन्मिते जन्मगवन्दराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छराङ्के ।

परे चतुर्भाजितरोस्तुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः ॥११६७॥

टीका—त्रिपताकी चक्र पर १२ राशि का न्यास करने और ग्रहन्यास का प्रकार—
प्रत्येक वर्ष में १ युक्त कर = को भाग देना जो शेष रहे सो जन्मकाल में चन्द्रराशि से शेष स्थान में चन्द्रमा लिखना और ग्रह को ४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे वहाँ अपने स्थान से लिखना । राहु और केतु को अपने स्थान से पाँचे लिखना तो त्रिपताकी चक्र स्पष्ट होता है ॥ ११६७ ॥



वि-वार -

सर्मानुविद्धे हिमगौ त्वरिष्ट तापोर्जविद्धे रुगिनात्मविद्धे ।

महीजविद्धे तु शरीरपीडा गुर्भैश्च विद्धे जयमौख्यलाभाः ॥

शुभाशुभव्योमगवीर्यतोऽत्र फल तु वेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥११६८॥

टीका—त्रिपताका चक्र में ये प्र देगने का प्रकार—सर्वग्रहों का वेध चन्द्रमा से देना और राहु से चन्द्र से वेध हो तो त्रिष्ट जानना मय से वेध हो तो ताप जानना, शनि से वेध हो तो रोग जानना मङ्गल से वेध हो तो शरीर में पीडा जानना और शुभग्रह से वेध हो तो जयप्राप्ति, सौख्यलाभ और शुभग्रह का वीर्य देख कर वेध का फल कहना ॥ ११६८ ॥

मुहा-दशा—

जन्मर्जसंख्या सहिता गताव्दैर्दृग्गुणिता नन्दहतावशेषात् ।

आचंकुराजीशबुकेषुपूर्वा भवन्ति मुहादशिकाः क्रमेण ॥११६९॥

टीका—जन्मनक्षत्र की जो संख्या हो उसमें गताव्द की संख्या मिलाना और शेष की जो संख्या हो उसमें से दो कमती करना और ६ से भाग देना जो अंक सो दशा जानना, १ शेष रहै तो सूर्य की दशा । २ शेष रहै तो चन्द्रमा की दशा । ३ शेष रहै तो मङ्गल की दशा । ४ शेष रहे तो राहु की दशा । ५ शेष रहै तो बुध की दशा । ६ शेष रहै तो शनि की दशा । ७ शेष रहै तो वृष की दशा । ८ शेष रहै तो शुक की दशा जानना । यह दशा का क्रम ज्योतिष-शास्त्र के आचार्यों ने कहा है ॥ ११६९ ॥

सू०	च०	म०	र०	वृ०	श०	बु०	व०	शु०	र०
०	१	०	१	१	१	१	०	०	मात्र
१८	०	०१	२४	१८	१	२१	२१	०	दिन

मास बनाने का क्रम—

मासार्कस्य तदाऽऽसन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम् ।

कलीकृत्यार्कगत्याप्तदिनाद्येन युतोनिनम् ॥११७०॥

तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वं मासाकेऽधिकहीनके ।

तद्वाराद्ये मासवेशो द्युप्रवेशः कलासमः ॥ ११७१ ॥

टीका—सूर्य मास का जो सूर्य सो वर्ष के सूर्य अंशों में निकट हो तो हीन वा अधिक हो तो उसका अन्तर करे राशि छोड़ फिर उसका पिण्ड बाँध कर सूर्य-पंक्ति के गति का पिण्ड बाँध के भाग दे तीन दफे तो उससे चार आदि प्राप्त होंगे । फिर जिस पंक्ति के सूर्य का अन्तर किया है उसे उसी मिश्रमान में घटा दे अथवा जोड़ दे । यदि सूर्य वर्ष की पंक्ति के सूर्य से अधिक हो तो जोड़ दे । और हीन हो तो घटा दे तब मास वारादि स्पष्ट हो जायेंगे ॥ ११७०—११७१ ॥

अथ ग्रहचक्र-प्रकरणम् ।

सूर्य—

ऋतुसंक्रमणं यत्र द्वे वक्त्रे विनियोजयेत् ।

चत्वारि दक्षिणे बाहौ त्रीणि त्रीणि च पादयोः ॥ ११७२ ॥

चत्वारि वामबाहौ च हृदये पञ्च निर्दिशेत् ।

अक्षोर्द्वयं द्वयं योज्यं सृष्टिं चैकैकं गुदे ॥ ११७३ ॥

फल—

रोगो लाभस्तथाऽध्वा च बन्धनं लाभ एव च ।

ऐश्वर्यं राजपूजा च ह्यपमृत्युरिति क्रमात् ॥ ११७४ ॥

चन्द्र—

चन्द्रचक्रं प्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ।

शीर्षे षट्कं मुखे त्वेकं त्रीणि दक्षिणहस्तके ॥ ११७५ ॥

हृदि षट्कं प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयं तथा ।

कुक्षयोः षट्कं च दातव्यं पादैकैकं विनिर्दिशेत् ॥ ११७६ ॥

फल—

शीर्षे लाभकरं ज्ञेयं मुखे तु द्रव्यहारकम् ।

हानिदं दक्षिणे हस्ते हृदये च सुखावहम् ॥ ११७७ ॥

आगहस्ते तु रागाश्च बुद्ध्याः मोक्षस्तथैव च ।

अयोर्हानिरोगी च जन्मविषयादिचन्द्रमसः ॥ ११७८ ॥

साम—

मैत्रिकं प्रवक्ष्यामि जन्मविषयादिभौममसम् ।

पिं पट्टकं सुखे त्रीणि त्रीणि वै दक्षिणे करे ॥ ११७९ ॥

पादयोः पट प्रदातव्या चागहस्ते त्रयं तथा ।

उह्ये चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये त्रयमेव च ॥ ११८० ॥

फल—

विजयश्चैव रागश्च लक्ष्मीः पन्था भय तथा ।

मृत्युर्लाभः सुखं चापि फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ११८१ ॥

बुध—

बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्म-मृत्तादिसौम्यमसम् ।

शिरसि त्रीणि राज्यं स्याद्वक्त्रकं धनधान्यदम् ॥ ११८२ ॥

सूर्य			चन्द्र			मङ्गल		
सूर्य सक्रान्ति जिस नक्षत्र में हो उससे जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनने से जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये ।			जन्मनक्षत्र से जिस नक्षत्र में चन्द्र हो उस नक्षत्र पर्यन्त गिने जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये ।			जन्मनक्षत्र से जिस नक्षत्र में मङ्गल हो उससे गिनने से जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये ।		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
सुख में	०	रोगप्राप्ति	नस्तक में	६	लाभ	शिरपर	०	निम्न
दाहिने हाथ	४	लाभ	सुख में	१	द्रव्यहरण	सुख में	१	रोगप्राप्ति
पार्श्वों में	६	भार्य चलना	दाहिने हाथ	३	हानिकर	दाहिने हाथ	०	लक्ष्मीप्राप्ति
बायों बाहु	४	बन्धन	हृदय में	६	सुखप्राप्ति	पार्श्वों में	०	भार्य चलना
हृदय में	५	लाभ	बायें हाथ	३	रोगप्राप्ति	बायें हाथ	०	नष्ट
नेत्रों में	४	लक्ष्मीप्राप्ति	वृक्ष में	०	मौल	उदा में	०	मृत्यु
नस्तक में	१	राजा से पूजा	दाहिना पैर	१	हानि	नेत्रों में	०	नष्ट
उदा में	१	अपहृत्य	बायें पैर	१	रोगप्राप्ति	हृदय में	०	उद

तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्धेऽधिकहीनके ।

तद्वाराद्ये मासवेशो द्युप्रवेशः कलासमः ॥ ११७१ ॥

टीका—सूर्य मास का जो सूर्य सो वर्ष के सूर्य अंशों में निकट हो तो हीन वा अधिक हो तो उसका अन्तर करे राशि छोड़ फिर उसका पिराड बाँध कर सूर्य-पंक्ति के गति का पिराड बाँध के भाग दे तीन दफे तो उससे वार आदि प्राप्त होंगे । फिर जिस पंक्ति के सूर्य का अन्तर किया है उसे उसी मिश्रमान में घटा दे अथवा जोड़ दे । यदि सूर्य वर्ष की पंक्ति के सूर्य से अधिक हो तो जोड़ दे । और हीन हो तो घटा दे तब मास वारादि स्पष्ट हो जायेंगे ॥ ११७०—११७१ ॥

अथ ग्रहचक्र-प्रकरणम् ।

सूर्य—

ऋतुसंक्रमणं यत्र द्वे वक्त्रे विनियोजयेत् ।

चत्वारि दक्षिणे वाहौ त्रीणि त्रीणि च पादयोः ॥ ११७२ ॥

चत्वारि वामवाहौ च हृदये पञ्च निर्दिशेत् ।

अक्षोर्द्वयं द्वयं योज्यं सूर्ध्वं चैकैकं गुदे ॥ ११७३ ॥

फल—

रोगो लाभस्तथाऽर्वा च बन्धनं लाभ एव च ।

ऐश्वर्यं राजपूजा च ह्यपमृत्युरिति क्रमात् ॥ ११७४ ॥

चन्द्र—

चन्द्रचक्रं प्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ।

शीर्षे पट्कं मुखे त्वेकं त्रीणि दक्षिणहस्तके ॥ ११७५ ॥

हृदि पट्कं प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयं तथा ।

कुक्षयोः पट्कं च दातव्यं पादैकैकं विनिर्दिशेत् ॥ ११७६ ॥

फल—

शीर्षे लाभकरं ज्ञेयं मुखे तु द्रव्यहारकम् ।

हानिदं दक्षिणे हस्ते हृदये च सुखावहम् ॥ ११७७ ॥

वामहस्ते तु रोगाश्च कुक्षयोः शोकस्तथैव च ।
पादयोर्हानेरोगौ च जन्मधिष्ण्यादिचन्द्रमस्य ॥ ११७८ ॥

भौम—

भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ण्यादिभौममस्य ।
शीर्षे षट्कं मुखे त्रीणि त्रीणि वै दक्षिणे करे ॥ ११७९ ॥
पादयोः षट् प्रदातव्या वामहस्ते त्रयं तथा ।
उदरे चैकं नेत्रयोर्द्वौ हृदये त्रयमेव च ॥ ११८० ॥

फल—

विजयश्चैव रोगश्च लक्ष्मीः पन्था भयं तथा ।
मृत्युर्लाभः सुखं चापि फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ११८१ ॥

बुध—

बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्म-श्रृङ्गादिसौम्यमस्य ।
शिरसि त्रीणि राज्यं स्याद्वक्त्रकं धनधान्यदम् ॥ ११८२ ॥

सूर्य			चन्द्र			गङ्गा		
सूर्य सक्रान्ति जित नक्षत्र में हो उससे जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनने से जितने नक्षत्र आवें वे फल जानिये ।			जन्मनक्षत्र में जिस तारके में चन्द्र हो उस तारके पर्यन्त गिने जितने नक्षत्र आवें वे फल जानिये ।					
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मुख में	०	रोगमर्ति	मुख में	०	रोगमर्ति	मुख में	०	रोगमर्ति
दाहिने हाथ	४	लाभ	दाहिने हाथ	४	लाभ	दाहिने हाथ	४	लाभ
पाने में	६	मार्ग-चक्रा	पाने में	६	मार्ग-चक्रा	पाने में	६	मार्ग-चक्रा
बाया बाहु	४	रोग	बाया बाहु	४	रोग	बाया बाहु	४	रोग
हृदय में	४	रोग	हृदय में	४	रोग	हृदय में	४	रोग
नेत्रों में	६	रोग	नेत्रों में	६	रोग	नेत्रों में	६	रोग
नखों में	६	रोग	नखों में	६	रोग	नखों में	६	रोग
उदरे में	६	रोग	उदरे में	६	रोग	उदरे में	६	रोग

नेत्रे द्वे प्रीतिलाभौ च नाभां श्रीः पञ्चकं तथा ।
 पादयोः षट् प्रवासश्च वामे वेदो धनं तथा ॥ ११८३ ॥
 चत्वारि दक्षिणे हस्ते धनलाभस्तथैव च ।
 गुह्यस्थाने भद्रयं च बन्धनं मरणं फलम् ॥ ११८४ ॥

शुक्र--

गुरुचक्रं प्रवक्ष्यामि गुरुभाज्जन्म-ऋतुकम् ।
 दद्याच्छिरसि चत्वारि करे चत्वारि दक्षिणे ।
 एकं कण्ठे मुखे पञ्च पादयोः षट् प्रदापयेत् ।
 करे वामे च चत्वारि त्रीणि दद्याच्च नेत्रयोः ॥ ११८५ ॥

फल--

राज्यं लक्ष्मीर्धनप्राप्तिः पीडा मृत्युतथैव च ।
 सुखं चैव क्रमेणैव फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ११८६ ॥

शुक्र--

शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात् जन्मभम् ।
 मुखे त्रीणि महालाभः शीर्षे पञ्च शुभावहः ॥ ११८७ ॥
 त्रिकं तु दक्षिणे पादे क्लेशहानिकरं सदा ।
 तथैव वामपादे च त्रीणि भानि तु योजयेत् ॥ ११८८ ॥
 हृदये द्वे धनं सौख्यं भाष्टकं हस्तयोर्द्वयोः ।
 मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्युह्ये त्रीणि तथैव च ॥ ११८९ ॥
 स्त्रीलाभश्च फलं प्रोक्तं भृगुपुत्रस्य सूरिभिः ।

भाषाटीकासमेतः।

२६५

गुरु			गुरु			शुक्र		
जन्मनक्षत्र से गुरु जिस नक्षत्र में हो वहां तक गिनने जिस स्थान पर गुरु पड़े उसका फल जानिये।			जिस नक्षत्र में गुरु होवे उससे जन्मनक्षत्र तक गिननेसे गुरु जिस स्थान में पड़ा होय उसका फल जानिये।			गुरु जिस नक्षत्र में हो उससे जन्मनक्षत्र पर्यन्त गिनने से जिस स्थान में पड़ा हो उस स्थान का फल जानिये।		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मस्तक में	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	४	राज्यप्राप्ति	मुख में	३	उत्तम लाभ
मुख में	१	धन	दाहिने हाथ	४	लक्ष्मी	मस्तक में	४	गुप्त
नेत्रों में	२	प्रौत्तिलाभ	वराह में	१	धनलाभ	दाहिने पाव में	३	कलेश हानि
नाभि में	५	लक्ष्मी	मुख में	५	पीडा	बायें पाव में	३	कलेश हानि
पावों में	६	प्रशंस	पावों में	६	मृत्यु	हृदय में	२	धनप्राप्त्य
बायें हाथ	४	धनलाभ	बायें हाथ	४	मुखप्राप्ति	दाथों में	२	मित्रप्राप्ति
दाहिने हाथ	४	धनलाभ	नेत्रों में	३	"	उदा में	२	मित्रप्राप्ति
गुदा में	२	बन्धनमरण	०	०	०	०	०	०

शनि—

सौरेचक्रं प्रवक्ष्यामि सौ रेभाज्जन्म-शुक्रकम् ।
 मृध्न्यर्कं च तथा वक्त्रे करे चत्वारि दक्षिणे ॥ ६६० ॥
 विन्यसेत्यादयुग्मे षड्वामबाहौ चतुष्टयम् ।
 हृदये पञ्च ऋज्ञाणि क्रमाच्चत्वारि नेत्रयोः ॥ ६६१ ॥
 हस्ते द्वयं गुदे चैकं मन्दरय पुरुषावृतेः ।

फल—

मूर्ध्नि वक्त्रस्थमे रोगो लाभो वै दक्षिणे करे ।
 स्यादध्वा चरणद्वन्द्वे बन्धो वामद्वरे मृत्युः ॥ ६६२ ॥
 हृदये पञ्च लाभो वै नेत्रे प्रौत्तिलग्नता ।
 पूजा मूर्ध्नि परा नूनं गुदे मृत्युं विनिश्चिन्तये ॥ ६६३ ॥

नक्ष—

राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मनामनु-शुक्रकम् ।
 मूर्ध्नि त्रीणि तथा प्रोक्तं करे चत्वारि दक्षिणे ॥ ६६४ ॥

पादयोः षट् च ऋक्षाणि वामहस्ते चतुष्टयम् ।

हृदये त्रीणि कराठैकं मुखे द्वे नेत्रयोर्द्वयम् ॥ १११५ ॥

गुह्ये द्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभादतः ।

फल—

राज्यं रिपुक्षयः पन्था मृत्युर्लाभोऽथ रोगकः ।

जयः सौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयं फलं बुधैः ॥ १११६ ॥

केतु—

केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुः ऋक्षभम् ।

मृद्धिं पञ्च जयश्चैव मुखे पञ्च महद्भयम् ॥ १११७ ॥

हस्तयोर्भाणि चत्वारि विजयश्च जयस्तथा ।

पादयोः षट् च सौख्यं स्याद् हृदि द्वे शोककारके ॥ १११८ ॥

कराठे चत्वारि च व्याधिर्गुह्यैकं च महद्भयम् ।

शनि			राहु			केतु		
शनि जिस नक्षत्र में हो उससे जन्मनक्षत्र पर्यन्त गिने जिस स्थान में नक्षत्र पड़ा हो वह फल जानिये ।			जन्मनक्षत्र से राहुनक्षत्र पर्यन्त गिने जहाँ नक्षत्र पड़ा हो वह फल जानिये ।			जन्मनक्षत्र से केतु जिस नक्षत्र में हो वहाँ तक गिने जिसमें नक्षत्र पड़े वह फल जानिये ।		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	५	जय
मुख में	१	रोग	दाहिना हाथ	४	रिपुक्षय	मुख में	५	बलाभय
दाहिना हाथ	४	लाभ	पावों में	६	मार्गचलना	हाथों में	४	विजय
पावों में	६	मार्गचलना	बायाँ हाथ	४	मृत्यु	पावों पर	६	सुख
बायाँ हाथ	४	बन्धन	हृदय में	३	लाभ	हृदय में	२	शोक
हृदय में	५	लाभ	कराठ में	१	रोग	कराठ में	४	व्याधि
नेत्रों में	४	प्रीतिलाभ	मुख में	२	जय	गुह्य पर	१	बलाभय
मस्तक में	१	पूजा	नेत्रों में	२	सौख्य	•	•	•
गुदा में	१	मृत्यु	गुदा में	२	कष्ट	•	•	•

जन्मनक्षत्र जहां परा है निम्ना फल—

शीर्ष त्रोग्नि मुखे त्रयं च रविशदेकैकं स्कन्धयो-
रेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्णयानि पञ्चोदरे ।
नाभौ गुह्यतले च जानुयुगले चैकैकमृत्तं जिपे-
ज्जन्तोः केचिदिति ब्रुवन्ति गणकाः शेषाणि पादद्वये ॥ १११६ ॥
अल्पायुश्चरणस्थिते च गमनं देशान्तरं जानुमे
गुह्ये स्यात्परदारलम्भनमथो नाभौ च सौख्यप्रदम् ।
ऐश्वर्यं हृदि चौर्यमस्य करयोर्बाह्वोर्बलं वै मुखे
मिष्टान्नं स लभेच्च मानवगणो राज्यं स्थिरं मूर्द्धनि ॥ १२०० ॥

टीका—केवल मनुष्य चतुर्मे सूर्यनक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक देखने का क्रम—प्रथम ३ नक्षत्र मस्तक पर फल राज्यप्राप्ति, मुख पर ३ नक्षत्र फल मिष्टान्न भोजन, कन्धो पर २ नक्षत्र फल बलवान्, भुजाओं पर २ नक्षत्र फल बल, हाथों के तलवे पर २ नक्षत्र फल शौर, हृदय पर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य, नाभो पर १ नक्षत्र फल सुख, गुह्य पर १ नक्षत्र फल परस्त्री से गमन, जानू पर १ नक्षत्र फल परदेशवास, पाद पर ७ नक्षत्र फल थोड़ी आयु, ऐसा जन्मनक्षत्र से स्थान का विचार करना ॥ ११६६—१२०० ॥

लग्नशुद्धि—पञ्चक देखना—

गततिथियुतलग्नं नन्दहृच्छेषकं च ।
वसुयमथुगपटूके क्षोणिसंख्या क्रमेण ।
रुगनलनृपचौरं मृत्युर्द पञ्चकं स्याद्-
व्रतगृह्णपमार्गोद्वाहकं वर्जनीयम् ॥ १२०१ ॥

टीका—गततिथि को लेकर उसमें लग्न मिलावे और नक्षत्र का नाम दे मीन जो द्यो-
ग फल जानिये । ८ वजे तो रोगपञ्चक यह पटोपरीय में वर्जित है, ८ वजे तो
पञ्चक यह मृदारम्भ में वर्जित है, ९ वजे तो रोगपञ्चक यह रोगप्रद है
न है, ६ वजे तो खोरपञ्चक यह गमन में वर्जित है और १ वजे तो नाशपञ्चक

रात्रि कितनी है यह जानने की रीति—

सूर्यमान्मध्यनक्षत्रं सप्तसङ्ख्याविशोधिनाम् ।

विंशतिध्नं नवहृतं गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥ १२०५ ॥

टीका—रात्रि में जो नक्षत्र हो वहां तक सूर्यनक्षत्र से गिनके ७ घटा दे जो शेष रहे उसको २० से गुणाकर और ६ भाग दे जो अंक शेष रहे उतनाही रात्रि का प्रमाण कहिये ॥ १२०५ ॥

अन्तरङ्ग बहिरङ्ग नक्षत्र—

सूर्यभाद्रपदगण पुनः पुनर्गणयतामिति चतुश्चतुष्टयम् ।

अन्तरङ्गबहिरङ्गसंज्ञकं तत्र कर्म विदधीत तादृशम् ॥ १२०६ ॥

टीका—सूर्यनक्षत्र से चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्तमान नक्षत्र परापर गिनै तो वे क्रम से अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग संज्ञक होते हैं इनसे ज्ञान होकर ज्ञाना आदि कर्म करे ॥ १२०६ ॥

स्तुतिका—ज्ञान—

करेन्द्रमार्या निलवा सवान्त्यमैत्रैन्दवाशिवध्रुवमोहि एतान् ।

विधाविक्रिते शुभमामनन्ति प्रसू निसाम्नान विधि सुदान् ॥ १२०७ ॥

शुभो मुहूर्तः शकुनः पुनः शुभश्चित्तोत्पत्तिः मोक्षनक्षत्रानि च ।

सर्वानुकूल्यं भवतीति निश्चयादाधाध्वयैव पदान्तरमपि ॥ १२०८ ॥

टीका—दशरूपेण पूर्वोक्तगुणों स्थायी प्रमाणों से ज्ञान होना चाहिये और भूय नक्षत्र इनमें से कोई नक्षत्र जिस दिन रात्रि में होवे उस दिन का दिन कदा है, परन्तु रिक्तगतिधि यजित ॥ १२०८ ॥

चतुर्थे—

चतुर्थे चाष्टमे भौमरहतीये ज्ञाने नक्षत्रे ।

नवपदगुणोद्दिष्टं नक्षत्रं शुभं भवेत् ॥ १२०९ ॥

टीका—चाष्टमे भौमरहतीये ज्ञाने नक्षत्रों में नवपदगुणोद्दिष्टं नक्षत्रं शुभं भवेत् ॥ १२०९ ॥

को पूर्वोक्तगुणों में नक्षत्रों में नवपदगुणोद्दिष्टं नक्षत्रं शुभं भवेत् ॥ १२०९ ॥

दृष्टिचक्र—

सू०	नं०	मं०	तु०	वृ०	शु०	श०	रा०	के०	प्रदाः
७	७	४ ७ ५	७	५ ७ ६	७	३ ७ १०	७	७	दृष्टि स्थानानि

शुभयोग—

मृतौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।

दशमेऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ १२१० ॥

टीका—जिसके जन्म लग्न में शुक्र, बुध, केन्द्र अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानों में बृहस्पति हों और दशम स्थान में मङ्गल हो तो बालक को कुल-दीपक जानिए ॥ १२१० ॥

शुभयोग—

नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।

दशमेऽङ्गारको नैव स जातः किं करेप्यति ॥ १२११ ॥

टीका—जिस बालक के लग्न में शुक्र, बुध अथवा केन्द्र में बृहस्पति, दशम मङ्गल नहीं है, उसका जन्म व्यर्थ है ॥ १२११ ॥

माता पिता के लिये भयग्रन्थयोग—

पष्ठे च द्वादशे स्थाने यदा पापग्रहो भवेत् ।

तदा मानृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १२१२ ॥

टीका—जा-छुटे तथा वारहवें स्थान में पापग्रह हों तो माता को अशुभ चाहे अथवा दशवें स्थान में पापग्रह होवें तो पिता को अशुभ जानिये ॥ १२१२ ॥

पितृनाशयोगः—

लग्नस्थाने यदा सौरेः पष्ठे भवति चन्द्रमाः ।

कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १२१३ ॥

टीका—जिसके जन्म लग्न में शनैश्चर और छुटे स्थान में चन्द्रमा, सातवें स्थान में मङ्गल हो तो उस बालक का पिता न जीवे ॥ १२१३ ॥

द्वादशवर्ष में मृत्युयोग—

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।

वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ १२१४ ॥

शनेक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।

वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ १२१५ ॥

टीका—जो जन्मलग्न में मङ्गल और आठवें स्थान में बृहस्पति हो तो शङ्कर से भी रक्षित बालक की बारह वर्ष में मृत्यु हो । और यदि शनैश्चर के घर में सूर्य हो तो देवरक्षित बालक को भी बारह वर्ष में मृत्यु हो ॥ १२१४-१२१५ ॥

चतुर्थवर्ष में मृत्युयोग—

पष्ठोऽष्टमस्तथा सृती जन्मकाले यदा बुधः ।

चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ १२१६ ॥

टीका—बुध, आठवें तथा जन्मलग्न में बुध हो, तो चौथे वर्ष शङ्कर रक्षा करें तो भी बालक न बचे ॥ १२१६ ॥

अष्टमवर्ष में मृत्युयोग—

भौमक्षेत्रे यदा जीवः पष्ठाष्टसु च चन्द्रमाः ।

वर्षाष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ १२१७ ॥

टीका—मङ्गल के घर में बृहस्पति और बुध, आठवें चन्द्रमा हो तो आठवें वर्ष ईश्वर से रक्षित भी बालक मृत्यु को प्राप्त हो ॥ १२१७ ॥

षोडशवर्ष में मृत्युयोग—

दशमोऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।

वर्षा तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ १२१८ ॥

टीका—जन्म लग्न से दशवें राहु तथा जन्मलग्न में राहु हो तो षोडशवें वर्ष मृत्यु हो ॥ १२१८ ॥

दारिद्र्ययोग—

क्रूरश्चतुष्टु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि वा ।

दारिद्र्ययोगं जानीयात्स्ववंशस्य जयंकरः ॥ १२११ ॥

टीका—क्रूरग्रह चारों केन्द्र ११४।५।१० स्थानों में हों और धन स्थान में क्रूरग्रह हो तो दारिद्र्ययोग जानिये । इनको अपने पक्ष का पक्ष करनेवाला जानिये ॥ १२११ ॥

मृत्युयोग—

चतुर्थे च यदा राहुः पष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि च ।

सद्य एव भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥ १२२० ॥

टीका—जिसके चौथे स्थान में राहु और पष्ठे अथवा आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो बालक को यदि मछादेवर्जा भी रक्षा करें तो भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जावे ॥ १२२० ॥

द्वितीय प्रकार से मृत्युयोग—

जीणचन्द्रो व्ययस्थाने पापलग्ने स्मरेऽष्टमे ।

शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः ॥ १२२१ ॥

टीका—जीणचन्द्र बारहवें स्थान में हो अथवा पापग्रह के स्थान में हो सातवें तथा आठवें स्थान में हो और शुभग्रह केन्द्र में न हों तो जन्म होते ही की मृत्यु जानना ॥ १२२१ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि ।

नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ १२२२ ॥

टीका—सातवें स्थान में मङ्गल, आठवें स्थान में शुक और नवें स्थान में सूर्य हो तो अल्पायु जानना ॥ १२२२ ॥

तृतीयप्रकार से मृत्युयोग—

जीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमकेन्द्रगाः ।

स्मरे लग्नपतिः पापयुक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥ १२२३ ॥

टीका—जीण चन्द्रमा लग्न में हो, पापग्रह आठवें तथा केन्द्र में हों और लग्नपति पापयुक्त हो तो बालक की मृत्यु जानिये ॥

वशिष्टोक्त क्षीणपूर्णचन्द्रनिर्णय—

सम्पूर्णन्दूभयाष्टम्योर्मध्येन्दुः पूर्णसंज्ञकः ।

विनष्टेन्दूभयाष्टम्योर्मध्येऽसौ क्षीणसंज्ञकः ॥ १२२४ ॥

टीका—शुक्लपक्ष को अष्टमी से कृष्णपक्ष की सप्तमी तक पूर्णचन्द्र होता है तथा पञ्चमी से शुक्लपक्ष की सप्तमी तक क्षीणचन्द्र होता है । यह क्षीण चन्द्र का निर्णय जानना वशिष्टजी का कहा है ॥ १२२४ ॥

जातिभ्रंशकारकयोग—

धनस्थाने यदा सौरिः सैहिकेयो धरात्मजः ।

उत्सुकौ सप्तमे च त्वष्टमे चन्द्रभास्करो ॥ १२२५ ॥

वाह्यणस्य पदे वापि वेश्यासु च सदा रतिः ।

प्राप्ते विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ १२२६ ॥

टीका—जिस बालक को दूसरे घर में शनैश्चन्द्र, राहु और मङ्गल हो और सप्तमी पर इतरपति और शुक्र हों, आठवें घर में चन्द्रमा और सूर्य हो तो वह पति-प्राप्ति में भी जन्म पावे तो भी वेश्या-प्रसङ्ग हो और बीस वर्ष की उमिर म्लेच्छ होता है ॥ १२२५-१२२६ ॥

दारिद्र्ययोग—

क्रूरश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो घनेऽपि वा ।

दारिद्र्ययोगं जानीयात्स्ववंशस्य क्षयकरः ॥ १२१६ ॥

टीका—क्रूरग्रह चारों केन्द्र १४।७।१० स्थानों में हों और घन स्थान में क्रूरग्रह हो तो दारिद्र्ययोग जानिये । इसको अपने पक्ष का क्षय करनेवाला जानिये ॥ १२१६ ॥

मृत्युयोग—

चतुर्थे च यदा राहुः पष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि च ।

सद्य एव भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥ १२२० ॥

टीका—जिसके चौथे स्थान में राहु और पष्ठे अथवा आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो बालक को यदि महादेवजी भी रक्षा करें तो भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जावे ॥ १२२० ॥

द्वितीय प्रकार से मृत्युयोग—

जीणचन्द्रो व्ययस्थाने पापलग्ने स्मरेऽष्टमे ।

शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः ॥ १२२१ ॥

टीका—जीणचन्द्र वारहवें स्थान में हो अथवा पापग्रह के स्थान में हो अथवा सातवें तथा आठवें स्थान में हो और शुभग्रह केन्द्र में न हों तो जन्म होते ही बालक की मृत्यु जानना ॥ १२२१ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि ।

नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ १२२२ ॥

टीका—सातवें स्थान में मङ्गल, आठवें स्थान में शुक और नवें स्थान में सूर्य हो तो अल्पायु जानना ॥ १२२२ ॥

तृतीयप्रकार से मृत्युयोग—

जीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमकेन्द्रगाः ।

स्मरे लग्नपतिः पापयुक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥ १२२३ ॥

टीका—जीण चन्द्रमा लग्न में हो, पापग्रह आठवें तथा केन्द्र में हों और लग्न का स्वामी सातवें स्थान में पापग्रह के संग हो तो बालक की मृत्यु जानिये ॥ १२२३ ॥

वशिष्टोक्त क्षीणपूर्णचन्द्रनिर्णय—

सम्पूर्णन्दूभयाष्टम्योर्मध्येन्दुः पूर्णसंज्ञकः ।

विनष्टेन्दूभयाष्टम्योर्मध्येऽसौ क्षीणसंज्ञकः ॥ १२२४ ॥

टीका—शुक्लपक्ष को अष्टमी से कृष्णपक्ष की सप्तमी तक पूर्णचन्द्र होता है तथा पक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की सप्तमी तक क्षीणचन्द्र होता है । यह क्षीण चन्द्र का निर्णय जानना वशिष्टजी का कहे है ॥ १२२४ ॥

जातिभ्रंशकारकयोग—

धनस्थाने यदा सौरिः संहिकेयो धरात्मजः ।

गुरुशुक्रौ सप्तमे च त्वष्टमे चन्द्रभास्करो ॥ १२२५ ॥

माहाणस्य पदे वापि वेश्यासु च सदा रतिः ।

प्राप्ते विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ १२२६ ॥

टीका—जिस बालक के दूसरे घर में शनैश्चर, राहु और मङ्गल हों और सातवें पदस्थित और शुक्र हो, आठवें घर में चन्द्रमा और सूर्य हों तो यदि माहाण भी जन्म पावे तो भी वेश्या-प्रसङ्गी हो और बीस वर्ष की अवस्था में म्लेच्छ रहता है ॥ १२२५-१२२६ ॥

अन्यमत से मृत्युयोग—

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः ।

तद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १२२७ ॥

टीका—जिसके आठवें स्थान में राहु और केन्द्र स्थान में चन्द्रमा हों तो बालक की शीघ्र मृत्यु हो ॥ १२२७ ॥

एकमास में मृत्युयोग—

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापाश्वाष्टमगेहनाः ।

मासेनैकेन मृत्युः स्याद्बालकस्य न संशयः ॥ १२२८ ॥

टीका—द्वादशवें स्थान में चन्द्रमा और पापाष्टम स्थान में पापाष्टम हो तो बालक एक मास में मृत्यु पावेगा ॥ १२२८ ॥

दाक्षिण्ययोग—

कूरश्चतुष्टु केन्द्रेषु तथा कूरो घनेऽपि वा ।

दाक्षिण्ययोगं जानीयात्स्ववरास्य ज्यंकरः ॥ १२१६ ॥

टीका—कूरग्रह चारों केन्द्र १४°३१'०" स्थानों में हों और घन स्थान में कूरग्रह हो तो दाक्षिण्ययोग जातिवे । इसको भरत पत्र का क्रम करतेवाला जानिये १२१६

मृत्युयोग—

चतुर्ये च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि च ।

सद्य एव भवेन्मृत्युः रङ्गरो यदि रजति ॥ १२२० ॥

टीका—जिसके चौथे स्थान में राहु और छठे अथवा आठवें स्थान में चन्द्र हो तो दाक्षिण्य को यदि महादेवजी भी रजा करें तो भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्ति

